CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोविन्द जय-जय, गोपाल जय-जय। राधा रमण हरि, गोविन्द जय-जय।।

गुरु-शिष्य जीवन-दर्शन

श्री गोपाल धाम

श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी महाराज उर्फ जंगलिया बाबा

लेखक- कमलाकर दुबे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

5-3

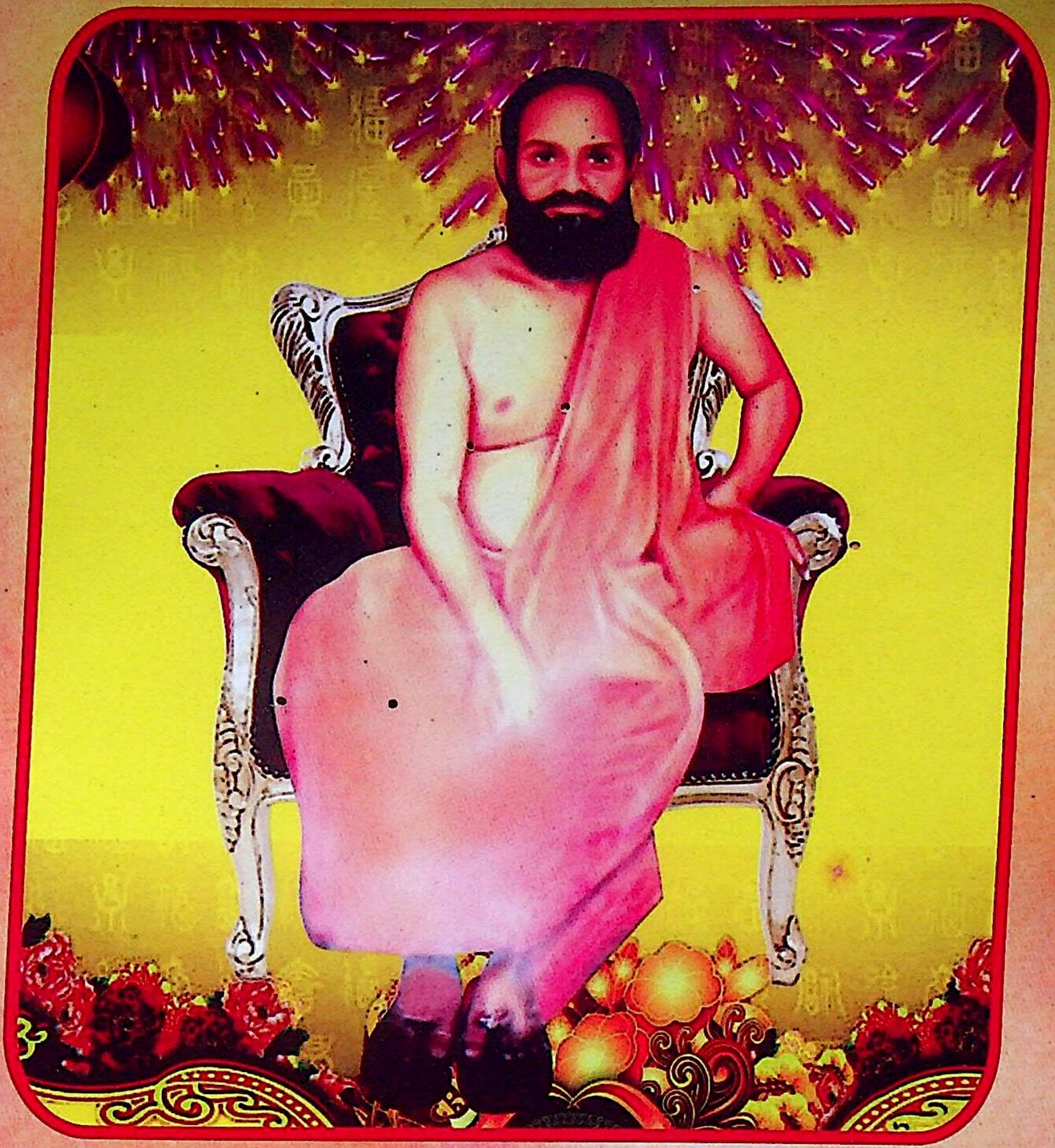

श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती
उर्फ जंगलिया बाबा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

प्रकाशक : श्री गोपालधाम
भारद्वाज दवा केन्द्र
एवं
श्री गोपालधाम
मेडिको एण्ड सर्जिकल एजेन्सीज
जिला-अस्पताल गेट
जनपद- बलिया (उ0प्र0)

लेखक : कमलाकर दुबे
ग्राम व पोस्ट- थम्हनपुरा, बलिया
उत्तर प्रदेश।

कृति-स्वाम्य : प्रकाशकाधीन

संस्करण : 25.10.2020 ई० विजयादशमी
दिन-रविवार

मूल्य : ₹ 150

मुद्रक : परफेक्ट कम्प्यूटर एण्ड प्रिन्टर्स
बी-2 आवासीय कॉलोनी
बहादुरपुर, बलिया
मो0-8381863644

साज-सज्जा : श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी
श्री गोपालधाम- सिथौरा जंगल, नालन्दा राजगीर, बिहार
श्री कमलाकर दुबे, ग्राम व पोस्ट-थम्हनपुरा, जिला-बलिया (उ0प्र0)

'गुरू-शिष्य जीवन दर्शन'
श्री गोपालधाम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

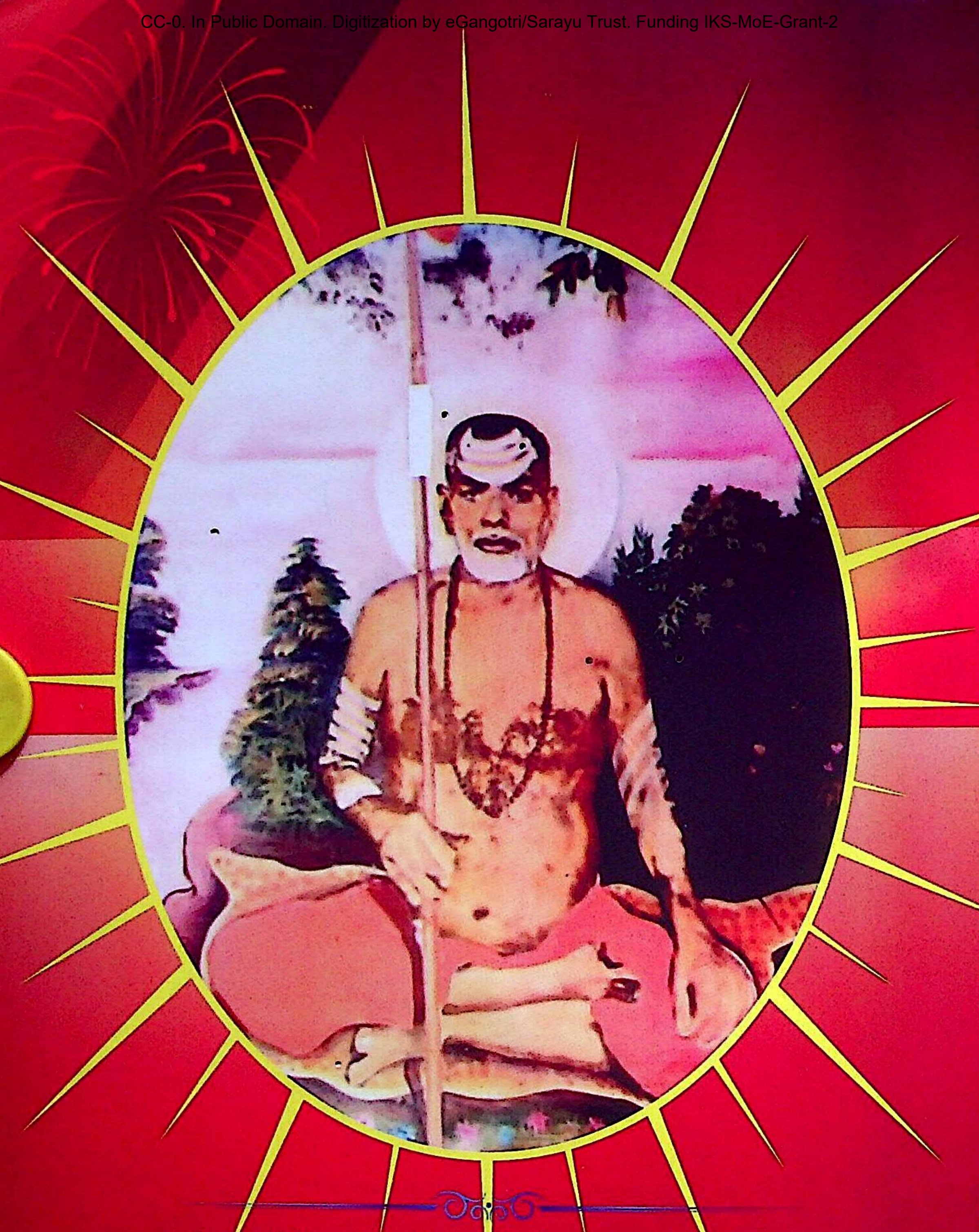

महामण्डलेश्वर योगीराज दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी महाराज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

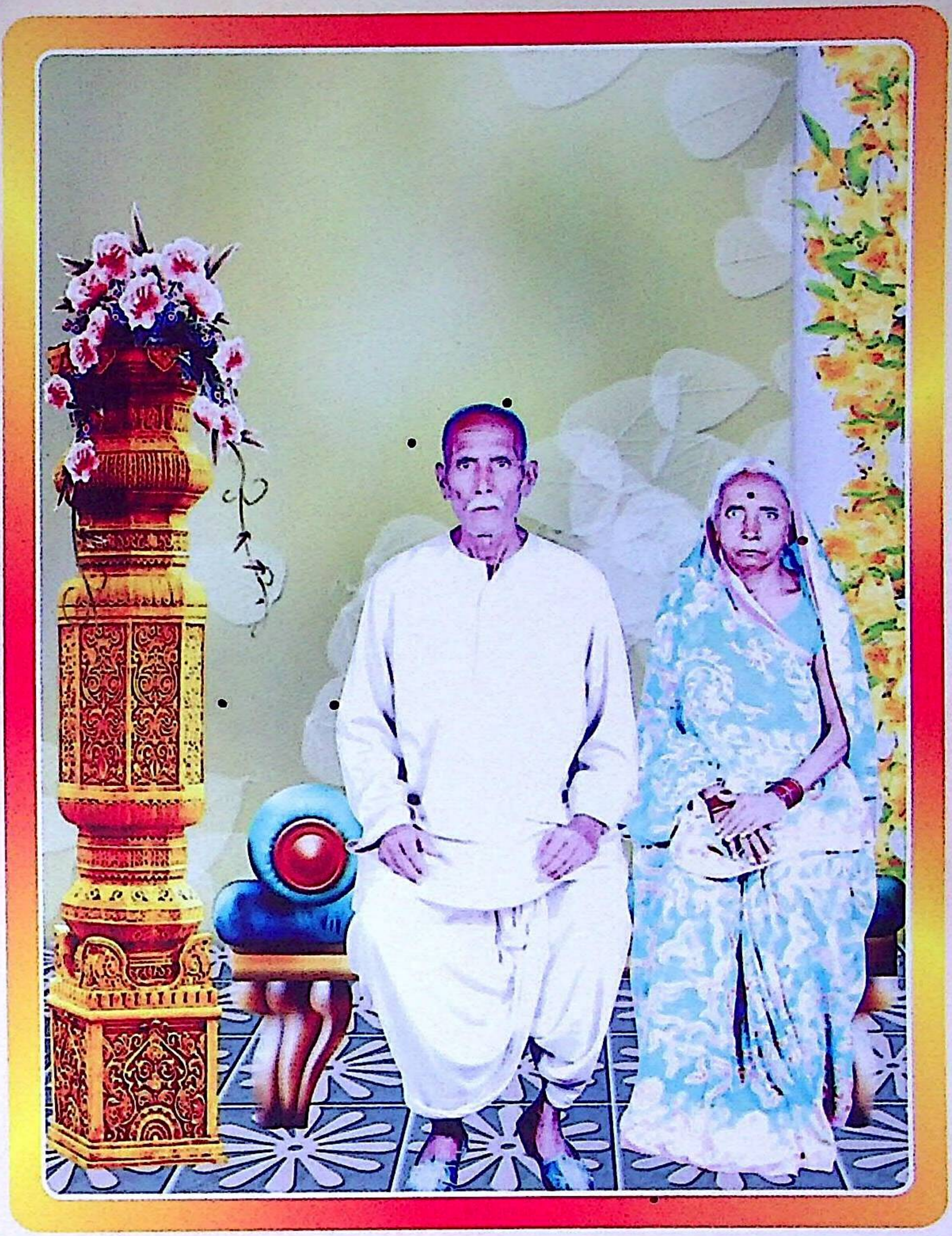

स्व० लक्ष्मण दुबे पत्नी स्व० किशोरी देवी
माता-पिता कमलाकर दुबे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कमलाकर दुबे

ग्राम व पोस्ट- थम्हनपुरा, बलिया (उ०प्र०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीमती कौशल्या देवी पत्नी श्री कमलाकर दुबे
ग्राम व पोस्ट- थम्हनपुरा, बलिया (उ०प्र०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

समर्पण

श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री
गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ जंगलिया
बाबा के श्री चरण-कमलों में मेरे
द्वारा लिखित

'गुरू-शिष्य जीवन दर्शन'

(श्री गोपालधाम) जिसे पुस्तक का
रूप दिया गया है को
श्रद्धा सुमन के रूप
में श्री श्री गुरूदेव
महाराज जी के
चरणों में ही
समर्पित
करता
हूँ।

-कमलाकर दुबे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरु-शिष्य जीवन-दर्शन
श्री गोपाल धाम

विषय सूची

क्रम सं0	विषय	पृष्ट संख्या
1.	लेखक के आत्मनुराग से- दो शब्द	1-15
2.	महामण्डलेश्वर योगीराज दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी महाराज	16-48
3.	श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा)	49-154
4.	संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ (पुजारी जी)	155-187
5.	संत श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी	188-200

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ श्री गुरुवे नमः

दो शब्द

गुरुर्ब्रम्हा गुरुर्विष्णुः गुरुर्देवो महेश्वरः।
गुरुसाक्षातपरब्रम्ह तस्मै श्री गुरुवे नमः।।
अखण्ड मण्डलाकारं व्याप्तं येन चराचरम्।
तत्पदं दार्शितंयेन तस्मै श्री गुरुवे नमः।।

सदियों से गुरु- शिष्य के मध्य सम्बन्ध की चर्चा का उल्लेख वेद, पुराण एवं धार्मिक ग्रन्थों ने किया है। गुरु का स्थान ईश्वर से भी ऊपर रक्खा गया है। संत कबीर के अनुसार-

गुरु गोविन्द दोऊ खड़े, काको लागू पाय,।
बलिहारी गुरु आपनो, गोविन्द दियो बताय।।

सत् गुरु अपने शिष्यों को अन्धकार से सदैंव प्रकाश में लाते हैं, जिस पर गुरु की कृपा दृष्टि होती है वहीं शिष्य परम्पद प्राप्त करता है उसे ईश्वर का दर्शन होता है। उत्तम शिष्य के कर्म गुरु की प्रतिष्ठा बढ़ाने में सदैंव सहायक होता है। निष्ठावान शिष्य गुरु के आदेश पालक होते हैं। सत् गुरु पवित्र धर्म ग्रन्थों में छुपे गुढ़ रहस्यों को उजागर करके यथार्थ भक्ति मार्ग पर चलने हेतु अपने शिष्यों का मार्ग दर्शन करते हैं।

श्री राज रोशन पाण्डेय उर्फ (महामण्डलेश्वर योगी राज दण्डीस्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी) नवरंगा गाँव, जिला-बलिया (उ0प्र0) (वर्तमान में जिला-बक्सर, बिहार) के अधवार टोल में सोहबत पाण्डेय जी के घर उनकी धर्मपत्नी के गर्भ से दो पुत्र उत्पन्न हुए जिसमें ज्येष्ठ पुत्र का नाम बेचू पाण्डेय और कनिष्ठ पुत्र का नाम राज रोशन पाण्डेय था। श्री सोहबत पाण्डेय कर्मकाण्डी, संस्कारवान और आचारनिष्ठ ब्राह्मण थे। श्री राज रोशन पाण्डेय अपने पिता श्री सोहबत पाण्डेय के परिवार में धार्मिक वातावरण होने से छोटी अवस्था में ही अपने-पिता की देख-रेख में संध्या-गायत्री करना प्रारम्भ कर दिए। जिसके फलस्वरूप इग्यारह-बारह वर्ष की अल्प आयु में हीं वे संध्या गायत्री एवं धार्मिक अनुष्ठान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कार्य कराने लगे। श्री राज रोशन पाण्डेय की अवस्था जब तेरह वर्ष की थी इनके पिता श्री सोहबत पाण्डेय जी अपने कनिष्ठ पुत्र राज रोशन पाण्डेय को पास बुलाकर बोले-आज तुम्हारे लिए मैं कुछ आदेश दे रहा हूँ। इसे ध्यान से सुनो उसे परिवार के सदस्यों से कभी नहीं बताना। मैं अब जा रहा हूँ अर्थात आज मेरी मृत्यु होगी। तुम अपना विवाह मत करना। ब्राह्मण का सर्वोच्च धर्म हैं कि वह तपस्वी बने।

तुम अभी कुछ दिन के लिए सेना में भर्ती होकर देश-विदेश का भ्रमण करोगे। सेना की सरकारी सेवा से निवृत्त होने पर तुम आगे चल कर संन्यासी बनोगें। उसी दिन सायं काल की वेला में श्री सोहबत पाण्डेय जी कुशा कै आसन पर बैठ कर स्वयं द्वारा लाए गए, मिट्टी के घड़े से गंगा जल को अपनी गिलास में लिए और उसमें तुलसी का पत्ता छोड़कर उस गिलास का गंगा जल अपने मुख में रख कर उसे पी गए। और कुशासन (कुशा का आसन) पर ध्यान की मुद्रा में बैठ गए। कुछ समय व्यतीत होने पर वे समाधि में चले गए। उसी समय श्री राज रोशन पाण्डेय जी अपनी माता जी के साथ अपने पिता श्री सोहबत पाण्डेय जी के निकट पहुँचे। समाधिस्थ श्री सोहबत पाण्डेय जी के मुख से ओम् शब्द की ध्वनि हुई और श्री सोहबत पाण्डेय जी का प्राण पखेरू नश्वर शरीर से निकल गया। उनकी मृत्यु हो गई। वही हुआ जैसा उनके पिता श्री सोहबत पाण्डेय जी राजा जनक की तरह अपने योग बल से अपनी मृत्यु तथा (चरित नायक) श्री राज रोशन पाण्डेय उर्फ महामण्डलेश्वर योगी राज दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी के भावी जीवन के सम्बन्ध में भविष्य वाणी की जो पूरी तरह सत्य सिद्ध हुई।

श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) छपरा जिला में स्थित भेड़वनिया गाँव निवासी श्री शिवचन्द राय जी के चतुर्थ पुत्र थे। (वर्तमान में भेड़वनिया गाँव सिवान जिला में है) आपका जन्म एक सम्पन्न एवं धनाढ़य परिवार में हुआ था। ग्यारह-बारह वर्ष की अल्प आयु में ही आपके हृदय में वैराग होने पर घर परिवार त्याग कर साधु बनने की प्रबल इच्छा से प्रेरित होकर आप घर गाँव से बाहर निकल पड़े। दो-तीन वर्ष तक भटकते-घूमते रहें। इनका पारिवारिक नाम जगन्नाथ राय था घूमते-भटकते आप काशी पहुँचे। काशी में राजगुरु मठ आश्रम के संन्यासी महामण्डलेश्वर योगी राज दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी से मुलाकात हुई। वे उन्हें लेकर अपने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आश्रम पर गए तथा उनको विद्या अध्ययन कराने की व्यवस्था किए। इनकी सेवा से प्रसन्न होकर दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी प्रयागराज में वि0सं0 2010 माघ कृष्ण षष्ठी को संन्यास की दीक्षा गुरुमंत्र देकर दण्ड धारण कराएं, और इनका नाम जगन्नाथ राय से बदल कर संन्यास में नामकरण-स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती नाम का उद्घोष किए। अपने गुरुदेव से अनुमति पाकर आप भारत भ्रमण के लिए पद यात्रा प्रारम्भ किए। स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी प्रयागराज से पद यात्रा करते हुए सर्व प्रथम काशी आए, और काशी से मथुरा-वृन्दावन होते हुए हरिद्वार पहुँचे। पद यात्रा के समय मार्ग में पड़ने वाले सभी तीर्थ स्थलों में जाकर, वहाँ के उच्च कोटि के संत-महात्माओं का दर्शन किए और उनसे मिले। उन सभी सन्तों को अपना आदर्श मानकर स्वयं जप-तप-तपस्या में लीन रहने लगे। आप गंगा जी के तट पर रूक-रूक कर तपस्या करने लगे। पद यात्रा के क्रम में आप हरिद्वार से गंगा जी के किनारे-किनारे तीर्थ स्थलों पर रूक-रूक कर तपस्या साधना करते हुए जनपद-बलिया उ0प्र0 के भृगु क्षेत्र में स्थित-अँजोरपुर गाँव के दियारे में सर्व प्रथम श्री उमाशंकर राय के खेत में स्थित पीपल पेड़ की छाया के नीचे वि0सं0 2011 वर्ष के मार्ग शीर्ष (अगहन) मास अथवा वर्ष सन् 1954ई0 के दिसम्बर महीने में बैठे थे। जाड़ा का मौसम था। गाँव का कोई व्यक्ति उनको वहाँ आते और विश्राम हेतु बैठते नहीं देखा था। उस समय स्वामी जी की आयु लगभग 24-25 वर्ष की थी। जब गाँव के किसान खेती कार्य हेतु दियारे में गए तो उन्हें वहाँ बैठा पाये। स्वामी जी अपने पास मारकीन का दो अँचला, दो लँगोटी रखे थे। उनके पैरो में खड़ाऊ भी नहीं था। उनका भव्य रूप आकर्षक मुख मण्डल पर तेज को देखकर लोग उनका दर्शन किए और उनसे आग्रह किए बाबा आप मेरे गाँव की कुटी पर ठहरने का कष्ट करें। लोगों का प्रार्थना स्वीकार कर स्वामी जी अँजोरपुर गाँव की कुटी पर लगभग छ:सात माह रहे फिर अन्यत्र स्थान के लिए पैदल यात्रा पर निकल गये।

तीन-चार वर्ष बाद स्वामी जी का पुनः आगमन हुआ। अँजोरपुर गाँव के भक्त किसान अँजोरपुर-इन्दरपुर गाँव के सिवाने पर कच्ची सड़क (डुबर) के किनारे मगइ नदी के निकट झोपड़ी लगा दिये। इस बार गेरुआ वस्त्र धारण किए थे, हाथ में दण्ड लिए थे। पैरों में खड़ाऊँ पहने थे। इस बार कुछ माह व्यतीत करने के बाद अन्यत्र स्थान को चले गये।

सन्यासी कभी एक स्थान पर रह कर तपस्या नहीं करते वे अपना स्थान सदैव बदलते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहते है। पद यात्रा के क्रम में आप सन् 1955 ई0 अथवा सन् 1956ई0 के आषाढ़ मास में बिहार प्रान्त में राजगृह के निकट सिंथौरा गाँव के दक्षिण दिशा में स्थित रत्नागिरि पहाड़ी के नीचे जंगल में एकान्तवास करते हुए यहाँ प्रथम चार्तुमास सम्पन्न किए। सिंथौरा जंगल से पद यात्रा प्रारम्भ कर जिला-आरा, जिला-भोजपुर (बिहार) के भक्तों के आग्रह पर उनके गाँव में कुछ समय निवास किए वहाँ गाँव के बागीचे में तपस्या किए। यात्रा क्रम आगे चला तो आप पुन: अँजोरपुर गाँव आए भक्त आपके लिए गंगा तट पर पर्ण कुटी तैयार किए। गंगा तट पर स्थित झोपड़ी में स्वामी जी 'सारल्य दर्शन' का लेखन किए। जिसमें श्रीमद् भागवत पुराण के तत्व ज्ञान का उल्लेख किए। इस अवधि में आप गेरुआ वस्त्र धारण किये थे, पैरों में चरण पादुका रही किन्तु, दण्ड का त्याग कर दिये थे। कुछ समय गंगा तट पर प्रवास के बाद आप अँजोरपुर से अन्यत्र चले गए। कहाँ-कहाँ गये तपस्या किए का उल्लेख सम्भव नहीं है। घूमते-फिरते आप पुन: सिंथौरा गांव के जंगल में गए। वहाँ लगभग पच्चीस वर्ष तक श्री गोपालधाम में रह कर निर्गुण ब्रह्म को छोड़कर सगुण ब्रह्म (श्रीराधा-श्रीकृष्ण एवं भगवान शंकर) की पूजा अराधना करने लगे।

दिनांक 19.03.1979ई0 दिन-सोमवार चैत मास कृष्ण पक्ष षष्ठी की रात्रि बेला में ड़कैतो का गिरोह अपने दस-पन्द्रह हथियार बन्द साथियों को लेकर जंगल स्थित श्री गोपालधाम के मन्दिर से भगवान श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा जी की मूर्ति के साथ-साथ भजन कीर्तन के समय बजने वाले वाद्य यंत्रों एवं मन्दिर निर्माण हेतु रखे गए लाखों रूपयों से भरा थैला भक्तो को पिस्टल दिखा कर लूट लिए। कुछ दिन बाद चोरी में शामिल वे सभी ड़कैत गिट्टी लाद कर ट्रक से ले जा रहे थे कि अचानक ट्रक में सवार सात ड़कैतों की मृत्यु ट्रक पलटने से हो गई और जो शेष बचे थे वे भी सर्प के काटने एवं पिलिया रोग से ग्रसित होकर मृत्यु को प्राप्त किए। उनके परिवार की महिलाएँ रो-रो कर चिल्ला-चिल्ला कर कहने लगी मेरा बेटा मेरा पति से श्री गोपालधाम में चोरी करवाया इसी कारण उनकी मृत्यु हो गई। दु:खी होकर मृतक के परिवार वाले कहने लगे बाबा का शाप लगने से मन्दिर में जो चोरी किए थे सभी मारे गए।

चोरी की इस घटना के बाद से ही संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) का हृदय हमेशा दु:खी रहने लगा। वे अपना शरीर छोड़ने का मन बना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिए, और श्रीमद् भागवत महापुराण की कथा श्रवण करने की इच्छा व्यक्त किए। श्रीमद् भागवत महापुराण कथा सुनने की तैयारी पूर्ण की गई। जिला-गया से भागवताचार्य पं0 श्री बृजभूषण उपाध्याय उर्फ (बेदुआ जी)एवं बिन्दीड़ीह से श्री गोपालधाम के विद्वान पुरोहित पं0 श्री रूपनारायण उपाध्याय उर्फ (कारू उपाध्याय जी) श्री गोपालधाम मे बुलाएं गए। भागवत कथा सुनने से पूर्व स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी अपनी बीमारी का बहाना बना कर स्वयं भागवत् सुनने के लिए नहीं बैठे। वे पुजारी श्री मुन्ना सिंह का नाम प्रस्तावित किए। पुजारी जी, भागवत सुनने से इंकार किए, तब जंगलिया बाबा उन्हें अपने पास बुलाए और बोले- मुन्नवा तुम भागवत कथा सुनो मैं अस्वस्थ हूँ। स्वामी जी के कहने के बाद पुजारी जी श्रोता बनने को तैयार हुए और भागवत कथा श्रवण किए।

स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) की तबीयत खराब होने की सूचना श्री रामस्वरूप सिंह को उनके बड़े भाई श्री रामवृक्ष सिंह व छोटे भाई श्री राम किशोर सिंह जहाँ उनका ठेका कार्य चल रहा था वहाँ भेजे। सूचना पाकर श्री राम स्वरूप सिंह उसी दिन श्री गोपालधाम में पहुँचे। स्वामी जी का चरण पकड़ कर रोने लगे और बोले-मैं कौन सा पाप किया हूँ कि आप दर्शन दिए बिना शरीर छोड़ना चाहते हैं। आप आत्मज्ञानी एवं अन्तर्यामी संत है आपको ऐसा करना शोभा नहीं दे रहा है। जंगलिया बाबा श्री राम स्वरूप सिंह से बोले-मेरा भगवान चोरी हो गए और तुम मुझे उपदेश दे रहे हो। राम स्वरूप सिंह दोनो हाथ जोड़कर निवेदन किए भगवान की चोरी बार-बार होती रहे। और मैं भगवान की मूर्ति लाकर गाजे-बाजे के साथ उनकी प्राण प्रतिष्ठा करा सकूँ। राम स्वरूप सिंह की बात सुन कर स्वामी जी उन्हें एक थप्पड़ मार कर कहे-बेटा भगवान को लाने कब चलोगे? राम स्वरूप सिंह का उत्तर था भागवत समापन के दो दिन बाद! श्रीमद् भागवत महा-पुराण की कथा का कार्यक्रम समाप्त हुआ। विशाल भण्डारे का आयोजन किया गया। जिसमें संत महात्मा, साधु, किसान, भक्त सभी आमंत्रित किए गए। सभी भण्डारे का प्रसाद ग्रहण किए। दो दिन बाद भगवान की मूर्ति लाने के लिए श्री गोपालधाम से स्वामी श्री गोपाला नन्द सरस्वती जी के साथ श्री रामवृक्ष सिंह, श्री रामस्वरूप सिंह, श्री जयनन्दन सिंह, श्री कपिलदेव सिंह एवं श्रीमती लीलावती देवी मथुरा वृन्दावन गए। मथुरा में उस समय के महान संत श्री पगला बाबा के आश्रम पर स्वामी जी गए। पगला बाबा स्वामी जी के साथ-साथ सभी भक्तों का स्वागत सत्कार किए सभी लोग वही रात्रि विश्राम एवं भोजन किए। स्वामी जी पगला बाबा से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोले-मेरे ठाकुर बाड़ी से श्रीकृष्ण एवं श्रीराधा जी की मूर्ति चोरी हो गई। यह सुन पगला बाबा हँसते हुए कहे-श्रीकृष्ण तो स्वयं चोर है उसे कौन चुराएगा। दूसरे दिन सुबह सभी को लेकर स्वामी जी श्री वृन्दावन गये वहाँ सरयू में स्नान करने के बाद श्री बाँके बिहारी जी के मन्दिर व अन्य मन्दिरों में जाकर दर्शन किए। श्रीराधा-श्रीकृष्ण की मूर्ति का चयन जंगलिया बाबा स्वयं किए। मूर्ति लेकर दूसरे दिन श्री गोपालधाम वापस आए। दिनांक 30.05.1979ई0 दिन-बुधवार को स्वामी जी अँजोरपुर गाँव के लिए यात्रा का कार्यक्रम बनाएं श्री गोपालधाम में पूजा-अर्चना का भार पुजारी श्री मुन्ना सिंह उर्फ (श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी जी) पर छोड़ कर वे माँ गंगा की रेत पर सोने की इच्छा व्यक्त कर अँजोरपुर गाँव के लिए प्रस्थान किए और श्री परमात्मानन्द पंण्डित वैद्य जी के दरवाजे पर रहने लगे।

कुछ दिन बाद स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ जंगलिया बाबा के दर्शन करने हेतु श्री गोपालधाम से श्री साधु सिंह, श्री राम लखन सिंह, श्री गनौरी सिंह, ग्राम- बलौर, पोस्ट- चण्ड़ी मौ, थाना- राजगीर, जिला-नालन्दा (बिहार) व श्री राम करण सिंह ग्राम-कमला, थाना-रूपऊ, जिला- नवादा, (बिहार) अँजोरपुर गांव आए थे। वे लोंग बाबा का दर्शन किए और वापस चले गए। उसके बाद पुन: भजन-कीर्तन मण्डली के नवरत्न श्री रघुनन्दन शर्मा बैद्य उर्फ (झपसू जी), श्री कपिल देव सिंह उर्फ (कपिल जी), श्री विपिन कुमार सिंह व श्री भुनेश्वर सिंह (मास्टर) को पुजारी जी मार्ग व्यय की धनराशि देकर उन्हें जंगलिया बाबा को मनाने हेतु अँजोरपुर गाँव भेजे। चारो लोंग दिनांक 01.07.1979ई0 दिन-रविवार को अँजोरपुर पहुँच गए। सोमवार, मंगलवार को स्वामी जी के साथ बैठ कर कीर्तन-भजन किए। दिनांक 04.07.1979ई0 दिन-बुधवार को श्री कपिल देव सिंह को पास बुलाकर स्वामी जी बोले-कपिल जी आज आप मीराबाई का वह भजन गाकर सुनाइए, जिसका बोल है- मैं तो गिरधर आगे नाचूँगी- (इसके पीछे उनका क्या सोच रहा किसी को मालूम नहीं था) श्री रघुनन्दन शर्मा बैद्य उर्फ (झपसू जी) हारमोनियम एवं श्री कपिल देव सिंह उर्फ (कपिल जी) तबला लेकर वादन करते हुए भजन गाने लगे। स्वामी जी भाव विभोर होकर भगवान की मूर्ति के सामने नृत्य करने लगे। पूजा-अर्चना किए, उसके बाद समीप में रखी काष्ठ की चौकी पर लेट गए। आसन पर रखे वस्त्रों को हटाने के लिए इशारों से संकेत किए। वहाँ उपस्थित भक्तों ने आसनी सहित अन्य वस्त्रों को चौकी से अलग हटा दिया। अब स्वामी जी योग मुद्रा द्वारा अपने प्राण वायु को मस्तिष्क पर चढ़ा लिए। ऐसा करने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के पश्चात् ही उनके शरीर में ऐठ्न होने लगा, यह दृश्य देखकर वहाँ उपस्थित लोगों में से कुछ आदमी घबराकर श्री परमात्मानन्द पंण्डित जी वैद्य के पास उन्हें बुलाने के लिए जूनियर हाईस्कूल पर इन्दरपुर गाँव गए और कुछ लोग अँजोरपुर गाँव के मन्दिर पर चार्तुमास के लिए पधारे उनके गुरु चाचा दण्डी स्वामी श्री स्वरूपा नन्द सरस्वती जी से जाकर स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी की तबीयत खराब होने की सूचना दिए। सूचना पाते ही दोनों व्यक्ति स्वामी जी को देखने उनके निकट पहुँच गये। स्वामी जी के शरीर की स्थिति को देखकर वे लोग समझ गए इन्हें कोई रोग नहीं है। स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी अब समाधि में चले गए हैं सैकड़ो भक्तों की उपस्थित भीड़ में उसी रात्रि लगभग 8.00 बजे स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी तीन बार ऊँ ऊँ ऊँ शब्द का उद्घोष करते हुए अपना पार्थिव शरीर का परित्याग कर हमेशा के लिए समाधि में लीन हो गए। दूसरे दिन उनके पार्थिव शरीर को गंगाजी में जल समाधि दी गई। श्री गोपालधाम में उनके शिष्य श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी जी के देख-रेख में भगवान की पूजा-अर्चना का सभी कार्य किया जाने लगा वे गुरुदेव के आशीर्वाद से मन्दिर कार्य को सम्पादित करते रहे।

स्वामी जी को समाधि लेने के पश्चात् उनका भण्डारा प्रति वर्ष आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष नवमी तिथि को श्री परमात्मानन्द पंण्डित जी के दरवाजे पर अँजोरपुर गाँव में तथा कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष नवमी तिथि को श्री गोपालधाम सिंथौंरा जंगल में मन्दिर पर किया जाता है। स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) जैसा संत इस संसार में कभी-कभी जन्म लेते है। जो संसार के उत्थान करने में अपना जीवन समर्पित कर देते हैं। श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) भी वैसे ही थे।

श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी के परम प्रिय शिष्य संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ (पुजारी जी) बाल्यावस्था से ही श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) से भलि-भाँति परिचित थे। पुजारी जी के पिता श्री चन्द्रिका प्रसाद सिंह अपने घर से जंगलिया बाबा का दर्शन करने प्रायः सिंथौरा गांव के जंगल में आते-जाते थे। अपने पिता जी का अनुसरण करते हुए श्री सुनिल प्रसाद सिंह उर्फ (श्री मुन्ना सिंह) भी जंगलिया बाबा का आशीर्वाद प्राप्त करने जंगल में बाबा के निकट आने लगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिनांक 19.03.1979 ई0 दिन सोमवार को रात्रि में श्री गोपालधाम मन्दिर पर मूर्ति-चोरी करने के उद्देश्य से हथियार बन्द ड़कैत आए और मन्दिर पर सोये भक्तों को पिस्तौल दिखाकर डराने-धमकाने लगे। उस दिन श्री सुनिल प्रसाद सिंह भी मन्दिर पर सो रहे थे। वे क्रोधित होकर डाकुओं से पिस्टल छीनने के लिए मन में विचार कर अपना हाथ उठा रहे थे कि अचानक स्वामी जी मुन्ना सिंह का हाथ पकड़ कर हाथ के किसी नस को दबा दिए, जिससे वे बेहोश हो गए। ड़कैत भगवान श्री कृष्ण एवं श्रीराधा जी की मूर्ति के साथ-साथ मन्दिर पर पूजा के समय बजने वाले वाद्य यंत्रों सहित मन्दिर निर्माण के निमित रखा रूपये से भरा थैला लूट कर चले गये। मन्दिर में हुई डकैती की घटना से जंगलिया बाबा दु:खीत रहने लगे। वे प्रतिपल चिन्तित रहते थे, भगवान की आरती पूजा भी वे स्वयं करना बन्द कर दिए।

अपनी देख-रेख में पूजा-अर्चना कराने के लिए श्री मुन्ना सिंह को पुजारी नियुक्त किए और पुजारी का आस्पद नाम 'मुकुन्द ब्रह्मचारी' रखे। स्वामी जी के समय से ही मन्दिर में आरती-पूजा होने के पश्चात् तुरन्त भक्तों द्वारा लगभग आधा घंटा तक **'गोविन्द जय-जय, गोपाल जय-जय। राधा रमण हरि गोविन्द जय-जय॥** का संकीर्तन करते हुए सभी भक्त मन्दिर की परिक्रमा करते है और अन्त में भगवान का चरणामृत प्रसाद के रूप में ग्रहण करते है। श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी जी गुरुदेव जंगलिया बाबा के पद चिन्हों पर चलते हुए मन्दिर की मर्यादा को बढ़ाते रहे। उनके सिर के ऊपर जंगलिया बाबा का आशीर्वाद रहा।

दिनांक 30.05.1979 ई0 से दिनांक 18.04.2018 ई0 तक लगातार 38 वर्ष 10 माह 18 दिन श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी जी बाबा के निर्देशानुसार मन्दिर में भगवान की सेवा कार्य करते रहे। विगत बारह-तेरह वर्ष पूर्व से ही खान-पान के समुचित व्यवस्था में हुए अभाव के कारण वे सर्व प्रथम सुगर रोग से ग्रसित हो गए। पेट में गैस का निर्माण होने से उनके शरीर में तरह-तरह के रोग उत्पन्न होने लगा। रोग ग्रसित होने पर पुजारी जी अस्वस्थ्य रहने लगे। श्रद्धालु भक्त उनका इलाज कराने हेतु बिहार प्रान्त की राजधानी पटना, दिल्ली, हरियाणा प्रदेश में गुरूग्राम स्थित मेदान्ता अस्पताल, आन्ध्र प्रदेश में बैंगलोर तथा महाराष्ट्र प्रदेश में ख्याति प्राप्त चिकित्सालय सटाना में ले गए थे। वर्ष 2016 ई0 के नवम्बर माह में पुजारी जी को लकवा लगने से इनके शरीर का आधा अंग सून हो गया तब पटना स्थित अच्छे अस्पताल में इलाज के लिए भर्ती किए गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसके बाद पुजारी जी का शरीर कमजोर हो गया। दवा का असर होने पर धीरे-धीरे लकवा रोग का सुधार होने लगा। फिर अचानक दिनांक 16.04.2018 ई0 दिन-सोमवार की रात में आपकी तबीयत खराब हो गई। भक्त इलाज कराने के लिए बिहार शरीफ स्थित राजकीय चिकित्सालय में भर्ती किए वहाँ के अच्छे चिकित्सकों की देख-रेख में इलाज हो रहा था। डाक्टर उन्हें आई0सी0यू0 वार्ड में भर्ती किए। दिनांक 17.04.2018ई0 को दिन में पुजारी जी की तबीयत में सुधार होने पर भक्तों से बात किए। बोले मेरे लिए गाड़ी की व्यवस्था करो, मुझे कमलाकर के घर बलिया जाना है। अस्पताल से कुछ भक्तों को मंगलवार का त्यौहार मनाने के लिए उन्हें श्री गोपालधाम जाने का निर्देश दिए। दिनांक 17.04.2018ई0 की रात्रि में किसी से बात नहीं किए किन्तु देर रात तक उनकी बीमारी पर दवा का प्रभाव न होने से वे अचेतावस्था में हो गए। उस स्थित में भी पुजारी जी बार-बार रट लगा रहे थे मेरे लिए गाड़ी की व्यवस्था करो मैं कमलाकर के घर बलिया जाऊँगा। वह मेरा इन्तजार करता होगा। दवा का प्रभाव (असर) न होने पर डाक्टर पुजारी जी को पटना के लिए रेफ़र किए। भक्त घबराकर दिनांक 18.04.2018 ई0 के सुबह लगभग 5 बजे भोर में बिहार शरीफ अस्पताल से पटना ले जा रहे थे। रास्ते में ही पुजारी जी की स्थिति खराब थी। पटना पहुँचकर उनका इलाज कराने हेतु अच्छे चिकित्सालय में भक्त लेकर गये। अस्पताल का डाक्टर इन्हें देखते ही बोला इनका इलाज कराने से अब कोई फ़ायदा नहीं होगा, दो घण्टा पूर्व ही इनका प्राणान्त हो चुका है। डॉक्टर पुजारी जी को मृत्यु घोषित कर दिया। ईश्वर को मंजूर नहीं था, अन्ततः दिनांक 18.04.2018 ई0 दिन-बुधवार बैशाख शुक्ल पक्ष-3 अक्षय तृतीया तिथि को वे निर्वाण प्राप्त करते हुए गो लोक गमन किए।

पुनः भक्त उसी गाड़ी से पुजारी जी का पार्थिव शरीर वापस श्री गोपालधाम लाए। दिनांक 18.04.2018 ई0 के दिन एवं रात्रि में पुजारी जी का पार्थिव शरीर भक्तों के दर्शनार्थ श्री गोपालधाम में रक्खा गया। दिनांक 19.04.2018 ई0 को फ़ूलमाला से सजाकर सन्यासी परम्परानुसार रथ में बैठाकर शोभायात्रा निकाली गई। सैकड़ो की भीड़ के बीच उनके पार्थिव शरीर को रथ में बैठाकर श्री गोपाल धाम से बाढ़ स्थित गंगा तट के उमानाथ घाट पर लेकर गए जहाँ गंगा जी की जल धारा में विसर्जित करते हुए जल समाधि दी गयी।

संन्यासी संतो से परामर्श प्राप्त कर संन्यासी परम्परा के अनुसार उनका प्रथम पूण्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिथि का भण्डारा दिनांक 19/05/2018 ई0 दिन-शनिवार को सम्पन्न हुआ, जिसमें संन्यासी संत महात्मा, साधु, किसान एवं दूर- दूर से पधारें भक्त श्री गोपालधाम मन्दिर पर उपस्थित थे। लगभग 9.00 बजे रात्रि में दिनांक 19/05/2018 ई0 दिन-शनिवार को ही-श्री गोपालधाम मंन्दिर का उत्तराधिकारी नियुक्त करने के लिए उपस्थित भक्तों द्वारा श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (गोरे लाल सिंह) के नाम का प्रस्ताव लाया गया उसके बाद संन्यासी संत परम्परा के वयोवृद्ध संत दण्डी स्वामी श्री देवानन्द सरस्वती जी जो (वर्तमान में राज गुरु मठ शिवालाघाट बी-3/175 वाराणसी, व दण्डी स्वामी श्री सहजानन्द सरस्वती आश्रम बक्सर (बिहार) के साथ-साथ प्रयागराज (इलाहबाद) में स्थित अन्य दो आश्रमों के उत्तराधिकारी हैं) श्री गोपालधाम मन्दिर में विराजमान श्रीराधा, श्रीकृष्ण, बाबा भोले शंकर नर्मदाधीश (श्री गोपालेश्वर महादेव) एवं श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी की मूर्ति को साक्षी मान कर उन्हीं के समक्ष संन्यासी परम्परानुसार उपस्थित भक्तों एंव संतो के सम्मुख श्री गोपालधाम मन्दिर का उत्तराधिकारी के लिए श्री संजय कुमार सिह उर्फ (श्री गोरे लाल सिंह) का नाम की घोषणा किए और सन्यासी के रुप में उनका नाम करण करते हुए उन्हें "श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती" नाम से सम्मानित व उद्घोष भी किए और उनको चादर उढ़ाए। श्री गोपालधाम में उपस्थित साधु, सन्यासी, भक्त एवं सम्मानित जनता जनार्दन ने इस कार्य का स्वागत, सम्मान करते हुए जयकारा लगाया।

संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ (पुजारी जी) की द्वितीय निर्वाण दिवस (पूण्य तिथि) मनाने के लिए दिनांक 07/05/2019 ई0 को तिथि निर्धारित था संत श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी अपने गुरु देव, की स्मृति में उनकी पूण्य तिथि से पूर्व श्री मद् भागवत महा-पुराण कथा सप्ताह का आयोजन किए जिसमें मैं अपनी धर्म पत्नी श्रीमती कौशल्या देवी एंव भगवताचार्य पं0 श्री विश्वम्भर नाथ शुक्ल जी के साथ श्री गोपालधाम सिंथौरा मन्दिर पर दिनांक 29.04.2019ई0 को उपस्थित था। दिनांक 30/04/2019 ई0 से दिनांक 06/05/2019 ई0 तक श्री मद्भागवत महापुराण कथा का श्रवण किया भागवत-पुराण कथा का समापन दिनांक 07/05/2019 ई0 अक्षय तृतीया तिथि को हुआ, संध्या समय भव्य भण्डारा का आयोजन किया गया था। जिसमें हजारों भक्त, संत साधु, महात्मा, किसान भण्डारे का प्रसाद ग्रहण किए। इस अवसर पर दण्डी स्वामी श्री देवानन्द सरस्वती जी अन्य कई संन्यासी संतों के साथ उपस्थित थे। उसी दिन संत श्री सनातन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चैतन्यानन्द सरस्वती जी 325 फीट ऊँचा **श्री गोपाल- मुकुन्द** मन्दिर निर्माण हेतु भूमि पूजन का कार्य किए। दूसरे दिन प्रातः दण्डी स्वामी श्री देवानन्द सरस्वती जी मुझे अपने पास बुलाकर बोले- दुबे जी आपने संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी के प्रथम निर्वाण दिवस (पूण्य तिथि) के समय भण्डारा समापन के बाद सभी संतो को संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित ''सारल्य-दर्शन'' पुस्तक वितरण किए थे, जिसको आपके द्वारा प्रकाशित किया गया है उसे मैं पढ़ा पुस्तक के अन्दर बहुत सरल भाषा में श्रीमद् भागवत महापुराण कथा का तत्व ज्ञान को दर्शाया गया है। आप ने स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी का संक्षिप्त जीवन परिचय भी दिया है उसे पढ़ने पर मेरे मन की इच्छा है आप गुरु-शिष्य परम्परा की छोटी पुस्तक तैंयार करें, जिसमें महामण्डलेश्वर योगीराज दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी, श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी, संत श्री मुकन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ (पुजारी जी) एवं वर्तमान संत श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी का संक्षिप्त जीवन-परिचय अंकित करे ताकि भविष्य में श्री गोपालधाम आने वाले भक्तों को यहाँ के संतो के विषय में जानकारी एवं ज्ञान हो सके।

मैं संत की वाणी एवं आदेश को शिरोद्धार्य किया और उनकी प्रेरणा तथा आशीर्वाद पाकर उपरोक्त संतो के ऊपर संक्षिप्त जीवन का इतिहास लिखना प्रारम्भ किया जिसमें सत्यता का विशेष ध्यान व आधार रखा, लेखन कार्य समाप्त हुआ जिसका प्रकाशन कराने को प्रयासरत हूँ। मेरे द्वारा लिखित पुस्तक का शीर्षक है- **गुरु-शिष्य जीवन दर्शन 'श्री गोपालधाम''** श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) निर्गुण ब्रम्ह की उपासना छोड़कर श्री गोपालधाम में सगुण ब्रह्म (श्री राधा-श्री कृष्ण व भगवान श्री नर्मदाधीश भोले शंकर (बाबा श्री गोपालेश्वर महादेव) की पूजा-अराधना रत्नागिरि पर्वत के निकट जंगल में स्थित श्री गोपालधाम मन्दिर पर करने लगे। साथ ही श्रावण मास के शुक्ल पक्ष की द्वादशी तिथि से पूर्णिमा तक चार दिन श्री राधा-श्रीकृष्ण को झूँला पर बैठाकर (विराजमान करके) झूँला उत्सव धूम-धाम से मानने लगे। उक्त अवसर पर दूर-दूर से संगीत कला के अच्छे-अच्छे कलाकार आते है वे अपने कीर्तन भजन एवं गायन-वादन से वहाँ उपस्थित भक्तों का मनोरंजन करते है। जंगलिया बाबा के समय से ही प्रति वर्ष झूँला उत्सव श्रावण मास में धूम-धाम से मनाया जाता है। संयोगवश दिनांक 15.08.

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

2019ई0 को स्वतंत्रता-दिवस, रक्षा बन्धन का त्यौहार के साथ झूँला उत्सव के अवसर पर मैं अपनी धर्मपत्नी के साथ श्री गोपालधाम में उपस्थित था। जहाँ झूँला उत्सव पर श्री गोपालधाम में राष्ट्र कवि श्री रामधारी सिंह दिनकर स्मृति न्यास के अध्यक्ष श्री नीरज कुमार जी पधारे थे। प्रकाशन के पूर्व गुरु-शिष्य जीवन-दर्शन 'श्री गोपालधाम' पर मेरे द्वारा लिखी गई पुस्तक का अवलोकन किए। वे प्रसन्न हुए- बोले दुबे जी-श्री गोपालधाम के सम्बन्ध में विस्तृत उल्लेख करें- यह स्थान धार्मिक एवं ऐतिहासिक, पौराणिक स्थल है यहाँ संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी तपस्या किए है वैसा सिद्ध संत मुझे कहीं नहीं मिले। मैं गुरु-शिष्य जीवन-दर्शन 'श्री गोपालधाम' नामक पुस्तक को अपने गुरुदेव श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी के कमल चरणों में समर्पित करता हूँ।

गुरु- शिष्य जीवन दर्शन 'श्री गोपालधाम' के सफल प्रकाशन के लिए मैं सर्व प्रथम दण्डी स्वामी श्री देवानन्द सरस्वती जी, जो राजगुरु मठ शिवालाघाट बी-3/175, वाराणसी व दण्डी स्वामी श्री सहजानन्द सरस्वती आश्रम बक्सर (बिहार) के उत्तराधिकारी है को अपना अभार प्रकट करता हूँ जिनकी प्रेरणा एवं आशीर्वाद से पुस्तक का प्रकाशन हुआ है।

गुरु-शिष्य जीवन दर्शन 'श्री गोपालधाम' के प्रकाशन के लिए संत श्री चैंतन्यानन्द सरस्वती जी श्री गोपालधाम सिंथौरा जंगल का अभारी हूँ जिन्होनें अत्यन्त मनोयोग पूर्वक सूक्ष्मावलोंकन किया, तथा वे अपनी संस्तुति प्रदान किए।

श्री अजय कुमार मौर्य, प्रो0 परफेक्ट कम्प्यूटर एण्ड प्रिन्टर्स बहादुरपुर, बलिया का प्रयास सराहनीय रहा, जिन्होंने पूर्ण दक्षता पूर्वक अल्पावधि में शुद्धाति शुद्ध टंकण कर मुद्रण कार्य करने में अपने कौशलता का परिचय दिया है। मैं उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूँ।

मैं अपनी धर्म पत्नी श्रीमती कौशल्या देवी तथा आत्मज श्री अभय कुमार दुबे, श्री अजीत कुमार दुबे, श्री प्रदीप कुमार दुबे, एवं श्री प्रमोद कुमार दुबे के साथ-साथ श्री संजय कुमार दुबे ग्राम-प्रधान, थम्हनपुरा को भला कैसे भूल सकता हूँ जिनके संस्कार शीलगत कर्तव्यभाव ने मेरे, स्नेह का ऋण चुकाते हुए गुरु- शिष्य जीवन दर्शन 'श्री गोपालधाम' के प्रकाशन व्यय का भार सहर्ष वहन कर लिया। इस हेतु वे सभी सदैव सलज स्नेह और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आशीर्वाद के सुपात्र हैं।

अपने मन्द बुद्धि से उन भूले-बिसरे सभी आत्मीयजनों का मैं अभारी हूँ जिन्होनें जाने-अनजाने उपरोक्त पुस्तक के प्रकाशन में यत्किञ्चत् भी सहयोग प्रदान किया है।

अन्त में महान् तपस्वी योगी एवं संत प्रातः स्मरणीय शरणागत भक्त वत्सल गुरुदेव श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) के साथ-साथ अपने पूज्यनीय पिता स्व0 लक्ष्मण दुबे एवं पूजनीया माता स्व0 किशोरी देवी जिनका पार्थिव शरीर पंच तत्व में विलीन हो चुका है परन्तु आप की वाणी, आशीर्वचन एंव साधना के रुप में आज भी आश्वासित, आवर्जित एवं आह्लदित करते है उन्हीं के अप्रत्यक्ष आदेश से यह पुस्तक प्रकाशित कर पाने का संकल्प साकार हुआ, ऐसा मैं मानता हूँ।

कमलाकर दुबे
ग्राम व पोस्ट- थन्हनपुरा
जनपद- बलिया (उ0प्र0

बैशाख मास शुक्ल पक्ष तृतीय अक्षय तृतीया तिथि
दिनांक- 26.04.2020 दिन-रविवार
(विक्रम संम्वत 2077)
विजयादशमी, दिन-रविवार
दिनांक 25.10.2020ई0

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ॐ

श्री गुरुः शरणम् :—

श्री गुरु कि असीम कृपा द्वारा :—

आज दिनांक १९।१।२००७ को शुभ वार जनवरी १९ सन् २००७ माघ वदी ३० संवत् २०६३ अर्द्ध-कुम्भ मेला (प्रयागराज) इलाहाबाद के पावन पर्व पर ब्रह्मलीन १००८ संत श्री प.पू.श्री स्वामी हंसानन्द सरस्वती जी महाराज अद्वैतानन्द योग आश्रम गंगा घाटी स्थित आश्रम में उनके शिष्य ब्रह्मलीन पूज्य स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी महाराज उर्फ जगलीया बाबा कि स्मृती हेतू श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी कि उपस्थिती में चक्र के लिये गये निर्णय पर संत शिरोमणि श्री जगलीया बाबा के तपस्थली श्री गोपाल धाम में बाबा की संगमरमर निर्मित प्रतिमा लोकार्पण का स्वामी जी से निवेदन किया गया जो भक्तों को प्रेरित करें।

अपने गुरु का
मुकुन्द ब्रह्मचारी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री गुरु शरणम् मम

आज दिनांक १९।६।०६ दिन मंगल वार को, सन्त गुरु श्री ज्ञानेश्वर बाबा की संगमरमर कि प्रतिमा के लिये जयपुर सहर शंकर आर्ट से अग्रिम राशि ११०५१ रुपया भुगतान किया गया।

(हस्ताक्षर)

सम्पूर्ण मिला।।
बालचन्द दूबे
ह० ५०।१००००।५०

श्री गणेशाय नमः

आज दिनांक ३।७।०६ को भगवान शिव परिवार सहित दो ~~*~~ दो अदद संगमरमर प्रतिमा का बनाने हेतु अग्रिम दिया गया।

अपने गुरु को
(हस्ताक्षर)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महामण्डलेश्वर योगीराज दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी

ऋषि-गोत्र परिचय

भरद्वाजं प्रवक्ष्यमि गोत्रं तु मुनि सम्मतम्।
ब्रह्मणस्त्वंगिराः पुत्रस्तस्य जातो वृहस्पतिः ॥1॥

तस्य पुत्रः कचों जातो भरद्वाजस्ततो मतः।
तस्माद् भारद्वाजो जातः पण्डितस्य पढं गतः ॥2॥

द्रोणाचार्यस्ततो जातस्तस्य पुत्र चतुष्टयम्।
अश्वत्थामा वामदेव उतंगश्च भुजंगकः ॥3॥

अश्वत्थामा भवयोगी मयस्ते वंश भाजिनः।
ऊषुः साईपुरे ग्रामे पाण्डेश्च पदवीं गताः ॥4॥

तात्पर्य कि- मुनियों की सम्मति से स्वीकृत भरद्वाज वंश का तद्नुसार वर्णन मैं करता हूँ ब्रह्मा से अंगिरा ऋषि हुए, अंगिरा से देव पुरोहित वृहस्पति, वृहस्पति से कच, उनसे भरद्वाज, भरद्वाज से पण्डित भारद्वाज हुए। पण्डित भारद्वाज से विश्वविख्यात वीर द्रोणाचार्य जी हुए। द्रोणाचार्य जी के अश्वत्थामा, वामदेव, उत्तंग एवं भुजंग चार पुत्र हुए। अश्वत्थामा तो योगी हुए शेष तीन पुत्रों की वंश वृद्धि हुई और कालान्तर में आगे चल कर ये (कान्यकुब्ज देश के) साईंपुर गाँव में बसे। पण्डित से क्रमशः इनकी पदवीं पाण्डेय की हो गयी और वे साईपुर पाण्डेय की पदवीं से अलंकृत हो गये। पुनः आगे चलकर द्रोणाचार्य जी के तीसरे-चौथे पुत्र उतंग-भुजंग को विशेष वंश वृद्धि हुई उक्त दोनों उत्तंग-भुजंग पुत्रों के बाद इस वंश परम्परा में पूँजी और भैंरव नामक दो व्यक्ति बहुत प्रतापी हुए, भैंरव पाण्डेय कपिला से निकलकर असनी गाँव के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खोर मुहल्ले में आकर निवास किये। इनके वंशज आगे चलकर खोर के पाण्डेय पदवीं से प्रसिद्ध हुए।

ये मर्यादा में सबसे उत्तम माने गये। इनकी मर्यादा 20 विश्वा थी। भैरव पाण्डेय के तेरह पुत्र हुए, इनमें से तीसरे पुत्र का नाम गदाधर पाण्डेय था। यवन शासन काल में कान्य कुब्ज देश छोड़कर सर्व प्रथम ये गदाधर पाण्डेय ही इधर इस देश में आकर मचियांव गाँव में बसे। अब इनके वंशजों का नया नाम मचियाँव पाण्डेय हो गया। बहुत समय व्यतीत होने के कारण 'खोर के पाण्डेय' वाले प्रथम नाम से इनका सम्पर्क छूट गया।

मचियाँव के पाण्डेय इस देश में विख्यात माने गये हैं। मचियाँव बिहार प्रान्त में शाहाबाद जिले के चैंनपुर परगने में पड़ता है। इन्हीं गदाधर पाण्डेय के वंश में आगे चलकर हरसू पाण्डेय बड़े प्रतापी पंण्डित हुए जो चैंनपुर के ही निवासी थे। ये राजा शालिवाहन के गुरू थे। गुरू-शिष्य में किन्हीं कारणों से मतभेद हो जाने से पण्डित हरसू पाण्डेय ने प्राण त्याग किया और ब्रह्म हो गये। वे सूक्ष्म शरीर धारण करके पण्डित हरसु पाण्डेय से हरसू ब्रह्म बन गये।

हरसू ब्रह्म ने राजा शालिवाहन एवं महारानी मनिकमती को युद्ध में मार डाला और उनकी सेना का नाश कर दिया। हरसू पाण्डेय पाँच भाई थे, हरसू, हरदास, भवदास, शिवदास, रामदास प्राण त्यागते समय हरसू पाण्डेय ने अपने भाइयों को डीह छोड़ अन्यत्र जा बसने के लिए कहा तथा राजा के राज्य में जल पीने तक की मनाही कर दी। अतः हरदास पाण्डेय अपना गाँव छोड़कर गाजीपुर जिले में औड़िहार स्टेशन के निकट मंसोड़ गाँव में बसे। तीसरे भाई भवदास पाण्डेय जिला-मिर्जापुर, गोपीगंज कस्बे के पास छतुनी गाँव में बसे। इनका परिवार अब भी छतुनी कंठीपट्टी, ऊधोपुरा आदि कई गाँवों में फैला हैं। चौथे भाई शिवदास पाण्डेय जौनपुर जिला में बदलापुर गाँव की ओर बसे। पाँचवें भाई रामदास पाण्डेय मिर्जापुर जिले में बड़हर रियासत की ओर जाकर बसे। पूर्वोक्त हरदास पाण्डेय के दो नाती रामरतन पाण्डेय व शिवरतन पाण्डेय थे। मसोढ़ से शिव रतन पाण्डेय जिला-आजमगढ़ की ओर गये जिनका परिवार कसड़े, धारांग आदि कई गाँवों में फैला है। मसोढ़ से राम रतन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाण्डेय धुर्वार्जुन ग्राम (जिला–गाजीपुर) में आ बसे। रामरतन पाण्डेय के पुत्र रामदत्त पाण्डेय, देवदत्त पाण्डेय, शिवदत्त पाण्डेय, रघुबर दत्त पाण्डेय हुए। रामदत्त पाण्डेय के चार पुत्र हुए जिनका नाम क्रमशः मनिकराज पाण्डेय, धनराज पाण्डेय, मनराज पाण्डेय और रघुराज पाण्डेय था। मनिकराज पाण्डेय के वंशज ध्रुर्वाजुन तथा पास के अन्य दो गाँवों में रहते हैं। धनराज पाण्डेय के वंशज पाँच गाँव में है जैसे– खजुरा, बूढ़नपुर आदि। मनराज पाण्डेय के भी वंशज टंडवाँ, मौधिया आदि गाँव में है। रघुराज पाण्डेय के वंशज चार गाँव में रहते है जैसे– सिहोरी, अतरसुवा, देवसिहा और इमिलिया।

इसी सिहोरी गाँव से निकलकर राम किशोर पाण्डेय जिला–बलिया (उ0प्र0) के नवरंगा गाँव जो (वर्तमान में जिला–बक्सर बिहार) के नवरंगा गाँव में बसे। इनका दो विवाह था ज्येष्ठ पत्नी से– राजनारायण पाण्डेय थे और दुसरी लहुरी पत्नी से इनके पाँच पुत्र हुए, उनका नाम– गिरवर पाण्डेय, धनुकधारी पाण्डेय, मदन मोहन पाण्डेय आदि थे। आधे का हकदार राजनारायण पाण्डेय और आधे में पाँच भाई हुए, जिनका वंशज नवरंगा, भुवाल छपरा, शिवपुर आदि गाँव में जाकर बसा। पूर्वोक्त अतरसुवा गाँव से गोर्वद्धन पाण्डेय भोजापुर गाँव में आकर बसे। भोजापुर से बहोरन पाण्डेय बैरिया गाँव में आकर बसे। बैरिया गाँव के पाण्डेय परिवार बड़े ही कुलीन और विख्यात है ये लोग राज घराने के समझे जाते है।

राजनरायन पाण्डेय के पुत्र धनकाल पाण्डेय हुए जिनका परिवार को अधवार टोल कहा जाता है। नवरंगा गाँव में अधवार टोल में आगे चलकर राम शरण पाण्डेय हुए। ये उस समय फौज में हवलदार पद पर नियुक्त थे, सेना से पेन्शन होने के पश्चात् 48 वर्ष तक परिवार से अलग रह कर भगवत भजन किया करते थे। लगभग 110 वर्ष तक जीवित रहे। इनके चार पुत्र थे जिनका नाम हीरा पाण्डेय, नौबत पाण्डेय, सोहबत पाण्डेय और हरिकेशव पाण्डेय था। इनमें हीरा पाण्डेय को वंश नहीं था, शेष तीन लोगों की वंश वृद्ध हुई। नौबत पाण्डेय और सोहबत पाण्डेय दोनों भाई बड़े कर्मकाण्डी आचारनिष्ठ ब्राह्मण थे, नौबत पाण्डेय वेदान्त के अच्छे ज्ञाता और पण्डित थे। इनकी मृत्यु की घटना बड़ी महत्वपूर्ण और रोचक है। एक दिन ये अपने डेरे से घर आये और बोले मेरा अन्तिम् समय निकट आ गया है। वे अपने पढ़ाये सभी शिष्यों को बुलाये जिसमें से दो शिष्य ही उनके पास आये और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बोले-गुरूदेव क्या आज्ञा है। ये शिष्य थे श्री रोशन पाण्डेय और मनिराम पाण्डेय (स्वामी राघवानन्द जी एवं स्वामी कृष्णानन्द जी) शिष्यों को पास बुलाकर नौबत पाण्डेय जी ने बताया कि अब मेरा शरीर छूटने का समय निकट है जब तक मैं जीवित हूँ। मेरे परिवार का कोई सदस्य मुझसे मिलने का प्रपंच खड़ा न करने पावें यह मेरी अन्तिम इच्छा है। ऐसा कहने के बाद वे अलग कुशासन पर समाधि की मुद्रा में जाकर बैठ गये। इस प्रकार घंटो समाधिस्थ रह कर रात्रि लगभग 8.00 बजे उनके मुख से ओम् शब्द का उच्चारण हुआ और उनका प्राण शरीर से निकल गया।

उस अवधि में उनके दोनों पुत्र रामानन्द पाण्डेय तथा राम दहिन पाण्डेय उनके पास मौजूद थे।

राज रोशन पाण्डेय ऊर्फ
(महा मण्डलेश्वर योगी राज दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी)
का बाल्य जीवन-शिक्षा- संस्कार

सोहबत पाण्डेय के दो पुत्र हुए- बेचू पाण्डेय और राज रोशन पाण्डेय, इनमें बेचू पाण्डेय ज्येष्ठ थे नौबत पाण्डेय की भाँति ही सोहबत पाण्डेय कर्मकाण्डी, संस्कारवान और आचारनिष्ठ ब्राह्मण थे। आप अपने कनिष्ठ पुत्र राज रोशन पाण्डेय को आठ वर्ष की अवस्था में ही विधिवत यज्ञोपवित संस्कार कराये। राज रोशन पाण्डेय अपने पिता सोहबत पाण्डेय के प्रभाव एवं घर परिवार के धार्मिक वातावरण से छोटी अवस्था में ही संध्या-गायत्री करना आरम्भ कर दिये। इस प्रकार इग्यारह-बारह वर्ष की अल्प आयु में ही ये संध्या, गायत्री एवं धार्मिक कार्य करने लगे। जब इनकी अवस्था तेरह वर्ष की थी इनके पिता जी का देहान्त हो गया। आपके पिता की मृत्यु की घटना भी रहस्यमयी है।

यह बात नवरंगा गाँव में सर्वविदित है कि सोहबत पाण्डेय ने अपने कनिष्ठ पुत्र राज रोशन पाण्डेय को पास बुलाकर कहा आज तुम्हारे लिए मैं कुछ आदेश दे रहा हूँ इसे ध्यान से सुनो, उसे घर परिवार के सदस्यों से कभी नहीं बताना। मैं अब जा रहा हूँ अर्थात् आज मेरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मृत्यु होगी। तुम अपना विवाह न करना। ब्राह्मण का सर्वोच्च धर्म है कि वह तपस्वी बने। अपना जीवन धर्म साधना, भगवत भजन एवं परोपकार में लगावें। तुम अभी कुछ दिन के लिए सेना में भर्ती होकर देश-विदेश का भ्रमण करोंगे। किन्तु सेना की सरकारी सेवा से निवृत्त होकर 25 वर्ष की अवस्था के बाद तुम आगे चलकर सन्यासी बनोगे। यह कितने रहस्य एवं विस्मय का विषय है कि गृहस्थाश्रम में रहते हुए इनके पिता सोहबत पाण्डेय जी राजा जनक की तरह अपने योग बल से अपनी मृत्यु तथा (चरित नायक) श्री राज रोशन पाण्डेय उर्फ (महामण्डलेश्वर योगी राज दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती) के भावी जीवन के सम्बन्ध में भविष्यवाणी की जो पूंरी तरह सत्य सिद्ध हुई। उसी दिन सायं काल की बेला में श्री सोहबत पाण्डेय जी कुशासन पर बैठे हाथ में स्वयं लाये हुए मिट्टी के घड़े से गंगा जल अपने गिलास में ढ़ारकर सोहबत पाण्डेय जी उसमें तुलसी पत्र छोड़ते हुए अपने मुख में डालकर उस गंगा जल को पी गये और ध्यान का मुद्रा में बैठ गये। उसी समय राज रोशन पाण्डेय जी अपनी माता जी के साथ वहाँ पहुँचे। कुशासन पर समाधि अवस्था में बैठे उनके पिता सोहबत पाण्डेय जी के मुख से ओम् शब्द का उद्घोष हुआ और उनके प्राण- पखेरू, नश्वर शरीर को त्याग कर उड़ गया और वे हमेशा के लिए ब्रह्म में विलिन हो गये। पिता की मृत्यु के पश्चात् कुछ दिनों तक राज रोशन पाण्डेय गृहस्थाश्रम में रह कर सामान्य जीवन बिताएं तथा अपना दैनिक कर्तव्य-कर्म सम्पादित करते रहे। अपने जागरूक जीवन के आरम्भ से इनकी साधु संन्यासियों के प्रति अपार श्रद्धा थी क्योंकि इनका परिवार पण्डित कर्मकाण्डी एवं साधु सेवी था। कुछ दिन बाद लगभग 17 वर्ष की अवस्था में नौकरी की तलाश की अन्तः प्रेरणा से घर छोड़कर बंगाल की ओर भाग निकले, एक वर्ष तक इधर-उधर बाहर समय गवां कर पुनः घर लौट आए और घर पर ही गृहस्थी का काम-काज करने लगे।

सेना (फौज) में प्रवेश-

सन् 1914 ई0 का प्रथम महायुद्ध छिड़ा। अन्य नौजवान तरूणों की भाँति राज रोशन पाण्डेय के खून में भी जोश और तेजी थी अतः अन्य युवकों के साथ फौज में भर्ती हो गये। उस समय इनकी उम्र लगभग 24 चौबीस 25 पच्चीस वर्ष की थी इनकी भर्ती बनारस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

छाँवनी में की गयी थी, और कुछ ही दिनों में इनकी फौज बसरा भेज दी गयी। तीन वर्ष आठ माह तक ये घमासान युद्ध के बीच मोर्चे पर गोली-बारूद की वर्षा के मध्य अपना यथोचित कर्तव्य पालन करते रहे। फ़ौज में सेवा करते हुए राज रोशन पाण्डेय सदा अपने ब्राह्मणोचित आचार-विचार से रहे। कभी भी वे स्नान संध्या किये बिना भोजन ग्रहण नहीं किये। फौज में भी समयानुकूल ये सदा भजन करते रहे भजन करने तथा आचार निष्ठ जीवन बिताने के कारण ही ये 'साधु' उपनाम से विख्यात थे।

दिनांक 11-11-1928 ई0 को जर्मन युद्ध में सुलह हो जाने के कारण तीन वर्ष आठ महीने के बाद इनकी फ़ौज का दस्ता विदेश से भारत लौट आया और एक वर्ष तक ये वारिकपुर छाँवनी में रहे। यहाँ से यह फ़ौजी दस्ता फैजाबाद छाँवनी में चला आया। जहाँ ये लगभग तीन वर्ष तक रहे। वहाँ बड़ी लगन तत्परता एवं साधना पूर्वक इनका भगवत भजन निर्विघ्न चलता रहा। सरकारी कर्तव्य कर्म के अतिरिक्त एक क्षण समय भी ये अन्य कार्यों में नहीं लगाते थे। फ़ैजाबाद प्रवास में आपके जीवन की दूसरी महत्वपूर्ण घटना घटी जो सचमुच आश्चर्य कारक है। **"होन हार वीरवान के होत चिकने पात"** के अनुसार साधुओं के प्रति तो आपके हृदय में पहले से ही अपार श्रद्धा भक्ति थी। अतः फ़ौज में आने पर भी अच्छे संत योगी और ख्याति प्राप्त महात्माओं का तनिक भी पता पाकर आप उनके दर्शन की खोज में बेचैन रहते थे। इस प्रकार कई सुयोग्य साधुओं द्वारा आप बराबर कड़ी अग्नि परीक्षा में तपाये जाते रहे। यहाँ तक कि कई सन्तों द्वारा तो आप धुनी के जलते चैलें से पीटे गये। किन्तु फिर भी आपका यह साधु स्नेह कम नहीं हुआ।

एक बार की बात है कि फ़ैजाबाद की गलियों में एक सिद्ध महात्मा पागल की भाँति घुमते-फिरते देखे जाते थे। जनता उन्हें पागल समझ कर विशेष ध्यान नहीं देती थी। एक बार पूर्व जन्मार्जित संस्कार से प्रेरित होकर अपनी डियूटी में रहते हुए भी इन्होंने पागल के रूप में छिपे उस महात्मा जी का उत्सुकता वश पीछा किया। महात्मा नगर से बाहर सरयू नदी के एकान्त तट की ओर भागे जा रहे थे, संध्या का समय था। अन्धकार होने ही वाला था कि महात्मा जी नदी तट पर लगे काश (मूज) एवं झाऊ के जंगल में घूस गये राज रोशन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पाण्डेय भी उक्त महात्मा जी का पीछा किये, मिलो तक काश के जंगल एवं अंधकार में उनका पीछा किये। कुछ समय बाद कांश का जंगल समाप्त होने पर उन्होंने देखा बालू का मैंदान है और आगे सरयू नदी का छाड़न फैला है उसी छाड़न के बीच रेत पर जलती धुनी के सामने मृग चर्म पर समाधिस्थ एक महात्मा दिखाई पड़े उन्हें प्रतीत हुआ कि सम्भवतः वही महात्मा है जिनका पीछा किया जा रहा था। उस रूप में वहाँ विराजते थे। रात अधिक हो गई थी, कार्तिक शुक्ल पक्ष देव एकादशी का दिन था। चन्द्रमा आसमान में ऊपर जा चढ़े। चाँदनी मानो पृथ्वी पर दूध बरसा रही र्थी। कितना मनोहर शीतल सुखद और सुहावना दृश्य था, यह नैसर्गिक छटा के अनुभवी ही बता सकते है। राज रोशन पाण्डेय बड़े आश्चर्य में पड़े जिसे इन्होंने पागल समझ रखा था वह तो महायोगी निकले।

पहले तो उन्हें महात्मा जी के निकट जाने में भय मालूम हुआ किन्तु साहस करके उनके निकट गये और धुनी से कुछ दूर पर खड़े होकर दण्डवत् एवं मन ही मन प्रार्थना करते रहें। कुछ देर बाद महात्मा जी की आँखे खुली और उन्होंने कहा अरे कौन हैं, फौज वाले इधर आओ। महात्मा जी की बात सुन कर राज रोशन पाण्डेय डरते-डरते धीरे-धीरे उनके निकट गये और साष्टांग दण्डवत किये। इधर महात्मा जी ने धुनी से जलता चैला उठा कर राज रोशन पाण्डेय की पीठ पर तीन बार मारा। किन्तु उन्हें न तो चोट लगी और न कमीज के कपड़े ही जले पाण्डेय जी के मन में इस घटना की ग्लानि नहीं हुई मन में सोचने लगे महात्मा जी एक चैला और मारते तो मेरा पाप खत्म हो जाता। उस पर महात्मा जी उठकर लातों से मारने लगे और कहते रहे यह बड़ा बदमाश है मैं यहाँ छः महीने से रहता था पर किसी ने नहीं जाना, इसने आकर मेरी शान्ति भंग कर दी अब रहस्य भेदन हो गया, भजन करते नहीं बनेगा। महात्मा जी अपने आसन पर बैठ गये और मंद-मंद मुस्कुराते रहे। थोड़े देर बाद अपने मृग चर्म पर आँखे बन्द कर लेट गये। उनके लेटने पर राज रोशन पाण्डेय जी उनका चरण दबाना शुरू किये, चरण पकड़ते ही पुनः महात्मा जी उनकी छाती पर लात मारे इस पर राज रोशन पाण्डेय जी सम्भलते हुए उनका चरण पुनः दबाने लगे। राज रोशन पाण्डेय उस समय सेना में हवलदार मेंजर पद पर थे। साढ़े नव बजे रात्रि में अर्दली हवलदार की डियूटी होती थी कि वह दस्ते के सभी सिपाही हवलदार नायक, जमादार सबकी गंणना करके कम्पनी कमाण्डर को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूचित करें। उस पर उस दिन साप्ताहिक कार्य (डियूटी) बाँटने का दिन था यह दोहरा उत्तरदायित्व था। यह उन्हीं की समस्त जिम्मेदारी थी। फौजी कानून सख्त होता है। इस सूचना रहित अनुपस्थिति के लिए उन्हें एसेम्बली कोर्ट मार्शल का दण्ड भुगतना पड़ता। किन्तु सब कुछ जान कर भी वे उदास नहीं थे सोच रहे थे चलो बहुत दिन से फौज से नाम कटवाना चाहता था, आज इसी बहाने नाम कट जाय, मुकदमें द्वारा सजा मिले या निकाल बाहर किया जाये चिन्ता ही क्या है? साधु सेवा में ही तो लगा हूँ। इसके बाद महात्मा जी की आँख खुली। उन्होंने पूछा कि तुम अभी यही हो, मैं तुम पर बहुत प्रसन्न हूँ तुम बड़ा कट्टर भक्त निकला मांगो क्या चाहता हैं, कुछ देर तक परस्पर बाते होने के बाद राज रोशन पाण्डेय बोले-आप अंतर्यामी व आत्म ज्ञानी महात्मा है।

मैं जिस वस्तु की कामना करता हूँ वह आपको स्वतः ज्ञात हैं इस पर महात्मा जी हँसते हुए बोले-अरे साले सन्यासी होना चाहता हैं। तुम्हारे पिता ने बचपन में तुम से भी कुछ कहा हैं उस पर तुम्हें विश्वास नहीं है। पहले तो राज रोशन पाण्डेय ने बहाना किया बोले मुझे याद नहीं है, तद्परान्त उस विज्ञानी योगेश्वर महात्मा जी ने बचपन में राज रोशन पाण्डेय से उनके पिता द्वारा कही सभी बातों को ज्यों का त्यों उपस्थित कर दिया अन्त में महात्मा जी ने कहा जाओ घबराना मत। तुम्हारे पिता जी के कहे वचन सत्य होंगे। आज के आठवें महीने तुम्हारी फ़ौज का दस्ता मेसोपीटामिया जायेगी। वहीं मूसल शहर में तुम्हारी सेना का दस्ता रहेगा, वहीं तत्परतापूर्वक तुम्हारा भजन होता रहेगा। आश्चर्य नहीं कि तुम्हें गोली मारने का हुकुम हो किन्तु डरना मत, तुम्हारा बाल बाका नहीं होगा। महात्मा जी की बात सुन कर राज रोशन पाण्डेय को आश्चर्य हुआ। उन्होंने देखा महात्मा जी की उम्र तीस-पैंतीस वर्ष की लग रही है वस्तुतः इतना स्पष्ट भूत-भविष्य बताने वाले महात्मा कौन है? बशिष्ठ, अंगिरा, अश्वत्थामा आदि है या कौन? कुछ समझ में नहीं आता।

भक्त के विस्मय को समझकर महात्मा जी बोले-बेटा मैं प्राचीन महात्माओं में से नहीं हूँ मैं कलि के ही संतो में से हूँ। इस साल एकादशी के दिन मेरी आयु 952 वर्ष की हो चुकी हैं। महात्मा जी की बात सुन कर राज रोशन पाण्डेय जी के मन में शंका एवं विस्मय का होना स्वभाविक था उनके द्वारा खण्डन करने पर महात्मा जी उन्हें फटकारते हुए अपना हाथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनके सिर पर रख दिया। आँख बन्द होते ही राज रोशन पाण्डेय ने देखा- हड्डियों वाला लम्बा चौड़ा ढ़ाचा झुलसा हुआ अति जीर्ण शरीर दिखाई पड़ा आँख की पपनिया बित्ता भर नीचे लटक आयी है। शरीर का चमड़ा झूला हुआ है सिर पर महात्मा जी के हाथ पड़ते ही राज रोशन पाण्डेय जी को दिव्य दृष्टि प्राप्त हो गयी थी। बाल्यकाल से 952 वर्ष की अवधि तक का महात्मा जी का समग्र जीवन चरित्र उन्होंने मानो चित्रलिपि में अंकित देख लिया हो। अन्त में राज रोशन पाण्डेय जी अपने अपराधों की माफ़ी महात्मा जी से मांगते हुए पूछा कि आप किस प्रकार इतने दिनो तक जीवित हैं। यह सुन कर महत्मा जी ने बताया कि योगाभ्यास के बल से मुझे यह शक्ति प्राप्त है। योग शक्ति का प्रभाव है कि जिस अवस्था में जो योगाभ्यास आरम्भ करता है सिद्धि प्राप्त हो जाने पर सदा उसकी वहीं अवस्था दिखाई पड़ती है। कई बार मैं अपना काया कल्प कर चुका हूँ, छ: महीने तक मैं यहाँ बड़े आराम से था किन्तु तुमने पीछा करके अच्छा नहीं किया। अब मैं नीलकंठ पर्वत पर जा रहा हूँ वही समाधि में बैठूँगा। अन्त में राज रोशन पाण्डेय ने महात्मा जी से अनुमति माँगी, उस समय महात्मा जी बोले-निर्भय होकर जाओं तुम्हारी तनिक भी हानि नहीं होगी। यह रहस्यमयी लीला यही समाप्त हुई।

राज रोशन पाण्डेय अपने फौजी बैरक की ओर लौटे। पच्चीस कदम आगे जाकर पीछे की ओर देखा तो वहाँ उस रेत पर न महात्मा जी दिखाई पड़े और न उनकी जलती धुनी ही नज़र आयी लगभग एक बजे रात्रि में राज रोशन पाण्डेय जी अपनी छाँवनी पहुँचे। इन्हें इस बात का डर था आज बड़ी भारी भूल हुई है। अत: डरते-डरते अपने सहायक जमादार रामशब्द सिंह से (जो क्षत्रिय थे) जगाते हुए पूछा- क्या बटालियन की गिनती हो गई। राम शब्द सिंह तत्काल बोले-स्वप्न देख रहे हो क्या ? क्या आज तुमने भाँग छान रक्खा हैं, स्वयं खड़े होकर गिनती ले चुके हो और अब पूछते हो कि क्या गिनती हो गई। इसके बाद वे रजिस्टर उठा कर देखे तो रजिस्टर में इनकी वास्तविक हस्ताक्षर भी बनी थी। यह सब कुछ उस सिद्ध महात्मा का चमत्कारी प्रभाव हैं यह समझते उन्हें देर न लगी।

गोस्वामी तुलसी दास ने ठीक ही कहा है कि-

विधि हरिहर कवि कोविद बानी।
कहत साधु महिमा सकुचानी॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसी दिन से राज रोशन पाण्डेय जी के हृदय में वैराग्य की भावना विशेष प्रबल होकर जाग उठी और उन्हें फौज की सेवा त्याग कर भजन के लिए प्रेरित करती रही। एक दिन इनके हृदय में सहसा विचार आया कि हनुमान जी का अनुष्ठान करें, उनका प्रत्यक्ष दर्शन करके वरदान प्राप्त करूँ। ऐसा संकल्प लेकर वे निश्चित तिथि को रात्रि में अनुष्ठान प्रारम्भ किये एक पीपल के वृक्ष के नीचे 10 बजे रात्रि से 2 बजे रात्रि तक अनुष्ठान क्रिया करते थे। आठ दिनों तक उन्हें कुछ पता नहीं चला। उसके बाद तरह-तरह का भय का अनुभव होने लगा। भय की परवाह न करते हुए 40 दिनों में हनुमान जी के दर्शन का वे दृढ़ निश्चय कर रखे थे। 21वें दिन उन्हें सहसा यह खबर मिली कि परसों आपका फ़ौजी दस्ता मेसोपिटामिया जाएगा। यह सुनते ही वे चिन्ता से व्यग्र हो गये और अन्न-जल छोड़ दिये। रात को स्वप्न में किसी देव स्वरूप मानव ने आकर कहा कि मुझे क्यों हैरान करते हो मैं तुम्हारे बचपन से ही तुम्हारा प्रेम देख सदा तुम्हारी रक्षा में तत्पर रहता हूँ चिन्ता मत करो किसी प्रकार का संकट आने पर मैं तुम्हारे साथ हूँ।

राज रोशन पाण्डेय का फ़ौजी दस्ता निश्चित तिथि को मेसोपिटामिया के लिए रवाना हो गया। जाने से पूर्व पाण्डेय जी ने नाम कटवाने के लिए प्रार्थना-पत्र दिया पर उस प्रार्थना-पत्र पर सुनवाई नहीं हुई। सेनाधिकारी उन्हें ऊँचा पद देकर फँसा रखने का मन ही मन विचार बना चुके थे। सेना निर्धारित समय पर बसरा पहुँच गई। वहाँ पहुँचने पर कुछ ही समय बाद उन्हें बटालियन हवलदार मेजर का पद दिया गया। वहाँ से फ़ौज का दस्ता मूसल शहर पहुँचा। पहाड़ी पर फ़ौज का डेरा गिरा। इसके बाद वे व्रिगेडियर जनरल के नीचे फ़ौजी इन्सट्रक्टर का कार्य करते रहे। इनकी देख-रेख में जमादार, लैफ्टिनेंट, कर्नल इत्यादि सभी लोग प्रशिक्षण प्राप्त करते थे। इसी अवधि में इनका सम्पर्क तत्कालीन सेनाध्यक्ष लार्ड कर्जन से हुआ, कर्नल ने सेनाध्यक्ष से इनकी धार्मिक कट्टरता निष्ठा एवं विशिष्ट जानकारी के सम्बन्ध में चर्चा की थी। समय-समय पर भेंट होने पर कर्नल इनसे हिन्दू धर्म से सम्बन्धित बहुतेरी सामान्य बातें कौतूहलवश पूछता था। उचित उत्तर पाकर उसे प्रसन्नता होती थी। कुछ ही दिनों में सेनाध्यक्ष इनके व्यवहारिक सद्गुणों से प्रभावित हो गया और कर्नल से इन्हें ऊँचे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पद पर तरक्की देने के सम्बन्ध में परामर्श करने लगा। इस प्रसंग के उपस्थित होने पर कर्नल ने कहा ये अब साधु होने को व्यग्र है और फौज से नाम कटवाने के लिए कई बार आवेदन कर चुके हैं। इस बात को सुन कर लार्ड कर्जन ने इन्हें बुलाकर बहुत समझाया और पूर्ण आश्वासन दिया कि शीघ्र तुम्हे कप्तान बना दूँगा। इसके बाद पेंशन लेकर तुम साधु होना। कप्तान पद की परवाह न करके अपना नाम कटवाने के लिए बार-बार प्रयत्न करते रहे। इन्सट्रक्टर (प्रशिक्षक) पद से आखिर हटकर वे अपने पूर्व फ़ौजी पद पर काम करने लगे। प्रारब्ध कर्म प्रबल होता है। पूर्व संचित संस्कार की प्रेरणा से वर्तमान में सभी कार्य संचालित होते रहते हैं। जन्मान्तर की कर्म प्रबलता से इनकी वैराग्य भावना तीव्र वेग से मन पर सवार हो गयी। फलस्वरूप इन्हें फ़ौजी पद पर बने रहना भार मालूम होने लगा।

राज रोशन पाण्डेय ने कर्नल के यहाँ पुनः प्रार्थना पत्र दिया कि मुझे फ़ौजी सेवा से मुक्त किया जाय। कर्नल ने इनका आवेदन पत्र को अस्वीकृत कर दिया किन्तु इनकी हठधार्मिकता नहीं छूटी ये अपने प्रयास में लगे रहे। धीरे-धीरे इनका भजन की क्षमता बढ़ने लगी, प्रति दिन 3 बजे रात्रि से ही उठकर ये अपनी पूजा-साधना मे रंत रहते, और पुनः अपनी सेना की डियूटी करते थे, दोपहर में भोजन और विश्राम, पुनः भजन करना तथा साथ ही पद का उत्तरदायित्व संभालना यही कार्यक्रम चलने लगा। रात में तीन घण्टे से अधिक विश्राम नहीं करते थे। आखिर एक दिन ये कर्नल को स्पष्ट चुनौती दे ही दिये कि आज से नब्बे दिन तक आप हमसे काम ले सकते हैं उसके बाद मुझसे काम नहीं करा सकते मुझे मुक्त करना ही होगा।

समय व्यतीत होता गया नब्बे दिन में केवल अब 15 दिन शेष था, एक दिन नल का पानी बन्द हो गया, फलतः प्रातः काल अपनी डियूटी के पूर्व स्नान-पूजा से निवृत्त नहीं हो सके। इनकी प्रतिज्ञा थी कि बिना स्नान पूजा किये डियूटी पर नहीं जा सकता। पांच बजे भोर तक उस दिन जल नहीं आने से नित्य क्रिया में विलम्ब हो गया।

ये स्नान पूजा करने में लगे रहे, उधर फ़ौजी दस्ता कवायद परेड़ के लिए तैयार हो गया। सुबेदार राम सिंह ने इन्हें बड़ा फटकारा बोला फ़ौज तैयार है और तुम पूजा में लगे हो, आज फ़ौजी नियम की अवहेलना हुई तो पता चलेगा। हम तुम्हारे राम को देखेंगे। बात बढ़ी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

और सुबेदार ने इनके विरुद्ध अनुशासन हीनता एवं आदेश अवहेलना का आरोप लगा कर उच्चाधिकारियों के यहाँ विभागीय कार्यवाही के लिए प्रेषित कर दिया। फलतः उन्हें नजरबन्द करके फ़ौजी अदालत में पेश किया गया। 10 बजे इन्हें कर्नल के आदेश से विग्रेडियर जनरल के समक्ष उपस्थित किया गया। कवायत परेड समाप्त होने पर बहुतेरे सिपाही एवं हवलदार आदि ने इन्हें घेर लिया। बहुत से लोंग जो इन्हें अपना आचार्य एवं गुरू मानते थे विद्रोह करने को उतावले हो रहे थे। ये आँखे बन्द कर भगवान के ध्यान में बैठे थें सोच रहे थे शरीर तो नश्वर है किन्तु अब नाम की मर्यादा जा रही हैं भगवत भजन पूजन के अतिरिक्त मेरा अपराध क्या है। उसी समय वे हनुमान जी को स्मरण किये, अनुष्ठान के समय उनका आश्वासन मिल चुका था कि संकट आने पर देखा जायेगा। उसी वक्त उन्हें स्वप्न का भान होने लगा। ऐसा प्रतीत हुआ कोई उनके सामने खड़ा होकर आश्वासन दे रहा है। धैर्य रखो घबराओ मत। नाम की मर्यादा नहीं जायेगी।

राज रोशन पाण्डेय 10 बजे फ़ौजी अदालत के समक्ष पेश किये गये। सुबेदार हवलदार एवं अनेको फ़ौजी अफ़सर तमाशा देख रहे थे, साधु नजरबन्द है देखे आज क्या होता है। कर्नल ने इनकी 'कंडक्ट सीट' आचार-पुस्तिका निकालकर देखते हुए कहा- ऊँचे दर्जे का अफसर होकर तुमने ऐसी अवज्ञा क्यों की। सरकार की राजभक्ति की शपथ लेकर क्या ऐसा करना उचित था ? कर्नल की बात सुन कर राज रोशन पाण्डेय शेर की तरह निर्भिक होकर बोले मैं आपकी इस शपथ को कोई महत्व नहीं देता। मैं उस शपथ को याद करता हूँ जब मैं अपनी माँ के पेट में नव माह तक उलटे सिर गर्भ में मल-मूत्र के बीच लटका था वहाँ वादा किया था कि बाहर आने पर ईश्वर की भजन करेंगे। कर्नल सुबेदार से इन्हें गोली की सजा देने के पक्ष में परामर्श कर रहे थे उसी समय विचित्र घटना घटी। दैवी कोप हुआ और अचानक न मालूम किसने कर्नल की कुर्सी पलट दी। कर्नल उल्टे मुँह जमीन पर गिर कर बेहोश हो गये। बहुत उपचार के बाद जैसे ही कर्नल साहब ने होश सम्भाला-अपना निर्णय सुनाया तुम निर्दोष हो तुम्हें मुक्त किया जाता है। आज से कोई काम तुम से नहीं लिया जाएगा। तुम्हारी कवायद परेड़ भी माफ करता हूँ। फौजी दस्ते को हिन्दुस्तान पहुँचते ही तुम्हारा नाम काटने के लिए मैं लार्ड कर्नल के पास लिख रहा हूँ। तुम निश्चिंत होकर भजन करो।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर्नल के आदेश से इनके लिए अलग कैम्प में व्यवस्था की गयी, अलग रावटी का प्रबन्ध कर उसमें आवश्यक सुविधाएं दी गयी। यह भजन का प्रभाव एवं नाम की ही महिमा थी। यहाँ तक की स्वयं कर्नल प्रातः सायं आकर इन्हें राम-राम करना एवं समाचार पूछना नहीं भूलते थे। अब वे अलग रह कर भजन करने लगे। तेरह दिन तक भजन करने के बाद लार्ड कर्नल के यहाँ से आदेश आया कि उस पंण्डित को आदर पूर्वक हिन्दुस्तान भेज दिया जाय।

दूसरे दिन प्रातः काल कर्नल ने स्वयं इनके पास जाकर यह खबर सुनायी, यह संवाद सुन कर राज रोशन पाण्डेय ने कर्नल से शुद्ध घी, चावल, गुण इत्यादि हवन सामग्री की मांग किया, सभी व्यवस्था करके उन्हें हवन सामग्री हवन पूजन के लिए दिया गया, संध्या को विधिपूर्वक राज रोशन पाण्डेय जी हवन कार्य सम्पन्न किये। रात्रि बारह बजे तक अपने फ़ौजी सैनिकों व अधिकारियों से मिले। प्रातः सभी फ़ौजी दस्ता के सैनिक अधिकारी उनकी विदाई देने के लिए मुलाकात किये। सभी ने उनको प्रणाम किया और उनसे हाथ मिलाये। अपनी भूलों के लिए खेद प्रकट किये।

दूसरे दिन प्रातः स्नान ध्यान से निवृत्त हो वे सरकारी वाहन द्वारा स्टेशन के लिए रवाना हुए, जहाँ से बसरा पहुँचे पुनः जल-जहाज मार्ग से यात्रा पूरी करके भारत पहुँचे। सर्वप्रथम फतेहगढ़ छाँवनी मे आये यहाँ उनका हिसाब हुआ और नाम काट कर सेवा से मुक्ति दी गई। हजारों रूपये का बहुमूल्य सामान, पोशाक आदि वे सिपाहियों में बाँट दिए, एक मुरैठा को दो टुकड़ा करके अँचला और कोपीन बनाकर धारण किए, पैर में खड़ाऊँ और हाथ में एक लोटा लेकर वहाँ से चल दिए। हजारों व्यक्तियों ने पीछा किया वे कोलाहल से बचने के लिए फतेहगढ़ से फरूखाबाद पहुँचे। वहाँ से मथुरा का टिकट लेकर मथुरा-वृन्दावन आ गये। ब्रज की सौन्दर्य माधुरी पर मुग्ध हो लगभग दो वर्ष तक वृन्दावन-धाम में विचरण करने के बाद एक महात्मा के साथ बांदा जिले में पहुँचे। जहाँ गोपालदास नामक संत से मुलाकात हुई। उनके सम्पर्क में दो वर्ष तक वहीं भजन करते रहे। उनसे आज्ञा लेकर ये काशी आए और काशी से जिला-शाहाबाद (बिहार) चले आए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वहाँ सर्वप्रथम तारनपुर डेरे पर गुरूदेव स्वामी श्री राघवानन्द सरस्वती जी से मुलाकात हुई वे उनसे अपनी सारी व्यथा-गाथा कह सुनाई। उनके साथ पाँच-छः माह तक ब्रह्मचारी रह कर गुरूदेव की सेवा करते रहे। अन्त में गुरूदेव बोले काशी चलो वहीं सन्यास होगा, वहीं दण्ड धारण करना।

संन्यास आश्रम में प्रवेश-

अपने गुरूदेव के साथ चौका घाट वाराणसी कुटी में आकर ठहरे। उस समय सराय गोवर्द्धन मुहल्ले में गाजीपुर जिले के ढ़ढ़नी ग्राम निवासी- विद्वान पं0 नरसिंह दास जी रहते थे, वे ही दण्डी स्वामी श्री राघवानन्द सरस्ती जी की देख-रेख में उन्होंने विधि पूर्वक इनका संन्यास कार्य विक्रम सम्वत् 1977 बैशाख शुक्ल-3 अक्षय तृतीया को सम्पन्न कराए। दण्ड ग्रहण करने पर इनका पारिवारिक नाम राज रोशन पाण्डेय से बदल कर दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती रखा गया। उस समय गुरूदेव स्वामी श्री राघवानन्द सरस्वती जी इनके साथ थे। काशी से मिर्ज़ापुर जिले के निफ़रा गाँव में पहुँचे, यह गाँव गंगा तट पर विन्ध्याचल से चार कोस पश्चिम स्थित है, पहला चर्तुमास निफ़रा गाँव में किए। दो तीन वर्ष इस क्षेत्र में निवास करने के बाद आप एक बार पैदल विचरते हुए चित्रकूट की ओर चले।

चित्रकूट की रहस्यमयी यात्रा-

पैदल यात्रा करते हुए दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी चित्रकूट पहुँचे और चित्रकूट के विभिन्न दर्शनीय स्थानों में घूमते हुए आप जानकी कुण्ड, स्फटिकशिला होते अनुसूया आश्रम की ओर चले। मार्ग घनघोर जंगल से होकर जाता था और उसमें एकांकी पैदल की यात्रा करना, राह की पूरी जानकारी न होने के कारण आप गलत मार्ग पकड़ लिए और घनघोर जंगल के बीच पहुँच गये। वहाँ आदमी का पता नहीं था जो राह बताता। भयानक जंगली जानवरों के शब्द सुनायी दे रहे थे। जंगल में समतल पहाड़ी मैदान था उसके बगल में पानी का झरना बह रहा था, पास में बैर का सघन वृक्ष था उसके नीचे एक सुन्दर चौकोर शिला पड़ी थी, उसी पर अपना आसन लगाकर स्वामी जी बैठ गये। बैर का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पेड़ लताओं से अविष्टित घनी छाया वाला हो गया था। सूर्य अस्तान्चल की ओर जा रहे थे, राह भूल जाने से आपको भोजन नहीं मिला था, जल-जमनी के पत्ते को जल में मलकर आपने पान किया तथा गिरी हुई पक्के बैरो को इकठ्ठा कर भोजन के लिए आसन पर रखा। ब्रह्मार्पण करके ज्यों ही बेर खाने को आप तैयार हुए एक ओर से तीन हुड़ार (बिगवा) दूसरे तरफ से दो भालू आ पहुँचे यह दृश्य देखकर आप चिन्तित हुए कि 'हे नारायण' यह क्या हुआ ? इतने में पीछे की ओर मुड़ते हैं तो देखते है एक बड़ा बाघ गरजा, बाघ के गरजते ही हुड़ार (बिगवा) और भालू तो भाग खड़े हुए किन्तु वह बाघ वहीं बैठ गया, वह आपके आसन से करीब 15 हाथ की दूरी पर था।

स्वामी जी सोचने लगे शरीर तो नश्वर है यह बदलने ही वाला है, आज शेर के समुख शेर की तरह बातें तो कर लूँ। यही सोचकर उस बाघ के सामने देखते हुए बोले-तुम जंगल का राजा होकर ऐसी नीच भावना से मेरी ओर देखते हो यह कहाँ तक उचित है। तुम्हें संकोच होना चाहिए अपने ऐसे अतिथि के साथ इस निंद्य-व्यवहार के लिए तैयार हो। न मालूम कौन सा निंद्य-कर्म किया तो इस योनि को प्राप्त हुए अब पुनः यह कुल्सित कर्म करने चले हो। खैर यदि यही इच्छा है तो पूर्व के प्रतिकार स्वरूप हिंसा ही तुझे प्यारी है तो करो। शरीर रहने वाला नहीं इसका मोह व्यर्थ है। बाघ को निकट देख स्वामी जी की दोनों आँख बन्द हो गई। नेत्र बन्द होते ही आप भगवान का ध्यान करने लगे, एक ओर तो भय था कि वह हिंसक पशु अपना कार्य करेगा। दूसरी ओर आत्मा की दृढ़ भावना ललकार रही थी कि घबराओं मत जो ईश्वर फ़ौज से बचाकर यहाँ तक लाया वहीं इस शेर से भी अवश्य रक्षा करेगा।

शेर झरने से जल पीने के बाद पत्थर से छाती सटाकर अंगड़ाई लेते हुए दो-तीन बार गरजा अपने पंजो से मिट्टी खरोचते हुए पूँछ पटकते चलता बना। इस घटना के बाद दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी के मन में प्रेरणा होने लगी कि मैं यहीं रहकर भजन करूँगा। प्राचीन समय में ऋषिगण ऐसे ही एकान्त जंगल में रह कर तपस्या करते थे। आप भी यही रह कर तपस्या प्रारम्भ किये। झरने का शीतल जल एवं पक्के बैर का फल आपका जीवन आधार था। प्रतिदिन जंगली जानवर आकर झरने का जल पीते और खेल कूद करते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चले जाते थे, शेर भी आकर झरने का जल पीता और अपनी राह नापता जंगल में चला जाता। भगवान की प्रेरणा विचित्र है, चौथे दिन स्वामी जी के मन में विचार आया विचरण करने आए यहाँ घनघोर बन में आकर राह भूल गए अब कहाँ और कैसे जाऊँ, आपने संकल्प किया कि हे नारायण मार्ग दिखाओं अन्यथा मैं अन्न-जल त्याग कर पंचतत्व में मिल जाऊँगा।

लगभग 12 बजे पत्थर खटका, आँखे खुली तो देखा सामने पीली धोती पहने एक ब्रह्मचारी खड़े हैं। सर्वाङ्ग भस्म रमाए और रूद्राक्ष की माला धारण किए उनका दिव्य-स्वरूप भव्य और आकर्षक था। ब्रह्मचारी पत्थर पर अपना सामान रख दण्डी स्वामी-श्री हंसानन्द सरस्वती जी को दण्डवत किया। स्वामी जी से पूछा कि आप यहाँ कितने दिनों से है। ब्रह्मचारी जी की बात का उत्तर देते हुए स्वामी जी बोले क्या कहूँ मार्ग भटकने पर यहाँ पहुँचा मेरी विवशता है। ब्रह्मचारी ने भिक्षा आदि के सम्बन्ध में स्वामी जी से पूछा और बताए मैं कान्य कुब्ज ब्राह्मण हूँ। दण्डी स्वामी लोग मेरी बनाई भिक्षा ग्रहण करते है। ब्रह्मचारी जी ने अपने झोले से चूल्हा निकाल कर अग्नि प्रज्वलित की और दाल रोटी, सब्जी तैयार करके प्रेम पूर्वक स्वामी जी को शुद्ध घी के साथ प्रसाद ग्रहण कराए। स्वामी जी के कथनानुसार ऐसा, सुगन्धित स्वादिष्ट भोजन जीवन में शायद ही किया हो।

भोजनोपरान्त ब्रह्मचारी स्वामी जी को साथ लेकर उस घनघोर जंगल से घुमाते-फिराते अनुसूया आश्रम की ओर चले संध्या होते-होते अनुसूया आश्रम पर पहुँच गये। स्वामी जी को उचित स्थान पर बैठाकर ब्रह्मचारी डोल-डाल के बहाने वहाँ से रहस्यमय ढंग से न मालूम कहा गायब हो गये। स्वामी जी ब्रह्मचारी की प्रतिक्षा करते रहे, अन्त में निराश होकर ऊपर सिद्ध बाबा के धर्मशाले में चले गये। जहाँ उन दिनों एक वैरागी महात्मा बद्रीदास जी रहते थे। स्वामी जी अपनी राह की सम्पूर्ण कथा वैरागी संत को सुनाई, महात्मा जी स्वामी जी से बोले इस बीहड़ जंगल में दूसरा ब्रह्मचारी कौन है। वह निश्चय ही नारायण थे अथवा इस पर्वत में रहने वाले ऋषियों में से कोई होंगे। आप ठगे गए।

गुप्त गोदावरी की घटना-

अनुसूया आश्रम से दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी गुप्त गोदावरी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पहुँचे, गुप्त गोदावरी से भरत कूप जाने का मार्ग पूछने पर वहाँ के जंगली चरवाहों ने उन्हें गलत मार्ग का रास्ता बता दिया, स्वामी जी उत्तर दिशा के स्थान पर दक्षिण-पश्चिम दिशा की ओर चले गये। कुछ दूर जाने पर जंगल में एक गाँव मिला, वहाँ एक ब्राह्मण की झोपड़ी मिली स्वामी जी संध्या होने के कारण वहीं विश्राम करना चाहते थे किन्तु उन्हें वहाँ रहने की अनुमति नहीं मिली। ऐसी स्थिति में वहाँ से थोड़ी दूर पर स्थित पीपल वृक्ष के नीचे बैठ कर भजन करने लगे। जंगली लोगों ने वहाँ भी उन्हें तंग किया। उनके ऊपर धूल और कंकड़ पत्थर फेंकते रहे, कंकणों से चोट लगने के कारण स्वामी जी का सिर फूट गया था बाँह और सीने में गम्भीर चोट लगा था। सुबह होने पर इनकी यात्रा प्रारम्भ हुई लगभग 3 किमी0 पैदल चलने पर सड़क मिली। सड़क पर पहुँचने पर एक व्यक्ति मिला जो (क्षत्रिय) परिवार से थे। डिप्टी- मजिस्ट्रेट के पद पर कार्यरत थे स्वामी जी को रक्त से सराबोर देखकर उनको बहुत पीड़ा हुई वे अपनी मोटर गाड़ी पर बैठाकर स्वामी जी को भरत कूप पहुँचाए, वह व्यक्ति किसी संन्यासी के शिष्य थे।

स्वामी जी भरत कूप पहुँचकर स्नान संध्या कर रहे थे कि इक्का पर चढ़े उस जंगली गाँव के लोग उनकी खोज में दौड़े-दौड़े वहाँ पहुँचे। उन जंगली लोगों से ज्ञात हुआ कि भोर से ही उनके गाँव में आग लगी है कई लोग जल मरे है किसी महात्मा को व्यर्थ तंग करने से गाँव की यह दुर्दशा हुई है। स्वामी जी चित्रकूट से प्रयाग एवं मिर्जापुर में आए और विचरने और निवास करने लगे।

प्रयाग एवं मिर्जापुर में प्रवास-

दण्डी स्वामी श्री हंसा नन्द सरस्वती जी विशेष रूप से प्रयाग एवं मिर्जापुर जिले में गंगा तट पर रहना प्रारम्भ किए। गंगा-यमुना के कछार तथा अन्य भागों के कुलीन सरयू पारिण एवं सनाढ़य ब्राह्मण स्वामी जी के नैष्ठिक भक्त और शिष्य बने। मिर्जापुर से प्रयाग बाँदा और फतेहपुर जिला तक विभिन्न दलों के तद्वर्गीय तथा स्ववर्गीय ब्राह्मणों के समाज में एक अद्वितीय योगी के रूप में दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी की पूजा होती रही।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

योगाभ्यास एवं सत्कीर्ति-

बहुत समय तक दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी सनातन धर्म महामंण्डल में भाग लेते हुए, अपने प्रवचनों द्वारा धर्म रक्षा करते रहे। दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी छः बार चन्द्रायण व्रत किये, प्रयाग जिले के परानीपुर गांव में योगाभ्यास के लिए पक्की गुफा का निर्माण किया गया, योगाभ्यास के क्रम में लगातार तीन वर्ष तक रहकर योगाभ्यास किए।

प्रयाग में अपर वर्गीय दण्डी संन्यासियों ने पारस्परिक विद्वेष के वश होकर दण्डी स्वामी श्री परमानन्द सरस्वती के विद्वान शिष्य दण्डी स्वामी श्री सुदर्शनानन्द सरस्वती से शास्त्रार्थ में विप्र (ब्राह्मण) वंशीय सन्यासी पराजित होने पर उन्हें अकेला जान यह कह कर दण्ड छीन लिया कि भूमिहार ब्राह्मणों को दण्ड धारण करने का अधिकार कहाँ हैं ?

यह संवाद जब दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी के कान में पड़ा तो जातिय अपमान उनसे सहा नहीं गया। साथ ही धार्मिक दृष्टि से भी यह महान अन्याय था कि एक अभिजात वर्गीय उत्तम ब्राह्मण कूल (खानदान) को ईष्यावश नीचा दिखाना तथा उसे पतनोन्मुख बनाना उचित नहीं है। ऐसी परिस्थति में स्वामी जी प्रयागराज में अपना दण्डी बाड़ा स्ववर्गीय भूमिहार दण्डी सन्यासियों के लिए रहने का स्थान (टेन्ट) बाधने का दृढ़ निश्चय कर लिए।

अतः 1936 ई0 में प्रयागराज में (अर्द्ध-कुम्भ) के अवसर पर दण्डी बाड़ा बाँधने का निश्चय करके तैयारी करने लगे, मिर्जापुर, बांदा, प्रयाग आदि के शिष्यों ने सहायता दी, बाड़ा बाँधने की तैयारी पूरी हो चली। बाड़े के समय लगभग तीन नाव सामान प्रयाग पहुँचा। दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी अपने विरोधियों को चुनौती दिए कि इस वर्ष मैं बाड़ा बाधूँगा।

मेला मैंनेजर पहले तो जगह के लिए टाल-मटोल करता रहा और आखिर कार विरोधी वर्ग के दण्डी संन्यासियों के बहकावे में आकर उसने साफ इन्कार कर दिया कि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आपको बाड़ा बांधने की जगह नहीं दी जा सकती। एक झोपड़ी लगाकर चाहें तो आप रह सकते हैं। इधर हजारों दण्डी संन्यासी डट गये कि इस पार उन्हें बाड़ा नहीं बांधने देंगे। स्वामी जी विचार कर रहे थे कि काशी नरेश से इस सम्बन्ध में सहायता प्राप्त करूँ। बाँध पर गये तो उन्हें अपने इष्ट सहायक हनुमान जी का ध्यान आया, वे तत्काल बाँध के नीचे हनुमान जी की लेटी हुई मूर्ति के समक्ष जाकर प्रार्थना किए। स्वामी जी अपने इष्ट हनुमान जी से बोले- संकट के समय सहायता देने का आपका आश्वासन पहले से मिल चुका है, अब इससे अधिक संकट ही क्या होगा, मेरी प्रतिज्ञा है कि प्रयाग में संगम तट पर या तो बाड़ा बाँध लूँगा अथवा यही त्रिवेणी में समाधि ले लूँगा। यह कह कर अपनी स्वरचित (कविता) के माध्यम से प्रार्थना भजन बजरंग बलि श्री हनुमान जी को पढ़ कर सुनाए और चल पड़े। स्वामी जी ज्यों ही बाँध पर पहुँचे कि उन्हें अपने फ़ौजी जीवन का पूर्व परिचित फ़ौज का अधिकारी कर्नल सीटर साहब मिले। पहले तो वह भड़के बाद में परिचय पाकर प्रेम पूर्वक मिले, और हार्दिक प्रसन्नता प्रकट की। कर्नल सीटर साहब ने स्वामी जी को हाथ जोड़कर प्रार्थना किया और आश्वासन दिया कि सेवा के लिए जो भी आदेश होगा उसके लिए मैं तैयार हूँ।

स्वामी जी उपर्युक्त समय पाकर कर्नल सीटर साहब से अपनी सारी गाथा कह सुनाई और निष्कर्षत: बताया कि मेला मैंनेजर बाड़े के लिए स्थान नहीं देता। कर्नल सीटर साहब अपने दो हथियार बन्द फ़ौजी सिपाहियों को स्वामी जी के साथ लगा दिया और पुन: मेला व्यवस्थापक से पूछ-ताछ करने को कहा। स्वामी जी सिपाहियों को लेकर व्यवस्थापक के कैम्प में पहुँचे, और बाड़े के स्थान के लिए पूछा मेला व्यवस्थापक ने उन्हें बाड़े के लिए स्थान न देने की बात कही और पुलिस सिपाही बुलाकर स्वामी जी को धमकाने-डराने की फिक्र में था कि फ़ौजी सिपाही गोली भर कर तैयार हो गये तथा व्यवस्थापक को बहुत फटकारा बोले- कर्नल सीटर साहब ने भेजा है, स्वामी जी हमारे फ़ौज के माननीय अधिकारी थे, ये बाते हो ही रही थी कि वह अंग्रेज आफिसर कर्नल सीटर घोड़े पर सवार हो स्वयं आ पहुँचे। आते ही उसने तहसीलदार को डाटा फ़जीहत की और यथा शीघ्र स्थान की व्यवस्था के लिए आदेश दिया। तहसीलदार डर कर सियार हो गया, वह हाथ जोड़कर गिड़गिडाने लगा कि शीघ्र प्रबन्ध करता हूँ। कर्नल के चले जाने के बाद तहसीलदार हाथ-जोड़कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी जी से क्षमा याचना की और बताया कि मेरा अपराध नहीं है मुझे दूसरे संन्यासियों ने उल्टा सीधा समझा कर भ्रम में डाल दिया था।

तहसीलदार अमीन को स्वामी जी के साथ लगा दिया और अमीन से बोला-स्वामी जी जहाँ भी भूमि माँगे वहीं इन्हें दी जाय। अमीन को साथ लिए स्वामी जी दण्डी बाड़े के मध्य में एक ऊँचे स्थान पर पहुँच कर रूके, यही स्थान नापो। वह स्थान विरोधी पक्ष के एक सन्यासी के नाम बन्दोबस्त हो गया था, अतएवं उसे ही लेकर स्वामी जी ने अपमान का बदला चुकाना चाहा। कुछ दण्डी सन्यासी चिल्ल-पो किये, पर उनकी तनिक नहीं सुनी गई। पाँच कठ्ठा जमीन स्वामी जी के नाम कट चुँकी थी। पर स्वयं तहसीलदार ने आकर तीन कठ्ठा जमीन अपनी ओर से विशेष रूप में दिया। दूसरे दिन अंग्रेज कर्नल प्रातः काल पुनः आ पहुँचा पूछा जो आदेश हो सेवा के लिए हम तैयार हैं। स्वामी जी बोले-एक मास रहना हैं कोई अशान्ति या उपद्रव न हो कर्नल सीटर साहब दो फ़ौजी सिपाही स्वामी जी की रक्षा में तैनात कर दिए, इतना ही नहीं साठ फौजी जवानों ने नाव पर लदा सभी सामान उतार कर बाड़े में रक्खा तथा झोपड़ियाँ छाकर खड़ी कर दिए यह सरकारी सहायता हनुमान जी की कृपा से आकस्मिक रूप में मिली। दूसरी सहायता प्रयाग के निकटवर्ती ब्राह्मणों की थी। सैकड़ों की संख्या में लठैत जवान स्वामी जी की सहायता के लिए तत्पर रहते थे। दण्डी बाड़ा उचित समय पर तैयार हो गया। विरोधियों का मानमर्दन हुआ।

उत्तर प्रदेश के पश्चिमी जिलो में स्वामी जी ने घूम-घूम कर स्वाभिमान जगाया। विशेष कर भूमिहार ब्राह्मणों में ब्रह्मणोचित कर्तव्य आचरण स्वाभिमान के लिए मंत्र फूँका। आपने खुली सभा में शास्त्रीय प्रमाणों द्वारा भूमिहार ब्राह्मणों को सर्वोत्तम ब्राह्मण सिद्ध कर दिया। घूम-घूम कर भूमिहार ब्राह्मणों की महत्वपूर्ण सभा किए और उसमें प्रवचन किए। बलिया जिले के गड़हा परगने में नरहीं और अँजोरपुर गाँव में आपकी महति सभाएँ हुई।

प्रयागराज में समाज की प्रतिष्ठा एवं गौरव की रक्षा के निमित्त अपनी विजय पताका फहराने के बाद काशी में भूमिहार ब्राह्मण समाज के दण्डी संन्यासियों के रहने की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कोई निश्चित व्यवस्था नहीं थी आपने श्रीमान् महाराजाधिराज कांशीराज के यहाँ इस उद्देश्य की पूर्ति के सम्बन्ध में संकेत किया। इस महान् लक्ष्य की पूर्ति में काशी नरेश विद्वत शिरोमणि डॉ0 विभूति नरायण सिंह शर्मा महोदय को जब जानकारी हुई तो उन्होंने प्रसन्नता पूर्वक शिवालाघाट स्थित राज गुरू मठ भूमिहार ब्राह्मण समाज के दण्डी संन्यासियों के निवास के निमित्त भूमिहार दण्डी सन्यासी समाज के महामण्डलेश्वर योगी राज दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी को प्रदान किया। मठ मिला किन्तु अति जीर्ण-शीर्ण स्थित में दुर्दशा ग्रस्त था पूरब दिशा का भाग खण्डहर था आंगन में जंगल झाड़ और ईंट पत्थरों की ढ़ेरी लगी थी। आदरणीय दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी ने समाजिक प्रभाव के बल पर समग्र मठ का जीर्णोद्धार कराया, भगनावशेष को साफ करा कर उस पर तीन नये कमरे, बरामदा और लक्ष्मी नारायण मन्दिर का निर्माण कराए।

इसके अतिरिक्त पश्चिमी भाग में विभाजन द्वारा दो नये कमरे महात्माओं के निवास हेतु बनाए। समग्र मठ के भीतर बाहर प्लास्टर पोचारा आदि कराया गया। छत पर जाने के लिए बाहर की ओर से पक्की सीढ़ी छत के ऊपर भोजनालय और पश्चिम की चाहरदीवारी का निर्माण कराया गया। धार्मिक ग्रन्थों एवं पुस्तकों के संग्रह हेतु पुस्तकालय का निर्माण किए। मठ में बिजली की व्यवस्था की गई ये सभी कार्य का व्यय स्वयं महामण्डलेश्वर दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी ने किया। लगभग 90वर्ष की अवस्था में अस्वथ्य होने पर आप सन् 1970 ई0 के उत्तरार्द्ध के बाद बलिया जिले के ग्राम-अँजोरपुर स्थित ठाकुर जी की कुटी पर अन्तिम सांस लेते हुए निर्वाण को प्राप्त किए। आपने 38 संन्यासी शिष्यों को दीक्षा एवं दण्ड दिया, जो उच्च-कोटि के संन्यासी सन्त हुए, इन्हीं में संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी भी थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महामण्डलेश्वर योगीराज दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी के शिष्य परम्परा में अड़तीस सन्यासी संत

1. प्रथम शिष्य – स्वामी श्री जगदानन्द सरस्वती हुए इनका सन्यास काल वि0स0 1993 अगहन शुल्क पक्ष पंचमी है ये इलाहाबाद (प्रयागराज) जिले में टप्पा चौरासी ग्राम–भुईपरा के वत्सगोत्रीय गाना के मिश्र ब्राह्मण है।

2. द्वितीय शिष्य – स्वामी श्री गौरीशानन्द सरस्वती हुए इनका संन्यास काल वि0स0– 1994 अगहन कृष्ण पक्ष अष्टमी दिन सोमवार है। ये इलाहाबाद (प्रयागराज) जिले में करछाना तहसील के पुरैनी ग्राम–निवासी भारद्वाज गोत्रीय हीरापुरी पाण्डेय ब्राह्मण है।

3. तृतीय शिष्य – स्वामी श्रीमकसूदानन्द सरस्वती हुए इनका संन्यासकाल वि0स0 1995 माघ शुक्ल अँचला सप्तमी शुक्रवार रेवती नक्षत्र है ये गाजीपुर जिले में रेवतीपुर मामदेव पट्टी निवासी सांकृत गोत्रीय फतुहाबादी मिश्र ब्राह्मण है।

4. चौथे शिष्य – स्वामी श्री शिवानन्द सरस्वती हुए। इनका संन्यासकाल वि0स0 1996 माघ शुक्ल सप्तमी बुधवार है। ये बलिया जिले में ग्राम–शिवपुर भुवाल छपरा के भारद्वाज गोत्रीय मचियांव के पाण्डेय ब्राह्मण है।

5. पाँचवे शिष्य – स्वामी श्री रामानन्द सरस्वती हुए। इनका संन्यास काल वि0स0 1997 अगहन कृष्ण पक्ष एकादशी दिन–सोमवार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हस्त नक्षत्र है। ये गाजीपुर जिले में वीरपुर ग्राम के कश्यप गोत्रीय (क्यूना के दीक्षित) किनवार ब्राह्मण रहे हैं।

6. छठवें शिष्य – स्वामी श्री बृजानन्द सरस्वती हुए। इनका संन्यास काल वि0स0 1998 माघ शुक्ल पक्ष बसन्त पंचमी बुधवार पूर्वा भाद्र पक्ष नक्षत्र है ये शाहाबाद जिले में चौसा रेलवे स्टेशन से निकट सिकरौल ग्राम निवासी सांकृत गोत्रीय फतूहाबाद के मिश्र ब्राह्मण है।

7. सातवें शिष्य – स्वामी श्री विज्ञानानन्द सरस्वती हुए। इनका संन्यास काल वि0स0 1999 माघ शुक्ल पंचमी मंगलवार रेवती नक्षत्र है। ये गाजीपुर जिले में कुड़ैसर ग्राम निवासी कश्यप गोत्रीय (क्यूना दीक्षित) किनवार ब्राह्मण है।

8. आठवें शिष्य – स्वामी श्री भुनेश्वरानन्द सरस्वती हुए। इनका संन्यास काल वि0स0 2000 आश्विन कृष्ण पक्ष तेरस सोमवार पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र है। ये इलाहाबाद (प्रयागराज) जिले में करछना तहसील के पनासा ग्राम निवासी भारद्वाज गोत्रीय हीरापुर पाण्डेय ब्राह्मण है। ये पाण्डेय वंश में प्रसिद्ध व्यक्ति थे।

9. नवें शिष्य – स्वामी श्री विद्यानन्द सरस्वती हुए। इनका संन्यास काल वि0स0 2000 माघ शुक्ल पक्ष पंचमी रेवती नक्षत्र है ये इलाहाबाद (प्रयागराज) जिले के हड़िया तहसील में सकरा ग्राम निवासी भारद्वाज गोत्रीय मचियांव पाण्डेय रहे।

10. दसवें शिष्य – स्वामी श्री सोमानन्द सरस्वती हुए। इनका संन्यास काल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वि0स0 2000 माघ शुक्ल पक्ष पंचमी गुरूवार पूर्वा भाद्रपद है ये गाजीपुर जिले में रेवतीपुर ग्राम- निवासी पट्टी तेजमल राय के सांकृत गोत्रीय फतुहाबाद के मिश्र ब्राह्मण है।

11. ग्यारहवें शिष्य - स्वामी श्री चतुरानन्द सरस्वती हुए इनका संन्यास काल वि0स0- 2004 माघ कृष्ण पक्ष अष्ठमी सोमवार स्वाती नक्षत्र है ये मिर्जापुर जिले में बजहां ग्राम-निवासी गौतम गोत्रीय पिपरा के मिश्र ब्राह्मण रहे।

12. बारहवें शिष्य - स्वामी श्री विशुद्धानन्द सरस्वती हुए इनका संन्यास काल वि0सं0- 2004 माघ कृष्ण पक्ष अष्टमी सोमवार स्वाती नक्षत्र है। ये गाजीपुर जिले के कुड़ेसर ग्राम-निवासी कश्यप गोत्रीय किनवार ब्राह्मण रहे।

13. तेरहवें शिष्य - स्वामी श्री महेश्वरानन्द सरस्वती हुए इनका संन्यास काल वि0स0- 2004 माघ शुक्ल पक्ष पूर्णिमा मंगलवार मेघा नक्षत्र है।

14. चौदहवें शिष्य - स्वामी श्री गंगेश्वरानन्द सरस्वती हुए इनका संन्यास काल वि0स0- 2005 माघ शुक्ल पक्ष बसन्त पंचमी रेवती नक्षत्र हैं। ये बनारस जिले में देवचन्दपुर ग्राम-निवासी एक सरिया कश्यप गोत्रीय ब्राह्मण रहें।

15. पन्द्रहवें शिष्य - स्वामी श्री रामानन्द सरस्वती हुए। इनका संन्यास काल वि0स0- 2005 माघ शुक्ल पक्ष बसन्त पंचमी रेवती नक्षत्र है। ये देवरिया जिले में बलड़ीहा ग्राम निवासी शाण्डिल्य गोत्रीय ब्राह्मण रहें।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

16. सोलहवें शिष्य - स्वामी श्री परमेश्वरा नन्द सरस्वती हुए, इनका संन्यास काल वि0सं0- 2006 मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष तीज बुधवार मूल नक्षत्र है ये इलाहाबाद (प्रयागराज) जिले में (डाकघर करछना) बबुरा ग्राम निवासी कपिला के पाण्डेय ब्राह्मण रहे। ये बड़े प्रसिद्ध और कुलीन रहे हैं। इनके कूल में कई पीढ़ियों से संन्यास ग्रहण करने की परम्परा चली आ रही है। पहले इनके बाबा सन्यासी हुए। पुनः इनके पिता जी ने सन्यास लिया। उसके पश्चात् इनका क्रम आया।

17. सतरहवें शिष्य - स्वामी श्री महादेवा नन्द सरस्वती हुए। इनका संन्यास काल वि0स0- 2007 चैत शुक्ल पक्ष एकादशी गुरूवार है ये बक्सर जिले के अर्जुनपुर ग्राम निवासी कश्यप गोत्रीय किनवार ब्राह्मण थे।

18. अठारहवें शिष्य - स्वामी श्री अचित्यानन्द सरस्वती हुए, इनका संन्यास काल वि0सं0-2007 माघ शुक्ल पक्ष द्वादशी रविवार पुर्नवसु नक्षत्र है। ये बलिया जिला में अँजोरपुर ग्राम-निवासी भारद्वाज गोत्रीय मचियांव के ब्राह्मण रहे।

19. उन्नीसवें शिष्य - स्वामी श्री ब्रह्मानन्द सरस्वती हुए इनका संन्यास काल वि0स0- 2008 माघ कृष्ण पक्ष अष्टमी रविवार है। ये गाजीपुर जिले में बलुआ-तरावं निवासी कश्यप गोत्रीय किनवार ब्राह्मण रहे।

20. बीसवें शिष्य - स्वामी श्री धर्मानन्द सरस्वती हुए। इनका संन्यास काल वि0सं0-2008 माघ शुक्ल पक्ष तेरस शुक्रवार पुर्नवसु नक्षत्र है ये बस्ती जिले में खलीलाबाद तहसील के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बालुसासन निवासी कौशिक गोत्रीय ब्राह्मण रहे हैं।

21. इक्कीसवें शिष्य - स्वामी श्री हरिहरानन्द सरस्वती हुए। इनका संन्यास काल वि0सं0- 2009 माघ शुक्ल पक्ष अंचला सप्तमी है। ये गाजीपुर जिले में गडुवा ग्राम-निवासी द्रोणवार ब्राह्मण रहे हैं।

22. बाइसवें शिष्य - स्वामी श्री मनिषानन्द सरस्वती हुए। इनका संन्यास काल वि0सं0- 2009 फाल्गुन शुक्ल पक्ष तेरस है ये इलाहाबाद (प्रयागराज) जिले में करछना तहसील के लकटहा ग्राम निवासी कपिला के पाण्डेय ब्राह्मण रहे।

23. तेइसवें शिष्य - स्वामी श्री ईश्वरानन्द सरस्वती हुए। उनका संन्यासकाल विक्रम सम्वत् 2010 माघ कृष्ण पक्ष द्वितीया गुरूवार है। ये बनारस जिले में भैंसा ग्राम निवासी सार्वण गोत्रीय ब्राह्मण रहे।

24. चौबिसवें शिष्य - स्वामी श्री सर्वानन्द सरस्वती हुए। ये बस्ती जिले में भग्गोभार ग्राम-निवासी भारद्वाज गोत्रीय ब्राह्मण रहे। इनका संन्यास काल वि0स0-2010 माघ कृष्ण पक्ष षष्ठी है।

25. पच्चीसवें शिष्य - स्वामी श्री नर्वदानन्द सरस्वती हुए। ये बक्सर जिले में लछुमनपुर ग्राम-निवासी शाण्डिल्य गोत्रीय ब्राह्मण है इनका संन्यास काल वि0सं0-2010 माघ कृष्ण पक्ष षष्ठी है।

26. छब्बिसवें शिष्य - स्वामी श्री प्रबोधानन्द सरस्वती हुए। ये शाहाबाद जिले में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वरिसवन ग्राम निवासी शाण्डिल्य गोत्रीय ब्राह्मण रहे। इनका संन्यास काल वि0स0-2010 माघ कृष्ण षष्ठी है।

27. सत्ताइसवें शिष्य – स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती हुए। इनका संन्यास काल वि0सं0- 2010 माघ कृष्ण पक्ष षष्ठी है। ये छपरा जिला में (वर्तमान जिला-सिवान) भेड़वनिया ग्राम निवासी पराशर गोत्रीय एक सरिया भूमिहार ब्राह्मण रहे। आपका जन्म एक सम्पन्न एवं धनाढ़य परिवार में हुआ था। लगभग ग्यारह-बारह वर्ष की अल्प आयु में ही आपके हृदय में वैराग्य जागृत होने पर घर-परिवार त्याग कर साधु बनने की इच्छा से गाँव घर छोड़कर बाहर निकल पड़े दो तीन वर्ष तक भटकते रहे। जिस-जिस महात्मा सन्त के यहाँ गये वहाँ के वातावरण को देख कर संन्तुष्ट नहीं हुए। सत्गुरू की खोज में आप घूमते-भटकते रहें। एक दिन अचानक काशी में राजगुरू मठ शिवालाघाट स्थित आश्रम के संन्यासी महामण्डलेश्वर योगीराज दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी से मुलाकात हुई आप कई दिनों से भूखे थे। स्वामी जी इन्हें देख कर प्रभावित हुए वे अपने साथ मठ पर ले गये आपको भोजन-प्रसाद दिये और मठ पर ही सोने-बैठने की व्यवस्था किये। दो-चार दिन तक आश्रम में रहने पर दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी द्वारा किया जा रहा पूजा साधना को देख कर प्रभावित हुए, और आश्रम पर रहकर स्वामी जी की चरण सेवा करने लगे। छोटी उम्र में साधु सेवा में लगन एवं निष्ठा सात्विक विचार व इनके व्यवहार से प्रभावित होने पर खुश होकर दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जी इन्हें विद्या अध्ययन करने की व्यवस्था किए। अल्प समय में सामान्य विषयों के साथ-साथ संस्कृत, अंग्रेजी, वेद, पुराण, गीता, एवं उपनिषद् का ज्ञान प्राप्त कर लिए। ये विद्या अध्ययन के साथ स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी की सेवा कार्य में लगे रहे। स्वामी जी उन्हें अल्प आयु में ही संन्यास की दीक्षा देने को तैयार हो गये। प्रयाग में वि0सं0-2010 माघ कृष्ण पक्ष षष्ठी को संन्यास की दीक्षा एवं दण्ड धारण कराए। उनका पारिवारिक नाम जगन्नाथ राय से बदल कर सन्यास में इनका नामकरण स्वामी श्री-गोपालानन्द सरस्वती, नाम का उद्घोष किए।

संन्यास एवं दण्ड घारण करने के पश्चात् अपने गुरूदेव दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी से अनुमति लेकर देशाटन को निकल पड़े। गाँव-गाँव में भ्रमण करते हुए काशी, मथुरा वृन्दावन, हरिद्वार आदि अनेंक तीर्थ स्थलों की यात्रा किये, और वहाँ के उच्चस्तरीय संतों, महात्माओं से मिलते हुए उनसे मार्ग दर्शन प्राप्त करते रहे। एकान्त वास करने हेतु आप जंगल, पर्वत, पहाड़ी की यात्रा प्रारम्भ किए। मात्र चौबीस-पच्चीस वर्ष की छोटी आयु में हिंसक जीव-जन्तुओं के बीच राजगृह के निकट सिंथौरा गाँव के दक्षिण दिशा में रत्नागिरि पहाड़ी के पास जंगल में एक नीम के पेड़ की छाया के नीचे बैठकर तपस्या एवं साधना किए। निर्गुण ब्रह्म को छोड़ आप सगुण बह्म की उपासना करने लगे इसी क्रम में आप राधा-कृष्ण एवं भगवान भोले शंकर बाबा नर्मदाधीश (श्री गोपालेश्वर महादेव) की मूर्ति एवं शिवलिंग की पूजा-अराधना विधि पूर्वक करने लगे, किन्तु अपना संन्यासी धर्म की मर्यादा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को कायम रखे। अन्य विशेष जानकारी हेतु इनकी लिखित पुस्तक "सारल्य-दर्शन" अवश्य पढ़े। संन्यासी सन्तों में आप परमहंस थे।

28. अठाइसवें शिष्य – स्वामी श्री अभयानन्द सरस्वती हुए। इनका संन्यास काल वि0सं0- 2010 फाल्गुन कृष्ण पक्ष चतुर्थी रविवार हस्त नक्षत्र है ये बांदा जिले में मड़उर ग्राम निवासी सरयू पारिण ब्राह्मण कुंसभी तिवारी रहे हैं।

29. उन्नतीसवें शिष्य – स्वामी श्री विमला नन्द सरस्वती हुए ये बक्सर जिले में चौसा परगना मंगराव ग्राम निवासी सांस्कृत गोत्रीय फतुहाबाद के मिश्र सकरवार ब्राह्मण रहे है। इनका संन्यास काल वि0स0 2011 श्रावण शुक्ल पक्ष तेरस गुरूवार उत्तराषाढ़ा नक्षत्र है। ये अपने गुरूदेव दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी के बाद संन्यासी समाज के संचालक नियुक्त किये गये और राज गुरू मठ शिवालाघाट के उत्तराधिकारी मनोनित हुए। आप कवि, लेखक, समाज सुधारक और इतिहास वेत्ता थे। आपने दण्डी स्वामी श्री सहजानन्द सरस्वती जी के नाम पर बक्सर में आश्रम का निर्माण किया है। जिसमें संन्यासी समाज के संत रहते है।

30. तीसवें शिष्य – स्वामी श्री देवानन्द सरस्वती हुए। आपका संन्यास काल वि0स0-2011 माघ कृष्ण पक्ष तेरस शुक्रवार मूल नक्षत्र है। ये गाजीपुर जिले में गोड़उर ग्राम निवासी कश्यप गोत्रीय क्यूना दीक्षित किनवार ब्राह्मण रहे।

31. इक्कतीसवें शिष्य – स्वामी श्री शान्तानन्द सरस्वती हुए। आप गाजीपुर जिले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के तमलपुरा ग्राम के वशिष्ठ गोत्रीय ब्राह्मण रहे। आपका संन्यासकाल अज्ञात है। सही साक्ष्य एवं अभिलेख उपलब्ध न होने से विवरण उल्लेख करना सम्भव नहीं है।

32. बत्तीसवें शिष्य - स्वामी श्री परमात्मानन्द सरस्वती हुए, ये मेरठ जनपद के त्यागी ब्राह्मण रहे। इनका संन्यास काल अज्ञात है। सही साक्ष्य एवं अभिलेख उपलब्ध न होने से विवरण उल्लेख करना सम्भव नहीं है।

33. तैंतीसवें शिष्य - स्वामी श्री कृपानन्द सरस्वती हुए, ये मिर्जापुर जिले के सरयू पारिण ब्राह्मण हैं इनका संन्यास काल अज्ञात है। सही साक्ष्य एवं अभिलेख उपलब्ध न होने से विवरण उल्लेख करना सम्भव नहीं है।

34. चौतीसवें शिष्य - स्वामी श्री गणेशानन्द सरस्वती हुए। इनका संन्यास काल वि0स0-2022 माघ शुक्ल पक्ष द्वादशी तिथि को प्रयाग में हुआ ये गाजीपुर जिले के अवथही ग्राम के कश्यम गोत्रीय क्यूना के दीक्षित ब्राह्मण रहे।

35. पैंतीसवें शिष्य - स्वामी श्री नरसिंहा नन्द सरस्वती हुए। बिहार राज्य के छपरा जिले में शीतलपुर ग्राम निवासी श्रीमती संयोगा देवी के गर्भ से आपका जन्म हुआ था आपके पिता श्री चानन चौधरी रामपुर बखरा (वैशाली) ग्राम निवासी-शाण्डिल्य गोत्रीय ब्राह्मण रहे। आपका संन्यास काल वि0स0-2022 माघ शुक्ल पक्ष द्वादशी तिथि प्रयाग है। स्वामी जी को धार्मिक अभिरूचि बाल्यकाल से थी। आपका निर्वाण माघ कृष्ण चतुर्दशी (शिवरात्रि) वि0सं0-1050 को स्थान-टीला (कोटवानारायणपुर) जिला-बलिया

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(उ0प्र0) में हुआ तथा ब्रह्म में विलिन हो गये। आध्यात्मिक उपलब्धियों का विकास श्री सूर्यदेव ओझा महंथ जी, श्री रामेश्वर बाबा परमहंस, श्री राधा रमण परमहंस (कठौता स्वामी) और संन्यास गुरू योगीराज महामण्डलेश्वर दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी थे। आपके सिर पर गुरुदेव की कृपा दृष्टि रही।

36. छत्तीसवें शिष्य – स्वामी श्री महानन्द सरस्वती हुए आपका संन्यास काल वि0स0–2022 माघ शुक्ल पक्ष द्वादशी तिथि प्रयाग है। आप बलिया जिले के दरामपुर (सागरपाली) निवासी शाण्डिल्य गोत्रीय ब्राह्मण है।

37. सैतीसवें शिष्य – स्वामी श्री मुनिश्वरा नन्द सरस्वती हुए। आपका संन्यास काल वि0सं0– (अज्ञात है) सही साक्ष्य एवं अभिलेख उपलब्ध न होने से विवरण का उल्लेख करना सम्भव नहीं है।

38. अड़तीसवें शिष्य – स्वामी श्री सुदर्शनानन्द सरस्वती, हुए आप परनीपुर जिला–इलाहाबाद निवासी है। सन्यास काल वि0सं0 (अज्ञात है) सही साक्ष्य एवं अभिलेख उपलब्ध न होने से विवरण का उल्लेख करना सम्भव नहीं है।

कमलाकर दुबे

कमलाकर दुबे
ग्राम व पोस्ट– थम्हनपुरा
जिला–बलिया (उ0प्र0)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संक्षिप्त जीवन-परिचय की एक झलक

श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा)

महा मण्डलेश्वर योगीराज दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी महाराज राज गुरूमठ बी- 3/175 शिवालाघाट वाराणसी ने संन्यासी संत परम्परा में अड़तीस शिष्यों को दीक्षा के साथ-साथ दण्ड धारण कराएं। इनमें सताइसवें स्थान पर उनके शिष्य श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी थे इनका संन्यास काल वि0 सं0- 2010 माघ कृष्ण पक्ष षष्ठी है। ये छपरा जिला-बिहार (वर्तमान जिला-सिवान) के भेड़वनिया ग्राम निवासी श्री शिवचन्द राय जी के चतुर्थ पुत्र थे। आप परासर गोत्रीय एक सरिया (भूमिहार) ब्राह्मण रहे।

आपका जन्म एक सम्पन्न एंव धनाढ़्य परिवार मे हुआ था। लगभग ग्यारह-बारह वर्ष की अल्प आयु में ही आपके हृदय में वैराग्य जागृत होने पर आप घर परिवार त्याग कर साधु बनने की प्रबल इच्छा से प्रेरित होकर अपने परिवार घर गाँव से बाहर निकल पड़े। दो-तीन वर्ष तक इधर-उधर भटकते घूमते रहे। जिस-जिस संत महात्मा, संन्यासी साधु के पास गए, वहाँ के वातावरण को देख कर आप संतुष्ट नही हुए। सत् गुरू की ख़ोज (तलाश) में आप घूमते-भटकते रहें।

एक दिन अचानक काशी में राज गुरू मठ शिवालाघाट स्थित आश्रम के दण्डी संन्यासी संत महामण्डलेश्वर योगीराज दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी से मुलाकात हो गई। आप कई दिनों से भूखे थे। दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी आपको देख कर प्रभावित हुए, और आपको अपने साथ राजगुरू मठ शिवालाघाट स्थित अपने आश्रम पर ले गए। वहाँ स्वामी जी इन्हें भोजन प्रसाद दिए तथा आश्रम पर ही इनको सोने-बैठने की व्यवस्था किए। दो-चार दिन आश्रम में रहने पर महामण्डलेश्वर योगीराज दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी द्वारा किये जा रहें पूजा-साधना तपस्या को देख कर आप दण्डी स्वामी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री हंसानन्द सरस्वती जी से बड़े प्रभावित हुए। आपकों ऐसे ही सत्गुरु की खोज़ (तलाश) थी।

आश्रम में रहकर दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी की चरण सेवा करने लगे। छोटी उम्र में साधु सेवा में लगन एवं निष्ठा सात्विक विचार व इनके व्यवहार से संन्तुष्ट एवं प्रभावित होने पर खुश होकर महामण्डलेश्वर योगी राज दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी आपको विद्या अध्ययन करने की व्यवस्था किए अल्प समय में ही आप सामान्य विषयों के साथ-साथ संस्कृत हिन्दी, अग्रेंजी तथा वेद, पुराण गीता, एंव उपनिषद् का ज्ञान प्राप्त कर लिए।

विद्या अध्ययन के साथ-साथ दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी की चरण सेवा कार्य करते रहे। इनकी सेवा से प्रसन्न हो कर इन्हें अल्प आयु में ही संन्यास की दीक्षा एवं दण्ड देने को दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी तैयार हो गए।

प्रयागराज में वि0 सं0 2010 माघ कृष्ण पक्ष षष्ठी को संन्यास की दीक्षा देकर दण्ड धारण कराए। इनके पारिवारिक नाम जगन्नाथ राय से बदल कर संन्यास में इनका नाम करण- स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती नाम का उद्घोष किए।

संन्यास एवं दण्ड धारण करने के पश्चात् स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी अपने गुरूदेव महामण्डलेश्वर योगी राज दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी से अनुमति लेकर देशाटन को निकल पड़े। स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी गुरु की आज्ञा प्राप्त कर प्रयाग राज से पद यात्रा आरम्भ किए वे गाँव-गाँव में विचरते भ्रमण करते काशी आए, काशी से मथुरा, वृन्दावन, हरिद्वार की पद यात्रा आरम्भ किए। मार्ग में सभी तीर्थ स्थलों में जाकर वहाँ के उच्च कोटि के संत महात्माओं, साधुओं से मिले तथा उनका दर्शन प्राप्त किए। उनसे मार्ग दर्शन व ज्ञान लेते रहें। उन संत महात्माओं को आदर्श मानकर स्वयं जप-तप तपस्या में लीन रहने लगे। छोटी आयु में ही आप दण्डी संन्यासी के रूप में भारत वर्ष के अनेक तीर्थो का भ्रमण किए। हरिद्वार से पुनः गंगा के किनारे-किनारे पैदल यात्रा करते हुए जनपद-बलिया (उत्तर प्रदेश) के भृगु क्षेत्र में गंगा के तट पर स्थित अँजोरपुर गाँव के दियारे में प्रथम बार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आए। वे श्री उमाशंकर राय के खेत में स्थित पीपल पेड़ की छाया के नीचे विक्रम सम्वत् 2011 वर्ष के मार्ग शीर्ष (अगहन) मास अथार्त् वर्ष सन् 1954ई0 के दिसम्बर महीने में शान्त भाव में बैठे थे। उनको गाँव का कोई व्यक्ति आते और विश्राम करने हेतु बैठते नहीं देखा था। जब गाँव के किसान दियारे में खेती कार्य के लिए गए तो उन्हें वहाँ बैठा पाए। स्वामी जी के पास उस समय धन सम्पत्ति, सम्पदा, के रूप में, केवल मारकीन का दो अँचला दो लँगोटी एवं हाथ में दण्डधारण किए थे। उनके पैरो में खड़ाऊ भी नहीं था।

भव्य रूप, आकर्षक मुख मण्डल पर तेज को देख कर लोग उनका दर्शन किए और उनसे आग्रह किए बाबा आप मेरे गाँव की कुटी पर ठहरने का कष्ट करें। लोगों की प्रार्थना स्वीकार कर स्वामी जी अँजोरपुर गाँव में स्थित ठाकुर जी की कुटी पर लगभग छः सात माह रहे। फिर अन्यत्र स्थान के लिए पैदल यात्रा पर निकल गये। नदी की जल धारा और सन्यासी कभी एक स्थान पर स्थिर नहीं रहता। वे नित्य नदी की धारा प्रवाह के सदृश्य अपने स्थान बदलते रहते है। वे एकान्त वास करने हेतु जंगल, पर्वत पहाड़ी की यात्रा प्रारम्भ किए।

इसी पैंदल यात्रा की अवधि में घूमते-फिरते राजगृह के निकट स्थित सिथौंरा गाँव पहुँचे। सिथौंरा गाँव के बडे-बुजुर्ग किसानों के कथनानुसार स्वामी जी प्रथम बार सन् 1955 ई0 अथवा सन् 1956 ई0 के आषाढ़ मास में गाँव के बाहर पूरब दिशा में स्थित पुराने वट वृक्ष की छाया के नीचे बैठें थे, उस समय स्वामी जी की आयु लगभग चौबीस-पच्चीस वर्ष की थी। स्वामी जी का शरीर छः फीट लम्बा, गोरा बदन, सिर पर घुघराला बाल ऊँचा व चौड़ा ललाट, मुँख-मण्डल पर मुस्कुराहट लिए दुबला-पतला शरीर का गेरूआ वस्त्र धारी संन्यासी दण्ड धारण किए दिखाई दिए। उनके पैरों में ढ़ाई से तीन इंन्च मोटा ऊँचा खड़ाऊँ सुशोभित हो रहा था। उनके मुखमण्डल मस्तक (ललाट) से तेज प्रदर्शित हो रहा था। गेरूआ रंग का पिताम्बरी (अँचला) का आधा भाग उनके कमर में व आधा भाग कन्धे पर विराजता था।

इसके अतिरिक्त उनके पास दो लँगोंटी दो पिताम्बरी (अँचला) गेरूआ रंग का तथा एक श्रीमद् भागवत महापुराण के दशम् स्कन्ध की छोटी पुस्तक रही, यही उनका धन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

था। सिंथौरा गाँव के किसी किसान ने उन्हें गुड़ का शर्बत पिलाया, स्वामी जी की इच्छा व्यक्त करने पर वह किसान गांव के कुम्हार के घर से मिट्‌टी का छोटा कराहा लाकर उन्हें दिया। वहाँ से चलते समय वे उसी मिट्‌टी के कराहे में पुस्तक रख कर अपने सिर पर लेकर जंगल की ओर ज्यों ही चले जोर-जोर से मूसलाधार बारिश होने लगी। बहुत समय से उस क्षेत्र में वर्षा नहीं हो रही थी। अकाल जैसी स्थिति थी, वर्षा होने पर वहाँ के किसान खुश हो गए।

सिंथौरा गाँव के दक्षिण दिशा में स्थित पर्वत श्रृंखला के निकट दूर-दूर तक फैले घनघोर जंगल में भयानक जंगली जीव-जन्तु जैसे- शेर, चिता, बनसुअर एवं विषैले सर्प व वन बिच्छुओं के बीच एक नीम के पेड़ के नीचे निडर होकर स्वामी जी चार्तुमास करने के लिए रहने लगे। उस स्थान के समीप में छोटी सी बावली (गड़ही) में इकठ्ठा वर्षा का जल पीने तथा स्नान आदि करने का उपयोग करते थे उस बावली को जंगलिया बाबा "पुष्कर्णी" नाम से पुकारते थे।

कभी-कभी जंगलिया बाबा भिक्षा की इच्छा होने पर जंगल से बाहर आकर उसी वट वृक्ष के नीचे बैठते थे तब सिंथौरा गाँव के पाँच घरो से प्राप्त भिक्षा (जिसे मधुकड़ी कहते हैं) को अपनी हाथ की अंजुली में रख कर ग्रहण करते थे और पुनः वापस जंगल में उसी स्थान पर आ जाते थे।

जंगलिया बाबा को खुले आकाश में नीम की छाया के नीचे रहने की वेदना को देख कर जंगल में गाय चराने वाले ग्वालों ने जंगल की घास-फूस से छोटी झोपड़ी तैयार किया, जिसमें स्वामी जी निवास कर चार्तुमास किए।

सिंथौरा गांव निवासी श्री भोला सिंह स्वामी जी को पुष्कर्णी का जल पीते देख कर दुःखीत हुए, वे दूसरे-दिन से मिट्‌टी के घड़े में एक घड़ा जल अपने गाँव से लाकर प्रति दिन जंगल में स्वामी जी को पीने हेतु पहुँचाने लगे। उस समय दिन में जो भी भक्त जंगलिया बाबा का दर्शन करने मिलने आशीर्वाद प्राप्त करने जंगल में आते थे स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती ऊर्फ (जंगलिया बाबा) उनके साथ बैठ कर-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री मन् नारायण, नारायण, नारायण।
हरि ओम नारायण, नारायण, नारायण॥

का संकीर्तन किया करते थे और संध्या होने से पूर्व सभी भक्तों को घर वापस भेज देते थे।

ये पंक्तियाँ पढ़ने में जितना आनन्द देती है, सुनने में उतना ही सुकुन देती है। खाश तौर पर जब स्वामी जी अपने भक्तों के साथ यह कीर्तन करते थे, ऐसा लगता था मानो हर जगह शान्ति और अमन छाया हुआ है।

श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) प्रथम बार जब 24-25 वर्ष की आयु में सिंथौरा गाँव के बाहर बरगद वृक्ष की छाया में बैठा करते थे, तो उस समय उनके शरीर पर गेरूआ रंग का अँचला, कमर में लंगोटी और हाथ में दण्ड हुआ करता था। वह दण्डी सन्यासी के स्वरूप में मानो भगवान के ही एक अवतार थे।

उस समय भक्तों द्वारा दण्डवत् प्रणाम करने पर वे अपना चरण-स्पर्श नहीं कराते थे बल्कि दूर से ही नारायण शब्द का उद्घोष करते हुए उन्हें आशीर्वाद दिया करते थे। बाद में जब उन्होंने निर्गुण ब्रह्म का त्याग कर सगुण ब्रह्म अपनाया (श्री राधा-कृष्ण एवं भगवान नर्मदाधीश भोले शंकर जी (बाबा गोपालेश्वर महादेव) की पूजा अर्चना करना प्रारम्भ किया। उसके बाद से भक्त, स्वामी जी का चरण-स्पर्श करके उनको प्रणाम करने लगे। बाबा क्षेत्रीय जनता का सुख-द्ःख का ध्यान देते थे वे कभी ऊँच-नीच का भेद भाव नही किए। स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी बलि प्रथा के प्रबल विरोधी थे। उस क्षेत्र के चण्डी मौ गाँव में प्राचीन समय से ही पशुओं की बलि देने की प्रथा चली आ रही थी। बलि प्रथा रोकने के लिए चण्डी मौं गाँव के श्री चन्द्रिका प्रसाद सिंह जो जंगलिया बाबा के भक्त थे बाबा से प्रभावित होकर अपने पुत्र श्री सुनिल प्रसाद सिंह उर्फ (श्री मुन्ना सिंह) जिनकी उम्र उस समय लगभग पाँच या छः वर्ष की रही होगी, को बलि देने चण्डी माँ के स्थान पर लेकर पहुँच गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री चन्द्रिका प्रसाद सिंह गांव वालो को ललकारते हुए बोले–आप लोंग यदि किसी पशु की बलि देगें तो उसके पहले मैं अपने बेटे की बलि दे दूँगा। विषम स्थिति को देख कर क्षेत्र की जनता ने फैसला लिया आज से यहाँ कोई बलि नहीं की जाएगी। स्वामी जी के प्रयास के कारण उस दिन के बाद से चण्डी माँ की बेदी पर बलि देने की प्रथा समाप्त हो गई। जिला–नालन्दा व जिला–नवादा के अन्तर्गत आने वाले गाँव पावापुरी, कटौंना, बिन्दीडीह, सिंथौरा, आँती, चण्डी मौ आदि कई गाँवो में हैजा रोग की महामारी फैल गई थी उपचार के अभाव में लोगों की मृत्यु होने का क्रम शुरू हो गया। ग्रामीण जान बचाने के लिए जंगल में आकर स्वामी जी से प्रार्थना करने लगे, उनसे समाचार पाकर स्वामी जी जंगल छोड़ कर उन गाँवो का दौरा करने लगे, घर–घर जाकर हैजा रोग महामारी से पीड़ित रोगियों को जड़ी बुटी की औषधि उन्हें पीने को दिए दवा पीते ही रोगी रोग मुक्त हो गए गाँव में महामारी रोग शान्त हो गया। ग्राम वासियो के आग्रह पर स्वामी जी उनके गाँव के बाहर बागीचे में पेड़ के नीचे रह कर तपस्या और साधना करते रहे। उसके बाद जंगल में आकर रहने लगे। स्वामी जी सन् 1966 ई0 में सिंथौंरा जंगल छोड़ कर पद यात्रा करते अन्यत्र स्थान को भ्रमण करने चले गए। वे पद यात्रा करते हुए जिला आरा व जिला भोजपुर के अन्तर्गत गाँव बहोरनपुर, गाँव सोनबरसा व गाँव विरनपुर कृतपुरा में भक्तो के आग्रह पर कुछ माह उनके बागीचे में रह कर तपस्या साधना किए।

तीन–चार वर्ष बाद स्वामी जी का आगमन अँजोरपुर गाँव में हुआ। इस बार गेरुआ वस्त्र धारण किए थे। अपने हाथ में दण्ड भी धारण किये थे, इस बार कुछ माह व्यतीत करने के बाद अन्यत्र स्थान को चले गये। उनका प्रिय भोजन खिचड़ी था।

दो वर्ष बाद स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी का आगमन अँजोरपुर गाँव में हुआ। अब इनके शरीर पर गेरुआ वस्त्र तो था किन्तु हाथ में दण्ड नहीं रहा। जब लोंग स्वामी जी से दण्ड के विषय में पूछे कि आप का दण्ड कहाँ है, इस बात को सुनकर स्वामी जी बोले–बन्धन से मुक्त होने के लिए दण्ड को त्याग दिया है। माँ गंगा जी में प्रवाहित कर दिया।

स्वामी जी के निवास करने के लिए अँजोरपुर गाँव के भक्त स्व0 ब्रह्मदेव राय जी के खेत में अँजोरपुर गाँव और इन्दरपुर गाँव के सिवान पर इन्दरपुर मौजा में कच्ची सड़क

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(छावर) के किनारे मगई नदी के निकट एक छोटी झोपड़ी लगा दिए। जहाँ स्वामी जी दो वर्ष रह कर तपस्या किए। वहाँ दिन में भक्तों की भीड़ लगी रहती थी। संध्या होते ही सभी को झोपड़ी छोड़ने का आदेश दे देते थे। रात्रि वेला में पर्ण कुटी पर स्वयं अकेले निवास करते थे। स्वामी जी यहाँ से अन्यत्र स्थान को चले गये।

एक वर्ष बाद स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी अँजोरपुर गाँव पधारे इस बार इच्छा व्यक्ति किए पुराना स्थान गाँव से करीब है और गाँव से दूर गंगा तट पर झोपड़ी लगाने का प्रस्ताव दिए। पुनः इस बार इन्दरपुर मौजा में ही श्री लालबचन राय जी के खेत में झोपड़ी डाली गई। इस स्थान पर विभिन्न प्रकार के फल-फूल के साथ-साथ औषधिय पौधे भक्तों ने लगाए। बहुत सुन्दर फुलवारी बन कर तैयार हो गई। स्वामी जी अन्न का परित्याग किए थे मात्र गाय का आधा लीटर दूध सुबह और संध्या समय लेकर जीवन-यापन कर रहे थे। कभी-कभी दूध न आने पर बाबा को उपवास करना पड़ता था। उस समय वे दुर्वा घास शील पर पीस कर ग्रहण कर लेते थे। समय पर दूध की उपलब्धता न देख कर स्थानीय भक्तों ने आपस में चन्दा इकठ्ठा करके एक गाय खरीद दिया और उस गाय को गाँव के ही स्व0 दीना नाथ गोंड को दे दिया गया। दीनानाथ सुबह-शाम आधा लीटर दूध प्रतिदिन स्वामी जी को पहुँचा देते थे। स्वामी जी दण्ड त्याग दिए थे। अब भगवान श्री कृष्ण एवं राधा जी के उपासक हो गये थे। लोगों ने आपस में चन्दा लगाकर श्री राधा-श्रीकृष्ण के लिए वहाँ पक्का छोटा मन्दिर का निर्माण करा दिए।

स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी का दर्शन एवं धार्मिक ग्रन्थों पर चर्चा व उनके प्रवचन का लाभ लेने हेतु आस-पास के गाँव से भक्त उनकी कुटिया में आते थे। कुछ समय व्यतीत होने पर झोपड़ी, मन्दिर व फुलवारी भूमि सहित गंगा जी के कटान में विलिन हो गया। तब भक्तों द्वारा पुनः पुराने स्थान पर स्वामी जी के लिए झोपड़ी लगाई गई। जिसमें श्री राधा-श्रीकृष्ण के साथ स्वामी जी रहते थे। कुछ माह बाद स्वामी जी अन्यत्र स्थान पर चले गये।

लगभग छः वर्ष बाद स्वामी जी सिंथौरा ग्राम-निवासी श्री रामवृक्ष सिंह व उनके छोटे भाई श्री रामस्वरूप सिंह के साथ श्री राधा जी की मूर्ति लेकर वाराणसी से आ रहे थे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बक्सर से पूर्व कर्मनाशा नदी को लाँघना न पड़े इसलिए वाराणसी से बलिया आ गए और भैया हरदेव सिंह जी के यहाँ रात्रि विश्राम किए।

अँजोरपुर गाँव का विद्यार्थी बलिया पढ़ने आया था, स्वामी जी को देखा वह दौड़ कर उनका चरण-स्पर्श किया तथा अँजोरपुर चलने का आग्रह किया। स्वामी जी उसका आग्रह स्वीकार किए और दूसरे दिन सुबह श्री रामवृक्ष सिंह व श्री रामस्वरूप सिंह को साथ लेकर अँजोरपुर गाँव आए।

श्री परमात्मानन्द पण्डित पुत्र स्व० बालेश्वर पण्डित के कथनानुसार-

स्वामी जी की पद यात्रा आगे बढ़ी तो गाँव नरायणपुर जनपद-बलिया (उ०प्र०) में गंगा जी के तट पर किसी संन्यासी संत का भण्डारा था काफ़ी संख्या में संन्यासी संत भण्डारे में निमंत्रण पाकर उपस्थित थे। भिक्षा में खीर-पुड़ी ग्रहण कर रहे थे। स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी कुछ बिलम्ब से पहुँचे वे भण्डारा स्थल से कुछ दूर पर जाकर बैठ गए। नरायणपुर गाँव के एक अहीर (ग्वाला) का लड़का स्वामी जी के निकट आकर उन्हें प्रणाम किया, बोला-स्वामी जी मैं भिक्षा ला रहा हूँ, उसकी बात सुन कर स्वामी जी बोले-भिक्षा के लिए क्या लाओंगे? लड़का बोला-पूरी-दही। स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उस लड़के से पूछे-तुमने क्या खाया हैं लड़के का जबाब था 'बाजरे का भात और मठ्ठा' उसकी बात सुन कर स्वामी जी बोले-मैं भी वही खाऊँगा, खिलाओगे? कुछ देर तक वह ग्वाल बाल चुप रहा, फिर सम्भल कर बोला-स्वामी जी घर के बच्चों ने उसे जूठा कर दिया हैं, वह आपके खाने योग्य नहीं हैं। स्वामी जी जिद किए बोले-मैं वहीं खाऊँगा। वह अहीर (ग्वाला) का लड़का अपने घर गया और थोड़ी देर बाद बाजरे का भात व छाछ लेकर आया, उसे स्वामी जी को दे दिया, स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी बैठकर बड़े प्रेम से भिक्षा ग्रहण करने लगे। वे भक्ति भाव में विभोर थे कदाचित उन्हें गोपाल नन्दनो का उच्छिष्ट करने वाले श्री कृष्ण का स्मरण हो आया होगा।

उसी क्षण भिक्षा लेकर दण्डी स्वामी श्री विशुद्धानन्द सरस्वती जी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी के निकट आ पहुँचे। उनकी ओर देख कर क्रोधित हो गए। क्रोध से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनका चेहरा लाल हो गया था, वे तेज आवाज में बोलने लगे-तुम्हें दण्ड धारण करने का अधिकार नहीं है। तुमने कहाँ से यह दण्ड प्राप्त किया है ? इस प्रकार उन्हें खरी-खोटी सुनाने लगे। स्वामी जी तन्मयता के साथ मुस्कुराते रहे, भिक्षा ग्रहण करने के बाद उठ कर वे दण्डी स्वामी श्री विशुद्धानन्द सरस्वती जी के पास आए। उनसे हँसते हँसते बोले- स्वामी जी, आपको इस दण्ड कमण्डल से बडी ममता और प्रेम है तो यह लीजिए "दण्ड व कमण्डल" और इतना कह कर वे उनके हाथो में दण्ड व कमण्डल सौंप कर चल दिए।

स्वामी श्री विशुद्धानन्द सरस्वती जी उनका दण्ड व कमण्डल लेकर अपने गुरू श्री मत् परमहंस परिब्रजकाचार्य दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी महाराज के पास पहुँचे,। उस समय गुरूदेव चार्तुमास कर रहे थे,। उन्होंने उनके चरणों मे दण्डवत प्रणाम किया, तद्परान्त पूरा वृतान्त कह सुनाया। उनकी बात सुन गुरूदेव बड़े क्रोधित हुए। कहने लगे, आने दो उस दुष्ट को, मार कर उसका प्राण हर लूँगा। गुरूदेव को क्रोधित देख उनके भक्तों ने स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी से जाकर कहा, कि गुरूदेव आप पर बड़े क्रोधित है इस समय आप उनके निकट मत जाइएगा, फिर भी स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी अपने गुरूदेव के निकट गए, सामान्य भाव से पृथ्वी पर लेटकर गुरूदेव को साष्टांग प्रणाम किया।

यह देख दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी अपने स्थान से उठ कर अपने प्रिय शिष्य स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी का दोनों हाथ पकड़कर उठा लिए और कहने लगे-भूमि पर लोटने से अध्यात्म का अपमान होता है, इस लिए तू अपनी कुटियाँ में चला जा, गुरूदेव की बात सुन कर दण्डी स्वामी श्री विशुद्धानन्द सरस्वती जी बोल पड़े- गुरूदेव आप अभी तो थोड़ी देर पहले उनको मारने की बात कर रहे थे, अब अचानक ऐसा क्या हो गया कि आप इस तरह की बाते कर रहे है ? उनकी बात सुन दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी बोल पड़े-जब वह मेरा शिष्य था तो उसको मारने के लिए कहा था, परन्तु अब वह स्वत: श्री गोपाल स्वरूप है हम धन्य हो गए ऐसे शिष्य को पाकर उसी समय से स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी दण्ड त्याग कर विचरण हेतु चल पड़े।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

इसके बाद वे भगवान श्री कृष्ण के अनन्य उपासक हो गए। निर्गुण ब्रह्म से सगुण ब्रह्म की साधना मे लीन हो गए, तथा मूर्ति पूजा को पुन: करना प्रारम्भ किया। ऐसा करते हुए भी वे संन्यासी धर्म का निर्वहन करते रहे। उन्होंने कभी भी अग्नि का स्पर्श अपने हाथों से नहीं किया, उपर्युक्त घटना के कुछ समय बाद दण्डी स्वामी श्री विशुद्धानन्द सरस्वती जी को अपने किए गए कार्य पर पश्च्यातापं हुआ। उनके मन में जिज्ञासा उठी कि वह कौन हैं? कौन हो सकते हैं ? जिसने तनिक भी विरोध प्रदर्शित नहीं किया। इसी उहापोह की स्थिति मे काफी दिन पड़े रहे। जब उनको आत्मज्ञान हुआ कि श्री गोपालानन्द सरस्वती कोई और नहीं स्वंय श्री गोपाल जी हैं। तो वे सदैंव दण्ड कमण्डल उन्हें लौटाने के लिए तड़पते रहे, परन्तु लौटा न सके और अपना जीवन समाप्त कर दिया।

स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी इसके पश्चात् भारत वर्ष के अनेंक प्रमुख तीर्थ स्थलों मन्दिरों, पर्वत गुफाओं और जंगलो में रह कर साधना-तपस्या किए, एवं धार्मिक ग्रन्थों का भली-भाँति अध्ययन करते रहे। इसी यात्रा क्रम मे स्वामी जी बलिया जनपद के अँजोरपुर गाँव आये इनके रहने के लिए भक्तो ने गंगा तट पर पर्णकुटी तैयार किया, जिसमें स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी रहने लगे, एक दिन स्वामी जी अपनी कुटिया में भक्तो के बीच बैठकर धार्मिक ग्रन्थों पर चर्चा कर रहे थे। वे भक्तों के बीच यह इच्छा प्रकट किए कि श्री मद्‌भागवत के तत्व ज्ञान पर कुछ लिखना चाहता हूँ, उनकी बात सुनकर किसी भक्त ने लेखन कार्य हेतु कागज के साथ-साथ कलम की व्यवस्था कर दी।

जब उनकी कुटियाँ में कोई भक्त नहीं रहता तो वे उस एकान्त अवधि में लेखन का कार्य करते थे, जिसे झोपड़ी की टाटी में सुरक्षित रख देते थे। स्वामी जी का दर्शन करने वालो में ग्राम-भिखारीपुर पोस्ट- अँजोरपुर जनपद-बलिया (उ0प्र0) निवासी श्री परमात्मानन्द पण्डित जी भी थे। वे निकटवर्ती ग्राम-इन्दरपुर के जूनियर हाई स्कूल में संस्कृत के अध्यापक थे। उन्हें आयुर्वेद का अच्छा ज्ञान था बैद्यकी का अनुभव था, आस पास के गांवो में बीमार रोगियों की चिकित्सा (इलाज) भी करते थे। इस कारण निकटवर्ती गाँव के सभी लोगों के प्रिय थे।

एक दिन श्री परमात्मानन्द पण्डित जी स्वामी जी के पास दर्शन करने गये। जब वे घर वापस जाने लगे तब स्वामी जी ने उनको पास बुलाकर झोपड़ी की टाटी मे सुरक्षित रखे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गये कागज के पन्नों की ओर इशारा करते हुए कहा कि इन्हें ले जाओं संभाल कर सुरक्षित रखना कभी पुस्तक का रूप दिया जायेगा। श्री परमात्मानन्द पण्डित जी वह लिखित कागज के पन्नों को पढ़ने लगे, जिसमें स्वामी जी द्वारा पुस्तक का नामकरण किया गया था "सारल्य-दर्शन" श्री परमात्मानन्द पण्डित जी स्वामी जी के आदेशानुसार कागज के पन्नों को अपने घर ले गए तथा उसे सुरक्षित रख दी।

कुछ दिनों तक अँजोरपुर गंगा तट पर प्रवास एवं तपस्या करने के पश्चात् स्वामी जी देशाटन पर चले गए। वे एक स्थान पर कभी अधिक दिन नहीं रूकते थे। इस बीच दो या तीन बार अँजोरपुर गाँव आए। गंगा तट पर तपस्या की और अन्यत्र चलते बने। बहता हुआ नदी का पानी और संन्यासी संत कभी किसी एक स्थान पर स्थिर नही रहता।

पुनः लगभग ढ़ाई वर्ष बाद सन् 1969 ई0 के आषाढ़ मास में स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी राजगृह के स्वर्ण भण्डार पर सिंथौरा गाँव निवासी बुदी साव को दिखाई दिए। इस बार स्वामी जी के हाथ में दण्ड नहीं था। बुदी साव ने स्वामी जी का चरण स्पर्श किया और इनकी सेवा में लग गये। बुदी साव दिन भर स्वामी जी के साथ स्वर्ण भण्डार पर रहते थे और संध्या होते बाबा से अनुमति ले कर सिंथौंरा गाँव अपने घर पहुँच जाते, पुनः प्रातः काल गाँव के किसानों से बाबा के लिए गाय का दूध माँग कर स्वर्ण भण्डार पर स्वामी जी के पास उपस्थित हो जाते थे यही उनका नित्य का कार्य था। यह क्रम तीन-चार दिन चला।

एक दिन स्वर्ण भण्डार पर नौजवान लड़के एवं नौजवान लड़कियों का झुण्ड आया, संध्या का समय उनकी अश्लील एवं अभद्र व्यवहार को देख कर बाबा दुःखित हो गए। स्वामी जी का स्वर्ण भण्डार पर आने की सूचना जब सिंथौंरा गाँव निवासी श्री राम स्वरूप सिंह जी को बून्दी साव से मिली तो वे जंगलिया बाबा के पास आए और उनका चरण पकड़ कर रोने लगे। स्वामी जी उन्हें सांत्वना दिए बोले-बेटा अब तुम्हें नही छोडूगाँ श्री राम स्वरूप सिंह स्वर्ण भण्डार से स्वामी जी को सिंथौंरा जंगल में उस स्थान पर लेकर पहुँचे जहां वे पहली बार चार्तुमास किए थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री राम स्वरूप सिंह स्वामी जी से आग्रह करते हुए बोले, यहाँ की भूमि सरकार ने हरिजनों को आवंटित कर दिया हैं, यहाँ से 200 मीटर नीचे हमारी पैतृक भूमि है आपकी अनुमति हो तो उसी भूमि मे झोपड़ी लगा दी जाय। वही रहकर आप चार्तुमास करें। स्वामी जी का आदेश हो गया, झोपड़ी लगी उसमें रह कर तपस्या करने लगे।

इस बार स्वामी जी के हाथ में दण्ड नहीं था वे दण्ड का परित्याग कर चुके थे। झोंली में भगवान श्री कृष्ण की छोटी सी पीतल धातु से निर्मित मूर्ति रहती थी, जिसकी पूजा अराधना नित्य स्वामी जी करते थे। सिंथौरा गाँव के जंगल में जंगलिया बाबा के आने और रहने की खबर इलाके के सभी गाँवो में पहुँच गई। जंगल में भक्तों की भीड़ उमड़ने लगी जहाँ झोपड़ी लगी थी। उस स्थान को स्वामी जी **''श्री गोपाल धाम''** नाम करण किए दिन में जब भक्त उनके दर्शन के लिए जंगल में उनके पास आते तो जंगलिया बाबा उनके बीच बैठकर अध्यात्म की बात किया करते थे और सभी भक्तों के साथ बैठकर– नीचे लिखित संकीर्तन किया करते थे–

''गोविन्द जय, जय, गोपाल जय, जय।
राधा रमण हरि गोविन्द जय, जय॥

इस बार भी स्वामी जी भिक्षा लेने जंगल से सिंथौरा गाँव पर जाते थे, तो गाँव के बाहर उसी वट वृक्ष के नीचे बैठ जाते थे और गाँव के पाँच घरो से भिक्षा लेकर वापस जंगल चले आते थे। जंगलिया बाबा पूर्व की भांति गाँव–गाँव जाकर गाँव के बाहर ही रह कर भिक्षा प्राप्त कर वही से जंगल को वापस चले आते थे। इसी क्रम में एक दिन भिक्षा के लिए चण्डी मौ गाँव के बाहर बैठे थे। उनके हाथ में जंगली लकड़ी (ढ़ेला वृक्ष से निर्मित) सुन्दर छड़ी को देख कर चण्डी मौ गाँव के लड़के शोर करते हुए इधर–उधर भागने–दौड़न लगे गाँव में लकड़ सुघवा आया है, पकड़ लेगा। यह सुनते ही गाँव के छोटे–छोटे बच्चे छिपने–भागने लगे। स्वामी जी के द्वारा समझाने और प्यार दिखाने के बाद श्री सुनिल प्रसाद सिंह उर्फ (श्री मुन्ना सिंह) धीरे–धीरे उनके पास गए, आदर पूर्वक चरण–स्पर्श करते हुए बाबा से छड़ी की मांग किए। स्वामी जी मधुर स्वर में बोले इस छड़ी से भी अच्छी वस्तु तुम्हें देंगे। तेरा जीवन सफल हो जायेगा। बाल्य अवस्था के कारण स्वामी जी के शब्दों को वे समझ नहीं पाए। मुन्ना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिंह अपनी माता जी से भोजन लेकर आए और स्वामी जी को भिक्षा ग्रहण करने का अनुरोध किए। बाबा अपनी हाथ की अंजुली में लेकर भिक्षा ग्रहण किये और पुनः जंगल में वापस आ गये।

जंगलिया बाबा द्वारा भगवान श्री कृष्ण की एकल मूर्ति की पूजा करने पर जंगल मे उपस्थित भक्तों ने बाबा से निवेदन कर कहा श्री राधा जी को जुदा कर भगवान श्री कृष्ण की पूजा करना शोभा नहीं दे रहा है। भक्तों की बात सुन कर स्वामी जी श्री राम स्वरूप सिंह व श्री रामवृक्ष सिंह के साथ वाराणसी गए और वहाँ से श्री राधा की मूर्ति चयन कर श्री गोपाल धाम वापस आ गए। इसके बाद श्री राधा- श्री कृष्ण की युगल मूर्ति की पूजा करने लगे। वाराणसी आने पर वे गंगा जी में नाव पर चढ़ कर शिवालाघाट तक गए और अपने गुरु आश्रम राजगुरू मठ को प्रणाम कर वापस हो गये। उनके साथ श्री रामवृक्ष सिंह व श्री राम स्वरूप सिंह थे उन्हें तनिक आभास व जानकारी नहीं हो पाई कि शिवालाघाट पर बाबा का गुरु आश्रम है।

श्री गोपालधाम में दूर-दूर के कीर्तन भजन करने वाले गायक जंगलिया बाबा के यहाँ जंगल में आते थे। कटौंना गाँव निवासी श्री लुखाड़ी जी भट्ट परिवार से थे वे भजन के अच्छे गायक व वाद्य कलाकार थे वे भी हमेशा बाबा के यहाँ आते-जाते थे। एक दिन लुखाड़ी जी कटौंना गाँव के सम्पन्न किसान श्रीबाबू के पास बैठे थे, श्रीबाबू को संन्तान नही था वे उदास थे श्री लुखाड़ी जी से बोले मेरे पास भगवान ने सब कुछ दिया है किन्तु भविष्य में कोई इस धन का रखवाला नहीं है इसी सोच के कारण मेरा मन उदास रहता है। श्रीबाबू की बात सुन कर लुखाड़ी जी कहने लगे सिंथौरा के जंगल में जंगलिया बाबा का आप के ऊपर आशीर्वाद हो जाय तो आप को संन्तान का सुख मिल जाएगा और धन का रखवाला भी आ जाएगा। वंशावली की रक्षा होगी।

दूसरे दिन लुखाड़ी जी श्रीबाबू को जंगल लेकर पहुँच गये बाबा से मिले, उसके बाद, श्रीबाबू जंगलिया बाबा के निकट आने-जाने लगे, एक दिन जंगलिया बाबा से आग्रह किए उन्हें कटौंना आने का न्योता दिए, स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) श्रीबाबू का प्रार्थना स्वीकार कर लिए, श्रीबाबू जंगलिया बाबा को लेकर अपने यहाँ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गये। कटौंना गाँव निवासी श्री मोहन राम पुत्र स्व0 दुर्गा राम आयु 65 वर्ष जाति के कमकर (रवानी) परिवार के है ने बताया जब स्वामी जी को लेकर श्रीबाबू कटौंना गाँव गये उस समय मेरी उम्र लगभग चौदह-पन्द्रह वर्ष की थी। मुझे स्मरण है स्वामी जी तीन-चार दिन गाँव के बाहर स्थित ठाकुर जी का मन्दिर है। उसी मन्दिर के पास बागीचे में रूके थे। बागीचे के चारों दिशा में वर्षा का पानी लगा था। स्वामी जी को जब भी बागीचे से बाहर जाना होता था तो लोग अपनी पीठ पर लाद कर उन्हें बागीचे में वहाँ इकठ्ठा जल से बाहर कर देते थे। एक दिन स्वामी जी को मैं भी अपनी पीठ पर लाद कर पानी से बाहर किया था, मेरी छोटी उम्र होने पर भी उनका भार मुझे महसूस नहीं हुआ वे बच्चों बुढ़ो से प्यार करते थे उसके बाद श्रीबाबू जी के दरवाजे पर जा कर रहने लगे।

श्रीबाबू का परिवार खुशी से झुमने लगा। वे लोंग स्वामी जी को भगवान की भाँति आदर सत्कार और स्वागत करने लगे। बाबा मोह जाल में आ गये जंगल छोड़ कर श्रीबाबू के यहाँ कटौंना मे रहने लगे। श्रीबाबू की पत्नी गर्भ धारण की। एक दिन श्रीबाबू की माता जी दौड़ते-हाँफते घर से दरवाजे पर आ गई। रोते हुए स्वामी जी के चरणों में गिर कर कहने लगी-बाबा बहु को प्रसव पीड़ा हो रहा है ऐसा जान पड़ता है कि जच्चा व बच्चा दोनों नहीं बचेंगे, आप दया करें। यह खबर पा कर स्वामी जी तुरन्त उठें और श्रीबाबू की माता जी के साथ प्रसव गृह में प्रवेश कर गए और दरवाजें पर खड़े हो गये। थोड़ी देर बाद प्रसव पीड़ा कम हो गया बाबा के आशीर्वाद से उन्हें पुत्र रत्न प्राप्त हुआ।

श्रीबाबू के यहाँ रह कर जंगलिया बाबा राजऋषि के तरह भौतिक सुख सुविधा प्राप्त करते रहें। श्रीबाबू अपने यहाँ से उन्हे अन्यत्र भेजना नहीं चाहते थे लगातार दो-ढ़ाई वर्ष जंगलिया बाबा श्रीबाबू के दरवाजे पर रहें। स्वामी जी को श्रीगोपालधाम वापस लाने के लिए भक्तों ने बहुत प्रयास किया किन्तु सभी प्रयास विफल हो गए।

एक दिन चण्ड़ी मौ गाँव से श्री सुनिल प्रसाद सिंह उर्फ (श्री मुन्ना सिंह) बाबा से मिलने कटौंना गाँव गए, स्वामी जी को दण्ड प्रणाम किए, थोड़ी देर तक उनके निकट [redacted] बैठे रहे, संध्या होने पर बाबा का चरण स्पर्श कर जाने की अनुमति माँगी और वे अपनी ससुराल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(जो कटौना में ही था) चले गए। स्वामी जी के पास कटौंना गाँव के श्री देवकी सिंह व श्री भुरहा बाबा बैठे थे वे दोनों जंगलिया बाबा से बोले-आप हमेशा श्रीगोपालधाम पहुँचने वाले भक्तों की प्रशंसा करते है जिसमें श्री सुनिल प्रसाद सिंह उर्फ (श्री मुन्ना सिंह) का नाम आता है मुन्ना सिंह आप के पास आए बैठे रहे पर वे अपने मुँह से एक बार भी आपको वापस ले जाने के लिए नहीं कहे। यह सुन स्वामी जी हँसते-हँसते बोले-भक्त की परीक्षा आप लोग कल देख लेना। प्रातः काल मुन्ना सिंह शौच क्रिया करने ससुराल से उसी रास्ते खेत में गए थे, सुबह होने पर स्वामी जी के पास श्री देवकी सिंह और श्री भुरहा बाबा बैठे थे। जंगलिया बाबा उठ कर उस स्थान पर खड़े हो गये जहाँ गाँव के छोटे-छोटे बच्चे शौच कर गन्दा किए थे और उसके पास कूड़े की ढ़ेर से गंदगी और भी हो गई थी। मुन्ना सिंह शौच कर वापस लौट रहे थे। स्वामी जी के पास पहुँच कर लगभग 5-6 फीट दूरी से ही साष्टांग दण्डवत की मुद्रा में उनके पैरों में माथा टेक दिए मुन्ना सिंह के शरीर में व कपड़े पर मैला लग गया, किन्तु वे उस शौच और गन्दगी की परवाह नहीं किए। तब स्वामी जी बोले तू मूर्ख है? यहाँ कितनी गंन्दगी है दूर से प्रणाम कर लेता इसकी क्या आवश्यकता थी। मुन्ना सिंह बोले शौच के बाद मेरे दोनों हाथ गन्दे हैं मैं आपका पवित्र चरण कैसे छूता इसलिए मैने पवित्र सिर को आपके चरणों में अर्पित किया है, इसमे मेरा क्या दोष है। भक्त की परीक्षा को देख वहां उपस्थित अन्य भक्तों के साथ-साथ श्री देवकी सिंह व श्री भुरहा बाबा अचम्भे में पड़ गए। उपस्थित भक्त जयकारा करने लगे, इसके बाद मुन्ना सिंह अपने ससुराल में जाकर स्नान किए और वस्त्र बदले।

सिंथौरा गाँव मे हैंजे की बीमारी फैल गई थी, गाँव के लोग कटौंना आकर बाबा से आग्रह किए स्वामी जी तुरन्त वहाँ से सिंथौंरा गाँव के लिए चल दिए, और गाँव पहुँच कर रोगियों के लिए जड़ी बुटी की दवा दिए। सभी रोगी ठीक हो गये। तथा वे कटौंना वापस चले गए।

एक दिन श्री रामस्वरूप सिहं की माँ श्रीमती सुदामा देवी बोली- स्वरूपा गाँव के सभी जंगलिया बाबा से मिलने गए, तुम्हें अपने काम से फुरसत नहीं मिलता तुम नहीं गए। बाबा कहते थे वनरा बनिया हैं। उन्हें वापस लाने के लिए तुम क्यों नहीं जाता। राम स्वरूप सिंह बोले-माँ उनके पास क्या लेकर जाऊँ। माँ बोली मेरे हाथ की फुटेहरी (लिट्टी) उन्हें बहुत पसन्द है, बना कर देती हूँ। माँ ने फुटेहरी तैयार किया जिसे मोटर साईकिल की डिग्गी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में रख कर कटौंना चले गए, बाबा के पास पहुँच कर चरण स्पर्श किया और बैठ गए। श्रीबाबू के घर से उनको नाश्ता आया किन्तु रामस्वरूप सिंह उसे नहीं खाये। स्वामी जी बोले-नाश्ता क्यों नहीं खाया बनरा ?

श्री राम स्वरूप सिंह, का उत्तर था माँ ने मुझे चिजोर खिलाई है, बाबा बोले-वह क्या है ? तब राम स्वरूप सिंह कहे- "फुटेहरी" यह सुन जंगलिया बाबा बोले माँ हमारे लिए नहीं दी है, रामस्वरूप सिंह मोटर साईकिल की डिग्गी से निकाल कर फुटेहरी की पोटली बाबा के निकट लेकर आए, स्वामी जी झपटकर उसे छीन लिए जैसे-सुदामा के हाथ से भगवान श्री कृष्ण ने तन्दूल की पोटरी छीन लिया था। उपस्थित भक्तों में वितरण करते हुए स्वयं खाने लगे। उनके निकट लगभग दो घन्टा रहने के बाद राम स्वरूप सिंह विना कुछ आग्रह किए बाबा के चरण कमल को स्पर्श करते हुए घर वापस जाने की आज्ञा माँगे। स्वामी जी बोलें-आज नहीं कल को चले जाना स्वरूपा, तब राम स्वरूप सिंह के आँखो में आँसू भर आया, रोते हुए बोले-इस राज महल में मेरा कहाँ स्थान है मैं अपनी झोपड़ी में ही रहूँगा। स्वामी जी बोले- बनरा बहुत बदमाश है हमें राजमहल में रहने की उपमा दे रहा है। वे सन् 1970 ई0 से मार्च सन् 1973 ई0 तक कटौंना मे श्रीबाबू के दरवाजे पर निवास किए। चार छः दिन बाद सभी भौतिक सुखो का परित्याग कर स्वामी जी कटौंना गाँव से सीधे श्री गोपालधाम कुटियाँ पर आ गए। भक्तों द्वारा स्वामी जी को जंगल में आने के सम्बन्ध मे पूछने पर बाबा बोले बनरा का ज्ञान मय शब्द मेरे हृदय में बाण की तरह भेदन किया इसी कारण श्री गोपाल धाम में आ गया।

कुछ समय बाद जंगलिया बाबा अन्न-जल का परित्याग कर दिए सिथौंरा गाँव के किसान आपस में बैठ कर फैसला लिए संध्या के समय प्रतिदिन अपने-अपने घर से गाय का दूध जंगलिया बाबा के लिए श्रीगोपालधाम में भेजेंगे। तीस दिन दूध भेजने हेतु तीस किसानों की सूची तैयार की गई, सभी ने अपनी अपनी सहमती दी कुछ माह तक यह कार्यक्रम सुचारू रूप से चला समय व्यतीत होने लगा, कई लोग अपनी पारी के दिन दूध लेकर नही गए, जब श्री रामवृक्ष सिंह अपनी पारी पर दूध लेकर पहुँचे तो बाबा बोले-बेटा हमें दूध की आस रहती थी बहुत हुआ मेरी आस टूट गई है अब दूध की मुझे आवश्यकता नहीं है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घर लेते जा, रामवृक्ष सिंह बहुत प्रयास किए बाबा दूध नहीं लिए वापस कर दिए। राम वृक्ष सिंह घर जा कर अपनी माँ से कहे उनकी माँ रामवृक्ष सिंह के साथ श्री गोपालधाम चल पड़ी उसे देख स्वामी जी कुटियाँ से निकल कर बीच राह में आ गए- बोले इसमें कष्ट करने की कोई बात नहीं है जब कोई दूध नहीं देना चाहता तब मात्र तुम्हारे घर से दूध पीकर नियम तोड़ने से क्या फायदा। माँ बोली मेरा तीन नहीं चार पुत्र है आपके हिस्से का दूध मैं प्रतिदिन भेजूँगी तब स्वामी जी दूध लिए यह क्रम कुछ दिन चला।

उसके बाद स्वामी जी उपवास व्रत प्रारम्भ कर दिये। अन्न लेना बन्द कर दिए। पहले मंगलवार एंव शनिवार का उपवास ब्रत शुरू किए यह क्रम कुछ माह चला, फिर मंगलवार और शनिवार को अन्न लेना प्रारम्भ किए पाँच दिन मात्र पानी व दूध पर रहने लगे यह क्रम दो माह चला इसके बाद माह में तीन दिन अमावस्या, पूर्णिमा एवं प्रथम दिन (प्रतिप्रदा) को अन्न लेने लगे शेष पूरे माह पानी पर रहने लगे। इसके बाद अन्न, जल, दूध लेना बन्द कर दिए।

एक दिन अपने खेत की जुताई करने बैलों को लेकर श्री रामवृक्ष सिंह श्री गोपालधाम गएं थे, स्वामी जी का शरीर को देख घर आ कर अपनी माँ से बोले अब स्वामी जी नहीं बचेंगे वे अपना शरीर छोड़ना चाहते है। रामवृक्ष सिंह से सूचना मिलते ही उनकी माँ अपने को रोक नहीं सकीं, तुरन्त स्नान कर भोजन तैयार की एक हाथ में भोजन की थाली तथा दूसरे हाथ में लोटा का जल लेकर जंगल की ओर चल पड़ी। वह तेज गति से चल कर जंगल में जंगलिया बाबा की कुटियाँ पर पहुँच गई। कुटियाँ को सून-शान देख कर हाथ की थाली का प्रसाद और लोटे का जल स्वामी जी की गद्दी पर रख दी और वही बैंठ कर रोने लगी, उसकी करुण-क्रन्दन भरा रोदन को सुन कर स्वामी जी पास की झाड़ी में से धीरे-धीरे एक डण्डे के सहारे चलकर झोपड़ी के पास आए, तथा बूढ़ी महिला से बोले- तू क्यों रो रही है माँ तुम पर कौन सी ऑफत आ गई जिसके कारण रो रही हो। स्वामी जी की बात सुन भोला सिंह की पत्नी रो-रो कर कहने लगी इससे बढ़ कर विपत्ति क्या हो सकती हैं विधाता ने बिना मांगे धरोहर के रूप में पुत्र दिया हैं अब मुझसे छीन लेना चाहता है। आप मेरी बात मानेगें ? स्वामी जी बोले- कहो माँ क्या कहना चाहती हो, श्री रामस्वरुप सिंह की माँ बोली- आपका शरीर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जो भी गलती किया हैं उससे अधिक स्वयं इस शरीर को कष्ट दे रहे है। अब इस पर दया कर गलती को क्षमा करें। आप मुझे माँ कहे हैं मैं जो भी प्रसाद आपके लिए लायी हूँ उसे ग्रहण करें। स्वामी जी बोले– क्या तुम मुझे खिलाओगी माँ ? वह वृद्ध महिला बोली– आप मुझे माँ पुकारे हैं, माँ का कार्य है भोजन तैयार कर बेटे के आगे पहुँचा देना और बेटा का कार्य हैं धन उपार्जन करना, आप हमें देगें हम भोजन तैयार कर अवश्य पहुँचा दूँगी। माँ की बात सुन स्वामी जी शान्त हो गए, उनके पास उत्तर नहीं था उनकी आवाज बन्द हो गई। गद्दी पर रखे गए भोजन का थाल उठाकर स्वामी जी भिक्षा करने बैठ गए उसी दिन से सुबह–शाम श्री राम स्वरुप सिंह के घर से श्री गोपालधाम में भोजन आने का क्रम चल पड़ा,। गर्मी हो या जाड़ा हो या बरसात का मौंसम हो श्री रामस्वरुप सिंह के यहाँ से लाया गया भोजन का प्रसाद भगवान को भोग लगाकर स्वामी जी भिक्षा लेने लगे और उपस्थित भक्तों में प्रसाद वितरण किया जाने लगा।

स्वामी जी का आशीर्वाद श्री रामस्वरुप सिंह के ऊपर हुआ उन्हें ठेके में बड़े–बड़े कार्य मिलने लगा। ठेका कार्य बढ़ने से वे दिन रात परिश्रम करने लगे। अपने शरीर के स्वास्थ्य पर ध्यान नहीं देने से उन्हें पिलिया रोग हो गया। उनका शरीर धीरे–धीरे कमजोर होता गया यह समाचार जंगलिया बाबा तक पहुँचा तो स्वामी जी संवाद भेज कर उन्हें श्री गोपालधाम में बुला लिए तथा रामस्वरुप सिंह के गमछे से ही उनका दोनों हाथ झोपड़ी के खम्भे में बाँध कर बोले तुमको 21 दिन का कार्य से विरक्त रहने की सजा दे रहा हूँ। रामस्वरुप सिंह को सर्वप्रथम श्री गोपालधाम में रात्रि निवास करने का आदेश अनुमति जंगलिया बाबा दिए।

जंगल में जल का अभाव था स्वामी जी के लिए मिट्टी के दो घड़े में सिंथौंरा गाँव से पीने के लिए जल लाया जाता था। एक घड़े का जल समाप्त होंने पर दूसरे घड़े का जल लाया जाता था। बैशाख माह में बच्चों की जमात लेकर मुन्ना सिंह गाँव से जंगल में प्यार फल खाने के लिए आए, फल खाने के बाद सभी बच्चो को प्यास लगी, प्यास से व्याकुल हो कर अपनी प्यास बुझाने सभी स्वामी जी की कुटियाँ पर आए, घड़े मे थोड़ा जल था एक–एक अंजुली जल पिए प्यास और तेज हो गई, श्री रामस्वरूप सिंह व श्री मुन्ना सिंह आपस में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

विचार-विमर्श करने लगे जंगल में घड़े का जल से काम नहीं चलने वाला है यहाँ एक कुएँ का निर्माण होना चाहिए। दोनों ने घड़ा फोड़ने की योजना बनाई, दूर से घड़े पर निशान साधते हुए पत्थर से मारने लगे। श्री मुन्ना सिह का निशाना चूक गया, श्री रामस्वरूप सिह का पत्थर घड़े पर लगा और घड़ा फूट गया। घड़ा फूटने की ध्वनि हुई स्वामी जी पूछे मुनवा घड़ा फोड़ दिया ? मुन्ना सिंह ने उत्तर दिया मैं नहीं स्वरूपा घड़ा फोड़ा है पहले स्वामी जी क्रोधित हुए, श्री राम वृक्ष सिंह दूसरे घड़े में जल भर कर श्रीगोपालधाम आए, घड़ा फूटा देख अपने छोटे भाई रामस्वरुप सिह पर क्रोधित हुए स्वामी जी रामवृक्ष सिह को शान्त किए बोले, श्री राधा कूप का निर्माण होना है बृक्षवा बनरा को बुलाओं बुनियाद खोदने का मुर्हुत हो गया है।

राम स्वरुप सिंह मार के डर से पहाड़ी की ओर जा रहे थे, रामबृक्ष सिंह बोले स्वरुपा जल्द आ जा बाबा बुला रहे है श्री राधा कूप का बुनियाद खोदना है। रामस्वरूप सिंह व रामवृक्ष सिंह हाथ में फावड़ा लेकर स्वामी जी के पास आए स्वामी जी स्वयं मंत्र उच्चारण किए तथा बुनियाद खोदने का आदेश दिए, दोनों भाई मिट्‌टी खोदने लगे, मुन्ना सिंह वहाँ से खोदी गई मिट्‌टी निकाल कर अलग फेकने लगे। दूसरे दिन सुबह से मजदूरो ने कुँआ खोदना प्रारम्भ किया, कुछ ही दिन में श्री राधा कूप तैयार हो गया। श्री राधा कूप का मिठ्ठा तथा अमृत जल गंगा जल की तरह निर्मल व स्वच्छ है जल सेवन करने (कुँआ का जल पीने पर) पेट का भयंकर रोगी रोग मुक्त हो जाता है। यही से श्री गोपालधाम में निमार्ण कार्य का शुभ आरम्भ श्री गणेश हुआ।

इक्कीस दिन के कारावास की अवधि में ही एक दिन रामस्वरूप सिंह जंगलिया बाबा का चरण दबा कर सेवा कर रहे थे उसी समय स्वामी जी से पूछे बाबा साधु महात्मा की तपस्या के लिए किस माप की कुटी होनी चाहिए, तब स्वामी जी कहने लगे कितना भूमि चाहिए इसका कोई पैमाना निर्धारित नही है फिर भी 18 फीट लम्बा और 12 फीट चौड़ा कुटी के लिए प्रर्याप्त भूमि होगी दूसरे दिन सुबह पावापुरी निवासी श्री रामाश्रय सिंह अपनी गाड़ी से आए उनके घर कोई शुभ कार्य होना था जंगलिया बाबा को अपने साथ लेकर गए। इधर श्री रामस्वरुप सिंह व श्री मुन्ना सिंह आपस मे विचार-विमर्श (मंत्रणा वार्ता) किये, जंगलिया बाबा के लिए ईट, सीमेन्ट से कुटी तैयार कराने हेतु नींव की खोदाई कर नींव में पहाड़ से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पत्थर लाकर जमीन तक नींव तैयार कर दिए। शाम को स्वामी जी जंगल वापस आए तब नींव की खोदाई का कार्य देखकर मुन्ना सिंह को पास बुलाए, मुन्ना जी के सिर का बाल पकड़ कर पीठ पर मुक्का मारे बोले-तूने यह क्या किया है ? मुनवा। तब मुन्ना सिंह बोले-बाबा मैं नहीं बनरा किया है। क्रोधित होकर श्री राम स्वरुप सिंह को स्वामी जी बोले-तू सुबह यहाँ से घर चला जा यहाँ तुम्हें आराम करने के लिए रखा था एक सप्ताह में दो-दो साइड़ तैयार कर दिया, मेरे यहाँ रहने की जगह नहीं है तुम अपना काम सँभालो। जंगलिया बाबा से यह सुन राम स्वरुप सिंह बोले-आपने मुझे 21 दिन का कारावास दिया है बीच में रिहाई क्यों ? स्वामी जी क्रोधित थे बोले-संन्यासी को घर मकान से क्या काम मुझे किसान बना दिया है। मैं संन्यासी सुबह यहाँ और शाम कही दूसरे स्थान पर रहूँगा। मुझे श्री गोपालधाम में बन्धक बना दिया है। कुछ दिनों में श्री राधा रमन कुंन्ज बनकर तैयार हो गया, जंगलिया बाबा को पर्णकुटी से नव निर्मित श्री राधा-रमन कुंन्ज में लाया गया।

श्रीगोपालधाम में प्रवास के समय जंगलिया बाबा भगवान श्री कृष्ण एवं माँ राधिका जी की युगल मूर्ति की पूजा-अर्चना विधि-विधान पूर्वक किया करते थे। वहाँ जंगल में भक्तों का ताता लगा रहता था, पूरे दिन सुबह से शाम भक्त उनके निकट रह कर धर्म ग्रन्थो पर चर्चा किया करते थे। जंगलिया बाबा श्री गोपालधाम में पूजा की आरती धूप-दीप से नहीं किए मात्र चन्दन एवं जल से आरती की, थाल में ऊँ अंकित करते थे। वे संन्यासी धर्म का निर्वहन करते रहे, उन्होंने कभी भी अग्नि का स्पर्श अपने हाथों से नहीं किया। आज भी उसी परम्परा के अनुसार श्री गोपालधाम में शीतल आरती ही की जाती है।

श्रावण मास में भगवान श्री कृष्ण एवं श्री राधा रानी का झूँला उत्सव आरम्भ हुआ, जंगल मे भक्तों की भीड़ उमड़ने लगी। झूँला उत्सव के तीसरे दिन ज्यों ही संगीत कार्य क्रम प्रारम्भ हुआ वर्षा होने लगी लोंग भीगने से बचने के लिए इधर-उधर भागने लगे संगीत कार्य क्रम बन्द कर दिया गया, कुटी में सभी को छिपना संभव नहीं था लोग भीगते हुए घर वापस गए।

श्रावण मास में झूँला उत्सव से एक दिन पूर्व श्री जयनन्दन सिंह निवासी 'चण्ड़ी मौ' के यहाँ उनके घर पर भगवान का उत्सव मनाने के उपरान्त श्री गोपालधाम में ~~चार~~ पाँच दिन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(द्वादशी तिथि से पूर्णिमा तक) झूँला उत्सव मनाया जाता है, यह परम्परा जंगलिया बाबा के समय से ही चली आ रही है।

कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष पंचमी के दिन पावापुरी वाले श्री रामाश्रय सिंह श्री गोपालधाम में अपनी गाड़ी से आए, उनके घर कोई मांगलिक कार्य होना था उसी मांगलिक कार्यक्रम में स्वामी जी को ले जाने के लिए आए थे। वे स्वामी जी को लेकर पावापुरी गये। श्री राम स्वरुप सिंह ठेकेदार के साथ श्री मुन्ना सिंह बैठकर आपस में मंत्रणा वार्ता कर रहे थे श्री राधा- रमन कुंन्ज में झूँला के समय जब भीड़ उमड़ती है तो वर्षा आने पर लोगों को छिपने का स्थान न होने से भीगते हुए घर जाना पड़ता है। अच्छा होता श्रीगोपालधाम में एक चौखण्डी मन्दिर हो जाय। वे दोनों आपस में चौखण्डी मन्दिर निर्माण के लिए प्रारुप तैयार किए मन्दिर का एक नक्शा बना कर ले आउट देने लगे, वे दोनों देर शाम तक लालटेन जला कर चूना गिरा कर चिन्हित कर दिए। श्री रामाश्रय सिंह के गाड़ी आने की रोशनी देख दोनों छिपने का प्रयास करते रहे, तब तक गाड़ी चिन्हित ले-आउट के पास खड़ी हुई। स्वामी जी गाड़ी से उत्तर कर बाहर आए चूना से चिन्हित निशान देख कर बोले- मुनवा इधर आ, तू बड़ा इंजीनियर हो गया है लालटेन जला कर ले आउट कर रहा है। बाबा की बात सुन मुन्ना सिंह उनके निकट जाकर चरण स्पर्श किए, बोले- बाबा मैं नहीं स्वरुपा ने किया है, तब स्वामी जी आवाज दिए इधर आ बनरा ! श्री रामस्वरूप सिंह बोले ले-आउट देने पर मिठाई बाँटी जाती है मार नहीं। उसी समय जीप चालक श्री जगत सिंह ने कहा शिलाव से खाज्जा आया है आइए खाज्जा खाइए श्री राम स्वरुप सिंह भी स्वामी जी के चरण स्पर्श किए स्वामी जी अपने हाथ से प्रसाद वितरण किये सुबह होने पर मजदूर बुला कर रामस्वरूप सिंह कार्य प्रारम्भ करा दिए। झूँला से पूर्व चौखण्डी मंन्दिर तैयार हो गया।

आषाढ़ माह में मंगलवार के दिन जब भक्त इकठ्ठे थे बाबा राम स्वरुप सिंह को पास बुलाए कहे श्रावण में झूँला इसी अर्द्ध निर्मित चौखण्ड़ी मंन्दिर में करना चाहता हूँ। कुटी में जगह कम है। श्री रामस्वरुप सिंह बोले-भगवान के लिए लकड़ी का बना सिहांसन आपने कटौंना में श्रीबावू के यहाँ भेज दिया है। रामस्वरुप सिंह की बात सुन स्वामी जी बोले झूँला-झूँले पर होता है सिहांसन पर नहीं। श्री रामस्वरुप सिंह कटौंना से छोटू मिस्त्री को बुलाए उसने झूँला तैयार किया। चौखण्ड़ी मंन्दिर में रखने के लिए लकड़ी का सिहांसन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बलौंर गाँव के सीताराम मिस्त्री तैयार करने लगे, झूँला उत्सव तक सिंहासन का आधा कार्य हो गया था उसी अर्द्ध निर्मित सिंहासन मे झूँला लगा और झूँला उत्सव सम्पन्न हुआ। सीताराम मिस्त्री पेट के भंयकर रोगी थे प्रति दिन श्री राधा कूप का जल पीने से वह रोग मुक्त हो गए।

वर्ष सन् 1974 ई0 के बैशाख माह में चाँदो सिंह मुखिया जंगल में जंगलिया बाबा का दर्शन करने आए। उनके निकट अन्य भक्त भी थे जो स्वामी जी का प्रवचन सुनने आए थे उस दिन श्री रामस्वरुप सिंह भी स्वामी जी के पास में बैठे थे मुखिया जी बाबा से बात कर रहे थे, बाबा यहाँ जंगल मे एक भव्य मन्दिर होना चाहिए श्री रामस्वरुप सिंह हाथ जोड़कर स्वामी जी से बोले- मुखिया जी जिस भव्य मन्दिर की कल्पना कर रहे थे उस मन्दिर की नींव खुदाई का शुभ दिन कब है। यह सुन स्वामी जी बोले स्वरुपा पतरा (पंचाङ्ग) लाओं रामस्वरुप सिंह पंचाङ्ग लाकर स्वामी जी के पास रख दिए, स्वामी जी पंचाङ्ग देख कर कहे- आज ही शुभ दिन है सर्व सिद्धि योग बनता है। श्री रामस्वरुप सिंह पहाड़ी की ओर जाकर अपने साइड से मजदूरों को लेकर श्री गोपालधाम आ गए, उस दिन प्रवचन कार्य बन्द हुआ उपस्थित भक्तों ने कीर्तन आरम्भ कर दिया स्वामी जी स्वयं वेद मंत्रो का उच्चारण किए और नींव खुदाई के लिए आदेश भी किए। मजदूरों ने एक माह में 80 फीट लम्बा 80 फीट चौंडा तथा 11 फीट गहरा भूमि की खुदाई कर दिया। राजगृह में जापान सरकार द्वारा निर्मित विश्व शान्ति स्तूप का निर्माण कार्य कराने वाले इंजीनियर सरदार जी आए वे ही 321 फीट ऊँचा श्री राधा-कृष्ण मन्दिर का नक्शा तैयार किए थे। उस नक्शे को स्वामी जी अपनी कुटियाँ में रखे थे, जिसे उस समय मे अनेंक भक्तों ने अपनी आँखो से देखा था। उस मानचित्र को जिसे श्री गोपालधाम मन्दिर में शीशे की फ्रेम में सुरक्षित रखा गया था, उसे स्वयं मैंने भी अपनी आँखों से देखा था।

स्वामी जी को वेद शास्त्रों के अतिरिक्त हिन्दी, अंग्रेजी उर्दू, फारसी, बंगला व संस्कृत भाषा का अच्छा ज्ञान था श्रीमद् भागवत महापुराण इनका प्रिय ग्रन्थ था जो उन्हें कठंस्थ था। वेद-उपनिषद्, श्रीमद् भगवत गीता, श्रीमद् भागवत महापुराण एवं अन्य धार्मिक पुस्तकों सहित चरक संहिता का अध्ययन करते रहे। इन पुस्तकों का एक लघु संग्रहालय आज भी "श्री राधा- रमन कुंन्ज" श्री गोपालधाम में विद्यमान है। पुस्तकालय के अवलोकन से आज भी उनके ज्ञान की क्षमता एवं विद्वता का बोध होना स्वभाविक है। वे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्पूर्ण भारत वर्ष का भ्रमण भी किए थे एवं घनघोर जंगल के एकान्तवास में अपनी तपस्या करते रहे। संन्यास के बाद निर्गुण ब्रह्म से फिर सगुण ब्रह्म की पूजा अर्चना किए। सिंथौरा के जंगल में रह कर लगातार पच्चीस वर्ष तक साधना एवं तपस्या करते रहे।

सन् 1975 ई0 के जून (ज्येष्ठ मास में) राम स्वरुप सिहं अपने घर पर सोये थे स्वप्न में देखा कि भगवान शंकर श्री गोपालधाम में आए है जब नींद खुली तो वे अपने को घर में पाए। श्री राम स्वरुप सिंह घर से उसी वक्त श्री गोपालधाम के लिए भीषण गर्मी व धूप में ही चल पड़े। रास्ते में सोचते रहे आज शिव मन्दिर के लिए भूमि पूजन कार्य करना है, श्री गोपालधाम पहुँच कर हाथ में कुदाल लेकर उसे अपने पीछे छिपाकर श्री राधा- रमन कुँन्ज के कुछ दूरी पर खड़े हो गए। दोनों हाथ जोड़ जंगलिया बाबा को प्रणाम करते हुए निवेदन किए-बाबा बाहर आइएं एक गोपनीय कार्य है, स्वामी जी कुटी के अन्दर से बोले- स्वरुपा मैं तुम्हें ढूढ़ रहा था। पुनः आग्रह करते हुए रामस्वरुप सिहं बोले- बाबा आप बाहर आइएं, तब स्वामी जी बोले- क्या है? मुझे ही बाहर आना है, हाँ बाबा आप ही बाहर आइएं।

भक्त के मर्यादा की रक्षा के लिए स्वामी जी बाहर निकले तब उनके निकट बैंठे हुए सभी भक्त श्री मुन्ना सिंह, श्री जयनन्दन सिंह, श्री अर्जुन सिंह, श्री सीताराम दूबे, श्रीमती लीलावती देवी, श्रीमती चम्पा देवी सभी बाहर आ कर स्वामी जी के पास खड़े हो गये। धूप में हाथ जोड़कर रामस्वरुप सिहं खड़े थे बोले आप कुटी के बरामदे में ही रहे बाहर गर्मी और धूप है मैं आपके पास आ रहा हूँ।

श्री रामस्वरूप सिंह अपने पीछे छिपाकर रखे गए कुदाल को झपट कर हाथ मे लिए और पृथ्वी पर इग्यारह बार खुदाई करते हुए खोदी गई मिट्टी को उठाकर चारों दिशाओं में छिड़कते हुए सामने खड़े जंगलिया बाबा के चरणों में साष्टांग प्रणाम कर जमीन पर लेट गए तब स्वामी जी श्री रामस्वरुप सिंह का दोनों हाथ पकड़ कर उठाएं, बोले- तूने यह क्या किया है स्वरुपा? उसके बाद श्री रामस्वरुप सिंह बोले- भगवान शिव के मन्दिर निर्माण हेतु भूमि पूजन, स्वामी जी रामस्वरुप को थप्पड़ मारते हुए कहे- दक्षिण दिशा में मुँह कर भूमि पूजन का शुभ कार्य किया जाता है? रामस्वरुप सिंह बोले सनातन में ऐसा लिखा है, पुनः स्वामी जी उनकी पीठ पर मुक्का मारते हुए बोले, सनातन के विषय में जानते हो। स्वामी जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की बात समाप्त होते ही रामस्वरुप सिंह के दाहिने पैर के पास स्थित बिल से एक भयानक जहरीला विषधर नाग निकला और राम स्वरुप सिहं के दाहिने कन्धे पर अपना फन रख कर फुँफकार करने लगा। यह देख स्वामी जी तुरन्त उस विषधर सर्प का फन पकड़ कर बाहर फेंक दिए, तथा श्री राम स्वरुप का दोनों हाथ पकड़ कर अपनी गोद में ले लिए। वह नाग पास में शान्त होकर बैठ गया। बाबा बोले बेटा-आज हमार यारवा तुम्हें काट लेता। फिर रामस्वरुप सिहं से बोले इसे जंगल में छोड़ दो। उस सर्प को रामस्वरुप सिंह डण्डे पर उठा कर जंगल ले जा रहे थे कि रास्ते में ही वह सर्प डण्डे से नीचे पृथ्वी पर गिर पड़ा, और फन उठा कर फुँफकारने लगा, स्वामी जी बोले स्वरुपा उसे वही छोड़ कर आ जा वह गुस्से में है भाग-भाग बेटा यारवा गोसागइलो, तुम वापस चले आओ, राम स्वरुप सिंह जब बाबा के निकट आए तो स्वामी जी बोले- बेटा तुम्हारे सनातन मे क्या लिखा है। श्री रामस्वरुप सिहं कहने लगे-जब गंगा, गुरु, पुरोहित व महात्मा सामने रहे तो उस समय सभी भेद भूल कर शुभ कार्य करना चाहिए। स्वामी जी पंचाङ्ग निकाल कर देखे तो उस समय सर्व सिद्धि योग था। तब स्वामी जी बोले- बेटा नर्मदा से शंकर जी को लाने कब चलोगे।

कुछ दिन बाद स्वामी जी शिव लिंङ्ग लाने अमर कंटक भक्तों के साथ कीर्तन भजन करते हुए पहुँचे, वहाँ नर्मदा नदी में स्नान करने के लिए प्रवेश किए, डुबकी लगाकर एक शिव लिंङ्ग अपने हाथ में लेकर बाहर निकले। दूसरे दिन संकीर्तन करते हुए श्री गोपालधाम वापस आने के लिए यात्रा आरम्भ किए। इलाहाबाद आकर प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी के आश्रम में पहुँचे वे स्वामी जी को भली-भाँति जानते थे, ब्रह्मचारी जी स्वामी जी का स्वागत किए, वही सभी ने भोजन प्रसाद लिया और श्री गोपालधाम के लिए प्रस्थान किए।

इस यात्रा के लिए श्री रामाश्रय सिंह ने अपनी कार दिया था, स्वामी जी के साथ श्री रघुनन्दन शर्मा वैद्य उर्फ (झपसू जी) श्री मोती मास्टर श्री कपिल देव सिंह जी उर्फ (कपिल जी), श्री विपिन सिंह जी व श्री रामवृक्ष सिंह, पहलवान अमर कंटक गए थे। स्वामी जी की उपस्थिति में पंण्डित श्री बृजभूषण उपाध्याय जी उर्फ (पं0 बेदूआ जी)जिला-गया वाले एवं पं0 श्री रूपनरायण उपाध्याय उर्फ (कारू उपाध्याय)बिन्दीडीह वाले शिव लिंङ्ग की स्थापना वैदिक मंत्र पढ़ कर कराए। शिव लिंङ्ग देखने योग्य हैं पूरब दिशा से देखने पर शिव-पार्वती वरमाला डालने की आभा वाली आकृति झलकती है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दक्षिण दिशा की ओर से देखने पर शेष नाग का फन की आकृति, पश्चिम दिशा की तरफ से देखने पर ऊँकार की आकृति तथा उत्तर दिशा से देखने पर भगवान श्री गणेश का स्वरुप वाली आकृति स्पष्ट उभर कर शिव लिंङ्ग पर दिखाई देता है। श्री गोपालधाम मे जंगलिया बाबा के प्रवास की अवधि में ही सर्व प्रथम श्री राधा कूप का निर्माण कार्य हुआ इसके बाद श्री राधा–रमन कुँन्ज, चौखण्डी मन्दिर का निर्माण एवं भगवान शिव जी के मन्दिर में शिव लिंङ्ग की स्थापना हुआ सभी निर्माण कार्य भक्तो के आर्थिक सहयोग से हुआ है श्री राम स्वरुप सिंह का विशेष योग दान रहा।

श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी की स्मरण शक्ति भी बेजोड़ रही आप से जब भी कोई व्यक्ति एक बार मिलता पुनः वर्षो बाद मिलते ही स्वामी जी उस व्यक्ति का नाम पुकार कर ही उसका समाचार पूछते थे स्मरण शक्ति में इनकी तुलना स्वामी श्री विवेकानन्द जी से की जाती है। वे स्वामी श्री विवेकानन्द जी की भाँति जनता–जर्नादन की सेवा करते थे।

श्री गोपालधाम प्रवास की अवधि में जंगलिया बाबा ने गम्भीर रोगों से ग्रसित अनेंक रोगियों को जड़ी–बुटी एवं आशीर्वाद देकर रोग मुक्त किया। आपके पास दूर–दूर से पागल व कुष्ट रोगी एवं अन्य रोग से ग्रसित रोगी आए और चन्द दिनों में रोग से मुक्ति पाए। श्री कपिलदेव सिंह उर्फ (कपिल जी) नवादा जिले के थे भजन के अच्छे गायक थे वे टी0बी0 रोग से ग्रसित थे उन्हें गाने बजाने से पटना के डाक्टरों ने मना कर दिया था, वे जीवन से निराश हो गये थे श्री रघुनन्दन शर्मा वैद्य उर्फ (झपसू जी) उन्हें बाबा के यहाँ लाए, स्वामी जी का आशीर्वाद मिला वे कहें कपिल जी आप भगवान के सम्मुख गायन वादन शुरु करें। वे गाना प्रारम्भ किए और रोग मुक्त हो गए।

स्वामी जी गायन–वादन के शौकि़न थे श्री गोपालधाम में यदा–कदा भगवान के सामने नृत्य करते हुए कीर्तन भी करते थें। कई वाद्य यंत्रो का वादन भी करते थे, कलकत्ता, पटना जाकर तबला, हारमोनियम, सरोद, वीणा, एकतारा वाद्य यंत्रो को लाए। स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) प्रायः मोटे अन्न जैसे– ज्वार, बाजरा, महुआ, कोदो, सवाँ, चना, जौ से निर्मित रोटी, भात, सतू, महुआ और गुड से बना हलवा, तथा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

खिचड़ी का भोजन सदा पसन्द करते थे। स्वामी जी गाँव के पाँच घरों से भिक्षा माँग कर अपनी अंजुली में लेकर भोजन करते थे, वे कर पात्री थे। स्वामी जी ऊँच नीच के भेद भाव से दूर रहते थे। श्री गोपालधाम में स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया) बाबा के अनन्य भक्तों का नाम यहाँ उल्लेख किया जा रहा है जो श्री गोपालधाम के नवरत्न की श्रेणी में रहे-

श्री श्री1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी के नवरत्न भक्त

1. श्रीमती सुदामा देवी पत्नी श्री भोला नाथ सिंह, ग्राम व पोस्ट- सिंथौंरा, जिला-नालांदा (बिहार)
2. श्री रघुनन्दन शर्मा वैद्य उर्फ (झपसू जी) ग्राम-आँती, पतालपुरी वृन्दा संगीत महाविद्यालय, जिला-नवादा (बिहार)
3. श्री कपिलदेव सिंह उर्फ (कपिल जी) ग्राम-छतिहर, पोस्ट- सिसमा, जिला-नवादा (बिहार)
4. श्री जयनन्दन सिंह, ग्राम व पोस्ट- चण्डी मौ, जिला-नालन्दा (बिहार)
5. श्री रामबालक, ग्राम-पचड़ा, पोस्ट-असाढ़ी, जिला-नवादा (बिहार)
6. श्री रामाश्रय सिंह, ग्राम व पोस्ट- पावापुरी, जिला-नालन्दा (बिहार)
7. श्री चन्द्रिका प्रसाद सिंह, ग्राम व पोस्ट- चण्डी मौ, थाना-सिलाव, जिला-नालन्दा (बिहार)
8. श्री श्रीबाबू सिंह, ग्राम व पोस्ट- कटौंना, जिला-नालन्दा (बिहार)
9. श्री मोती मास्टर, ग्राम-कन्दोपुर, पोस्ट- गिरियक, जिला-नालन्दा (बिहार)
10. श्री सुनिल प्रसाद सिंह उर्फ (श्री मुन्ना सिंह) ग्राम व पोस्ट- चण्डी मौ, जिला-नालन्दा (बिहार)
11. श्री लुखाड़ी जी, ब्रह्मभट्ट, ग्राम व पोस्ट- कटौंना, जिला-नालन्दा (बिहार)
12. श्रीमती सुमित्रा देवी उर्फ (भक्तिन जी) पत्नी श्री अलखदेव सिंह, ग्राम-छाछूबीघा, पोस्ट-कटौना, जिला-नालन्दा (बिहार)।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

13. श्री बच्चू सिंह, ग्राम व पोस्ट- सिंथौरा, जिला- नालन्दा (बिहार)

14. श्री अवधेश सिंह, ग्राम व पोस्ट- पावापुरी, जिला-नालन्दा (बिहार)

15. श्री योगी जी, ग्राम व पोस्ट- कटौना, जिला-नालन्दा (बिहार)

(ऐसे अन्य कई भक्त जो संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी के प्रेमी रहे उनका नाम ज्ञात नहीं हैं)

सिंथौरा ग्राम के दक्षिण दिशा में स्थित पहाड़ी के नीचे जंगल में श्रीराधा-श्रीकृष्ण के साथ-साथ भगवान श्री नर्मदाधीश भोले शंकर (बाबा गोपालेश्वर महादेव) के मन्दिर संस्थापक श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) जिस पवित्र भूमि पर पूजा तपस्या करते थे उस पवित्र भूमि को "श्री गोपालधाम" के नाम से सम्बोधित किया करते थे। उनके निर्वाण के पश्चात् स्वामी जी के परम् प्रिय शिष्य संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ (मुन्ना सिंह पुजारी जी) श्री गोपालधाम के मन्दिर में पूजा अराधना एवं सेवा कार्य करते रहे और श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी) के गो लोक गमन के बाद संत श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी श्री गोपालधाम के मन्दिर में भगवान श्री कृष्ण एवं माँ राधिका जी सहित भगवान श्री नर्मदाधीश भोले शंकर (बाबा श्री गोपालेश्वर महादेव) एवं गुरु परम्परा अनुसार गुरुओं की पूजा-अर्चना के भार को संभाल रहे हैं-

दिनांक 19.03.1979 ई0 दिन- सोमवार चैंत मास कृष्ण पक्ष षष्ठी की रात्रि बेला में डकैतों के गिरोह का सरगना भगवान राजवंशी तथा राज स्वरूप राजवंशी जो समीपस्थ गाँव लोहिया नगर के निवासी थे अपने दस-पन्द्रह हथियार बंद साथियों को लेकर सिंथौरा गाँव के जंगल में स्थित श्री गोपालधाम के मन्दिर से भगवान श्री कृष्ण एवं माँ राधा जी की मूर्ति के साथ-साथ मन्दिर में कीर्तन के समय बजने वाले तबला-हारमोनियम, ढ़ोलक एवं अन्य वाद्य यन्त्रों सहित मंदिर निर्माण के लिए रखे गए लाखों रूपये से भरा थैला मन्दिर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पर सोये हुए भक्तों को पिस्टल दिखा कर उन्हें धमकाये डराये और लेकर चले गए। इसकी खबर आग की तरह पूरे इलाके में फैल गई। आक्रोशित जनता लोहिया नगर पर आक्रमण करने का मन बना लिया। स्वामी जी ऐसा करने से मना किए और बोले-यदि आप सभी ऐसा कार्य करेंगे तो मैं श्री गोपालधाम छोड़कर अन्यत्र चला जाऊँगा। स्वामी जी की बात सुन कर सभी शान्त हो गये। लोहिया नगर गांव के निवासियों पर दबाव बना कर उन्हें श्री गोपालधाम में बुलाया गया। बैंठक में राज स्वरूप राजवंशी का भाई ने कहा-भगवान तो सबका इन्साफ करता है भगवान का इन्साफ हम मनुष्य क्या करेंगे, वह खुद इन्साफ करेगा। उसकी बात सुन कर स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी बोले तुम सभी अपने घर जाओ बेटा कल भगवान अपना फैसला सुनाएगा।

दूसरे दिन सुबह सिंथौरा गाँव के यदु सिंह का एक ट्रक गिट्टी लाद कर मजदूरों को साथ लेकर छब्बीलापुर जा रहा था रास्ते में वह ट्रक पलट गया ट्रक में वही मजदूर थे जो श्री गोपालधाम से भगवान श्री कृष्ण एवं मां राधा जी की मूर्ति के साथ-साथ मन्दिर के अन्य सामग्री की चोरी में शामिल थे। ट्रक में सवार (सात) व्यक्तियों की मृत्यु घटना स्थल पर हो गई तथा तीन नाबालिक बुरी तरह घायल होकर अंग-भंग हो गए। यह खबर सुन कर उनके परिवार की महिलाएं रो-रो कर चिल्ला-चिल्ला कर ऊँचे स्वर में कहने लगी मेरे बेटे मेरे पति से श्री गोपालधाम में चोरी करवाया इसी कारण इनकी मृत्यु हो गई। दो-तीन मजदूर जो ट्रक में नहीं गए थे, कुछ दिन के भीतर ही सर्प डंश से एवं पिलिया रोग से उनकी भी मृत्यु हो गई। दुःखी होकर मृतक के परिवार वाले कहने लगे बाबा का शाप लगने के कारण मन्दिर में जो चोरी किए थे वे सभी मारे गए।

इस घटना के बाद स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) का हृदय हमेशा दुःखी रहने लगा। जंगलिया बाबा अपना शरीर त्यागने का निर्णय अपने हृदय में कर चुके थे। शरीर त्यागने से पूर्व श्रीमद् भागवत महापुराण की कथा श्रवण करने की इच्छा व्यक्त किए। पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी को आभास हुआ कि जंगलिया बाबा भागवत सुन कर अपना शरीर छोड़ना चाहते है। पूजा-अर्चना में भी बाबा का चित स्थिर नहीं रहता है। उनके चेहरे की मुस्कान कम हो गई है। यह देख पुजारी जी स्वामी जी से पूछे-बाबा आपको

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

क्या हो गया है।मूर्ति चोरी की घटना के बाद आप हमेशा चिन्तित रहते है। भागवत कराने की तैयारी पूर्ण की गई। गया से भगवताचार्य पंण्डित बृज भूषण उपाध्याय उर्फ (बेदुआ जी) और बिन्दीडीह से स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी के विद्वान पुरोहित पं0 श्री रूपनारायण उपाध्याय उर्फ (कारू उपाध्याय जी) बुलाये गए।

स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी अपनी बीमारी का बहाना बना कर भागवत सुनने के लिए स्वयं नहीं बैठे। वे पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी को भागवत सुनने का प्रस्ताव दिए। पुजारी जी श्रोता बनने को तैयार नहीं हुए, तब पुनः जंगलिया बाबा पुजारी जी को अपने पास बुलाकर भागवत कथा का श्रोता बनने के लिए राजी किए। व्यास पीठ पर पं0श्री बृजभूषण उपाध्याय उर्फ (बेदुआ जी) बैठे। नीचे श्रोता द्वारा (श्री गणेश एवं नवग्रह आदि सहित अन्य देवता का पूजन कराने के लिए विद्वान पुरोहित पं0 श्री रूपनरायण उपाध्याय उर्फ (कारू उपाध्याय) बैठे थे। पुरोहित जी संकल्प कराने से पूर्व श्री मुन्ना सिंह (पुजारी) को अपना नाम उच्चारण करने को बोले तो पुजारी जी (श्री मुन्ना सिंह) अपना नाम का संकल्प न लेकर स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी के नाम लेकर संकल्प कराने लगे। स्वामी जी आत्मज्ञानी एवं अन्तर्यामी संत थे। वे पुरोहित जी से बोले-पुरोहित जी मुन्ना अपना नाम नहीं ले रहा है। वह मेरे नाम का संकल्प करा रहा है। कुछ देर पश्चात् स्वामी जी पंण्डित जी से पुनः कहे- अच्छा रहने दीजिए।

जंगलिया बाबा की तबीयत खराब होने की सूचना रामस्वरूप सिंह के पास उनके बड़े भाई श्री रामवृक्ष सिंह व छोटे भाई श्री राम किशोर सिंह भेज दिए। वे उस समय अपने ठेके के कार्य से बाहर अपने साइड पर गए थे। बाबा के तबीयत खराब होने की सूचना पाकर श्री रामस्वरूप सिंह रोने लगे। मुझसे क्या गलती हुई है कि आप दर्शन दिए बिना छोड़ कर जाना चाहते है। वे बिना विलम्ब किए उसी दिन श्री गोपालधाम पहुँचे। जंगलिया बाबा का चरण पकड़ कर बिलख-बिलख कर रोने लगे। बोले आप अन्तर्यामी है आपको यह शोभा नहीं दे रहा है। रामस्वरूप सिंह से स्वामी जी मधुर ध्वनि से धीरे-धीरे कहने लगे मेरा भगवान चोरी हो गए और तुम मुझे उपदेश दे रहे हो। बाबा की बात सुन कर रामस्वरूप सिंह बोले-भगवान की चोरी बार-बार होती रहें। हम पति-पत्नी दोनों भगवान को ला कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाजे-बाजे के साथ उनकी प्राण प्रतिष्ठा कराएंगे। यह सुनते ही स्वामी जी उठकर बैठ गए तथा रामस्वरूप सिंह को एक थप्पड़ मारते हुए बोले-बेटा भगवान को लाने कब चल रहे हो। राम स्वरूप सिंह ने कहा-भागवत समापन के दो दिन बाद।

श्री राधा-श्री कृष्ण की युगल मूर्ति लाने की इच्छा प्रकट किए। भागवत पुराण की कथा का समापन हुआ। भण्डारा किया गया जिसमें इलाके के संत, महात्मा, साधु, ब्राह्मण, किसान एवं भक्त भण्डारे का प्रसाद ग्रहण किए। दो दिन बाद श्री राधा-श्रीकृष्ण की मूर्ति लाने के लिए संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) के साथ श्री रामवृक्ष सिंह, श्री रामस्वरूप सिंह, श्री जयनन्दन सिंह श्री कपिल देव सिंह उर्फ (कपिल जी) श्रीमती लीलावती देवी मथुरा-वृन्दावन की यात्रा पर गए। पावापुरी निवासी श्री रामाश्रय सिंह उर्फ (छोटे बाबू) सभी को बिहार स्थित अपने घर लेकर गए वहीं सभी स्वामी जी के साथ भोजन किए। श्री रामाश्रय सिंह अपनी बस से सभी को पटना भेजे। पटना रेलवे स्टेशन से ट्रेन पकड़ कर मथुरा पहुँचे। मथुरा में उस समय के महान संत श्री पगला बाबा के आश्रम पर अपने समस्त भक्तों को लेकर स्वामी जी गए। वहाँ पगला बाबा स्वामी जी को देखते ही बढ़ कर आलिंगन किए (गले मिले) एवं स्वामी जी का बहुत स्वागत-सत्कार किए। स्वामी जी पगला बाबा के आश्रम में भोजन एवं रात्रि विश्राम किए। स्वामी जी पगला बाबा से बोले-हमारे ठाकुर बाड़ी से श्री राधा-श्रीकृष्ण की मूर्ति चोरी हो गई है। यह सुनकर पगला बाबा हँसते हुए बोले-श्रीकृष्ण तो स्वयं चोर हैं उसे कौन चुराएगा?

दूसरे दिन सुबह स्वामी जी समस्त भक्तों को लेकर वृन्दावन आए। धर्मशाले में ठहरे। श्री राधा जी-श्री कृष्ण जी की युगल मूर्ति का चयन श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा)स्वयं किए। जंगलिया बाबा को कुम्मड़ा की सब्जी खाने की इच्छा होने पर सभी भक्त उनके साथ सरयू स्नान कर धर्मशाले पर आए। बाजार से कुम्मड़ा खरीद कर ले आए। सब्जी रोटी बनी सभी भोजन किए।

अब स्वामी जी बाँके बिहारी जी का दर्शन करने मन्दिर पर गए। मन्दिर का पट बन्द था स्वामी जी को वहाँ देखते ही पुजारी मन्दिर को खोल कर दर्शन करा दिया। बाबा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पुजारी से बोले–नियम का उल्लंघन क्यों किया। पुजारी ने उत्तर दिया बाबा आप संत है नियम गृहस्थ के लिए है आपके लिए नहीं। इसके बाद स्वामी जी वृन्दावन के समस्त प्रसिद्ध मन्दिरों पर गए। राम स्वरूप सिंह भगवान श्रीकृष्ण की मूर्ति को स्पर्श किए तो पुजारी क्रोधित हुआ, शोर–गुल सुन कर मन्दिर के महंथ बाहर आए वे स्वामी जी से पूर्व परिचित थे। बाबा का आंलिगन किए। बोले–स्वामी जी यहाँ मन्दिर पर रह कर गीता का पाठ सुनाइए। गीता आपको कंठस्थ है। बाबा महंथ जी से बोले–गीता का प्रवचन आपसे सुन्दर कौन करेगा। महंथ जी कहने लगे स्वामी जी आपको जितना दिन रहना है आप यहाँ रूके हम प्रसाद आपके साथ पाते रहेंगे।

इसके बाद जंगलिया बाबा बोले–तुम लोग मूर्ति लेकर श्री गोपालधाम चले जाओ हम यहाँ मधुकड़ी भोजन करते हुए महंथ जी का प्रवचन सुनते रहेंगे। फिर कुछ देर बाद बाबा कहें मेरे पीछे एक बनरा है जो हर जगह तंग करता है कुछ समय व्यतीत होने पर बाबा बोले–शाम हो गई है डेरा चलों श्रीरामवृक्ष सिंह बोले–स्वामी जी दो–दो आदमी के कन्धे पर हाथ रख कर चलते हैं अकेले कैसे रहेंगे कहा जाएगें। श्री रामवृक्ष सिंह के पाकेट में चंद रूपया था उसी पैसे के बल पर कहते थे हम यहाँ बृन्दावन में और कुछ देखना चाहते है। यहाँ दिन कैसे कटेगा। स्वामी जी के साथ सभी धर्मशाला (डेरा) पर गए खाना खाए बाबा रामबृक्ष सिंह को बोले–वृक्षवा कुछ देखना है तो वृन्दावन का प्रधान रास लीला देख लो। कहते हुए बिना किसी का सहारा लिए उठे और रास मण्डली की ओर चल दिए। सभी भक्त बाबा के पीछे चल कर रास मण्डप में प्रवेश किए। रास प्रारम्भ हुआ। श्री कृष्ण और श्री राधिका नृत्य कर रहे थे। एका–एक ऐसा ज्ञात हुआ कोई सखी राधिका जी को पकड़ कर पर्दे के अन्दर ले गई और श्री कृष्ण भगवान फूर्ति से स्वामी जी की गोद में आकर बैठ गए। मण्डली का व्यास जी अच्चंभित हो गए। रास मण्डली के प्रबन्धक के अनुसार श्री राधा–श्रीकृष्ण को स्टेज से उतरने की अनुमति नहीं थी। राधिका पर्दे की ओट में चली गई।

स्वामी जी भगवान श्रीकृष्ण का अभिनन्दन किए। यह दृश्य देख कर सभी दर्शक आश्चर्य में पड़ गये। श्री रामवृक्ष सिंह बोले–बाबा मै आपके बगल में हमेशा रहा मेरा रूपया गायब है, रूपया आप लिए कि आपके श्रीकृष्ण लिए। स्वामी जी ठठाकर खूब हँसे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कहे-रामस्वरूप के पास अधिक रुपया था तो नहीं गायब हुआ और वृक्षवा का रुपया गायब हो गया।

दूसरे दिन ट्रेन पकड़ कर मूर्ति के साथ मथुरा से वाराणसी होते हुए पटना आए और पटना से ट्रेन द्वारा राजगीर पहुँचे। श्री गोपालधाम जाने के क्रम में राम स्वरूप सिंह सिंथौरा में गाड़ी से उत्तर कर अपने घर गये। पाँच-छः बच्चो को साथ लिए सर्वप्रथम बच्चू सिंह (मास्टर) के घर गये। उनकी पत्नी से बोले बाबा के लिए चावल दीजिए। बच्चू सिंह की पत्नी पाँच सूप चावल निकाल कर बोरे में भर दिया इसके बाद प्रत्येक घर से चावल गेहूँ, आटा, दाल इकठ्ठा किए। गाँव के लोग उसे श्री गोपालधाम पहुँचा दिए। जंगलिया बाबा लोगों से संवाद भेजे अब माँगने की आवश्यकता नहीं है। अन्त में स्वयं राम स्वरूप सिंह, श्री गोपालधाम गए स्वामी जी का चरण स्पर्श किए बाबा आशीर्वाद दिए। बाबा के आशीर्वाद से श्री गोपालधाम में अन्नपूर्णा की कभी कमी नहीं होगी। अन्न का भण्डार सदैव भरा रहता है। स्वामी जी श्री राधा-श्रीकृष्ण की मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा का समय निर्धारित कर पंचाङ्ग के अनुसार शुभ-मुर्हुत व तिथि बताए। जिला-गया से श्री बृजभूषण उपाध्याय उर्फ (बेदुआ जी उपाध्याय) एवं बिन्दीडीह से श्री गोपालधाम के पुरोहित श्री रूपनारायण उपाध्याय उर्फ (कोरू उपाध्याय) जी बुलाएं गए। यज्ञ आरम्भ करने हेतु वेदी बनाई गई।

रामस्वरूप सिंह से पण्डित बेदुआ जी पीने के लिए जल की माँग किए जब रामस्वरूप सिंह जल के लिए कुँए पर चले तो उन्हें बुला कर पूछे- तुम गुरू दीक्षा लिए हो। रामस्वरूप सिंह ने कहा नहीं। सरकार अभी गुरूदीक्षा नहीं दिए, ऐसा गुरू कहाँ मिलेगा। रामस्वरूप सिंह बोले मैं इन्हें गुरू तो मानता हूँ किन्तु वे मुझे शिष्य नहीं बनाए है। तब स्वामी जी बोले- आ जा स्वरूपा मैं तुम्हें शिष्य बना लेता हूँ। श्री बृजभूषण उपाध्याय उर्फ (बेदुआ जी) व श्री रूपनारायण उपाध्याय उर्फ (कारू उपाध्याय) जी पूजन मंत्र उच्चारण किए। उसी दिन स्वामी जी रामस्वरूप सिंह को गुरु दीक्षा का मंत्र दिए। राम स्वरूप सिंह ने बाबा से निवेदन किया मैं ठेकेदार हूँ सदैव झूठ व छल का कार्य करता हूँ आपको साधु संतो को दीक्षा देना चाहिए। यह सुन स्वामी जी हँस कर बोले किसको बनावे। रामस्वरूप सिंह कहे- जयनन्दन सिंह को बाबा बोले-जयनन्दन की पत्नी उसे यहाँ आने नहीं देगी। उसे भय है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जयनन्दन कहीं साधु न हो जाए। फिर किसे तब मुन्ना सिंह को शिष्य बनाइए। जंगलिया बाबा बोले-स्वरूपा तुम मुन्ना को मानोगे। रामस्वरूप सिंह बोले- नहीं, इसके बाद बाबा ऊँचे स्वर में बोले तुम्हें मुन्ना को मानना होगा। उस समय मुन्ना सिंह दातुन को चाकू से काट रहे थे। बाबा उन्हें अपने निकट बुलाकर बोले-मुनवा बेदुआ जी कह रहे हैं मुन्ना को शिष्य बना दीजिए। बाबा की वाणी सुन कर मुन्ना सिंह बोले क्या मैं आपका शिष्य नहीं हूँ। इसका प्रमाण दिखा दूँ, यह कह मुन्ना सिंह चाकू से अपना शरीर पर प्रहार करने के लिए चाकू निकाले यह देख स्वामी जी क्रोधित हुए बोले चाकू मुझे दो तुम्हे प्रमाण देने की आवश्यकता नहीं है। तुम्हें गुरु मंत्र दीक्षा देने के लिए बुलाया हूँ। इसके बाद पुजारी श्री मुन्ना सिंह व श्री जयनन्दन सिंह स्नान कर स्वामी जी के पास बैठे बेदुआ जी व कारू उपाध्याय जी पूजन मंत्र उच्चारण किए और स्वामी जी उन्हें गुरूमंत्र दीक्षा दिए। उपस्थित भीड़ में स्वामी जी बोले-स्वरूपा अब माने। रामस्वरूप सिंह फिर बोले- मैं नहीं माना उसके बाद स्वामी जी बोले मानापरतो हम मानलियो, मानलियो, मानलियो।

तब रामस्वरूप सिंह बोले-आप मान लिए तो पूरा संसार माना, हम बनरा को नहीं मानने से क्या फ़र्क पड़ता। रामस्वरूप सिंह बेदुआ पण्डित जी को पानी पिलाएं दोनो ब्राह्मणों द्वारा वैदिक मंत्रो के उच्चारण से श्री गोपालधाम का वातावरण अलौकिक हो गया। इसके बाद भजन कीर्तन हुआ ढ़ोल, नगाड़े एवं गाजे-बाजे के साथ माँ श्री राधा जी व भगवान श्री कृष्ण जी को सिंहासन पर बैठाया गया। श्री राधा-श्रीकृष्ण की मूर्ति का प्राण प्रतिष्ठा की गई।

दिनांक 30.05.1979 ई0 दिन-बुधवार को स्वामी जी अँजोरपुर गांव के लिए यात्रा का कार्यक्रम बनाए श्री गोपालधाम में पूजा-अर्चना का भार पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी उर्फ (श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी) पर छोड़ कर वे माँ गंगा की रेत पर सोने की इच्छा से अँजोरपुर के लिए प्रस्थान किए। जब कभी स्वामी जी श्री गोपालधाम से बाहर जाने का कार्यक्रम बनाते थे श्री गोपालधाम में अखण्ड दीप प्रज्जवलित कर कीर्तन प्रारम्भ किया जाता था और वापस आने पर ही समापन पर भण्डारा का कार्यक्रम किया जाता था।

अन्तिम बार स्वामी जी का आगमन दिनांक 30.05.1979 ई0 को अँजोरपुर गांव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में हुआ। इस यात्रा में स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) अपने स्वास्थ्य को देखते हुए सीधे श्री परमात्मानन्द पण्डित वैद्य जी के दरवाजे पर रूकने की इच्छा व्यक्त किए और वही रहने लगे। श्री परमात्मानन्द पण्डित जी वैद्य थे। श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) अँजोरपुर गांव में श्री परमात्मा नन्द पंण्डित बैद्य जी के दरवाजे पर निवास कर रहे थे। कुछ दिन बाद स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) के दर्शन करने के लिए श्री गोपालाधाम से उनके भक्त श्री साधु सिंह, श्री राम लखन सिंह, गनौरी सिंह, ग्राम–बलौर, पोस्ट– चण्डी मौं, थाना–राजगीर, जिला–नालन्दा बिहार व श्री राजकरण सिंह ग्राम– कमला, थाना–रूपऊ, जिला– नवादा (बिहार) अँजोरपुर आए और बाबा का दर्शन करके वापस श्री गोपालधाम चले गए।

उसके बाद पुन: स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) का दर्शन प्राप्त करने के लिए श्री गोपालधाम सिंथौरा जंगल से भजन कीर्तन मण्डली के नवरत्न कलाकार श्री कपिल देव सिंह उर्फ (कपिल जी) श्री रघुनन्दन शर्मा वैद्य उर्फ (झपसू जी), श्री विपिन सिंह व श्री भुनेश्वर सिंह (मास्टर) को यात्रा के व्यय धनराशि देकर स्वामी श्री गोपालनन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) को मनाने के लिए श्री मुन्ना सिंह (पुजारी जी) चारों व्यक्तियों को अँजोरपुर भेजें, वे सभी लोंग दिनांक 01.07.1979 ई0 दिन–रविवार को ही अँजोरपुर पहुँच गए। सोमवार– मंगलवार को स्वामी जी के पास रह कर कीर्तन भजन किए।

स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) दिनांक–04.07.1979 ई0 दिन–बुधवार की सुबह अपने समीप श्री कपिल देव सिंह को बुला कर बोले– कपिल जी आज आप मीराबाई का वह भजन गा कर सुनाइए जिसका बोल है– मैं तो गिरधर आगे नाचूँगी। (इसके पीछे उनका क्या सोच रहा किसी को मालूम नहीं था) श्री रघुनन्दन शर्मा वैद्य उर्फ (झपसू जी) हारमोनियम एवं श्री कपिल देव सिंह उर्फ (कपिल जी) तबला लेकर वादन करते हुए भजन गाने लगे। स्वामी जी भाव विभोर होकर भगवान की मूर्ति के सामने नृत्य करने लगे। पूजा–अर्चना की, उसके बाद समीप में रखी काष्ठ की चौकी जिस पर स्वामी जी का आसन लगा था पर लेट गए। आसन पर रखे वस्त्रों को हटाने का इशारे से

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संकेत किए वहाँ उपस्थित भक्तों ने आसनी सहित अन्य वस्त्रों को चौकी से अलग हटा दिए। स्वामी जी चौकी पर लेट गए अब स्वामी जी योग मुद्रा द्वारा अपने प्राण वायु को मस्तिष्क पर चढ़ा लिए ऐसा करने के पश्चात् उनके शरीर में ऐंठन होने लगा, इस दृश्य को देख कर कुछ लोग भाग कर श्री परमात्मा नन्द पण्डित जी वैद्य के पास गए, वे निकट के गाँव इन्दरपुर विद्यालय में संस्कृत के अध्यापक थे बोले–स्वामी जी की तबीयत खराब हो गई है। कुछ लोग अँजोरपुर गांव के मन्दिर पर चार्तुमास के लिए पधारे, योगीराज महामण्डलेश्वर दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी के गुरु भाई दण्डी स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी से जाकर श्री गोपालानन्द सरस्वती जीं की तबीयत खराब होने की सूचना दिए।

स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी सूचना पाकर स्वामी जी को देखने तत्काल श्री परमात्मानन्द पण्डित जी के दरवाजे पर पहुँचे। श्री परमात्मानन्द पण्डित जी भी अपने दरवाजे पर आ गए थे। जहाँ स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी चौकी पर पड़े थे। स्वामी जी के शरीर की स्थिति को देख कर वे लोग समझ गए इन्हें कोई रोग नहीं है। श्री गोपालानन्द सरस्वती जी अब समाधि में चले गए हैं सैकड़ो भक्तों की उपस्थित भीड़ में उसी रात्रि लगभग 8.00 बजे स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी तीन बार ऊँ ऊँ ऊँ शब्द का उच्च उद्घोष करते हुए अपना पार्थिव शरीर का परित्याग कर हमेशा के लिए समाधि में लीन हो गए। दूसरे दिन प्रातः काल की बेला में दण्डी स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी के परामर्श पर स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी का पार्थिव शरीर को अँजोरपुर गाँव के सामने स्थित गंगा तट पर सैंकड़ो भक्तों की उपस्थिति भीड़ में जल समाधि दी गई।

इधर श्री परमात्मानन्द पण्डित जी के दरवाजे से श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) गो लोक गमन किए, उधर श्री गोपालधाम में कीर्तन के साथ स्वामी जी द्वारा प्रज्जवलित की गई। अखण्ड दीप स्वतः बुझ गई। पुजारी श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी उर्फ (श्री मुन्ना सिंह) समझ गये कोई अनहोनी घटना घट गई, वे रोने लगे।

दूसरे दिन श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी उर्फ (श्री मुन्ना सिंह पुजारी जी) श्री गोपालधाम से श्री जयनन्दन सिंह व श्री अर्जुन सिंह को साथ लेकर स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(जंगलिया बाबा) से मिलने के लिए अँजोरपुर श्री परमात्मानन्द पण्डित वैद्य जी के दरवाजे पर पहुँच गए। ज्ञात हुआ स्वामी जी समाधिष्ठ हो गए है, यह खबर सुनते ही पुजारी जी का धैर्य टूट गया और जोर-जोर से रोने लगे। उन्हें भी स्वामी जी के पार्थिव शरीर का अन्तिम दर्शन नहीं हो पाया। समाधि लेने से पूर्व श्री परमात्मानन्द पण्डित जी से स्वामी जी कह चुके थे मेरे बाद मेरा कमण्डल, लँगोटी, कम्बल और खडाऊँ श्री गोपालधाम के पुजारी मुनवा को दे देना। श्री परमात्मानन्द पण्डित जी जब स्वामी जी की धरोहर रखी गई सामग्री कमण्डल, लँगोटी, कम्बल और खड़ाऊँ मुन्ना सिंह (पुजारी जी) को लाकर देने लगें तब उस समय पुजारी श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी जी फूट-फूट कर रोने लगे। श्री परमात्मानन्द पण्डित जी उन्हें ज्ञान चर्चा करते हुए शान्त किए। श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी जी स्वामी जी की उर्पयुक्त सामग्री लेकर श्री गोपालधाम वापस चले गए।

श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) पर ईश्वर की असीम अनुकम्पा रही। विधाता ने उनको सुन्दर सुकान्त गोरा बदन, सिर पर घुघराले बाल, बड़ी-बड़ी चमकीली आँखें, बड़े-बड़े सुन्दर कान, नुकीली नाक युक्त मुख मण्डल, हमेशा मुस्कान लिए आकर्षक चहकता चमकता चेहरा, घुटनों तक लम्बे-लम्बे हाथ दिए थे। सामान्य मुनष्य अपने हाथ से साढ़े तीन हाथ का होता है। परन्तु स्वामी जी अपने हाथ से चार हाथ-चार अँगुल के थे।

जिन्हें लोग "अजानु बाह" की संज्ञा देते थे। उनकें सुन्दर स्वस्थ शरीर पर कमर में लँगोटी तथा गेरूआ रंग का पीताम्बर (अँचला) के साथ-साथ दोनों पैरो में काष्ठ निर्मित ऊँची एड़ी का खड़ाऊँ जो लगभग तीन से साढ़े तीन ईंच मोटा था (प्रत्येक खड़ाऊँ का वजन लगभग डेढ़ से दो किलोग्राम का) जिसे पहनकर बड़ी आसानी से स्वामी जी कहीं भी तेज गति से चल सकते थे। खड़ाऊँ पहन कर ऊँचे-ऊँचे पर्वत शिखर पर सहज एवं सरल भाव से चढ़ा करते थे। समतल भूमि पर तीव्र गति से चलते थे। सामान्य व्यक्ति जब उनके साथ चलता था तो वह थोड़े समय बाद उनसे काफी दूर पीछे हो जाता था, उनके पास पहुँचने के लिए उस व्यक्ति को दौड़ना होता था। उन्हें देखकर प्रत्येक व्यक्ति उनकी ओर आकर्षित हो जाता था। वे मधुरभाषी थे जब कोई स्वामी जी को प्रणाम करता तो स्वामी जी उसकी पीठ पर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मुक्का मारते हुए आशीर्वाद दिया करते थे। इस लिए लोग उन्हें मुकवा मारने वाले स्वामी जी के नाम से पुकारा करते थे।

प्रारम्भ में जब स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी सिथौंरा गाँव के जंगल में एकान्तवास कर रहे थे उस समय वे पृथ्वी पर आसन लगाकर पूजा-साधना एवं तपस्या किया करते थे और उसी स्थान पर शयन भी करते रहे। इसके बाद जब जंगल में किसान उनके निकट आकर बैंठने लगे तो वे उनके लिए कम्बल लाकर आसन लगाएं। कुछ समय व्यतीत होने पर जंगल में गाय चराने वाले चरवाहे स्वामी जी के लिए बाँस के फट्टे से चाचर तैयार कर उन्हें बैठने सोने के लिए उस स्थान पर लाकर दिए। उसके बाद राधा-रमन कुँन्ज का निर्माण होने पर भक्तों ने उसमें इनको बैठने, सोने और आराम करने के लिए काष्ठ की चौकी का प्रबन्ध किए। जिस पर स्वामी जी कम्बल डालकर बैठने और शयन करने लगे। कुछ समय व्यतीत होने के बाद भक्तों ने राधा-रमन कुँज में स्वामी जी के लिए काष्ठ की एक गद्दी तैयार कराएं, जिस पर स्वामी जी लगातार कई वर्ष तक आसन लगाकर बैठते एवं शयन किया करते थे। जहाँ वे सदैव साधना में लवलीन रहते थे।

स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी उर्फ पुजारी (श्री मुन्ना सिंह) के लिए भी अपनी गद्दी की तरह काष्ठ की एक दूसरी गद्दी तैयार कराएं और मुन्ना सिंह को उसी पर सोने के लिए दिए परन्तु पुजारी श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी जी उस पर एक दिन न बैठे और न शयन किए वे हमेशा बाबा की गद्दी के निकट जमीन पर ही सोते बैठते रहे। पुजारी जी द्वारा पार्थिव शरीर त्यागने के पश्चात् उनकी गद्दी स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) की गद्दी जो भगवान के मन्दिर में रखी गई है उसी के समीप श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी जी की गद्दी भी लगाई गई है जिसे भक्त अपना शीश झूकाकर उन्हें प्रणाम करते हैं।

स्वामी जी की गद्दी लगभग ढ़ाई से तीन फुट चौड़ी और छः फीट लम्बी है जिस पर उस समय स्वामी जी के साथ-साथ 10-12 वर्ष आयु के छोटे-छोटे चौदह-पन्द्रह बच्चे उनसे लिपट कर सो जाते थे। स्वामी जी बच्चों, बुढ़ो और नवजवानों से अत्यन्त घुल-मिल कर रहते थे। वे कभी ऊँच-नीच छुआ-छुत के भेद भाव नहीं किए। यही कारण है कि आज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भी श्री गोपालधाम में भोजन प्रसाद के समय कोई भेद-भाव नहीं रहता, सभी एक साथ बैठकर भोजन ग्रहण करते है। चाहे सन्त हो, गृहस्थ हो बच्चा हो, बूढ़ा हो या महिलाएँ हो वहाँ जाति-पाँत का बन्धन नहीं है।

श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) की स्मृति एवं उनकी यादगार में खड़ाऊँ, कमण्डल, शयन में उनके द्वारा उपयोग की गई गद्दी, धार्मिक पुस्तकें, वेद, पुराण, उपनिषद, श्रीमद् भागवत महापुराण, श्रीमद् भगवत गीता एवं अन्य धार्मिक पुस्तकें धरोहर के रूप में श्री गोपालधाम में सुरक्षित है जिसे सभी भक्त श्री गोपालधाम में आने पर उन वस्तुओं का दर्शन, नमन करते है।

स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी अपना जन्म-दिन श्री गोपालधाम में प्रति वर्ष 23 सितम्बर को मनाया करते थे। स्वामी जी का शरीर त्यागने के कुछ दिन बाद मेरे मन में जिज्ञासा हुई ऐसे महान संत के माता-पिता कौन थे और इनकी जन्म भूमि कहाँ है। इसकी जानकारी करने के उद्देश्य से स्वामी जी के घनिष्ठ भक्तों से सम्पर्क किया और उनसे वार्ता किया किन्तु मेरे प्रश्न का उत्तर किसी ने नहीं दिया सभी भक्त कहते थे स्वामी जी के निकट रहने-बैठने एवं उनसे आध्यात्मिक विषय पर चर्चा करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ परन्तु उनके माता-पिता और जन्म भूमि के विषय में उनसे पूछने-जानने का साहस हम लोंग नहीं जुटा पाए। इस कारण अपनी अनभिज्ञता स्वीकार किए। स्वामी जी के मुख मण्डल एवं प्रभाव के कारण उनसे इस विषय पर कभी वार्ता नहीं हुई।

स्वामी जी का शरीर त्यागने के पश्चात् श्री गोपालधाम में पूजा-पाठ का भार उनके उत्तराधिकारी शिष्य श्री मुन्ना सिंह उर्फ (पुजारी जी) सम्भालने लगे।

सन् 2001 ई0 में भारत सरकार ने आयुद्ध कारखाने के लिए राजगीर के निकट जंगल की भूमि के साथ-साथ किसानों की खेती योग्य भूमि का अधिग्रहण किया और जंगल क्षेत्र में बसे समस्त गाँवो को विस्थापित करते हुए गाँव में रहने वाले आदिवासियों को आयुद्ध कारखाना क्षेत्र से बाहर भूमि देकर बसाया। किन्तु श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी द्वारा स्थापित श्री गोपालधाम में मन्दिर और इसके निकट की भूमि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

को आयुद्ध कारखाने के सैन्य अधिकारियों नें अधिग्रहण से मुक्त रखा तथा मन्दिर विस्थापन की कार्यवाही से भी वंचित रखा।

इस कारण मन्दिर आयुद्ध कारखाने की अधिग्रहित भूमि में दी गई ईंट, सीमेन्ट, बालू से निर्मित पक्के चाहर दीवारी के घेरे में चारो तरफ से घिरि है। मन्दिर के मार्ग से सम्बन्धित वाद उच्चतम न्यायालय में लम्बित है। उच्चतम न्यायालय का निर्णय अभी नहीं आया है। श्री गोपालधाम आने के लिए आयुद्ध कारखाने के गेट संख्या-12 से होकर भक्त मन्दिर पर पहुँचते है। विश्वास है सैन्य अधिकारियों द्वारा विस्थापन एवं अधिग्रहण से मुक्त मन्दिर को न्यायालय से मार्ग अवश्य मिल जाएगा।

श्री मुकुन्दब्रह्मचारी जी 29 वर्ष व्यतीत होने पर मार्च सन् 2008 ई0 में महारूद्र यज्ञ कराने का कार्यक्रम निर्धारित किए थे यज्ञ के निमंत्रण पर मैं अपनी धर्म पत्नी श्रीमती कौशल्या देवी के साथ श्री गोपालधाम गया था जहाँ मेरी मुलाकात श्री राम कृष्ण चौधरी पुत्र स्व0 रामनिवास चौधरी ग्राम- विरमपुर कृतपुरा, थाना-कोईलवर जिला-भोजपुर बिहार और उनके साथी- श्रीराम सिंह राय ग्राम- बहोरनपुर जिला-आरा बिहार व श्री कामेश्वर राय मुखिया ग्राम- हलुआना, थाना- चन्द पोखरी जिला- भोजपुर बिहार से हुई।

वार्तालाप में श्री रामकृष्ण चौधरी जी कहने लगे उनके पिता स्व0 राम निवास चौधरी जी के आग्रह एवं अनुरोध करने पर ही स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी का आगमन मेरे गाँव विरमपुर कृतपुरा में हुआ वे लगभग एक माह तक मेरे यहाँ बागीचे में रह कर तपस्या किए थे उस समय स्वामी जी की आयु लगभग 25 वर्ष की होगी। मैं स्वयं लगभग 10-12 वर्ष का छोटा बच्चा था। मै कभी-कभी स्वामी जी के साथ बागीचे में बैठ कर गोटी (शंतराज का खेल) खेलता था। स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी मेरे पिता-श्री राम निवास चौधरी जी से कभी वार्ता के दौरान अपने जन्म स्थान के सम्बन्ध में बताएं थे कि मेरा जन्मस्थान छपरा जिला अन्तर्गत बनियापुर थाना में स्थित भेड़वनिया गाँव है मैं एक सरिया भूमिहार ब्राह्मण परिवार का बालक हूँ। परिवार धनधान्य से परिपूर्ण हैं।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी के सम्बन्ध में सही जानकारी प्राप्त करने के लिए एक दिन मैं सन्यासी शिष्य परम्परा में श्रीमत् परमहंस परिव्राजकाचार्य दण्डी स्वामी महामंण्डलेश्वर योगीराज श्री हंसानन्द सरस्वती जी का मठ (राजगुरू मठ बी-3/175 शिवाला घाट वाराणसी स्थित आश्रम) पर पहुँच गया जहाँ मेरी मुलाकात मठ के उत्तराधिकारी संत दण्डी स्वामी श्री विमलानन्द सरस्वती जी से हुई। उनसे आने का कारण बताया तथा स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी के विषय में जानकारी करने की इच्छा व्यक्त किया। स्वामी श्री विमलानन्द सरस्वती जी विद्वान संन्यासी थे। स्वयं द्वारा लिखी पुस्तक जिसका शीर्षक है "शासक, सैनिक एवं धर्माचार्य ब्राह्मण" मेरे सामने प्रस्तुत करते हुए, मुझे-इसमें सन्यासियों की परम्परा से सम्बन्धित पृष्ठ पढ़ने का निर्देश किए।

जिसको ध्यान से पढ़ने पर जानकारी प्राप्त हुआ। गुरू शिष्य परम्परा के अनुसार चौथी पीढ़ी में स्वामी श्री राघवानन्द सरस्वती जी के प्रथम शिष्य दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी संन्यास परम्परा में अपूर्व तेजस्वी संत हुए। आपने अपनी तपस्या तथा योग क्रिया के चमत्कार के चलते अभूतपूर्व सफलता पाकर तीर्थ राज प्रयाग में अपनी पताका फहराई और समाज का मस्तक गौंरव से ऊँचा बनाया। इस क्षेत्र में जिन कार्यों को दण्डी स्वामी श्री सहजानन्द सरस्वती जी व्यवहार में नहीं कर सके थे उसे आपने पूरा किया। आपने प्रचुर मात्रा में दण्डी संन्यासी शिष्य बनाएं। जिनकी संख्या अड़तीस है। गुरू शिष्य परम्परा के अनुसार श्रीमत् परहंस परिव्राजकाचार्य दण्डी स्वामी श्री हंसा नन्द सरस्वती जी के शिष्यों में स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी का स्थान सताईसवें शिष्य के रूप में है इनके विषय में लिखा गया है ये छपरा जिला के भेड़वनिया ग्राम-निवासी परासर गोत्रीय ब्राह्मण रहें। इनका संन्यास काल वि0सं0-2010 माघ कृष्ण पक्ष षष्ठी दर्शाया गया है।

राजगुरु मठ शिवालाघाट वाराणसी स्थित दण्डी संन्यासी आश्रम के कार्यालय से उपलब्ध पंजिका के क्रमांक संख्या 2730 पर अंकित विवरण के अनुसार दण्डी स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी का जन्म वि0सं0-1985 में हुआ अर्थात् जन्म दिन दिनांक 23.09.1928ई0 है। इस वर्ष वि0सं0 2077 अधिक अश्विन शुक्ल पक्ष सप्तमी तिथि अर्थात् दिनांक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

23.09.2020ई0 दिन-बुधवार को गुरुदेव की 92वाँ जन्म उत्सव धूम-धाम से संत श्री स्नातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी श्री गोपाल धाम मन्दिर पर मनाए।

दण्डी स्वामी श्री विमला नन्द सरस्वती जी उन्नतीसवें शिष्य है इनका संन्यास काल वि0सं0- 2011 श्रावण शुक्ल पक्ष तेरस गुरूवार उत्तराषाढ़ा नक्षत्र है। ये बक्सर जिले में चौसा-परगना के मगरांव ग्राम निवासी सांकृत गोत्रीय फतुहाबाद के मिश्र सकरवार ब्राह्मण रहे है।

उपरोक्त का आधार मानकर मैं (कमलाकर दुबे) गुरूदेव श्री गोपालानन्द सरस्वती जी के माता-पिता एवं जन्म स्थली तथा परिवार की खोज करने के उद्देश्य से जून माह सन् 2009 ई0 को बलिया से रेल मार्ग द्वारा छपरा जनपद पहुँचा। छपरा से बस द्वारा बनियापुर थाना-पहुँचा। जहाँ स्थानीय लोगों से भेड़वनिया गाँव पहुँचने के विषय में पूछा- उनके अनुसार मोरा-मोड़ के निकट भेड़वनिया गाँव स्थित है ज्ञात हुआ। जून के महीने में प्रचण्ड धूप एवं गर्मी के कारण वहाँ जाने का कोई साधन उपलब्ध नहीं मिला बाध्य होकर मैं पैदल यात्रा प्रारम्भ कर दिया किसी तरह मोरा-मोड़ पहुँचा काफ़ी थक गया था, वहाँ नाई की दुकान पर जाकर भेड़वनिया गाँव का रास्ता ज्ञात किया पुनः धीरे-धीरे पद यात्रा प्रारम्भ की अपने मंजिल की खोज में, चला भेड़वनिया गांव के बाहर लगभग 70-75 वर्ष के वृद्ध व्यक्ति भैंस चरा रहे थे उनको पास बुलाकर पूछा आप भेड़वनिया गांव के है उनका उत्तर था हाँ मैं भेड़वनिया गाँव का रहने वाला हूँ मेरा नाम बच्चा सिंह है। उनसे मेरा प्रश्न था क्या आज से पच्चास वर्ष पूर्व भेड़वनिया गांव में एक सरिया भूमिहार ब्राह्मण परिवार का लड़का साधु बन गया। वह किस के परिवार का था ? मेरी बात को ध्यान से सुन कर बच्चा सिंह बोले हाँ जीता बाबू के परिवार का एक लड़का लगभग 8-10 वर्ष की छोटी उम्र में घर द्वार छोड़ कर साधु बन गए थे।

बच्चा सिंह जी मुझे जीता बाबू के घर लेकर गए। उस समय जीता बाबू घर पर नहीं थे, फिर बच्चा सिंह जी मुझे उनके पट्टीदार श्री विद्या सिंह जी के दरवाजे पर लेकर गए। विद्या सिंह लगभग 90-95 वर्ष के वृद्ध व्यक्ति थे चल-फिर नहीं सकते थे इसलिए हमेशा चारपाई, पर लेटे रहते थे। उनके आँख की रोशनी एवं कान का श्रवण करने की शक्ति अच्छी थी। अगल-बगल के पट्टीदार बच्चा सिंह के साथ मुझे देख कर मेरे पास विद्या सिंह जी के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दरवाजे पर आए मैं उनसे भेड़वनिया आने का कारण बताया और उन्हें स्वामी जी का तीन फोटो जो मेरे पास रहा उन्हें पहचान करने हेतु दिखाया। बात पच्चास वर्ष पुरानी थी लोग फोटो देख कर पहचानने से इंकार कर दिए। मैं निराश हो गया। वहाँ उपस्थित लोगों में से एक व्यक्ति बोला यह फोटो विद्या बाबा को दिखाया जाय शायद वहीं कुछ बता पाएगें।

भेड़वनिया गांव के तीन-चार लोग मुझे विद्या सिंह जी के पास लेकर गये विद्या सिंह जी को बारी-बारी से फोटो दिखाया दो फोटो को वे पहचान नहीं पाए परन्तु सबसे कम उम्र का फोटो देखते ही वे तुरन्त पहचान कर बोले यह फोटो तो जगन्नाथ दास का है यह हमारे परिवार के है आज से पच्चास वर्ष पूर्व बहुत छोटी उम्र में घर छोड़कर साधु बन गये। विद्या सिंह जी की बात सुन कर सभी लोग खुश हुए मेरे मन में अति अधिक प्रसन्नता हुई मेरी मंजिल मिल गयी। विद्या सिंह के घर से मेरे स्वागत में नाश्ता एवं जल आया उसे मैंने ग्रहण किया।

इसी बीच श्री इन्द्रदेव सिंह उर्फ (जीता बाबू) स्कूटर से आते दिखाई दिये उन्हें आवाज देकर लोग पास बुलाए, श्री इन्द्रदेव सिंह उर्फ (जीता बाबू) हम लोगों के पास आए तो उनके पट्टीदार मेरे हाथ से स्वामी जी का फोटो लेकर उन्हें बारी-बारी से दिखाने लगे, फोटो पहचानते ही श्री जीता बाबू फूट-फूट कर रोने लगे। स्वामी जी जीता बाबू से मात्र पांच-छः वर्ष उम्र में बड़े थे। रोने से जीता बाबू का गला भर गया फिर बोले आज आपने चाचा जी का फोटो दिखाया है। हम बहुत खुश है। वे अपना आंसू पोछकर मुझे अपने घर लेकर गए बताने लगे चाचा जी को मैं 50 वर्षों से ढूढ़ रहा था, अपनी पत्नी को बुलाकर बोले-चाचा जी का समाचार लेकर बलिया से कमलाकर दुबे जी आए है यह संवाद सुन कर उनकी पत्नी भावुक होकर रोने लगी, देर रात तक उनसे मेरी बात होती रही। सुबह वे अपने परिवार की वंशावली मुझे उपलब्ध कराएं बोले दादा जी के चार पुत्र एवं एक लड़की थी। दादी का नाम- मुखा देवी था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वंशवृक्ष निम्नांकित है-

पराशर गोत्रीय एकसरिया भूमिहार ब्राह्मण परिवार में जन्म लिये-

- **दिलीप राय** — ग्राम- नुननगर रामपुर, जिला-छपरा, बिहार
  - प्रभु राय — ग्राम-भेडवनिया, बनियापुर, जिला-छपरा (वर्तमान थाना-भगवानपुर, जिला-सिवान) (बिहार)
    - शिवराज राय
      - छट्ठू राय
        - प्रगासी राय
        - धर्मदेव राय
          - शिव चन्द्र राय (पत्नी-मुखा देवी)
            - हीरा राय
              - इन्द्रदेव सिंह उर्फ (जीता बाबू) जू0इजी0 माइनिंग
                - सरोज कुमार सिंह
                  - प्रशान्त परासर
                  - सुशान्त परासर
                - मनोज कुमार सिंह
                  - यशस्वी
                  - नन्दनी
              - रामप्रवेश सिंह, प्रवक्ता अंग्रेजी विभाग, संत कोलम्बा कॉलेज, हजारी बाग (बिहार)
              - पंचदेव नारायण सिंह, अभियन्ता टेलीकाम, निदेशक पावल बा0बीस
            - राधे राय
              - उमराँव राय
              - शत्रुधन राय
              - भरथ राय
              - भूषण राय
            - लाल देव राय — बचपन में ही शिव मंदिर में पूजा करते समय इनकी समाधि लग गयी। वे स्वर्गवासी हो गये।
            - जगन्नाथ राय — लगभग-11 वर्ष की आयु में ही साधु बने और घर-परिवार को त्याग कर चले गये।
          - महादेव राय
          - कुँवर राय

दूसरे दिन प्रातः मुझे बस पर चढ़ाने के लिए स्वयं अपने स्कूटर पर बैठाकर मोरा मोड़ तक पहुँचाए। जहाँ उनके रिश्तेदार श्री जगनरायण सिंह पुत्र स्व0 रामचन्द्र सिंह ग्राम- सलेमपुर, पोस्ट- गोविन्दपुर जिला-सिवान (बिहार) जो सेवा निवृत्त अध्यापक से मुलाकात हुई। उनकी बहन की शादी स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) के बड़े

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भाई श्री राधे राय के साथ हुई थी। वे बचपन में स्वामी जी के साथ गाँव के प्राईमरी स्कूल में शिक्षा ग्रहण किए थे वे उनके सहपाठी थे। श्री जगनारायण सिंह जी अपने विद्यार्थी जीवन को याद करते हुए बोले- श्री जगन्नाथ दास जी शिक्षा में कुशाग्र बुद्धि के विद्यार्थी थे। बहुत कम बोलते थे, उनका शान्त स्वभाव था। परन्तु चित्रकला एवं मिट्‌टी से देवी-देवताओं की मूर्तियाँ बना देते थे जो देखने में सुन्दर होती थी। सुन्दर अक्षर बना कर लेखन कार्य करते थे। छोटी अवस्था में दो-तीन बार अपने पारिवारिक गुरुकूल में महंथ जी के पास नूननगर जाकर उनसे शिष्य बनाने का आग्रह किए थे। महंथ जी श्री जगन्नाथ राय की छोटी उम्र होने से अपने आदमी के साथ उन्हें भेड़वनिया उनके घर भिजवा दिए थे।

श्री जीता बाबू बोले-चाचा जी की एक बहन थी उसका नाम सनकेशरी कुँवर था। जिसकी शादी छोटी उम्र में हो गई थी। शादी के कुछ माह व्यतीत होने के बाद वह वैधव्य को प्राप्त हुई। स्वामी जी के दादा जी बेतिया स्टेट में इंस्पेक्टर पद पर तैनात थे, परिवार की आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी थी। 10-11 वर्ष की छोटी आयु में चाचा जी घर छोड़कर चले गए।

श्री श्री1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) द्वारा स्वयं दिए गये गुरु दीक्षा मंत्र से सुशोभित गुरु मुखी शिष्यों के नाम का उल्लेख निम्नलिखित है-

1. सर्व श्री कमलाकर दुबे पत्नी श्रीमती कौशल्या देवी ग्राम व पोस्ट- थम्हनपुरा, जिला-बलिया (उ0प्र0)
2. श्री रामस्वरूप सिंह, ग्राम व पोस्ट-सिंथौरा, जिला-नालन्दा (बिहार)
3. श्री सुनिल प्रसाद सिंह, ग्राम व पोस्ट- चण्डी मौं, जिला-नालन्दा (बिहार)
4. श्री जयनन्दन सिंह, ग्राम व पोस्ट- चण्डी मौ, जिला-नालन्दा (बिहार)
5. श्री रामेश्वर सिंह, ग्राम व पोस्ट- घोसरावाँ, जिला-नालन्दा (बिहार)
6. श्री राम लखन सिंह, ग्राम-बलौर, पोस्ट-चण्डी मौं, जिला-नालन्दा (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

7. श्री कृष्ण बल्लभ सिंह (श्री के0बी0 सिंह) ग्राम-नई पोखर, पोस्ट-राजगीर, जिला-नालन्दा (बिहार)

8. श्री चन्द्रमणि कुँवर, ग्राम-भिखारीपुर, पोस्ट- अँजोरपुर, जिला-बलिया (उ0प्र0)

9. श्री सुरेश कुँवर, ग्राम-भिखारीपुर, पोस्ट- अँजोरपुर, जिला-बलिया (उ0प्र0)

10. श्री गणेश कुँवर, ग्राम-भिखारीपुर, पोस्ट- अँजोरपुर, जिला-बलिया (उ0प्र0)

11. श्री हरिशंकर कुँवर, ग्राम-भिखारीपुर, पोस्ट-अँजोरपुर, जिला-बलिया (उ0प्र0)

12. श्री शिवानन्द राय, ग्राम व पोस्ट- अँजोरपुर, जिला-बलिया (उ0प्र0)

13. श्री जगतानन्द राय, ग्राम व पोस्ट- अँजोरपुर, जिला-बलिया (उ0प्र0)

(इसके अतिरिक्त स्वामी जी के दीक्षित शिष्य कौन-कौन हैं ज्ञात नहीं है)

नोट- श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) सिद्ध पुरूष एवं उच्च स्तर के संत थे इनके विषय में विस्तृत जानकारी हेतु उनकी कृत पुस्तक "सारल्य-दर्शन" को अवश्य पढ़े।

कमलाकर दुबे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (श्री जंगलिया बाबा जी) के सम्पर्क में आये भक्तों ने सच्ची घटनाओं पर आधारित अपने हृदय के उद्गार को उजागर किये हैं का संक्षिप्त उल्लेख निम्न है:-

संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह) श्री गोपालधाम सिंथौरा जंगल (श्री कृष्ण जन्माष्टमी दिनांक 17.08.1987)-

स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (श्री जंगलिया बाबा) के गो लोक गमन दिनांक 04.07.1979 के पश्चात् उनका प्रथम भण्डारा अश्विन मास में शुक्ल पक्ष द्वादशी दिन बुधवार विक्रम सम्वत् 2036 दिनांक 03.10.1979ई0 को अँजोरपुर गाँव में श्री परमात्मानन्द पण्डित जी के दरवाजे पर सम्पन्न हुआ उक्त अवसर पर वहाँ हजारों नर-नारी बच्चे और साधु संत उपस्थित थे श्री गोपालधाम से सैकड़ों की संख्या में भक्त अँजोरपुर गये थे। भण्डारे में सन्यासी समाज के गुरू परम्परा से जुड़े दण्डी सन्यासी स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती, दण्डी सन्यासी स्वामी श्री विमलानन्द सरस्वती जी के साथ अन्य कई संन्यासी महात्मा और उनके शिष्य भी उपस्थित थे।

स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) द्वारा सिंथौरा के जंगल में संस्थापित श्री गोपालधाम के मन्दिर पर भण्डारे का आयोजन वहाँ के स्थानीय भक्तों ने वर्ष 1979 ई0 के कार्तिक मास में कृष्ण पक्ष की नवमी तिथि को कराया इस भण्डारे के अवसर पर दूर-दूर स्थानों से स्वामी जी के भक्त एवं संत सन्यासी परम्परा से उनके गुरू चाचा दण्डी स्वामी श्री स्वरूपा नन्द सरस्वती जी व गुरू भाई दण्डी स्वामी श्री विमलानन्द सरस्वती जी सहित अनेकों सन्यासी साधु महात्मा के साथ-साथ स्थानीय भक्तों सहित हजारों की संख्या में भीड़ उमड़ कर इस विरान जंगल में आई और भण्डारे का प्रसाद ग्रहण किया। सन्यासी संतो ने श्री गोपालधाम के मन्दिर की पूजा-अर्चना करने का दायित्व भार पूर्व की भांति श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी जी पर स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी के आदेशानुसार करते

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहने की बात कही जिस का अनुपालन मैं कर रहा हूँ। स्वामी जी के बड़े भाई शिव मन्दिर में पूजा करते समय समाधिस्थ हो गए थे। इस घटना से दुःखी होकर छोटी आयु में ही वे घर त्याग कर निकल पड़े तथा जाकर गंगा जी में कूद गए। गंगा की धारा में बहते हुए किनारे लगे आपको ज्ञात नहीं चला कौन नदी से निकाल कर बाहर किया। निकटवर्ती गाँव में दो-चार दिन रहने के बाद काशी के पावन क्षेत्र में पहुँच गये।

आप का जन्म परासर गोत्रिय भूमिहार ब्राम्हण परिवार के सम्पन्न एवं धनी कूल में हुआ था बचपन का जीवन अलौकिक रहा। छोटी उम्र में पूजा करना मिट्‌टी से देवी-देवताओं की मूर्ति निर्माण करने के साथ खेलने में अध्यात्मिक खेल ही आपको अधिक पसंद व प्रिय लगता था। विद्या अध्ययन में कक्षा में प्रथम स्थान रहता था किन्तु बचपन से ही वैरागी प्रवत्ति होने पर परिवार वाले ज्योतिषियों से गणना कराए उन्हीं के सलाह पर इनके नाक कान का छेदन कराएं। काशी में इनकी मुलाकात दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी से हुई कई दिन से भूखे थे शरीर काम नहीं कर रहा था। स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी अपने आश्रम पर ले गए और भोजन दिए।

इनको विद्या अध्ययन की व्यवस्था किए तथा आश्रम पर रहने की अनुमति दिए। आप ब्रह्मचारी भेष में रहकर भिक्षा द्वारा भोजन करने के साथ विद्या अध्ययन का कार्य करते थे। समय निकाल कर स्वामी जी की चरण सेवा कार्य में लग जाते थे। अल्प समय में संस्कृत, हिन्दी, अंग्रेजी तथा वेद-शास्त्र और अन्य ग्रन्थों का अध्ययन किए। आपकी सेवा से प्रसन्न होने पर दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी प्रयागराज में दीक्षा के साथ दण्ड जो संन्यास का प्रतीक है आपको दिये। गुरुदेव से आज्ञा प्राप्त कर आप भारत भ्रमण के लिए निकल गए भारत की धरती पर ऐसा कोई स्थान नहीं जहाँ आपका चरण न गया हो। आप समस्त तीर्थ स्थलों एवं मन्दिरों में गये।

जिस समय आप रत्नागिरि पर्वत एवं जंगल में विचरण के लिए पधारे उस समय आपकी आयु लगभग चौबीस-पच्चीस वर्ष की थी दुबला-पतला शरीर, छः फीट लम्बा गोरा बदन स्वस्थ शरीर सिर पर घुघराले लम्बे-लम्बे बाल, मुख मण्डल पर आलौंकिक चमक दिखाई देता था आपके शरीर पर गेरुआ रंग का अँचला कमर में कौपलीन (लँगोटी)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तथा पैरों में ढाई से तीन ईंच मोटी ऊँची खड़ाऊँ पहन कर निर्भिक होकर जंगल में विचरते थे। उस समय आपके मित्र जंगल में खुंखार जानवार चिता शेर, बन सुअर थे। भिक्षा ग्रहण के लिए आप सदैव गाँव से बाहर ही रह कर भिक्षा लेते थे, आप कर पात्री थे भिक्षा अपनी हाथ की अंजुली में लेकर करते थे और पुनः वापस जंगल में उसी स्थान पर आ जाते थे। दैवी आपदा से त्रस्त पीड़ित जनता के बीमार होने पर जड़ी-बुटी की दवा से निदान करते रहे। पावापुरी गाँव में कलरा रोग का प्रकोप हुआ आप वहाँ गए चरण-पड़ते देवी प्रकोप शान्त हुआ जनता के अनुरोध पर गाँव के बाहर तपस्या कर दैवी आपदा से मुक्त किए।

इसके बाद आप उत्तर प्रदेश की यात्रा प्रारम्भ किए चौदह वर्ष तक यहां के लोगों को वृन्दावन की भांति जन जीवन को अपने तरफ खिंच कर उन्हें सोच में डाल दिए। हम सभी आपके दर्शन के लिए तड़पते रहें जैसे मछली जल से बाहर निकलते तड़पती है। पुनः राजगीर की यात्रा होने पर बुन्दी साव ने आपको स्वर्ण भण्डार पर देखा। आपके सिंथौरा जंगल में आने पर यहाँ के भक्तों को चातक पंक्षी जैसा स्वाति नक्षत्र का जल मिल गया। झोपड़ी लगी दो वर्ष तक आप जंगल में रहे। कटौंना गाँव में दैवी प्रकोप होने पर वहाँ के लोग आपसे दया की भीख की याचना किए। वहाँ आपके चरण पहुँचते ही दैवी प्रकोप शान्त हुआ। कटौना गाँव में वर्ष 1970ई0 से मार्च 1973ई0 तक उस गाँव के सम्पन्न किसान श्रीबाबू के आग्रह पर उनके दरवाजे पर रहें। (जंगलिया बाबा) के आशीर्वाद से श्रीबाबू को सन्तान सुख मिला और आप पुनः श्री गोपालधाम आ कर रहने लगें।

कुष्ट रोगी व पागल रोग से पीड़ित लोगों को अभय दान दिए कोई रोगी निराश नहीं हुए सभी रोग मुक्त हो गये। शहर, बाजार व गाँवो के लोंग आकर आपको अपने यहाँ ले जाने लगे इसी क्रम में आप नवादा जिला के आँती गाँव में रह कर पूरे इलाके का दौरा किए। नवादा जिला अन्तर्गत ककोलक झरना जो घनघोर जंगल में स्थित है वहाँ दिन में ही भयंकर खुंखार शेर, भालू चित्ता, वन सुअर दिखाई देते थे। उनसे खेलते पुचकारते झरने के सातों ताल तलैया के ऊपर गये और आँती गाँव के लोगों के साथ निर्भिक होकर विचरण किए।

आँती गाँव में कुछ दिन प्रवास के बाद अन्यत्र स्थान पर चले गये वर्ष 1974 ई0 में सिंथौरा जंगल में पधारे। गाँव वालो के आर्थिक सहयोग मिलने पर जंगल में राधा-रमन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कुंञ्ज का निर्माण हुआ। सिंथौरा गाँव के लोग आपका भोजन जंगल में पहुँचाने लगे।

एक समय की बात है- मै अपने घर परिवार से रूठकर जंगल में आया सावन का महीना रहा रात्रि के नौ-दस का समय वर्षा हो रही थी मेरे हृदय में विचार आया रात्रि में ही पहाड़ पर चढ़ जाएंगे और किसी गुफा में रहकर अन्न जल का त्याग कर अपना शरीर को सुखा कर प्राण त्याग देंगे। वर्षा और ठंड के कारण जाड़ा लग रहा था स्वामी जी की कुटियां से कुछ कदम दूरी पर नीम के तीन पेड़ एक स्थान पर थे मैं उसी वृक्ष के नीचे बैठ गया, वर्षा से सारा बदन भीग गया था, खैनी बना कर खाया तथा पहाड़ पर चढ़ने के विचार से आगे चलने लगा, घनघोर अंधकार होने से पास की वस्तु नहीं दिख रही थी। आगे बढ़ना मुश्किल हो गया था। उसी समय स्वामी जी अपनी कुटिया से आवाज दिए, कौन है यहां आओ। मैं पकड़े जाने के वजह से आगे बढ़ गया। पन्द्रह-बीस कदम आगे बढ़ा था कि स्वामी जी मेरा हाथ पकड़ लिए और एक थप्पड़ जड़ दिए कहें चलो तुम बहुत बदमाश हो गये हो दिन रात बैठा रहता है बाप मारा तो घर छोड़कर भाग खड़ा हो गया, कायर कही का चलों। मैं बाबा के पीछे-पीछे चला कुटिया में पहुँचते ही वर्षा खुल गया, मुझे भूख सताने लगी स्वामी जी भी भीग गए थे। प्रभु अपना कपड़ा बदले। मेरे भोजन के लिए कुटिया से बाहर निकल कर मुझे साथ लिए और एक स्थान पर जड़ी खोदने का निर्देश दिए मैं उस जड़ी को खोद कर बाहर निकाला स्वामी जी उस जड़ को खाने को बोले-खाने पर उस जड़ी का स्वाद बहुत स्वादिष्ट था वह स्वाद आज तक मुझे समझ नहीं आया और फिर वह जड़ी मुझे प्रयास करने पर भी नहीं मिली। जड़ी खाने के बाद मैं सो गया। सबेरा हुआ स्वामी जी स्नान किए राधा-श्याम की आरती हुई। मुझे घर लौटने को कहें उनके आदेश पर घर वापस आ गया।

श्री रामस्वरूप सिंह ग्राम व पोस्ट- सिंथौरा, जिला-नालन्दा बिहार (श्री कृष्ण जन्माष्टमी दिनांक-17.08.1987 ई0)-

जंगलिया बाबा जिस समय सप्ताह में एक बार भोजन करते थे उस समय कौआ कोल एवं एन0एच0-31 पर ठेके का कार्य चल रहा था रात्रि में मैं अपने साइड पर ही रहता

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

था। प्रत्येक शनिवार को छः सात बजे शाम को फल-मिठाई लेकर श्री गोपालधाम बाबा का चरण स्पर्श करने चला आता था। एक दिन नवादा में पहलवान के दुकान से मिठाई ले रहा था कि मेरी बस छुट गई। मैं रिक्शा पकड़ कर गिरियक के लिए चला। रास्ते में खराट गाँव के पास चोरो का गिरोह के सदस्य रिक्शा रोक कर बोले-तुम कौन हो, मेरा उत्तर था मैं सिंथौरा गाँव का रामस्वरूप सिंह ठेकेदार हूँ आज शनिवार हैं जंगलिया बाबा के लिए फल मिठाई लेकर श्री गोपालधाम जा रहा हूँ। यह सुन कर वे अपने सरदार से पूछा-इनके विषय में आपका क्या आदेश हैं सरदार बोला- जंगलिया बाबा के यहाँ जा रहा है, इसे छोड़ दो। रिक्शा नदी किनारे छोड़कर नदी पार किया पहाड़ी के पगदण्डी पकड़ कर चलने लगा जब विशेश्वर पहलवान के घर के सामने आया पहाड़ में नक्सलाइट का झूण्ड मिला वे भी हमसे पूछ दिए तुम कौन हो इतनी रात्रि में कहाँ जा रहे हो, उस समय भी मैं बोला-हम रामस्वरूप सिंह ठेकेदार हूँ जंगलिया बाबा के पास श्री गोपालधाम जा रहा हूँ। वे लोग बोले उच्चे स्वर में बोलते हो तुम्हारी बोटी-बोटी काट देंगे। इसके बाद मैं बोला आपके पास बन्दूक, पिस्तौल है मेरे पास चाकू है इसे ले ले और मेरे शरीर का टूकड़ा कर दो।

इतने में श्री गोपालधाम में आरती की घंटी बजने लगी। सरदार से उसका साथी बोला बहुत टेढ़ा आदमी है तब गैंग का सरदार बोल पड़ा। इसे जाने दो बाबा का शिष्य है। हम लोंग उनकी नज़र से गिर जाएगें। सरदार मुझे चेतावनी दिया बोला आगे रास्ते में यदि तुम्हें कोई रोके तो बोल देना सरदार हमसे मिले थे और पास में ही बैठ है यदि नहीं मानता हो तो शोर करना हम तुरन्त आ जाएगें। हम तेज कदम से चलने लगे और श्री गोपालधाम पहुँचे। हाथ-पैर धो कर बाबा का चरण स्पर्श किए जंगलिया बाबा मुझे पकड़ कर दो थप्पड़ मारे और कहें अपने नाम के बाद ठेकेदार क्यों लगाते हो। ठेकेदार तो वैसे ही बदनाम हैं उसके पास पैसा रहता है। ऐसी स्थित में नहीं चलना चाहिए। बाबा से बोले मैं आपके शरण में आ रहा था भय किसका मेरे साथ भगवान है।

द्वितीय घटना-

एक दिन नवादा से 9.00 बजे रात्रि में बस से यात्रा करते हुए गिरियक पहुँचा और पैदल नदी पार कर रहा था कि उसी समय देखा बालू से लदी ट्रक राजगीर जाने के लिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

नदी से बाहर निकल रही थी। सोचा यदि ट्रक पकड़ लूँगा तो जल्दी घर पहुँच जाऊँगा। हम ट्रक पकड़ने के लिए दौड़े ट्रक की लाइट की रोशनी से मेरी आँख चकमका गई। मैं 20 फीट ऊँची नहर की दीवार से नहर में नीचे पत्थर के बोल्डरों पर गिर गया। पैर की ठेहुने में चोट आई पैर के ठेहुने की चकरी दो भाग में हो गई। उस समय मुझे एहसास हुआ स्वामी जी हमे अपनी गोद में लेकर नहर से बाहर कर दिए मैं बेहोश हो गया। जंगलिया बाबा बोले-बेटा चोट लगी है ठेहुना टुटने से मेरा पैर उल्टा हो गया बाबा अपने हाथों से सीधा कर मेरा पैर बैठा दिए और मुझे प्यार से चुमने लगे उनकी दाढ़ी का स्पर्श होते ही मैं होश में आ गया। मैं बोला बाबा लगड़ा होकर हम जीना नहीं चाहते ज़हर खा कर मर जाऊँगा। उसी समय बाबा अन्तर्ध्यान हो गए। ट्रक कुछ दूर पर जा कर रूक गई थी ट्रक का गेयर फँस गया था मुझे ट्रक पकड़ने की धून थी मैं अपना सामान उठाकर ट्रक तक पहुँच गया। ड्राईवर बोला मालिक ठहरिए गेयर फँस गया है मैं उसे छुड़ा लूँ मेरे मुँह से निकला मेरे जाने के लिए ही गेयर फँसाया गया है। तू दो बार क्लच दबा कर गेयर बदलो ड्राईवर वैसा ही किया जैसा हम उसे बताएं थे। ट्रक स्ट्राट हो गई। मुझे गाड़ी में बैठा कर गांव ले गया और मेरा सामान मेरे घर तक पहुँचा दिया। घर जाकर देखा मेरी पत्नी प्रसव पीड़ा से व्याकुल है उसे बिहार डाक्टर के पास भेजने के लिए भैया गाड़ी लाए मैं भी अपना खून लगा कपड़ा बदल कर उसी गाड़ी से बिहार गया। पत्नी को डाक्टर प्रसव कराने हेतु प्रसव रूम में ले गया।

मैं भी अपना इलाज कराने के लिए सर्जन से सम्पर्क किया डाक्टर पूर्व परिचित थे। तुरन्त एक्स-रे कराए डाक्टर एक्स-रे देख कर दंग हो गए बोले ऐसी परिस्थिति में आपको छः माह बेड रेस्ट करना होगा। मैं उनसे आग्रह किया आप पट्टी बाँध कर दर्द की दवा दे दे। इसे जंगलिया बाबा अपने हाथों से बैठा चुके है। डाक्टर बोले पैर की चक्की तीन टुकड़े में हो गई है मात्र आशीर्वाद से ठीक नहीं होगी। इसका इलाज कराना होगा और छः माह बेड रेस्ट करना होगा। जो होगा सो होगा आप क्रेप बैन्डेड बाँध कर दर्द की दवा दीजिए। हम क्रेप बैन्डेड पर इन्कलेट पहन कर घूमने-फिरने लगे। डाक्टर जो मेरे सम्पर्क में थे मुझे मना करते रहे। बाबा के आशीर्वाद से आज भी हम चल फिर रहे है। यह जंगलिया बाबा की कृपा ही है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीसरी घटना-

सन् 1959 ई0 के अक्टूबर महीने में मेरा ट्रक श्री गोपालधाम की पहाड़ी से नवादा के लिए गिट्टी की ढुलाई कर रहा था, और नवादा से ईट लेकर कौआ-कोल रानी बाजार के पास नदी में जहाँ मेरा कार्य हो रहा था वहाँ पहुँचा देता था। कौआ कोल से पत्थर लेकर राष्ट्रीय मार्ग- 31 पर जहाँ मार्ग निर्माण हो रहा था वहाँ गिरा देता था। एक दिन नवादा से ट्रक हम स्वयं चलाकर कौआ कोल ले जा रहे थे। ट्रक में सवार लोगों को रास्ते में पकड़ी बरामा उतार कर आगे चले एक किसान अपने बैल के साथ हल जोतने खेत में सड़क के रास्ते ले जा रहा था, मैं ट्रक का हार्न बजाया बैल बीच सड़क में चला आया। अब बैल को बचाने के लिए इमरजेन्सी ब्रेक का इस्तेमाल किया हल्का बुदा-बुदी पड़ा था गाड़ी फिसल कर गढढ़े में गिर गई ट्रक का चक्का ऊपर तथा हम सभी नीचे दब गए दो मजदूर दब कर घटना स्थल पर मर गये। देखा बाबा केबिन अपने दोनों हाथ से पकड़े हैं बोले-निकल जा बेटा हम और ड्राईवर गाड़ी से बाहर निकले। उसके बाद स्ट्रेयरिंग दब कर चूर-चूर हो गया।

इस दुर्घटना को देख कर लोग इकठ्ठे हो गये हम सभी को निकाल कर अस्पताल ले गए और इलाज कराए। मैं पुलिस को चकमा देकर एम0वी0आई0 की रिपोर्ट लेकर थाना में गया। ड्राईवर को कोर्ट में खड़ा किए उनकी जमानत लिया। एम0वी0आई0 अधिकारी बोला ड्राईवर ऐसी दुर्घटना में नहीं बचते है। कहाँ है मैंने अधिकारी से कहा उस समय गाड़ी मैं चला रहा था। ड्राईवर मेरे बगल में बैठा था। हम दोनों सुरक्षित बच गये। हम दोनों को बाबा स्वयं बचा लिए।

चतुर्थ घटना-

एक दिन मेरी ट्रक मोरम लाद कर लखी सराय पीपरिया टाल लेकर गई। मोरम गिरा कर वहाँ से ट्रक लेकर चलने लगे तो पश्चिम दिशा से तेज आँधी तुफान आ गया। ट्रक तेज गति से चल रही थी पानी के साथ तेज हवा के झोके के कारण चालक का संतुलन बिगड़ गया गाड़ी उलट कर गिरने लगी तभी अचानक ट्रक का गेट खुल गया। मैं और चालक एक

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

साथ ट्रक से बाहर सड़क पर गिर गये और गाड़ी पलट कर गढ़ढे में जा गरी। हम दोनों को कोई चोट नहीं आई। यह जंगलिया बाबा की कृपा ही थी कि मैं और चालक दोनों मरने से बच गये। इस दृश्य को जो भी देखा कहने लगा दैवी कृपा से दोनों लोग बच गये है।

पंचम घटना-

सन् 2010 ई0 के मार्च माह में अपने साइड पर (बढ़इया-प्रतापपुर, अंजनीघाट भाया जखोरपथ) के किमी0 2 एवं 3 में किए गए कार्य का मापी लेने के लिए जूनियर इंजीनियर शर्मा जी की मोटर साईकिल से गया। जूनियर इंजीनियर कार्य की मापी लेकर वापस आ रहे थे कि लखी सराय कालेज के पास सामने से एक ट्रैक्टर तेज गति से आ रहा था। उसे देख कर शर्मा जी अपनी मोटर साईकिल ट्रैक्टर से बचाने के उद्देश्य से अपनी बायी दिशा में दबाये ट्रैक्टर चालक भी ट्रैक्टर को बायी दिशा में ले गया बायी ओर नाली निर्माण के लिए मिट्‌टी (खोदी) निकाली गई थी ट्रैक्टर मिट्‌टी पर चढ़ गया और ट्रैक्टर चालक घबरा गया जिससे ट्रैक्टर हम दोनों की मोटर साईकिल पर पलट गया। उसी समय मेरे मुख से निकला बाबा जान बचाइए। मैं अपने हाथ से ट्रैक्टर की ट्राली को धक्का दिया तब ट्रैक्टर खड़ा होकर आगे बढ़ गया। उसी समय मेरा दाहिना हाथ की हड्‌डी टूटने की आवाज आई मोटर साईकिल पन्द्रह फीट दूरी पर कालेज के मैदान में गिरी। उस समय जूनियर इंजीनियर शर्मा जी से बोला साहब मेरा हाथ टूट गया है। जूनियर इंजीनियर बेहोश जमीन पर गिरे थे।

यह घटना को देख कर कालेज के प्रधानाचार्य एवं प्रोफेसर दौड़ कर पास आए हमें उठाए जूनियर इंजीनियर साहब को भा0ज0पा0 नेता श्री जगदीश सिंह उठाए। प्रधानाचार्य जी कहने लगे बूढ़ा व्यक्ति ने हाथ से धक्का दिया तो ट्रैक्टर खड़ा हो गया। उस दिन मौत की गोद से हमें और इंजीनियर साहब को गुरूदेव बचा लिए। प्रधानाचार्य एवं प्रोफेसर दोनों लोग हम दोनों को रिक्शा में बैठाकर इलाज कराने के लिए अस्पताल में लेकर गये। दोनों कहते रहे ईश्वर स्वयं आकर इन लोगों को बचा लिए है। मुझे देखने के लिए भीड़ लग गई। कैसा व्यक्ति हैं जो ट्रैक्टर को अकेले ढ़केल दिया। यह बात किसी को भी अच्चम्भे में डाल देती थी। पटना जा कर टूटे हाथ का इलाज कराया। हाथ में लोहे का प्लेट लगा है मुझे कोई तक़लीफ नहीं होती यह गुरूदेव की कृपा का चमत्कार है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

षष्ट्म घटना-

श्री गोपालधाम से श्रीराधा जी व श्री कृष्ण भगवान की मूर्ति चोरी के बाद चोरों के दुर्घटना में हुई मृत्यु से उनके परिजनों का विलाप सुन कर जंगलिया बाबा का हृदय पीघल गया था वे अपना शरीर का त्याग करने का निर्णय कर लिए थे। पूजा एवं जाप में भी उनका मन स्थिर नहीं रहता था। चेहरे पर मुस्कान कम हो गई थी पूजा एवं वाद्य संगीत नृत्य से दूर होते जा रहे थे। श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी बाबा की देख-रेख में पूजा अर्चना करने लगे। उनकी स्थिति को देख पुजारी जी स्वामी जी से कहे-बाबा चोरी की घटना के बाद आप हमेशा चिन्तित रहते हैं आपका चेहरा देखने से उदास मालूम होता है। चोरी की घटना के बाद स्वामी जी भागवत् सप्ताह सुनने की इच्छा प्रकट किए किन्तु भागवत सप्ताह सुनने हेतु मुकुन्द ब्रह्मचारी जी के नाम का प्रस्ताव किए। भागवत सप्ताह समापन के पश्चात् श्री राधा जी एवं श्री कृष्ण भगवान की मूर्ति लाने मथुरा वृन्दावन की यात्रा किए उनके साथ श्री रामवृक्ष सिंह श्री रामस्वरूप सिंह श्री जयनन्दन सिंह एवं श्रीमती लीलावती देवी श्री गोपालधाम से गये। भगवान श्री कृष्ण एवं माँ राधिका जी की मूर्ति लाए प्राण प्रतिष्ठा कर उन्हें सिंहासन पर बैठाए फिर भी स्वामी जी की आत्मा को शान्ति नहीं थी। श्री मुन्ना सिंह पुजारी जी के पूछने पर जंगलिया बाबा (स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी) बोले- बेटवा मैं पैंतालिस वर्ष से नहीं सोया है। अब मेरा शरीर जर्जर हो गया है मेरा मस्तिष्क और मन स्थिर नहीं है तो यह शरीर रखने से क्या आवश्यकता है।

मैं अँजोरपुर जाऊँगा वहाँ के भक्तों ने मेरी सेवा की है। जिसमें पं0 परमात्मानन्द जी का परिवार अग्रीण है। गंगा तट की रेत में मुझे जाने दो उसमें लोटने की प्रबल इच्छा है। वह नारायण क्षेत्र है बड़े-बड़े ऋषि मुनियों की तपस्थली है देवता भी उस भूमि के लिए ललाइत रहते हैं खुद भगवान शंकर तपस्या किए हैं ब्रह्मा जी के पुत्र श्री भृगुमुनि भगवान विष्णु की छाती पर लात मारे थे का प्राश्चित दोष को मिटाने के लिए इसी क्षेत्र में तपस्या करके दोष मुक्त हुए थे। मैं उसी क्षेत्र में जा रहा हूँ। अँजोरपुर जाने के समय पुजारी जी बोले-आप श्री गोपालधाम में भगवान की प्राण-प्रतिष्ठा किए है। उनकी सेवा कौन करेगा

RajGuru Math, Shiyala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संगीत कार्यक्रम के लिए सरोज, तबला, हारमोनिया नाद आदि रखे है उसे कौन बजायेगा। इसे छोड़कर आप किसके भरोसे पर जा रहे है। तब स्वामी जी बोले–तुम पूजा करना मैं हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगा। पुजारी श्री मुन्ना सिंह कहे– मुझसे पूजा होना सम्भव नहीं है मेरी दिन चर्या हमेशा गलत कार्यों में लगी रहती है यह सम्भव नहीं है। बाबा बोले– अतिथि सत्कार करना–मुन्ना सिंह कहे–बाबा मैं अतिथि से आदर पूर्वक बातें नहीं करना जानता तो उसका सत्कार कैसे करूँगा। यह भी मुझसे सम्भव नहीं है। तब बाबा मुन्ना सिंह को समझाते हुए बोले–बेटा राधा कूप का एक लोटा जल लेकर भगवान के सिंहासन पर रख कर उसमें तुलसी का पत्ता दल देकर अतिथि के सामने प्रस्तुत करना। इसके बाद हम सभी आवश्यकताओं की पूर्ति कर दूँगा। स्वामी जी की वाणी सुन कर उपस्थित सभी भक्त भाव विभोर होकर उसी प्रकार रोने लगे। जिस समय भगवान श्रीकृष्ण गोकुल छोड़कर मथुरा जा रहे थे। गोकुलवासी उनके वियोग में आँसू बहा रहे थे। तब से आज तक श्री गोपालधाम में किसी वस्तु का अभाव नहीं हुआ जो भी आया उसका अतिथि सत्कार उसकी इच्छा के अनुरूप होता चला आ रहा है। किसी भक्त या व्यक्ति से कोई मांग नहीं किया जाता। फिर भी बाबा उसकी व्यवस्था श्री गोपालधाम में कर ही देते है।

जंगलिया बाबा सभी भक्तों को सांत्वना देते हुए अँजोरपुर चलने को तैयार हुए और गाड़ी में बैठ गये। उस समय भक्त बाबा से बोले श्री गोपालधाम में विश्व सनातन शान्ति स्तूप, निर्माण के लिए भूमि पूजन कराये अब कैसे तैयार होगा, जिसमें करोड़ो रूपये का व्यय होना है उसे कौन करेगा? गाड़ी में बैठे जंगलिया बाबा कहे–इसे हमार बनरा स्वरूपा बनाएगा। इस कार्य के लिए मुझे पुनः जन्म लेना पड़ेगा तो भी जन्म लेकर इसे पूरा करूँगा। गाड़ी में स्वामी जी के साथ श्री कपिल देव सिंह उर्फ (कपिल जी) श्री अर्जुन सिंह का पुत्र प्रमोद ब्रह्मचारी श्री रामअशीष सिंह का पुत्र विजय ब्रह्मचारी, श्री अर्जुन सिंह श्री सीताराम दुबे का पुत्र अजय ब्रह्मचारी एवं श्री भुनेश्वर सिंह मास्टर थे।

अँजोरपुर स्वामी जी को पहुँचा कर तीन दिन बाद श्री कपिलदेव सिंह उर्फ (कपिल जी) श्री अर्जुन सिंह, श्री भुनेश्वर सिंह मास्टर, श्री विजय ब्रह्मचारी, श्री अजय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ब्रह्मचारी वापस श्री गोपालधाम आ गये। मात्र श्री प्रमोद ब्रह्मचारी बाबा के साथ रूक गये। श्री अर्जुन सिंह ग्राम-सिंथौरा, श्रीराम अशीष सिंह ग्राम-पावा, पोस्ट-पावापुरी की पत्नी श्रीमती पंचा देवी तथा श्री सीता राम दूबे की पत्नी श्रीमती लीलावती देवी के मन में यह घर कर गया था कि मेरा बेटा जंगलिया बाबा का शिष्य बनकर श्री गोपालधाम का उत्तराधिकारी हो जाएगा इसी लालच से वे तीनों लोग अपने-अपने बच्चों का यज्ञोपवित संस्कार एवं ब्रह्मचारी बनाने के लिए बाबा से अनुरोध किए थे। बाबा स्वयं इसके पक्ष में नहीं थे लेकिन उन लोगों की सेवा भाव का देखकर उन बच्चों को यज्ञोपवित संस्कार कराए और ब्रह्मचारी घोषित किए।

श्री गोपालधाम में मंगलवार दिन का उत्सव होने के बाद श्री रघुनन्दन शर्मा बैद्य उर्फ (झपसू जी), श्री भुवनेश्वर सिंह मास्टर साहब, श्री कपिल देव सिंह उर्फ (कपिल जी) श्री विपिन कुमार सिंह व श्री पुजारी जी आपस में मंत्रणा किए कि जंगलिया बाबा को मना कर अँजोरपुर से वापस श्री गोपालधाम लाना है। श्री मुन्ना सिंह उर्फ (पुजारी जी) सभी को मार्ग व्यय की धनराशि दिए। वे लोग रविवार के दिन दिनांक 01.07.1979ई0 को अँजोरपुर श्री परमात्मानन्द पण्डित जी के दरवाजे पर पहुँच गये। स्वामी जी का दर्शन किए। सोमवार, मंगलवार को स्वामी जी को कीर्तन-भजन सुनाए। दिनांक 04.07.1979ई0 को श्री कपिल देव सिंह जी को पास बुलाकर स्वामी जी बोले कपिल जी मीरा का वह भजन सुनाइए-जिसका बोल है मैं गिरधर आगे नाँचूगी। श्री कपिल देव सिंह उर्फ (कपिल जी) तबला और श्री रघुनन्दन शर्मा वैद्य उर्फ (झपसू जी) हारमोनियम लेकर भजन गाने लगे जंगलिया बाबा स्वयं भगवान के सामने नृत्य किए और पास की चौकी पर लेट गए उपस्थित भक्तों ने चौकी से कम्बल आदि अलग कर दिए। स्वामी जी के शरीर में ऐठन होने पर उसे देखकर लोग दौड़ कर योगीराज महामण्डलेश्वर दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी के गुरुभाई दण्डी स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी जो गाँव की कुटी पर चर्तुमास के लिए पधारे थे को सूचना दिए और पं0 परमात्मानन्द जी के स्कूल में जाकर सूचित किए दोनों व्यक्ति पं0 परमात्मानन्द जी के दरवाजे पर पहुँचे जहाँ स्वामी जी काष्ठ की चौकी में लेटे थे।

RajGuru Math, Shiyala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी जी को देख कर दण्डी स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी व श्री परमात्मानन्द पण्डित जी बोले इन्हें रोग नहीं हुआ है समाधि में है। दण्डी स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी स्वामी जी को देख कर रो दिए। एक बार स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी की आँख खुली वे अपने गुरु चाचा दण्डी स्वामी श्री स्वरूपानन्द जी को देख कर मुस्कुरा दिए। लगभग 8.00 बजे रात्रि में तीन बार ऊँ ऊँ ऊँ शब्दों का उच्चारण कर हमेशा के लिए समाधि में चले गए।

हम बाबा के पार्थिव शरीर का दर्शन नहीं कर पाये उस अवधि में बैंक कर्मचारी से हुई मार-पीट के कारण जेल में बन्द था जमानत होते ही पावापुरी के रामाश्रय सिंह ने बताया जंगलिया बाबा अपना शरीर त्याग कर दिए है। मैं पटना से ट्रेन पकड़ कर बक्सर आया और कार पकड़ कर नरही थाना पर उतर गया। पैदल अँजोरपुर गाँव को चल दिया रात्रि होने से मार्ग भूलकर गलत रास्ता में चल रहा था। चाँदनी रात में एक आदमी सामने दिखाई दिया। उसके हाथ में लम्बी लाठी थी बोला तू मगह का लगता है तू अँजोरपुर पं0 परमात्मानन्द जी के घर जाओगे। राजगीर के लोग आ जा रहे है। आप बलिया जाने वाला मार्ग से चल रहे हो रास्ता भूल गया है पण्डित जी का घर सामने है जहाँ लालटेन जल रही है। मेरा ध्यान बाबा की स्मृति किया पीछे मुड़ कर देखा कोई दिखाई नहीं दिया। रामपुर गाँव के निकट मगहीं नदी थी। ईख के खेत से आवाज आई तू बहुत मूर्ख हो अनजान स्थान में रात्रि में भटक रहा है। नदी में डूब कर मर जाएगा। फिर वही व्यक्ति बोला नदी के अन्दर सरपत गड़ा हैं उसी के बीच से चाचर पर चढ़ कर धीरे-धीरे नदी पार कर जाओं। मुझे ऐसा लगा बाबा की आवाज है बेचैन होकर उन्हें ढूढ़ने लगा बाबा दिखाई नहीं दिए। चचरी पानी से बाहर हुई और नदी की धारा में बहने लगी।

नदी के तट के ऊपर खेतों में मकई की खेती थी आगे रास्ता तीन दिशा में जा रहा था फिर मेरा रास्ता भूल गया। वहाँ तीन कुत्ते मुझे देख कर भौंकने लगे और वे तीनों तीन दिशा में चले गये। जो कुत्ता पूरब दिशा में जा रहा था मैं उसी के पीछे-पीछे श्री परमात्मा नन्द पण्डित जी के दरवाजे पर पहुँचा। श्री परमात्मानन्द पण्डित जी दरवाजे का गेट खोले तो सामने मुझे खड़ा देख कर अपने बेटे से बोले देखो रामस्वरूप सिंह आए हैं और आगे बढ़ कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वे हमारे गला से लिपटे और मैं उनकी कमर पकड़कर जोर-जोर से रोने लगा दोनों की रोने की आवाज सून कर उनके घर का दरवाजा खुला और घर वाले भी रोने लगे। फिर श्री परमात्मानन्द पण्डित जी मुझे शान्त कराए। भोजन करने के लिए कहे। मैं उनसे बोला मैं फूल-माला के साथ पूजा की सामग्री लेकर आया हूँ। सर्व प्रथम जहाँ जंगलिया बाबा का अन्तिम संस्कार जल समाधि किया गया है वहाँ गंगा जी के तट पर जाऊँगा और उनकी पूजा करूँगा।

श्री परमात्मानन्द पण्डित अपने पुत्र श्री जगदीश पण्डित को बोले ये मानने वाले नहीं हैं इन्हें लेकर जाओं, तब श्री जगदीश पण्डित ने कहा क्या बाबा वहाँ बैठे हैं। मेरा उत्तर था हाँ वहाँ बैठे है, चलिए हम दोनों बाबा का दर्शन करेंगे। इसके बाद श्री जगदीश पण्डित मुझे साथ लेकर गंगा तट के लिए चल दिए। हम दोनों गंगा जी के तट पर पहुँच गए। वहाँ एक मल्लाह अपनी छोटी नाव लेकर मछली मार रहा था। मैं उससे आग्रह किया भाई मुझे गंगा जी के अन्दर धारा में ले चलोगे मुझे इस कार्य के लिए तुम्हें कितना मजदूरी देना होगा। मल्लाह बोला-दस रूपया मैं स्वीकार किया और उसकी नाव में बैठ गया। गंगा में तेज धार होने के कारण दो तीन बार मल्लाह नाव को लेकर गंगा जी के मध्य नदी में ले जाता था फिर भी हवा होने से नाव किनारे लग जाती थी मल्लाह बोला गंगा जी में तेज धारा होने से नदी के मध्य में नाव स्थिर नहीं हो रही है। पुनः नाविक से निवेदन किया इस बार नाव ले चलों गंगा जी में वहाँ नाव पहुँचे तो लंगर फेक देना। नाविक नाव लेकर गया और गंगा जी के मध्य में लंगर डाल दिया नाव स्थिर हो गई मैं गंगा जी में पूजन किया। दोनों हाथ जोड़कर प्रार्थना किया बोला-बाबा आप मुझे दर्शन दीजिए। सुबह की किरन-निकल चुकी थी स्वामी जी अपने स्वरूप में पाँच सौ फीट की दूरी पर गंगा जी के जल में बैठे दिखाई दिए। हम बाबा को देखकर श्री जगदीश पंण्डित से बोला-सामने बाबा दिखाई दे रहे हैं। आप उन्हें प्रणाम कीजिए। श्री जगदीश पण्डित बोले कहाँ है बाबा इतने में नाव गंगा जी के किनारे आ कर लग गई। नाविक जगदीश पण्डित से कहा बाबा दिव्य पुरूष थे इनकी पहचान आज तक नहीं कर पाए। उसके बाद हम दोनो श्री परमात्मानन्द पण्डित जी के दरवाजे पर आ गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भोजन किया भण्डारा कराने के सम्बन्ध में वार्ता करने के लिए श्री परमात्मा नन्द पण्डित जी के साथ दण्डी स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी के पास गया जहाँ अँजोरपुर गाँव की कुटी पर रहकर वे चार्तुमास कर रहें थे। चर्चा में स्वामी जी बताए स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी के दीक्षित शिष्य रहे। उनका आश्रम राज गुरु मठ शिवालाघाट वाराणसी पर है इस समय मठ के उत्तराधिकारी महंथ दण्डी स्वामी श्री विमलानन्द सरस्वती जी है। उन्हीं से सम्पर्क कर भण्डारे का समय निर्धारित करो। दण्डी स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी बोले-वह मठ कहाँ है देखे हो। मैं बोला हाँ श्री राधाजी की मूर्ति लाने जंगलिया बाबा के साथ मै और भैया वाराणसी गये थे तो उसी समय गंगा जी में नाव पर चढ़ कर बाबा शिवालाघाट तक गए और अपने गुरु आश्रम को प्रणाम किए और हम दोनों को बताए थे।

इसके बाद वाराणसी गया और राजगुरु मठ शिवालाघाट पहुँच कर दण्डी स्वामी श्री विमलानन्द सरस्वती जी का चरण स्पर्श किया। अपना परिचय स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी के शिष्य कह कर दिया। वे पूछे भैया ठीक है न मेरा जवाब था वे अब नहीं है अँजोरपुर गाँव में समाधि ले लिए हैं उन्हीं का भण्डारा का समय निर्धारण कराने के लिए आपके पास आया हूँ। हम लोंग सारा प्रबन्ध कर चुके हैं मात्र आप अपने समाज के साथ आने की स्वीकृति दीजिए। साथ ही आपका समाज कहाँ-कहाँ है सबको बुलाना चाहता हूँ। दण्डी स्वामी श्री विमलानन्द सरस्वती जी बोले-इस समय चार्तुमास चल रहा है यह मालूम नहीं कौन कहाँ है।

श्री गोपालधाम में कार्तिक कृष्ण पक्ष नवमी तिथि को निमंत्रण देकर उन्हें लेते आऊँगा। दण्डी स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी से कह देना और उनसे अँजोरपुर भण्डारे में रहने की अनुमति ले लेना। मैं भी पहुँच रहा हूँ। यह संवाद उनको पहुँचा देना। हम स्वामी जी के साथ अन्य संन्यासी संतो का मार्ग व्यय सौंप कर अँजोरपुर आया और दण्डी स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी से मिलकर वार्ता में हुई बातों को कहा। वे भी अपनी स्वीकृति दिए तथा श्री परमात्मानन्द पंण्डित जी को भी बताया।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूसरे दिन श्री गोपालधाम पहुँचा। जहाँ जंगलिया बाबा के भक्त मेरी प्रतिक्षा कर रहे थे। अँजोरपुर व श्री गोपालधाम में होने वाले भण्डारा की तिथि एवं संन्यासी संतो से हुई वार्ता के विषय में पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी को बताया। पुजारी जी वहाँ उपस्थित लोगों से बताए स्वरूपा सब काम करके चला आया। श्री जयनन्दन सिंह पूछे-बाबा को कभी स्वप्न में देखा है सभी भक्त कहने लगे बाबा स्वप्न में दिखाई दिए- हमें प्रसाद दिये, कोई बोला-बाबा के साथ भोजन किया, कोई कहाँ-मुझे मुक्का मारे कोई बोला चुम्बन किए, मेरा उत्तर था मैं उन्हें नहीं देखा, मैं सबसे अभागा हूँ।

सभी लोग अपने-अपने घर चले गए श्री गोपालधाम में तीन व्यक्ति थे मैं तालों ठाकुर तथा पुजारी जी। पुजारी जी के भोजन से तीनो खाना खाए और रात्रि बारह बजे तक इधर-उधर की कहानी करते रहे। पुजारी जी बोले-बारह बज रहा है अब सो जाओ। हम और तालो ठाकुर उत्तर वाले गेट के पास आकर सो गये उसके बाद मैं स्वप्न देखा बाबा आए और खड़े होकर कहने लगे-पूरी रात्रि जब तुम अँजोरपुर जा रहे थे कहीं पहलवान कहकर प्रणाम किया, कहीं कुत्ता समझ कर पीछे चले, गंगा जी मे मैं पूरा शरीर दिखा दिया इसके बाद भी कह रहे हो बाबा को हम नहीं देखे। वे मेरे सीने पर लात मारे लात की चोट से मैं छटपटा रहा था इतने में मेरा पैर वहाँ विषैला भयंकर सर्प के ऊपर जा गिरा वह काल मेरे घुटने में डंस दिया। तुरन्त पुजारी जी को आवाज देकर पुकारा मैं झूठ बोला था कि बाबा को नहीं देखा है। बाबा का यारवा हमें काट लिया है। अब हम नहीं बचेंगे। पुजारी जी लालटेन ले कर दौड़ कर आए। वह विषैला सर्प फुलवारी की ओर धीरे-धीरे जा रहा था उसे देख कर पुजारी जी बोले यह भयंकर और खतरनाक विषधर सर्प है, वे तुरन्त मेरा हाथ पकड़ कर मन्दिर में ले गए।

जहाँ बाबा की खड़ाऊँ रखा था वहीं हमसे पूछे विष कहाँ तक चढ़ा है। मैं बोला ठेहुना तक विष चढ़ा है। इसके बाद पुजारी जी झट बाबा की खड़ाऊँ पर हाथ रखे और खड़ाऊँ को हाथ से रगड़ कर मेरे पैर के ठेहुना पर रख कर जहाँ विषधर काटा था वहाँ तक स्पर्श किए उस समय मुझे अनुभव हुआ पुजारी जी का हाथ में बर्फ है। बर्फ से हमारे पैर को रगड़ दिए। ठंड से हम सिहर गये पुजारी जी को बिजली के करेंट जैसा झटका लगा वे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगवान के शैय्या (आसन) पर जा कर गिर गये, फूर्ति से उठे हमारे पास आए बोले स्वरूपा अब कहाँ तक दर्द है मैं बोला–जहाँ सर्प डँस किया अब वहीं दर्द है। पुजारी जी बोले अब तू सो जा मैं मन्दिर में सो गया तलवा ठाकूर बाहर सोया। जब उसे ठंड से जड़ने लगा तो वह मन्दिर में आने लगा उसका पैर मेरे पैर से स्पर्श हुआ मैं उसका पैर दोनों हाथों से पकड़ कर बोलने लगा बाबा आए, बाबा आए। पुजारी जी पुनः लालटेन लेकर आए देखते हैं तलवा ठाकुर का पैर स्वरूपा पकड़ा है। फिर हम दोनों सो गये।

सबेरे उठते ही भगवान को प्रणाम कर पुजारी जी का चरण दोनो हाथों से पकड़ कर उनके चरणों में माथा टेक दिया वे उठकर रोने लगे बोले यह क्या कर रहे हैं आप रिश्ते में चाचा लगते है मैं सभी जगह आपकों प्रणाम करता था, आज मेरे चरण में माथा टेक कर प्रणाम किए है मुझे पाप का भागी बना रहे हैं। मैं बोला नहीं पुजारी जी जब बाबा आपको गुरु मंत्र दीक्षा दिए थे तो हम से पूछे थे तुम मुन्ना को महात्मा माना तब मेरा उत्तर था मैं इन्हें नहीं माना, बाबा कहे थे मैं इसी में रहूँगा। आज सिद्ध कर दिये मैं मुन्ना जी में हूँ। क्योंकि रात की घटना ने साबित कर दिया है कि विषधर नाग के विष को खत्म करने वाला और मौत से बचाने वाला मुन्ना पुजारी नहीं स्वयं स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) है हम स्वामी जी को प्रणाम करता हूँ मुन्ना पुजारी को नहीं आज से आप मेरे स्वामी जी है और मैं उनका बनरा।

श्री जयनन्दन सिंह ग्राम व पोस्ट- चण्डी मौ थाना-सिलाव जिला- नालन्दा (बिहार) (श्री कृष्ण जन्माष्टमी दिनांक 17.08.1987ई0)-

एक दिन पंच्चानन नदी के तट पर सनातन धर्म के प्रतीक एक अजनवी संन्यासी का दर्शन हुआ जो आगे चल कर वे ही मेरे आराध्य गुरू बने। नदीं का किनारा नीम के वृक्ष की छाया में रहने वाले महात्मा जी के पास मिट्टी की छोटी हड्डियाँ नीम की डाल पर सिकहर के सहारे टंगी रहती थी, उस समय सात घरों से प्राप्त भोजन सामग्री रखने का वही अक्षय पात्र था। दूसरे पात्र की आवश्यकता ही नहीं थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गेरुआ वस्त्रधारी दण्ड धारण किए संन्यासी के पैरों में खड़ाऊँ भी नहीं था, नंगे पैर चाल में तीव्रता व वेग, मुख मण्डल भोला-भाला शान्त स्वभाव वाला दूसरों के मन को अपनी ओर आकर्षित करने वाला था। कुछ समय नदी तट पर निवास करने के पश्चात् अन्यत्र स्थान पर देशाटन एवं भ्रमण के लिये चले गए। वर्ष 1976-77 में पुनः रत्नागिरि पर्वत की चोटी के नीचे जंगल में तपस्या करने आए। मेरी वार्ता जंगलिया बाबा से होती रही उनके द्वारा कही सभी बातों को अक्षरसः प्रस्तुत करने का प्रयास किया है जो निम्न है-

स्वामी जी भूमिहार ब्राह्मण कूल में उत्पन्न हुए परिवार संस्कारों से परिपूर्ण था और सम्पन्न था, आप अपने माता-पिता की चौथी संतान थे, बहने थी या नहीं थी इस पर मेरी उनसे कभी-चर्चा नहीं हुई। यह चर्चा थी कि परिवार में लोग ऊँचे पदों पर आसीन रहे। उनसे बड़ा भाई मात्र 15 वर्ष की आयु में शंकर भगवान के मन्दिर में पूजा करते समय समाधिष्ट हो गए। स्वामी जी की उम्र जब 6-7 वर्ष की थी परिवार एवं बिरादरी के लोग गेरूआ वस्त्र एवं धोती पहनाकर आध्यात्मिक खेल खेलते थे 'जय कन्हैया लाल की मदन गोपाल की' का जयकारा लगाते थे अपने घर खिलाते थे और जूठा भोजन जो बचता था उसे प्रसाद मान कर स्वयं खाते थे। बचपन से ही धार्मिक पुस्तक अध्ययन करने धार्मिक खेल खेलने से परिवार के लोग हमेशा ससंकित रहते थे। बड़े भाई की मृत्यु के पश्चात् मेरी जन्म कुण्डली एवं हस्तरेखा ज्योतिषियों को दिखाये ज्योतिष गणना के आधार पर पण्डितों ने बताया था बालक आगे चल कर भगवान का भक्त होगा। हस्तरेखानुसार परिवार से विरक्त रहेगा। इसलिए परिवार वाले मेरी कम उम्र में शादी करने की योजना बना रहे थे। कहीं ये परिवार त्याग न दे इसलिए टोटका स्वरूप मेरे नाक-कान का छेदन भी कराये थे।

विधि के विधान को कोई टाल नहीं पाया। एक दिन 11 वर्ष की छोटी उम्र में घर परिवार त्याग कर चल दिए और गंगा नदी में कूद गए। किसी ने मुझे गंगा से निकाल दिया कुछ दिन वे अपनी देख-रेख में रखे फिर घूमते-फिरते काशी आया और साधु समाज में पहुँच गया। विद्या अध्ययन की अवधि में कठिनाइयों का सामना किया खाने-पीने में भी कष्ट सहे। विद्या अध्ययन के लिए हरिद्वार गये। जहाँ एक मारवाड़ी परिवार की महिला मिली उसके पास एक पुत्र था उसने मुझे अपना दूसरा पुत्र मानकर मेरी शिक्षा कार्य जारी रखी। नदी का

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जल एवं सन्यासी कभी स्थिर नहीं रहता।

हरिद्वार से विचरण-भ्रमण करते पुनः काशी आ गया। यहाँ से अन्य दो संन्यासी साथ में हो गये मार्ग में दण्डी स्वामी श्री सहजानन्द सरस्वती जी के आश्रम विहटा में पहुँचा जो उस समय के योग्य सनातन धर्म को मानने वाले विद्वान सन्यासी थे। उसके बाद घूमते-फिरते राजगृह से 4-5 किलोमीटर दूर रात्रि में लगभग बारह बजे एक कुटिया पर अपने सन्यासी साथियों के साथ विश्राम करने के लिए रूक गया। कुटी में खाने-पीने की व्यवस्था नहीं थी। उसी समय अचानक एक बुढ़ी महिला आई और खीर देकर चली गई। वह महिला कहाँ गई किसी ने नहीं देखा।

दूसरे दिन प्रातः राजगीर में पर्दापण हुआ पर्वत एवं गुफा में घूमते रहे। एक दिन मार्ग भूल जाने पर सभी अलग-अलग दिशा में हो गये। जंगलिया बाबा ऐसे झाड़ी के समीप पहुँच गये। जहाँ जल का झरना बह रहा था। कुछ समय विश्राम करने के बाद स्नान करके भगवान का भोग लगा रहे थे कि एक वृद्ध महात्मा वहाँ पहुँचे उन्हें देखकर बाबा उस वृद्ध महात्मा जी को भोग सामग्री भिक्षा करने हेतु दिए। प्रसाद ग्रहण कर वह दिव्य-मूर्ति महात्मा जी बोले-कल भी प्रसाद देने आना। इस प्रकार यह क्रम सोलह दिन तक चला। नित्य भिक्षाटन के बाद उसी झाड़ी व झरने के पास जाना तथा उस वृद्ध महात्मा जी को प्रसाद भिक्षा रूप में देने का क्रम लगा रहा। सतरहवें दिन वह दिव्य-मूर्ति महात्मा जी आए और बिना कुछ कहे वहाँ से चल दिए। यह देख स्वामी जी उनके पीछे-पीछे हो लिए। सोलह दिन सोलह रात्रि स्वामी जी को भोजन नहीं मिला था, जब महात्मा जी पीछे-मुड़ कर देखे तो बोले तू भी आ रहा हैं लौट जा तब स्वामी जी उनसे बोले-जब तक मेरे शरीर में खून रहेगा, मैं आपके साथ रहूँगा।

अन्ततः वे महात्मा जी स्वामी जी से लौटने का आदेश दिए बोले चार स्थान में से कही जाकर रहो। प्रथम स्थान-नारायणी क्षेत्र द्वितीय स्थान-बड़ावर, तृतीय स्थान- रत्नागिरि पर्वत क्षेत्र चतुर्थ स्थान- भूल गया है याद नहीं। स्वामी जी भारत भूमि पर भ्रमण करते अनेकों स्थान पर गए ये हिमालय पर्वत के उस कुण्ड में भी स्नान किए जिससे स्वामी जी अस्वस्थ्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रहने लगे।

श्री मुन्द्रिका सिंह ग्राम-आँती विजयपुर थाना- नवादा जिला-गया (वर्तमान जिला-नवादा (बिहार) (श्री कृष्ण जन्माष्टमी दिनांक 17.08.1987 ई0)-

मेरी आयु 65 वर्ष की है 35 वर्ष पूर्व मेरे पट्टीदार के लड़के का शादी की बारात गाँव से 5 मिल दूर राज विद्या गाँव गई थी, ज्येष्ठ-बैशाख का महीना था उस बारात में गया शहर की मशहूर नर्तकी जिसका नाम मैना था के नृत्यकला का आनन्द सभी बराती-घराती उठा रहे थे। बारात गाँव के मिडिल स्कूल में रूकी थी। मेरे गाँव के चार-पांच लड़के पास के बागीचे में घूम रहे थे।

उनकी नज़र सौ-डेढ़ सौ गज की दूरी पर स्थित उस आम वृक्ष के नीचे गई जहाँ लगभग 24-25 वर्ष का गेरूआ वस्त्रधारी दण्डी सन्यासी दुबक कर बैठे थे। वे सन्यासी जी का दर्शन की अभिलाषा से उनके निकट गये। ब्रह्म ज्ञानी मूर्ति सन्यासी के चेहरे का आकर्षण से सभी आकर्षित (मोहित) होकर सन्यासी के बस में हो गये। उनसे किसी प्रकार की चर्चा किए बिना कभी उनके आकर्षित करने वाले रूप को देखते थे तो कभी नर्तकी की ओर नृत्यकला को देखते थे। आपस में सभी मंत्रणा किए महात्मा जी यदि मेरे गाँव चलते तो अच्छा होता। गाँव के कैलाश सिंह जो सीधा-साधा व्यक्ति थे उन्हें बाबा को गाँव लाने का भार दिया गया। बारात वापस गाँव आ गई। तीन-चार दिन व्यतीत होने पर श्री कैलाश सिंह पुनः राज विद्या गाँव गये बाबा से प्रार्थना किए प्रार्थना में भक्ति भावना थी।

स्वामी जी कैलाश सिंह के साथ चलने को तैयार हो गये। स्वामी जी कैलाश सिंह के साथ सीधे ककोलक झरने की ओर चल दिए झरना सैकड़ो फीट ऊँची पहाड़ी के नीचे गिरता है जिसका ठंड़ा जल का दृश्य देखने योग्य है। लगभग डेढ़ दिन चलते-चलते स्वामी जी के साथ कैलाश सिंह झरने के पास पहुँच गए। दोनों आदमी आस-पास सो गए। बाबा कैलाश सिंह को सोते छोड़ कर कहीं चले गये थे जब कैलाश सिंह की नीद खुली तो देखे बाबा नहीं है। झरने के नीचे एक भयंकर खूखाँर शेर पानी पी रहा था। पानी-पीने की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ध्वनि सुनाई दी उसे देखते ही श्री कैलाश सिंह जी भयभीत होकर कॉपने लगे, मन ही मन भगवान को याद करने लगे। बाबा जब आए तो कैलाश सिंह दौड़कर उनसे लिपट कर रोने लगे बोले-साधु के फँदे में फँस गया पता नहीं वह शेर मुझे कैसे छोड़ दिया। बाबा हँसते हुए बोले-तुम्हें शेर को सहलाना चाहिए था। यह सुन कैलाश सिंह झुल-झुला कर बोले-हमें घर पहुँचा दे अब हम आपके साथ नहीं आएगे। बाबा कैलाश सिंह के साथ मेरे गाँव आँति आए गाँव के बाहर बागीचे में महीनों रहे गाँव वाले उनका दर्शन किए। उपरोक्त घटना की कहानी स्वयं कैलाश सिंह गाँव वालो से हमेशा कहा करते थे।

बाबा वेद शास्त्रों के विषय में कुर्तक करने वालो से और वेद शास्त्रों पर गलत व्याख्या प्रस्तुत करने वालों के गलत दलील का आधार नहीं मानते थे। एक दिन गाँव के शिक्षित व्यक्ति मिलकर बाबा से निवेदन किए कि आपके साथ ककोलक झरना पर चल कर पिकनिक मनाएँगे बाबा की अनुमति मिली खाने-पीने की सामग्री साथ में लेकर आठ-दस लोग बाबा के साथ चल दिए। स्वामी जी आगे-आगे चल रहे थे हम सभी उनके पीछे-पीछे चल रहे थे बाबा पहाड़ी के रास्ते हो गए यह आभास हुआ हम सभी झरने की उल्टी दिशा में चल रहें है। किसी ने विरोध नहीं की। सभी को भूख सता रही थी कई लोग बाबा से बोले-अब चला नहीं जाता, भूख लगी है। स्वामी जी बोले-आगे अंगूर के आठ प्रकार के पौधे हैं उसे खाना जंगल में और अनेकों फल हैं। स्वामी जी मार्ग में सैकड़ों जड़ी-बूटियों का परिचय कराते चलते रहे। कभी-कभी किसी पौधे की पत्तियाँ टहनियों को तोड़ कर स्वामी जी हम लोगों को खाने और उसका स्वाद चखने के लिए देते थे। कुछ दूर चल कर बाबा रूक गए सामने जामुन का पेड़ पक्के फलों से लदा दिखाई दिया। ऐसा प्रतीत हुआ कि कल्पवृक्ष सामने खड़ा है। बाबा का आदेश पाकर हम सभी जामुन का फल खाए और वापस झरने पर लौट गए, वहाँ रात्रि विश्राम किये।

सुबह सभी गाँव वापस आए। उसी समय से बाबा के प्रति मेरा मन हो गया और मैं बराबर उनके दर्शन करने के लिए श्री गोपालधाम में आता रहा। आज से बीस वर्ष पूर्व जंगलिया बाबा पूजा पद्यति से दूर थे मात्र सन्यासी रूप में विचरण किया करते थे। कटौना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गाँव के बाबू फौदी सिंह उर्फ (राम सेवक दास) संत समाज में व्यास जी के नाम से प्रसिद्ध थे वहीं बाबा को पूजा पद्यति सिखाएँ स्वामी जी उन्हें पूजा गुरू मानते थे। इस बात की चर्चा बाबा मुझसे स्वयं किए थे। एक दिन श्री गोपालधाम में बाबा के पास मैं अकेला बैठा था। झोपड़ी में कोई अन्य नहीं था अचानक जंगलिया बाबा चर्चा किए बोले-व्यास जी पूजा पद्यति के साथ मुझे बताएं हैं मन्दिर पर भगवान का कीर्तन होना चाहिए। इसलिए यहाँ कीर्तन के साथ-साथ गाने-बजाने वाला चाहिए। बाबा कीर्तन करने वालों की खोज कर रहे थे। उसी समय मेरे मुख से निकला श्री रघुनन्दन शर्मा वैद्य जी अच्छे गायक और तबला वादक हैं उन्हें मैं सुबह लाने का वादा किया बाबा कि कृपा हुई श्री रघुनन्दन शर्मा वैद्य उर्फ (झपसू जी) श्री गोपालधाम आए और कीर्तन कार्यक्रम आरम्भ हो गया।

श्री रामेश्वर सिंह ग्राम व पोस्ट- घोसरावाँ जिला-नालन्दा (बिहार) श्री कृष्ण जन्माष्टमी दिनांक 17.08.1987 ई0)-

जंगलिया बाबा से सम्पर्क होने का श्रेय मेरे पुत्र श्री जनार्दन सिंह का है वह घर में श्री गोपालधाम के साधु स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) के विषय में सदैव चर्चा किया करते थे, उनके कथनानुसार स्वामी जी विद्वान संतो के गुणों से भरे हुए हैं लड़के की बात सुन कर मेरे हृदय में भाव उत्पन्न हुआ मैं भी बाबा का दर्शन करूँगा। मुझे याद है शिवरात्रि के सुबह स्नान ध्यान कर श्री गोपालधाम पहुँचा बाबा का चरण स्पर्श किया। स्वामी जी मेरा परिचय पूछे मैं अपना परिचय दिया बाबा का दिव्य स्वरूप देख कर मेरे मन में श्रद्धा भाव जागृत हुआ कितना सुन्दर होता बाबा से मैं (गुरु मंत्र) दीक्षा लेता। उस समय मैं अपने को रोक नहीं सका, बाबा के सामने अपने हृदय की अभिलाषा को कह सुनाया। जंगलिया बाबा ने अपने कूल गुरु से दीक्षा लेने की बात कही, मैं संत की बात का उत्तर नहीं दिया और चूप हो गया। पुनः एक वर्ष बाद दूसरी बार जब श्री गोपालधाम आया तो बाबा से वहीं पुरानी बात दुहराई उस समय बाबा का आदेश हुआ मानसिक गुरू बना लो, किन्तु मेरे हृदय में जंगलिया बाबा से दीक्षा लेने की ठन चुकी थी। तीसरी बार श्री गोपालधाम आने पर वही पुरानी बात बाबा के सम्मुख रखा इस बार बाबा बोले-सूर्य को उत्तरायन होने पर दीक्षा दे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूँगा। उसके बाद बाबा मुझे दीक्षा (गुरू मंत्र) दिए।

मुझे एक घटना याद है- जंगलिया बाबा श्री गोपालधाम से बिन्दीडीह गाँव को गए थे गाँव के बाहर एक आम के वृक्ष की छाया में बैठे हुए थे, गाँव के किसान, बच्चे बाबा के संस्कार को देख कर आकर्षित हुए और बाबा के निकट आकर उनका चरण स्पर्श किए, बाबा स्नेह से सबको चूमे और पीठ पर मुक्का मारते हुए अपने स्वभाव के अनुरूप आशीर्वाद दिए। बाबा को भूख लगी थी वे सत्तू खाने की इच्छा व्यक्त किए, किसान घर से सत्तू लाया बाबा का ध्यान आम के पेड़ पर गया, पेड़ पर कच्चे आम दिखे, आम की चटनी खाने की इच्छा व्यक्त किए। वहाँ उपस्थित किसान व बच्चे बताए इस आम के फल में कच्चा-पक्का दोनों अवस्था में कीड़े हो जाते हैं हर दशा में कीड़ों का प्रकोप रहता है इस आम के पेड़ का फल कोई नहीं खाता है। यह आम चटनी योग्य नहीं है। आपको चटनी खाने का मन है तो कहिए हम किसी दूसरे आम के पेड़ से कच्चा आम तोड़ कर लाए।

इस पर स्वामी जी का आदेश हुआ नहीं इसी वृक्ष से कच्चा आम तोड़ कर चटनी तैयार करो। उसी आम के पेड़ से कच्चा आम तोड़ा गया उसे स्वामी जी के सामने छिलकर फोड़ा गया तो आम के फल में कीड़े नहीं थे। सभी आश्चर्य चकित हो गये। बाबा बोले-इस पेड़ का आम गिरता है तो किसी व्यक्ति को उसे लेने और खाने से मत रोको। उसी दिन से उस आम वृक्ष का कच्चा-पक्का दोनों अवस्था में आम के अन्दर कीड़े नहीं पड़ते। आज भी लोग उस पेड़ का आम प्रेम से खाते है यह बाबा की महिमा का चमत्कार है।

श्री सीता राम दुबे ग्राम व पोस्ट- कटौना जिला-नालन्दा बिहार (श्री कृष्ण जन्माष्टमी दिनांक 17.08.1987 ई0)-

मै अति गरीब और निर्धन ब्राह्मण परिवार का हूँ पिता जी बड़े कष्ट में पालन-पोषण किये, पिता जी सिंथौरा के जंगल में जंगलिया बाबा के यहाँ दर्शन के लिए जाते-आते थे इसी कारण मैं भी बाबा का दर्शन के लिए आता था। कटौना गाँव के श्रीकृष्ण सिंह व उनके भाई श्रीबाबू जमीदार परिवार के है बाबा उनके दरवाजे पर लगातार ढ़ाई-तीन

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वर्ष रहें। उस अवधि में स्वामी जी अन्न ग्रहण नहीं करते थे मात्र फल-फूल दूध पर रहते थे। श्रीबाबू के यहाँ बाबा भौतिक सुख सुविधा में राज ऋषि की तरह रहा करते थे। बाबा को लोग दण्डी स्वामी कह कर पुकारते थे। श्री बाबू के यहाँ बाबा द्वारा संस्थापित श्री राधा-श्री कृष्ण की मूर्ति है जिसकी पूजा उनके परिवार में होती है। श्रीबाबू के यहाँ से दण्डी स्वामी जी (जंगलिया बाबा) माँ विन्ध्यवासिनी देवी के दर्शन के उद्देश्य से विन्ध्याचल की यात्रा किए अन्य लोगों के साथ मैं भी वारसलीगंज रेलवे स्टेशन पर बाबा के पीछे-पीछे गया स्वामी जी मुझे अपने साथ लेकर विन्ध्याचल गये। 21 दिन प्रवास के बाद वहाँ से सीधे श्री गोपालधाम को आए।

मेरा श्री गोपालधाम में आने-जाने की क्रम प्रारम्भ हो गया। मुझे याद है उस समय किसी भी भक्त को रात्रि के समय श्री गोपालधाम में रहने की अनुमति नहीं थी बाबा अकेले रहा करते थे। किन्तु कभी-कभी मैं वहाँ जाता तो मुझे रात्रि में रूकने की अनुमति बाबा की ओर से हो गई थी। कभी भी मुझे जंगल छोड़कर गाँव जाने का आदेश नहीं दिए मुझे बाबा के लिए खिचड़ी और लिट्टी तैयार करके भगवान को भोग लगा कर खिलाने का सौभाग्य मिला है। बाबा को खिचड़ी खाने का हमेशा मन करता रहता था इसके पीछे क्या कारण है मैं नहीं जानता मैं बाबा से चरण सेवा का मौका देने की बात हमेशा कहा करता था और उनके आदेश से चरण सेवा कार्य का मौका मिला भी, उनकी याद हमेशा आती है।

श्री राम बालक राम ग्राम-पचड़ा पोस्ट-असाढ़ी जिला-नवादा (बिहार) (श्रीकृष्ण जन्माष्टमी दिनांक 17.08.1987 ई0)

मैं गाने-बजाने का कला जानता हूँ मुझे तबला हारमोनियम बजाना एवं गाना आता है मैं संगीत से बी0ए0 उत्तीर्ण इलाहाबाद (उ0प्र0) से किया है। मेरे संगीत गुरूदेव श्री रघुनन्दन शर्मा वैद्य उर्फ (झपसू जी) श्री पताल पुरी वृन्दा संगीत महाविद्यालय निवरिया नवादा थे वे ही मुझे जंगलिया बाबा के पास लाए थे। सर्वप्रथम मैं श्री गोपालधाम में श्रावण मास के झूँला उत्सव पर आया। बाबा श्री राधा-रमन कुंञ्ज में निवास एवं अराधना करते थे,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जब आया था उस समय यहाँ कोई अन्य निर्माण नहीं हुआ था मेरे साथ मेरा छोटा-भाई श्री प्रसाद और मेरा लड़का राम सकल आए थे। मेरा भाई श्री प्रसाद हारमोनियम बजाता था तथा मेरा लड़का नृत्य कला जानता था। मेरे घर नृत्य मण्डली थी ये दोनों उसी नृत्य मण्डली में रहते थे। मेरे आने से पूर्व श्री गोपालधाम में संगीत, शास्त्रीय संगीत और कीर्तन ही हुआ करता था।

हम अनुसूचित (चमार) जाति के हैं इसलिए भयभीत रहते थे बाबा का स्नेह और प्यार मिला, बाबा के आदेश होने पर श्री गोपालधाम में नृत्य का कार्यक्रम होने लगा। श्री राम नरेश सिंह पुत्र स्व0 कृष्णदेव सिंह ग्राम-पचड़ा नृत्य पार्टी में विशेष पात्र रहे, वे नृत्य मण्डली में हारमोनियम बजाते थे और जोकर बनकर लोगों का मनोरंजन व हँसाने का कार्य करते थे। जंगलिया बाबा मेरे घर दो बार गये उनमें ऊँच-नीच, जाति-पात का भेद-भाव नहीं था। मैं अपने घर राधा-कृष्ण की मूर्ति की स्थापना किया हूँ, जहाँ प्रत्येक मंगलवार को कीर्तन-भजन होता है। जंगलिया बाबा की कृपा है।

श्रीमती पच्चा देवी पत्नी-श्री रामअशीष सिंह गाँव-पावा पोस्ट- पावापुरी जिला-नालन्दा (श्री कृष्णजन्माष्टमी दिनांक 17.08.1987 ई0)-

जंगलिया बाबा पावापुरी गाँव के एक बागीचे में पेड़ के नीचे निवास करते थे, जहाँ तक मेरी जानकारी है उस समय स्वामी जी के शरीर पर एक लँगोटी एक अँचला, हाथ में दण्ड और पैरों में खड़ाऊँ के अतिरिक्त उनके पास एक छोटी पुस्तक रही। गाँव में भिक्षा अपनी हाथ की अंजुली बनाकर लिया करते थे। कुछ दिन पावापुरी गाँव के बागीचे में निवास करने के बाद बाबा सिंथौरा जंगल में चले आए। मैं गरीब परिवार की हूँ घर में पैसा-रूपया का अभाव रहता था। मेरे छोटे-छोटे बच्चे थे उनकी तबीयत खराब थी पैसे के अभाव में डाक्टरों से इलाज ही नहीं करा पाई। आस-पास के लोग मुझे बोले-बाबा की कृपा से सब ठीक हो जाएंगा, तुम बच्चों को साथ लेकर बाबा के यहाँ जाओं। मैं बच्चों को लेकर श्री गोपालधाम बाबा के निकट आई और बाबा से बच्चे की तबीयत खराब होने की बात

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कही-कुछ देर बाद स्वामी जी बोले- तुम्हें पाँच मंगलवार को आना है बाबा भगवान का चरणामृत बच्चें को पिला दिए मैं वापस घर आ गई।

तीन मंगलवार गई बच्चा की बीमारी दूर होने लगी। चौथा मंगलवार को बाबा बोले-बेटी यहाँ रूक कर भगवान की सेवा करो मेरा बेटा पूर्ण स्वस्थ्य हो गया। उस समय श्री गोपालधाम में रात्रि के समय दो-चार भक्त बाबा की सेवा में रूक जाते थे, बाबा का आदेश पालन की तीन-चार दिन भगवान की सेवा के पश्चात् गाँव वापस आई। उसके बाद से ही श्री गोपालधाम में मैं आने-जाने लगी। श्री गोपालधाम से घर जाने की इच्छा नहीं होती, भगवान की सेवा में आनन्द मिलता है। जब हम अपने पति एवं बच्चों को लेकर आई थी उस समय यहाँ का पूरा क्षेत्र जंगल था, वर्षों बाद जंगल खेत का रूप धारण किया। बाबा की मधुर वाणी व प्यार नहीं भूलती।

श्रीमती लीलावती देवी पत्नी श्री सीता राम दुबे ग्राम व पोस्ट- कटौना जिला-नालन्दा (बिहार) (श्री कृष्ण जन्माष्टमी दिनांक 17.08.1987ई0)-

मेरे पति श्री सीता राम दुबे जी की तबीयत अचानक खराब हो गयी, गरीबी के कारण इनके इलाज अन्यत्र चिकित्सकों से कराने में सक्षम नहीं थी मेरे छोटे-छोटे बच्चे थे आय का कोई श्रोत नहीं था घर गृहस्थी चलाना कठिन था। मुझे गाँव के लोग सलाह दिए सिंथौरा के जंगल में जो सन्यासी रहते है उन्हीं के पास जाकर दया की भीख माँगो वे पहुँचे संत है तुम्हारे पति को मृत्यु होने से बचा लेंगे। मैं अपने पति को लेकर सिंथौरा के जंगल में जंगलिया बाबा के पास आयी बाबा से हाथ जोड़ कर निवेदन किया, बाबा बोले- दस दिन यहाँ रूको ठीक हो जाएंगा। पति को लेकर घर गई और दस दिन व्यतीत होने पर पुनः जंगल बाबा के यहाँ आई। पण्डित जी को आराम था। मेरा श्री गोपालधाम में आने का क्रम लग गया। जंगलिया बाबा की तबीयत खराब होने की सूचना मुझे मिली तो हम अपने पति और बच्चों को लेकर श्री गोपालधाम आ गई। बाबा बोले-मुझे अच्छा होने तक तुम लोग यहाँ रहो। लगातार चार माह तक बाबा बीमार रहे हम दोनों उनकी सेवा करते रहे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उसी समय एक दिन मंदिर से चोरों ने भगवान की मूर्ति के साथ मन्दिर के सामान चुरा लिए। अस्वस्थता की अवस्था में ही जंगलिया बाबा मूर्ति लाने के लिए वृन्दावन की यात्रा किए, वैशाख का महीना था, भगवान श्री कृष्ण एवं श्री राधा जी की मूर्ति को वृन्दावन से लाकर श्री गोपालधाम के मन्दिर में मूर्ति स्थापना किए। यज्ञ कराए आषाढ़ माह के ज्येष्ठ तीज को बाबा यह कह कर अँजोरपुर गाँव गये कि झूँला में वापस आऊँगा, हम लोग को क्या मालूम की जंगलिया बाबा अपना पार्थिव शरीर त्यागने गए है। मुझे वह दिन याद आता है बाबा जब कभी लघु शंका या दीर्घ शंका की इच्छा व्यक्त करते थे हम दोनों पति-पत्नी उन्हें सहारा देते हुए बाहर ले जाते थे पर जब कभी दोनों थकान से नीद आने पर सोये रहते थे तो उस समय हम दोनों को नहीं जगाते थे स्वयं उठ कर लघु शंका अथवा दीर्घ शंका कर घूम-फिर कर अपने आसन पर आ कर सो जाते थे ऐसा देख कर हम दोनों को आश्चर्य होता था। उस समय उनके शरीर में वह कौन सी शक्ति कहाँ से आ जाती थी। बाबा को अपने खाने-पीने में कोई परहेज नहीं था। जब से बाबा अपना शरीर त्याग किए मेरा मन उदास रहता हैं। श्रीमती लीलावती देवी श्री गोपालधाम में सेवा करती रही एक दिन भगवान की आरती पूजा के समय अपना शरीर को त्याग कर देव लोक को चली गई।

श्री कपिल देव सिंह उर्फ (कपिल जी) ग्राम-छत्तिहर पोस्ट-सिसमा जिला-नवादा (बिहार) (श्री कृष्ण जन्माष्टमी दिनांक 17.08.1987ई0)-

श्री लखन जी तबला वादक व पण्डित श्री रघुनन्दन शर्मा वैद्य उर्फ (झपसू जी), जिला-नवादा (बिहार) से संगीत कार्यक्रमों में भाग लेने पर मेरी जान-पहचान हो गई थी। तबीयत खराब होने पर इलाज के लिए नवादा और पटना के अच्छे-अच्छे डाक्टरों को दिखाया। जाँच के बाद डाक्टर टी0बी0 रोग का इलाज करने लगे। टी0बी0 रोग होने पर डाक्टर मुझे गाने बजाने से मना कर दिए। मैं अपने जीवन से निराश हो गया। एक दिन पं0 श्री रघुनन्दन शर्मा वैद्य उर्फ (झपसू जी) से मुलाकात हुई मैं उनसे अपनी व्यथा सुनाई। उसी समय (झपसू जी) बोले-आप निराश मत होइए, मंगलवार को मेरे साथ सिंथौरा जंगल में जंगलिया बाबा के यहाँ चलिए बाबा का आर्शीवाद होने पर आप रोग मुक्त हो जाएंगे। अगले

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मंगलवार के दिन (झपसू जी) के साथ मैं श्री गोपालधाम गया स्वामी जी को प्रणाम किया और शान्त मुद्रा में बैठ गया। जंगलिया बाबा मेरे विषय में पं0 श्री रघुनन्दन शर्मा वैद्य उर्फ (झपसू जी) से पूछे-तो झपसू जी ने बताया बाबा इनका नाम श्री कपिल देव सिंह है ये ग्राम-छत्तिहर, पोस्ट-सिसमा, जिला-नवादा के निवासी है संगीत प्रेमी के साथ-साथ तबला वादक भी है। डाक्टरों ने इन्हें टी0बी0 रोग होने पर गाने-बजाने से मना कर दिया है ये निराश हो गए है।

यह सुन कर स्वामी जी कहने लगे एक बार मैं विश्व चैम्पियन डाक्टर के घर गया, उस डाक्टर के चार-पाँच छोटे-छोटे बच्चे थे, डाक्टर उन बच्चों को मेरे सामने एक-एक का परिचय कराते हुए कहने लगा मेरे बच्चे किसी न किसी रोग से ग्रसित है, बाबा इन्हें आशीर्वाद दे। जब डाक्टर अपने बच्चों की बीमारी ठीक नहीं कर पा रहा है तो दूसरों पर क्या प्रतिबन्ध लगाऐगा। आप भगवान के आगे गाइए-बजाइए। बाबा का आदेश होते ही हम उसी दिन से श्री गोपालधाम में गायन एवं वादन प्रारम्भ कर दिए। उसी समय से मेरी बीमारी मुझे छोड़कर भागने लगी। अब मैं पूर्ण रूपेण स्वस्थ हूँ बाबा के नियमानुसार प्रत्येक मंगलवार को श्री गोपालधाम में गाने-बजाने मैं आता हूँ। मेरे यहाँ आने से पूर्व पचड़ा व नवादा से गायक मंगलवार को श्री गोपालधाम आते थे। श्री गोपालधाम में मेरे और झपसू जी के कन्धों पर जंगलिया बाबा मंगलवार का भार सौंप दिए जिसका निर्वाह हम दोनों कर रहें है। जंगलिया बाबा के साथ मैं भी अमर कटंक से भगवान श्री नर्मदाधीश गोपालेश्वर महादेव को लाने गया था। वापस आते समय इलाहाबाद प्रयाग में श्री प्रभुदत्त ब्रह्मचारी जी के आश्रम पर स्वामी जी गए वहीं सभी लोग प्रसाद ग्रहण किए और वहाँ से श्री गोपालधाम के लिए प्रस्थान किए। मुझे स्वामी जी बहुत स्नेह व प्यार देते थे मुझे दो घटना का स्मरण आता है, जिसका का वर्णन करता हूँ।

प्रथम घटना-

श्री गोपालधाम स्थित राधा-रमन कुञ्ज में बाबा के पास कई भक्त भगवत चर्चा के लिए बैठे थे अचानक बाबा के मुख से ध्वनि हुई मुझे भूख लगी है इच्छा है मालपुआ खाने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

की, किन्तु श्री गोपालधाम में उस समय खाना बनाने की व्यवस्था नहीं रही, सभी भक्त सोच व चिन्ता में पड़ गये बाबा को मालपुआ कहाँ से दिया जाए सभी मौन बैठे थे। स्वयं जंगलिया बाबा टेर करते हुए बोले-कपिल जी भगवान का कीर्तन करो भगवान ने मालपुआ भेजा देखा गया। एक भक्त मालपुआ का परात लिए राधा-रमन कुंञ्ज में बाबा के पास आया और हम सभी मालपुआ का प्रसाद प्राप्त किए। सभी भक्त आनन्दित हुए।

दूसरी घटना-

एक दिन जंगलिया बाबा सभी भक्तों से भगवत चर्चा कर रहे थे, चर्चा समाप्त होने पर बोले-(कपिल जी) आज मेरी इच्छा रसगुल्ला खाने की है, इस निर्जन जंगल में रसगुल्ला कहाँ से मिले सभी भक्त सोचने को बाध्य हो गए। कुछ समय व्यतीत होने पर एक भक्त डिब्बे में भर कर रसगुल्ला श्री गोपालधाम बाबा के लिए लेकर आया। स्वामी जी उस डिब्बे से एक रसगुल्ला लिए शेष भक्तों को बाँटने का आदेश दिए। वहाँ उपस्थित सभी भक्त रसगुल्ला का प्रसाद पाकर अत्यन्त आंनन्दित हुए। यह कितना आश्चर्य और विस्मय का विषय है बाबा के इच्छा मात्र से भगवान स्वयं कल्पवृक्ष की तरह उनकी इच्छा की पूर्ति किए।

जंगलिया बाबा को वादन का शौक़ था वे श्री गोपालधाम में तबला वादक के समग्र एक ताल, तीन ताल, चार ताल के साथ-साथ धमार झपताल, दादरा, कहरवाँ, तेवरा, दीप चन्दी ताल, झूमरा आदि तालों का अच्छा अध्ययन किए थे। स्वामी जी को शास्त्रीय नृत्य करने की लगन थी। कमर में रेशमी धोती एवं पैरों में घूंघरू पहनकर जब भगवान के सम्मुख नृत्य किया करते थे तब उस उमय ऐसा प्रतीत होता था स्वयं भगवान श्रीकृष्ण के सामने भगवान ही नृत्य कर रहे हैं। नृत्य का वह दृश्य अत्यन्त मनमोहक होता था। मेरा स्वामी जी से अटूट प्रेम व श्रद्धा है वैसा संत का दर्शन मेरा सौभाग्य ही है। वे सबके प्रिय थे तथा उन्हें सभी प्रिय लगते।

श्री अर्जुन सिंह ग्राम व पोस्ट-सिंथौरा जिला-नालन्दा (बिहार) (वर्ष 2014 ई0 श्रावण मास पूर्णिमा झूँला उत्सव)-

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जंगलिया बाबा जंगल में प्रवास के पूर्व सर्व प्रथम सिंथौरा गाँव के पास कच्ची सड़क के उत्तर दिशा में स्थित बरगद पेड़ के नीचे बैठे दिखाई दिए, गाँव के अन्य लोगों के साथ मैं भी उनको प्रणाम करने गया था। उस समय बाबा की आयु लगभग तेइस–चौबीस वर्ष की थी। वे अपना पैर किसी को छूने नहीं दिये आशीर्वाद के रूप में 'नारायण' शब्द का उच्चारण किए। बाबा के शरीर पर गेरूआ रंग का अँचला, कमर में लंगोटी और पैरों में खड़ाऊँ दिखाई दिया जिसे पहने और ओढ़े थे। एक हाथ में दण्ड और दूसरे हाथ में नारियल का कमण्डल के अतिरिक्त एक लंगोटी एक अँचला तथा एक पुस्तक उनके पास रही। गाँव वालों की विनती पर बाबा उस समय एक कमण्डल जल की इच्छा व्यक्त किए मेरा चचेरा भाई सकल देव सिंह जिनका शरीर का रंग अति काला था देखने में शुद्र लगते थे बाबा के कमण्डल से जल लाना चाहें तो बाबा उन्हें जल लाने से मना कर दिए। उन्हें शुद्र समझ गये थे, लोग कहने लगे बाबा ये शुद्र नहीं है, भूमिहार ब्राह्मण हैं उनका यज्ञो पवित देख कर जल लाने की अनुमति दिए। भोजन में गुड़ का शर्बत लिए। कुछ समय सिंथौरा के जंगल में रहने के बाद यहाँ से 8 किमी0 दूर कटौना गाँव में श्रीबाबू के दरवाजे पर रहने लगे। मुझे स्मरण है मेरे गाँव में कलरा रोग दैवी महामारी का प्रकोप हुआ गाँव के कई बच्चे, पुरूष और महिलाएँ कलरा रोग से मृत्यु प्राप्त किये। लोग जंगलिया बाबा के पास जाकर प्रार्थना किए। उस समय मैं गाँव के लोगों के साथ–साथ कटौना गाँव मैं भी गया था।

सिंथौरा गाँव के लोगों की दशा को देख कर स्वामी जी बोले–क्या है लोग गाँव में/फैला कलरा रोग दैवी प्रकोप व महामारी की सूचना से बाबा को अवगत कराएं। बाबा लोगों से अन्य समाचार पूछे बिना सिंथौरा गाँव के लिए चल दिए। हम सभी उनके पीछे–पीछे चलने लगे। मार्ग में एक जड़ी का छोटा पौधा (घास) को उपारने का आदेश बाबा दिए। गाँव के सभी लोग जहाँ भी वह घास दिखाई देती थी उसे उपार कर उनके पीछे–पीछे दौड़ते चल रहे थे। गाँव पहुँचते ही जंगलिया बाबा गाँव की गलियों में घूमें जिनके घर रोगी थे जाकर उस जड़ी (घास) को देकर बोले–इसे सील पर पीस कर रोगी को पीला दो। जड़ी (घास) के पीने के साथ ही रोगी रोग मुक्त हो गये, बाबा कुछ दिन सिंथौरा जंगल में रहकर पुनः कटौना गाँव चले गए।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी जी एकाएक कटौना गाँव छोड़कर बाबा अन्यत्र चले गए। चौदह वर्ष बाद राजगीर के स्वर्ण भण्डार पर सिंथौरा गाँव के बुदी साव को दिखाई दिए। रामस्वरूप सिंह उन्हें सिंथौरा के जंगल में ले आए। जंगल में बाबा के निकट मैं आने-जाने लगा। मेरे परिवार के लोग मुझसे रूठने लगे एक दिन मेरे बड़े भाई श्री बच्चू सिंह नराज़ होकर मेरे मझले लड़के को जिसकी उम्र लगभग 4-5 वर्ष की थी वह बुखार से पीड़ित था जंगल में उसे लेकर बाबा के पास बैठाकर बिना कुछ कहे गाँव वापस चले गए, लड़का बुखार से परेशान था इसी कारण वे बाबा के यहाँ छोड़ गए। जंगलिया बाबा उसे अपनी गोद में लिए और प्यार करने लगे। भगवान के आसन पर रखा तुलसीदल का पत्ता लेकर बच्चे को खिलाते हुए, बोले-आज रात का खाना न मांगना कल से जो इच्छा हो खाना। दूसरे दिन सुबह लड़का पूर्ण स्वस्थ हो गया। उसके बाद मेरा श्री गोपालधाम में दिन-रात आने-जाने का क्रम जारी हो गया। बाबा स्वयं भगवान का रूप थे यहाँ के लोग ज्ञानाभाव में उन्हें पहचान नहीं पाए वे लीला करते-करते चले गए।

श्री राम लखन सिंह ग्राम-बलौर पोस्ट-चण्डी मौं जिला-नालन्दा (बिहार) - (वर्ष 2014 श्रावण मास पूर्णिमा झूँला उत्सव)-

मेरा परिवार खेती करता है आज मेरी आयु लगभग 95-96 वर्ष की है अब चलना-फिरना कठिन है, मेरी अपनी कोई सन्तान नहीं है, आग्रह करने पर मेरे भाई के बेटा मोटर गाड़ी से श्री गोपालधाम लाया हैं। मैं पढ़ा-लिखा नहीं हूँ मात्र अपना हस्ताक्षर करना जानता हूँ। बचपन से जंगल में गाय चराने का कार्य किया। बाबा जंगलिया जब उनकी छोटी उम्र थी इधर आए थे, उस समय उनका दुबला-पतला शरीर था लोग बाबा की उम्र के विषय में पूछे तो उनका उत्तर था मेरी उम्र 17-18 वर्ष की है। गेरूआ वस्त्रधारी दण्डधारण किए थे उन दिनों ब्रह्मचारी जीवन व्यतीत कर रहे थे, तेल, घी से बनी वस्तुओं को ग्रहण नहीं करते थे यहाँ तक की दूध-दही का भी सेवन नहीं करते, अन्न ग्रहण करते थे किन्तु अन्न में भी मोटे अन्न का प्रयोग करते थे खाने में मडुआ की रोटी, गुड़ देकर हलवा, भुना हुआ [redacted] महुआ पतला मट्ठा (छांछ) उन्हें अधिक पसन्द था। पहले यह क्षेत्र घनघोर जंगल था यहाँ से थोड़ी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दूर पर स्थित नीम के पेड़ की छाया में रहते थे। जंगल में जल नहीं था कुछ दूरी पर एक छोटा गड्ढा था जिसमें वर्षा का जल इकठ्ठा रहता था उसे बाबा "पुष्कर्णी" के नाम से सम्बोधित करते थे।

एक घटना याद आती है बाबा जंगल में प्रवास कर रहे थे वर्षा न होने से अकाल की स्थिति उत्पन्न हो गई थी किसान कृषि कार्य से वंचित थे, पशुओं को चारा नहीं मिलता, किसान भी अन्नाभाव से पेरशान थे। ऐसी परिस्थिति उत्पन्न होने पर लोग बाबा के पास आकर विनती करने लगे बाबा समस्या का समाधान के लिए उन किसान भक्तों को आदेश दिये "पुष्कर्णी" का जल उबिछ कर उसे सुखा दो बाबा का आदेश होते ही किसान और गाय के चरवाहे पानी उबिछने लगे "पुष्कर्णी" सुख गई। थोड़ी देर बाद भगवान इन्द्र वर्षा करने लगे, किसान खुश होकर कृषि कार्य में लग गए, अन्न-जल का भण्डार से इलाके के किसान संतुष्ट हो गये।

यहाँ के लोगों पर विशेष प्राकृतिक संकट दैवी आपदा आने के समय नीम के पेड़ की छाया में बनी झोपड़ी में कीर्तन करने पर किसान संकट मुक्त हो जाते थे उस उसम निम्न कीर्तन किया जाता था-

श्रीमन् नारायण नारायण नारायण

एवं

हरिओम नारायण नारायण नारायण

जब से जंगलिया बाबा से परिचय हुआ मेरा मन उन्हीं में लीन हो गया। इनके अलावा मुझे कोई अन्य संत-साधु फ़कीर मेरे विचार में नहीं आता। जंगलिया बाबा से ही मेरा अटूट प्रेम रहा। श्रीराम लखन सिंह मुझसे मिलते ही भावुक हो गए उनकी आँखों में जल भर गया वे रो-रो कर कहने लगे कमलाकर जी मुझमें चलने का सामर्थ नहीं है बहुत कहने पर घर वाले मोटर साईकिल से लेकर आए हैं, श्री गोपालधाम में मेरा यह अन्तिम मिलन है, आपको देखने और दर्शन करने की इच्छा थी जो पूर्ण हुई। कुछ समय श्री गोपालधाम रहे और श्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE Grant-2

गोपालधाम से प्रसाद लेकर घर वापस चले गये।

भैया श्री हरदेव सिंह ग्राम-उदयपुरा पोस्ट- सवरूबाँध थाना-दुबहड़, जिला-बलिया (उ0प्र0)-

भैया हरदेव सिंह हरिहो वंशीय क्षत्रिय राजपूत परिवार के सम्पन्न एवं सम्मानित व्यक्ति है, आप साधु-संतों की सेवा में अग्रणी रहते हैं। भैया जी को भारत वर्ष के अन्तराष्ट्रीय स्तर के संतो से सम्पर्क में रहने का सौभाग्य मिला है। स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी के विषय में वे अपना अनुभव के आधार पर बताएं कि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी जैसा- प्रखर एवं यशस्वी महात्मा का गुण मुझें अन्य संतो में नहीं मिला स्वामी जी उनके यहाँ बलिया शहर स्थित उदयपुरा, कोठी में प्रायः आते रहे उनकी खडांऊँ भैया हरदेव सिंह के घर में है। उनके परिवार में स्वामी जी की खड़ाऊ की पूजा होती है। स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी के हृदय में कभी लालच अथवा अभिमान नहीं देखा गया भोजन में भी किसी वस्तु की इच्छा नहीं किए। उनके रहन-सहन में सादगी रहती थी, हमेशा ईश्वर में लवलीन रहते थे। मधुर भाषी के साथ-साथ वेदों के ज्ञाता थे। वैसा संत युगों में जन्म लेते है उनके जाने से मुझे अपार कष्ट हुआ जिसको वाणी से व्यक्त नहीं किया जा सकता।

श्री शम्भू नाथ पाण्डेय पुत्र स्व0 बनवारी पाण्डेय ग्राम-मीनापुर पोस्ट-गंगापुर जिला-बलिया (उ0प्र0)-

श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) के सम्पर्क में आने के पश्चात् श्री शम्भू नाथ पाण्डेय जी अपने स्वयं का अनुभव के आधार पर स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी के जीवन चरित्र पर निम्न। प्रकार से विचार को साझा किए।

आज दिनांक 21.04.2015 ई0 अक्षय तृतीया तिथि है। यद्यपि शरीर और मन की स्थिति में लिखने की प्रवृत्ति नही है तथापि प्रियवर कमलाकर जी के आग्रह को मूर्त रूप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देने का गुरु कृपा से प्रयास करता हूँ। यह अद्भूत संयोग ही है जो विगत 17 वर्षों के उपरान्त कुछ लेखन की प्रक्रिया आरम्भ हो रही है। लगभग 58 वर्ष पूर्व 9वीं कक्षा में पठन-पाठन का काल था। नित्य गंगा स्नान करना, संध्या वादन, योगाभ्यास तथा गीता उपनिषद् एवं सद्ग्रन्थों का स्वअध्ययन चल रहा था। मुझे सच्चे संत व सद्गुरु की खोज थी। ग्राम-हरिहरपुर निवासी श्रीनिवास दूबे (योगी फुफा जी) योग साधना के अच्छे ज्ञाता थे वे ही योग साधना की शिक्षा देते थे।

सन् 1962ई0 में स्नातक की शिक्षा ग्रहण करने के लिए मैं बलिया शहर में रहकर विद्या अध्ययन करता था। आषाढ़ मास में एक दिन योगी फुफाजी (श्री निवास दूबे) को ट्रेन में चढ़ाने के लिए बलिया स्टेशन पर गया। ट्रेन खुली उसी समय उनसे निवेदन किया फुफा जी आपने अभी तक मुझकों किसी संत का नाम परिचय नहीं बताया जो गुरु बनाने के योग्य हो। मेरी बात सुनते ही मन्द गति से चलती हुई ट्रेन में बैठते हुए बोले अँजोरपुर गाँव में मुक्कवा मारने वाले स्वामी जी रहते हैं तुम उन्हीं के पास चले जाना। फिर क्या था पपीहे को स्वाति नक्षत्र का जल मिल गया।

दूसरे दिन कालेज से आने पर साईकिल से अँजोरपुर गाँव को चल दिया। आषाढ़ मास होने के कारण नदी में बाढ़ से पूरा क्षेत्र जल मग्न दिखाई दे रहा था। सागरपाली गाँव पहुँचा वहाँ सड़क के किनारे एक नाविक छोटी सी नाव लेकर सवारी के इंतजार में बैठा था। पूछने पर नाविक से ज्ञात हुआ वह अँजोरपुर जाएंगा, तो मैं उसकी नाव में बैठ गया। जिज्ञासावश मैने पूछा, वहाँ मुक्कवा मारने वाले स्वामी जी रहते हैं? नाविक बोला हाँ वही रहते है। नाविक नाव लेकर चला, मैं उससे स्वामी जी के विषय में वार्तालाप करता रहा। एक घण्टा बाद नाविक नाव को मगई नदी के किनारे ला कर नाव लगाते हुए बोला यही उतर जाइए, यहाँ से कुछ दुरी पर स्वामी जी की कुटिया स्थित है।

साईकिल लेकर मैं नदी से ऊपर चढ़ा, अरहर की खेतों से होकर पगदण्डी मार्ग से कुटी के निकट पहुँचा। रामायण पाठ होने की ध्वनि सुनाई दी। देखा कुटी में एक सन्यासी संत रामायण पाठ कर रहे है, उनके पास एक 90 वर्षीय वयोवृद्ध किसान तन्मयता के साथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रोता के रूप में रामायण पाठ का श्रवण कर रहे है। कुटिया पर पहुँच कर देखा स्थान सबरी की कुटिया जैसे स्वच्छ, सुन्दर पवित्र, सुचिता एवं श्रद्धा तथा भक्ति से विद्यमान है। साथ ही साथ शान्ति का प्रतीक है। मेरा पालन–पोषण कलकत्ता शहर में होने पर शहरी संस्कार में लिपटा था। उन्हीं से पूछा– यहाँ गोपालानन्द सरस्वती जी रहते हैं? जबाब में जोर से उत्तर मिला– नहीं! नहीं! इतना कहते ही उनका मोहक मस्त और अद्‌भूत स्वरूप को देखते ही मैं समझ गया और उनकी गोदी में सिर (माथा) झुकाकर उन्हें प्रणाम किया। उन्होंने प्यार से मेरी पीठ पर मुक्का मारा जैसे मुझे जन्म जन्मान्तर से जानते हो। प्रेम से बैठाएं, फिर पूछे– तुमको किसने भेजा है। मैं बोला– हरिहरपुर वाले (फुफा जी) श्री निवास दूबे ने भेजा है। मेरी बात सुन कर बोले– तुम्हें सधुइया ने भेजा है।

कुछ देर बाद मेरी शिक्षा के विषय में एक–दो बात पूछे। मैं कुछ देर तक उनके स्वरूप और मुख मण्डल को निहारता रहा। वे भी मौन मुझे देखते रहे और मुस्कुराते रहे! तभी से मैं स्वामी जी के निकट जाकर बैठता रहा। लगभग दो वर्ष तक प्रत्येक शनिवार को अँजोरपुर गाँव पहुँच कर स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी के पर्ण कुटी में पहुँच जाता था और रविवार को देर शाम तक बलिया स्थित अपने क्वाटर पर वापस आता था। शनिवार के दिन रात्रि विश्राम के लिए स्वयं स्वामी जी किसी न किसी भक्त के दरवाजे पर उसके साथ मुझे भेज देते थे। उसी के घर मैं रात्रि विश्राम और भोजन करता था। इस प्रकार उनके साथ पर्ण कुटी में दो वर्ष तक एकांकी संवाद एवं वार्तालाप करता रहा। मेरे लाख निवेदन करने पर भी स्वामी जी मुझे रात्रि विश्राम करने हेतु अपनी कुटियाँ में रहने की अनुमति कभी नहीं दिए। कहते थे मैं यहाँ अकेला ही रहूँगा। तुम ब्रह्म मुहुर्त में उठकर यहाँ आना मैं लगभग 2:30 से 3:00 बजे प्रातः स्वामी जी की कुटी पर आता और तत्काल गंगा स्नान के लिए स्वामी जी का कमण्डल, अँचला, लंगोटी लेकर उनके पीछे–पीछे गंगा तट की ओर चल देता था।

गंगा के किनारे पहुँचते ही स्वामी जी सर्व प्रथम पतित पावनि माँ गंगा जी को प्रणाम कर जल में धीरे–धीरे प्रवेश कर कमर तक जल में बिना किसी प्रकार के हलचल किये शान्ति भाव से बैठ जाते थे। वे गंगा जी के जल में अपना शरीर नहीं मलते थे। कहते थे माँ स्नान करा देती है कुछ क्षण पानी में रहने के पश्चात् स्वामी जी बच्चों की तरह घबराकर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जल से बाहर निकलते अपनी लँगोटी मांग कर पहन लेते थे, और गंगा जल से भरा समुद्री नारियल का काला कमण्डल अपने हाथ में लेकर, चरण पादुका (खड़ाऊँ) को पैर में पहन कर, आगे-आगे बच्चों की तरह हिलते डोलते हुए कुटियाँ की ओर चल देते थे।

उस समय उनकी चाल और भाषा दोनो में ही बदलाव रहता था। स्नान के बाद गंगा घाट से चलते समय पहले दिन मैं शिष्टाचार वश गंगा जल से भरा कमण्डल लेकर चलना चाहा, उसी समय स्वामी जी उच्च स्वर में डाँटते हुए बोले- मेरा कमण्डल मत छूओ स्नान के बाद सन्यासी ब्रह्मा का स्वरूप हो जाता है। कुटियाँ पर पहुँचते ही मैं, स्वामी जी के हाथ से कमण्डल लेकर छोटी सी लकड़ी और रस्सी के सहारे पर्ण कुटी में यथा स्थान पर कमण्डल को लटका दिया करता था। कमण्डल के ऊपर नारियल से निर्मित ढ़कन से जल ढ़क दिया करता था। यही गंगा जल का नित्य सेवन स्वामी जी किया करते थे। उसके बाद उनका भीगा हुआ अँचला और लंगोटी को कुटी के बाहर टाट के सहारे फैला देता था, सुख जाने पर यथा स्थान उसे चपत कर रख देता था।

स्वामी जी लगभग 1 घण्टा तक पूजा ध्यान करते थे। पूजा और ध्यान से उठते ही पूछते-शम्भूनाथ तुम्हें भूख लगी है? मुझे तो भूख लगी है। उस समय तक कोई न कोई भक्त गाय का दूध अथवा शर्बत लेकर कुटी पर आ जाता था। उसका नाम लेकर स्वामी जी पास बुलाते उसको अपने वक्षस्थल से सटाकर अपूर्व प्यार से दुलारते हुए एक-दो मुक्का उसकी पीठ पर मार कर पूछते-"का ले आइल बाड़े" गाय का दूध/अथवा शर्बत का वर्णन सुन कर मुझसे नारियल की कटोरी लाने की बात कहते। उस कटोरी में दूध अथवा शर्बत मात्र 50 ग्राम संग्रह करने की क्षमता थी, उसी से एक कटोरी दूध अथवा शर्बत को लेकर पीते और पेट भर जाने की बात कहते। फिर मुझे भी पीने की बात कहते थे तो मैं भी एक गिलास दूध/शर्बत पीता था। यदि खाने की कोई सामग्री होती तो स्वामी जी अपनी बांयी हथेली पर एक बार लेकर खा लेते थे और नारियल की कटोरी में कमण्डल से गंगा जल लेकर हाथ प्राक्षलन कर लेते थे। उन्हें अपना मुँह पोछने या साफ करने का ध्यान नहीं रहता था। यह क्रिया बाल अवस्था में बालक के स्वभाव सदृश्य करते थे। मै जब उनके पास रहता था तो उनका मुँह साफ कर देता था।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सर्व प्रथम भिखारीपुर गाँव के निवासी पं0श्री परमात्मानन्द जी के दरवाजे पर स्वामी जी के आदेश से मैंने रात्रि विश्राम एवं भोजन किया था। स्वामी जी अत्यन्त अल्पहारी थे, उनके हृदय में शारिरीक भान कभी नहीं था। ऐसा प्रतीत होता था जैसे किसी की स्मरण में सदैव ध्यानावस्था में रहते थे। जब कोई उन्हें स्वामी जी कह कर पुकारता था तो जैसे सोया हुआ व्यक्ति घबराकर बोलता है, उसी प्रकार चौक कर आश्चर्य/विस्मयी अवस्था में बोलते थे- का हो, स्वामी जी की कुटिया में यदि दिखता था तो केवल प्रेम, सुचिता, पवित्रता, स्वच्छता, करूणा एवं शान्ति। जहाँ से हटने या अलग जाने की इच्छा नहीं होती थी। उनके स्वरूप में अपूर्व तेज प्रकाश तथा मुख मण्डल पर सदैव मुस्कान दिखाई देती कुटी में दो-तीन पुरानी बोरिया थी जिस पर भक्त आकर बैठते थे। उनकी चरण पादुका नीचे दिखाई देती थी। उनके दर्शन होने पर परम शान्ति एवं पवित्रता का आनन्द अनुभव होता था। उनके पास संग्रह नाम की कोई वस्तु नहीं थी। एक कमण्डल, दो लंगोटी, दो अँचला, पैरो में चरण पादुका (खड़ाऊँ) के अतिरिक्त कोई अन्य सामग्री नहीं थी।

दण्ड को पहले ही त्याग कर परमहंस की स्थिति में विचरण करते थे। चौकी विस्तर विहिन थी। श्री मद् भागवत पुराण में ऐसा ही परमहंस संतो का वर्णन आता है। सबका भोजन, सबका स्पर्श सबसे प्रेम व्यवहार मृदुल भाषी सबका छुआ हुआ प्रसाद ग्रहण करना, ऊँच-नीच के भेद-भाव की भावना से विरक्त रहते थे कुछ माह मगही (भगाउ) नदी के तट पर तपस्या साधना करने के पश्चात् वहाँ से अन्यत्र स्थान पर देशाटन के उद्देश्य से भ्रमण करते हुए यात्रा पर चले गए। पुनः दो वर्ष बाद अँजोरपुर गाँव में वापस आए भक्तों ने पुराने स्थान पर झोपड़ी लगाने को कहा तो स्वामी जी ने अपनी इच्छा व्यक्त की, कि पुराना स्थान गाँव के समीप है संन्यासी को गाँव से दूर रहना अच्छा होता है। तब भक्तों ने गाँव से लगभग दो किलोमीटर दूर गंगा के किनारे भिखारीपुर एवं इन्दरपुर गाँव के सीमा पर स्वामी को रहने के लिए पर्ण कुटी तैयार किये। जहां स्वामी जी एकान्तवास करते हुए तपस्या करने लगे। वहाँ भक्त दूर-दूर से भिन्न-भिन्न प्रकार के फूलों के साथ-साथ औषधिय पौधों को लाकर सुन्दर वाटिका तैयार किए थे जो गंगा नदी की कटान होने पर पर्ण कुटी सहित गंगा में विलिन हो गया।

एक बार कुछ लोग जो ऊँच-नीच का भेद भाव रखते थे उनके परम पूज्य

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरूदेव दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी से बोले-आपका शिष्य स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी ऊँच-नीच का भेद भाव नहीं करते किसी भी जाति वर्ण के यहाँ भिक्षा ले रहे हैं सन्यासी के लिए अच्छा नहीं है वर्जित है यह सून दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी अपने शिष्य स्वामी श्री गोपालानन्द जी को पास बुलाएं गुरूदेव का संवाद सुन कर वे शीघ्र अपने गुरूदेव के पास आए और गुरूदेव को दूर से ही देखकर साष्ट्रांग प्रणाम किए। यह देख गुरूदेव अपने स्थान से चल कर अपने परम् प्रिय शिष्य को उठा कर बोले-तुम धन्य हो मेरे शिष्य गोपालानन्द तुम तो अब गोपालमय हो गये हो। तुम्हे देखकर मैं आनन्द विभोर हो गया हूँ।

विद्यार्थी जीवन में सप्ताह के दो दिन गुरूदेव के सानिध्य में एकांकी रह कर उनकी ज्ञान भरी आध्यात्मिक उपदेशों को श्रवण करने का सौभाग्य प्राप्त किया। वे अन्तर्यामी तथा त्रिकाल दर्शी, वेदो के ज्ञाता थे। उनके सम्पर्क में आने पर उनसे मेरा अनेक संवाद हुआ। जिसमें मात्र 8 वर्ष की अवस्था में पिता जी के साथ-साथ खेत में जाना और वहां छोटे-छोटे सुन्दर ठाकुर रूप पत्थरों को इकठ्ठा कर उन्हें देवी-देवता बना कर उनसे खेला करता था।

मुझे स्मरण है बचपन का शान्त स्वरूप व भोला-भाला स्वभाव का होने पर उस काल में परिवार तथा पड़ोस के मेरी उम्र से बड़े-बड़े बच्चे प्राय: आध्यात्मिक खेल खेलते समय मुझे श्री कृष्ण स्वरूप बना कर वस्त्र पहनाते थे शरीर और ललाट पर चूने से टीका व तिलक का चिन्ह बना कर अपने कन्धों पर बैठाते थे और गांव घर की गलियों में घूमाते थे। मेरे पीछे-पीछे चलने वाले अन्य बच्चे **'जय कन्हैया लाल की मदन गोपाल की, लड़कन के हाथी-घोड़ा बुढवन को पालकी'**। शब्दों का उद्घोष किया करते थे।

एक दिन संवाद के बीच गुरूदेव से पूछा-आपकी नाक-कान छेदन का रहस्य क्या है? मेरी बात सुन, स्वामी जी कहने लगे-मेरी अवस्था छोटी थी बड़ा भाई मुझसे मात्र दो-तीन वर्ष बड़े थे वे शिव मन्दिर में पूजा किया करते थे। एक दिन भगवान शंकर के मन्दिर में पूजा करने गये। घर वापस आने में विलम्ब होने पर मेरी बूढ़ी दादी ने बड़े भाई को देखने के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लिए मुझे शिव मन्दिर में भेजा। मैं शिव मन्दिर में प्रवेश किया, तो देखा भैया ध्यान मुद्रा में शिव लिंग पर अपना सिर झुकाए हैं उन्हें स्पर्श किया तो उनका शरीर लुढ़क गया। समाधिस्थ अवस्था में ही उनका प्राणान्त हो गया था। उस घटना के बाद एक दिन परिवार की महिलाओं से उपनयन संस्कार कराने का आग्रह किया। मेरे प्रस्ताव से परिवार को महिला/पुरूष सदस्य चिन्तित होकर विचार विमर्श करने लगे। कहीं यह भी साधु-सन्यासी होकर घर से बाहर न चला जाय अथवा मृत्यु को प्राप्त न हो जाय। वे लोग जानकार ज्योतिषियों पण्डितों और तांत्रिकों को बुलाए, उन्हें मेरी जन्म कुण्डली एवं हस्त रेखा, ललाट दिखाए। उनके परामर्श से भयभीत होकर असगुन होने से बचने के लिए उस काल में गांव में प्रचलन/प्रचलित टोटका स्वरूप मेरी नाक-कान का छेदन करा दिए। ताकि होने वाला असगुन से रक्षा हो जाय।

एक दिन कुटिया में गुरूदेव के साथ अकेला बैठा था मन में साहस कर गुरूदेव से पूछा-आप कब और कैसे घर का परित्याग कर संन्यासी बने ? इस पर कुछ पल शान्त रहे उसके बाद मेरे प्रश्न का रहस्योघाटन करते हुए कहने लगे शिव मन्दिर में शिव जी की पूजा करते समय जब बड़े भाई समाधिस्थ हो गये थे और उनका प्रणान्त हो गया, वह दृश्य देखने के उपरान्त मेरे हृदय में वैराग उत्पन्न हो गया। उस समय मैं छोटी उम्र में ही मिट्टी से सुन्दर-सुन्दर देवी-देवता की मूर्ति का निर्माण कर लेता था। मैं अपने पिता जी के साथ दरवाजे पर ही सोता था। दो-तीन वर्ष व्यतीत होने पर एक दिन ब्रह्म मुर्हुत में उठा मन में वैराग होने से गाँव घर त्यागने के प्रबल इच्छा थी उसी दिन सबसे पहले माता जी को प्रणाम करने गया तो घर का किवाड़ बन्द मिला, मैं चौखट को प्रणाम किया और पिता जी का चरण स्पर्श कर घर का परित्याग कर दिया। चलते-चलते रिविलगंज गंगा के किनारे पहुँचा वहाँ एक महात्मा के पास गया। संस्कृत पढ़ने के लिए उन्होंने वहीं संस्कृत विद्यालय भेज दिया सुबह-शाम उनका चरण सेवा करता था और दिन में शिक्षा ग्रहण करता था। लगभग दो वर्ष उनके पास रहा।

मन में वैराग व्याप्त होने पर एक दिन गंगा में छलांग लगा दिया। गंगाजी मे डुबने से बेहोशी अवस्था में बहते-बहते माँझी पुल के खम्भा के सहारे पड़ा था। मेरे शरीर को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बेहोशी अवस्था में देख कर स्थानीय नाविकों ने नदी से बाहर निकाला, उन्होंने ही मेरा उपचार किया, होश में आने पर वे लोग मेरी देख-रेख किए। वहीं तीन-चार दिन व्यतीत होने के बाद पुन: ट्रेन पकड़ कर काशी पहुँचा। वहाँ गाँव पर आने-जाने वाले एक संत मुझे पहचान कर पुकारे जगन्नाथ! पास बुला कर घर वापसी की बात किए, समझाए। फिर मेरी दृढ़ता को देख कर मुझे हरिद्वार जाने की सलाह दिए, साथ ही साथ गुरूकूल से विद्या ग्रहण करने का मंत्रणा दिए।

मैं वाराणसी से ट्रेन द्वारा हरिद्वार चला गया और गुरुकूल से वेदान्ताचार्य एवं व्याकरणाचार्य की विद्या ग्रहण कर वापस वाराणसी आ गया। काशी पहुँच कर सच्चे गुरू की खोज में इधर-उधर भटक रहा था, उसी समय राजगुरू मठ के संन्यासी महामण्डलेश्वर दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी से मुलाकात हुई। वे मुझे अपने आश्रम पर ले गये। वहाँ स्वामी जी भोजन प्रसाद दिए और आश्रम पर सोने-बैठने की व्यवस्था किए तथा शिक्षा पठन-पाठन की व्यवस्था की। कुछ समय व्यतीत होने पर अपने साथ प्रयागराज ले गए तथा वहीं सन्यास की दीक्षा दिए सन्यासी धर्म का प्रतीक दण्ड देकर शिष्य बनाए, तद्उपरान्त गुरूदेव का चरण स्पर्श कर चरण पादुका पहन कर सम्पूर्ण भारत की यात्रा पर निकल पड़े। सभी तीर्थ स्थलों जंगल, पहाड़ों में घूम-घूम कर संत महात्माओं का दर्शन प्राप्त किया।

एक बार गुरूदेव से पूछा आप किस लोक से किस प्रयोजन से आए है? तब गुरूदेव ने उच्च स्वर में कहाँ भारत भूमि पर शास्त्रों को देखने के लिए आया हूँ। कहाँ-कहाँ किस-किस शास्त्र ग्रन्थों में स्वार्थी लोग स्वार्थ वश हेर-फेर किए है। उसी समय मैं गुरूदेव से पूछा आपने किस-किस शास्त्र का अध्ययन किया है? कुछ क्षण मौन रहने के बाद बड़े सरल स्वभाव से बोले-भारत वर्ष में कोई ऐसा धार्मिक पुस्तकालय हमसे वंचित नहीं है। जिसमें रखी पुस्तकों का अध्ययन करना शेष रहा हो।

मेरा हृदय वैराग्य से भरा था शरीर की नश्वरता को देख गुरुदेव से अनुनय-विनय किया और कहा कि आप मुझे संन्यास की दीक्षा दे दें। मेरी प्रार्थना सून कर बोले-अभी नहीं, अभी सूर्य दक्षिणायन में है, सूर्य उत्तरायण में आने पर दीक्षा लेना। हठ कर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मैने उनसे संन्यास से सम्बन्धी प्रबंधन जानने के लिए छोटे से कागज पर लिखवाया उसके उपरान्त मैं चौरासी मठो के मठाधीश्वर, काशी में गया। गुरुदेव ने स्पष्ट बोला था। संन्यासी हो जाना ही सच्चा संन्यास है' अन्यथा वह व्यक्ति कौड़ी के मोल होता है। सृष्टि से अलग प्रभु नहीं है। सृष्टि प्रभु का ही स्वरूप है, तुम संसार से डरो मत! अपना कर्त्तव्य निष्काम रूप से करते रहो, हम तुम्हारे साथ रहेंगे।

मैं काशी के मठाधीश्वर के पास गया। उन्होंने गीता पर मेरी परीक्षा ली, और बोले ठीक है, ब्रह्मचारी रूपधारण कर गंगाजी के किनारा पकड़ कर पैदल यात्रा करते हुए प्रयागराज चलो वही विधिवत सन्यास की दीक्षा दी जाएगी। मुझे उनकी बात रास नहीं आई, वापस बलिया आ कर मैंने गुरूदेव को कम्बल वापस कर दिया, तो गुरूदेव बोले- शम्भूनाथ तुम्हारा प्रारब्ध तुम्हारी प्रतिक्षा करता हैं उसको समाप्त कर लेना ही श्रेयस्कर होगा। मैने गुरूदेव से विनती की और कहा आप एक दिन हमारे गाँव घर पर दर्शन दें! उन्होंने मेरी प्रार्थना स्वीकार की और अगले माह आने को राजी हुए। कथनानुसार मेरे गाँव आए तथा रात्रि विश्राम हमारे दरवाजे पर किए दूसरे दिन प्रातः बहोरनपुर गांव के लिए प्रस्थान किए। मैं उन्हें गंगा तट तक छोड़ने गया, उनका चरण स्पर्श कर वापस लौट गया।

कुछ दूर आने पर पीछे मुड़कर देखा वे अन्तर्ध्यान थे। समस्त ऋद्धियों-सिद्धियों के प्रयोग करने से समर्थ थे। मगर कुछ पूछने पर कहते थे- "हम इ कुल ना जानेनी, सदैव मौन रहते थे किन्तु उनके हृदय में सदैव प्रभु विराजते थे। एक दिन अँजोरपुर प्रवास काल में मुझसे कहे- शम्भूनाथ योगवशिष्ठ पढ़ लिहऽ। मैंने तुरन्त गुरूदेव से पूछा कहाँ मिलेगा? तो बोले-तहरा बाबा के आलमारी में देखिह मिल जाई। घर जा कर देखा तो बाबा की आलमारी से ही योगवशिष्ठ पुस्तक पाया। यह जानने समझने के लिए स्पष्ट प्रमाण था स्वामी जी अन्तर्यामी थे। योगवशिष्ठ को समग्र मन से पढ़ा, एक मास बाद जब मैं उनके दर्शन करने पहुँचा तो योगवशिष्ठ में उल्लेखित चुडालो उपख्यान के सम्बन्ध में उन्होंने पूछा रनिया चुडाला बहुत ज्ञानी और पहुँची हुई थी शम्भूनाथ।

एक दिन गुरुदेव के दर्शन करने बहोरनपुर गाँव जाकर उनकी कुटिया में बैठा था

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरुदेव से वार्ता संवाद चल रहा था, मैंने गुरूदेव से कहा- प्रभु मुझे कलकत्ता जाना होगा वहाँ मेरे दादा जी अकेले रहते है उनकी सेवा के लिए जाना है। मेरी बात सुन कर वे हँसते हुए बोले-ठीक बा चल जा अब तुम्हें शान्ति मिलेगी। मुझे क्या पता था कि वहाँ जाने के बाद दिनांक 27.05.1964 को कलकत्ता मे ही मेरी शादी का योग बन जाएगा और मेरा विवाह सम्पन्न हो जाएगा। संयोग से मेरी धर्म पत्नी का नाम शान्ति था। यहीं से मेरा प्रारब्ध का खेल शुरू हो गया। पत्राचार के माध्यम से गुरूदेव का आशिर्वाद लेता रहा। एक पत्र में लिखा गुरूदेव मुझको आपकी दर्शन की इच्छा है। जिसके उत्तर में गुरूदेव ने पत्र से सूचित किया। मुझे गंगा सागर जाना हैं वापस लौटते समय मिलूंगा। दूसरे पत्र से सूचना मिली अमुक दिनांक को अमुक समय पर देहरादून एक्सप्रेस ट्रेन से आ रहा हूँ, मुझसे मिलना। यथा तिथि आसनसोल स्टेशन पर देहरादून एक्सप्रेस ट्रेन के आने का इन्तजार बड़ी आतुरता से कर रहा था ट्रेन के स्टेशन पर आते ही मैं दौड़-दौड़ कर डिब्बे में देख रहा था कि अचानक तृतीय श्रेणी की बोगी में गुरूदेव दिखाई पड़े। ट्रेन में भीड़ थी खिड़की के रास्ते भीतर जाकर जल्दी-जल्दी उतरने के लिए निवेदन करने लगा। उनके साथ अगल-बगल बैठे दो सज्जन उन्हें उतरने नहीं दे रहे थे वे लोग स्वामी जी को लेकर वाराणसी जा रहे थे।

गुरूदेव से बोला-आपने आसनसोल स्टेशन पर उतरने की बात कही थी, या नहीं। स्वामी जी ने स्पष्ट स्वीकार किया, फिर क्या था कमण्डल लेकर खिड़की के रास्ते बाहर आया तथा स्वामी जी को भी खिड़की मार्ग से खिंचकर ट्रेन से बाहर निकाला। उसी समय उनकी चरण पादुका की एक खुटी टुट गई। चरण पादुका उठाया। बाहर आने पर दूसरा चरण पादुका मोल लिया। उसे गुरूदेव को पहनाया और गुरूदेव को साथ लेकर फुफाजी के क्वाटर पर आया। वहीं गुरूदेव ने रात्रि विश्राम किया। हम दोनों को उनका दर्शन लाभ मिला। दूसरे दिन काशी जाने के लिए टिकट लेकर उन्हें ट्रेन में बैठा दिया। वहीं अल्पखण्डीत खड़ाऊँ हमारे पूजा गृह में आज भी विराजती है।

सन् 1966ई0 के नवम्बर माह में ग्यारह तारीख को केन्द्रीय सेवा में सहायक उप निरीक्षक के पद पर मोकमाघाट बिहार गंगा के किनारे नियुक्ति होने पर अपना कार्यभार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सम्भाला। जहाँ एक पुत्र और तीन पुत्रियों का जन्म हुआ। सन् 1972 में स्थानान्तरण होकर कोहिमा ओखा नागालैण्ड गया। वर्ष 1974 ई0 के आरम्भ में देवली राजस्थान गया। 6 माह व्यतीत होने पर वहां से दिल्ली मुख्यालय पर तैनाती हुई। जहां लेखा विभाग में आडिटर के पद पर कार्य किया। वर्ष 1978 ई0 में निरीक्षक पद पर नियुक्ति हुई तो स्थानान्तरण होकर शिलांग मेघालय चला गया। वहां तक स्वामी जी की छाया बनी रही परन्तु वर्ष 1979 के जुलाई माह में मेरे स्मरण में हलचल सा महसूस हुआ मन में अशान्ति उत्पन्न हुआ। ऐसा ज्ञात हुआ कोई अमूल्य वस्तु मुझसे अलग हो गई है। बक्से से स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी की फोटो निकाली और पूजा करने लगा।

सन् 1982 में मेरा स्थानान्तरण आबू पर्वत पर हुआ जहाँ गुरुदेव की कृपा से एक त्रिकालदर्शी विदुषी वैरागी महिला साध्वी विमला ठाकर से सम्पर्क हुआ। उनके दर्शन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनके यहाँ सत्संग और प्रवचन में भाग लेने लगा। उनका रहन-सहन तो ऐसा था जैसी इन्द्राणी भी नहीं रहती होगी। विश्व पर्यटन करती और आध्यात्म पर बहुत सुन्दर प्रवचन करती थी। आध्यात्म पर उनके यहाँ से पुस्तक/पत्रिका का प्रकाशन होता था। विश्व की कई भाषाओं की ज्ञाता रही। एक बार मेरे क्वाटर पर आई थी। हम उन्हें विमला बहन और वह मुझे भाई कह कर पुकारती थी। एक दिन मुझसे गुरूदेव की फोटो की मांग की मैने उन्हें गुरूदेव का फोटो दिया उसे लेकर देखने लगी फोटो देख कर कहने लगी। भाई मुझे लगता है गुरूदेव अब शरीर में नहीं हैं, इसकी पुष्टि पत्राचार से कर लीजिए। उनकी बात सुनते ही विगत वर्षों की हृदय में होने वाली हलचल मुझे याद आई।

पं0 श्री परमात्मा नन्द जी को पत्र लिख कर भेजा जिसमें स्वामी जी के समाचार से अवगत कराने का आग्रह किया था। कुछ दिन बाद पं0 परमान्तमानन्द जी का दो पृष्ठों में लिखा पत्र मुझे प्राप्त हुआ। जिसमें आषाढ़ शुक्ल पक्ष नवमी तिथि को रात्रि में लगभग 8 बजे हरिभजन एवं नृत्य करने के बाद सैकड़ो भक्तों की उपस्थित भीड़ में तीन बार ऊँ ऊँ ऊँ शब्द का उच्चारण करते हुए, स्वामी जी द्वारा समाधि लेने का जिक्र किया गया था। पत्र विमला बहन साध्वी विदुषी महिला के सम्मुख पढ़ते हुए मैं रोने लगा। उसके बाद विमला बहन मुझे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सांत्वना देते हुए कहने लगी–गुरूदेव तुम्हारे साथ सदैव सूक्ष्म रूप में रहेंगे। फिर उनकी पूजा का विधान की चर्चा कर बोली–पूजा की सामग्री एवं जल लेकर उनके पंलग के पास मौन धारण कर लगभग सवा घण्टा बैठ कर उनकी आराधना करना। साध्वी विमला बहन के कथनानुसार श्री गोपालधाम राजगीर जाकर सपरिवार विधि–विधान से पूजा मैने किया। उसके उपरान्त मुझे जो अनुभूति हुई उसको शब्दो में वर्णन करना सम्भव नहीं है। उसी समय श्री गोपालधाम में ज्ञात हुआ गुरूदेव जंगलिया बाबा प्रसंग आने पर वैरागी विदुषी महिला साध्वी विमला ठाकर के विषय में चर्चा किया करते थे। कहते थे एक बार यहाँ विमला ठाकर जी को बुला कर उनका प्रवचन कराना है।

मनुष्य अपने प्रारब्ध से अधिक और समय से पहले कुछ भी नहीं पा सकता। आबू से स्थानान्तरण होकर दिल्ली आ गया। परन्तु बहन विमला जी से पत्र द्वारा सम्बन्ध बना रहा। उनके प्रवचन में चार दिन तक मथुरा गया था। वहां अनेक संतो से मुलाकात एवं दर्शन हुए इसी बीच गृह मंत्रालय के राष्ट्र भाषा विभाग में अनुवादक के पद पर प्रशिक्षण प्राप्त किया। जिसमें धार्मिक ग्रन्थों व पुस्तकों को पढ़ने समझने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। दिल्ली प्रवास की अवधि में ही मेरी सहभागिनी शान्ति का स्वर्गवास हो गया। दाह–संस्कार दिल्ली में करके तेरहवीं की क्रिया करने हेतु चाचा जी के पास वाराणसी चला गया। काशी के घाट पर बारह दिन तक तर्पण कार्य किया और तेरहवी का श्राद्ध कार्य सम्पन्न किया। उक्त अवसर पर श्री गोपालधाम राजगीर से पुजारी जी (श्री मुन्ना जी) एवं अंजोरपुर से पं0 परमात्मानन्द जी के पुत्र श्री जगदीश पण्डित उपस्थित रहे।

सन् 1982 ई0 में आबू से श्री गोपालधाम एवं गुरूदेव की पूण्य तिथि पर अंजोरपुर सपरिवार गया था। पं0 श्री परमात्मानन्द जी सारल्य–दर्शन से सम्बन्धित कागज का फोटो प्रति मुझे उपलब्ध कराए थे जिसे लेकर साध्वी विमला ठाकर बहन को देकर पुस्तक रूप में संकलन करने का अनुरोध किया था। स्थानान्तरण होने के कारण वह कार्य पूर्ण नहीं कर सका। जिसको प्रियवर श्री कमलाकर दुबे ग्राम व पोस्ट– थम्हनपुरा, जिला–बलिया (उ0प्र0) ने वर्ष 2015 ई0 में पुस्तक का मूर्त रूप देकर प्रकाशन कार्य को

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

पूर्ण किया। यह विरल पुस्तक है जो सामान्य लोग के समझ से परे है। रामायण की भाँति बोधगम्य नहीं है तथापि अलौकिक ग्रन्थ है। सन् 1987 में दिल्ली मुख्यालय से स्थानान्तरण होकर पूर्वी क्षेत्र कलकत्ता (प0बं0) में कार्यभार सम्भाला और सन् 1994 तक सेवारत रहते हुए देवी भूमि कलकत्ता में रहा। जहाँ गुरूदेव सूक्ष्म शरीर धारण कर अभिभावक की भाँति मेरे साथ रहे। वे दिखाई तो नहीं देते रहे परन्तु हमारी हर जिज्ञासा समस्या का निदान कर देते थे। वर्ष 2007 ई0 के फागुन मास में आबू स्थित अपने आश्रम पर वैरागी विदुषी साध्वी महिला विमला ठाकर ने भी अपने पार्थिव शरीर का परित्याग कर दिया।

एक बार मुझे उपदेश देते हुए 'गुरुदेव श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी ने कहा- शम्भूनाथ यह नारायण क्षेत्र है बड़े-बड़े सिद्ध ऋषि मुनि महात्मा संत इस धरती पर आए तपस्या-साधना किए और अपने शरीर का परित्याग कर मोक्ष को प्राप्त किए। यहाँ की धरती मखमल की तरह मुलायम लगती है चरण पादुका पर चलने पर अति कोमल हो जाती है। इसी तमसा नदी के किनारे से त्रेता युग में भगवान श्री राम-सीता जी के साथ पैदल अयोध्या को गये थे।

संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालनन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) परम योगी तपस्वी के रूप में रत्नागिरि पर्वत के नीचे जंगल में स्थित श्री गोपालधाम, में आज भी सूक्ष्म रूप में विराजमान है। भाव भक्ति एवं सच्चे मन से पुकारने पर कोई भी भक्त निःसंदेह उन्हें देख सकता हैं इसमें इंच मात्र संदेह नहीं है। आपके युगल चरणों को कोटिशः नमन् प्रभुवर!

श्री श्रीरामकृष्ण चौधरी पुत्र स्व0 राम निवास चौधरी, ग्राम व पोस्ट-वीरमपुर कृतपुरा थाना-कोइलवर जिला-भोजपुर (बिहार)-

मेरे पिता स्व0 राम निवास चौधरी जी से स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी की मुलाकात ग्राम-सोनबरसा (करमानपुर) थाना-शाहपुर, जिला-भोजपुर निवासी श्री अकलू मिश्र जी के बागीचे में हुई थी। पिता जी बाबा का दर्शन करने के बाद अनुरोध किए आप

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमारे गाँव पधारें। स्व0 रामनिवास चौधरी के अनुरोध स्वीकार कर स्वामी जी वर्ष 1960ई0 के ज्येष्ठ मास में दशहरा के समय वीरमपुर कृतपुरा गाँव आए और स्व0 राम निवास चौधरी के बागीचे में एक माह रहे और तपस्या किए। श्री राम कृष्ण चौधरी सबसे महत्वपूर्ण सूचना दिए कि स्वामी जी उनके पिता से वार्ता के समय कहे थे कि मैं एकसरिया गोत्र का भूमिहार ब्राह्मण परिवार का हूँ परिवार के पास जमीदारी रही, परिवार में लोंग खेती कार्य करते है। मैं छपरा जिले में भेडवनिया गाँव का रहने वाला हूँ। मेरा गाँव बनियापुर थाना के अन्तर्गत है। परिवार के लोग अंग्रेजी शासन में अच्छे पदों पर नौकरी में रहें। अंग्रेजी शासन के विरूद्ध आन्दोलन में भाग लेने पर स्कूल से किसी तरह हरिद्वार पहुँच गये। हरिद्वार के गुरुकूल कांगड़ी में शिक्षा प्राप्त करने लगे। हृदय में वैराग जागृत होने पर भारत भ्रमण पर निकल पड़े।

उस समय के संत श्री लदेरिया बाबा से मुलाकात हुई उनसे भी शिष्य बनाने की इच्छा प्रकट किया छोटी उम्र के कारण श्री लेदरिया बाबा उन्हें साधु बनने से मना किए और बोले-साधु बनने से पूर्व धन लोभ-मोह का त्याग करना पड़ता है जो अति कठिन कार्य है। साधु को कठिन समय से गुजरना होता है। संत श्री लेदरिया बाबा की बात सुन कर स्वामी जी अपने पास रखे मात्र बाइस रूपये को किसी गरीब व्यक्ति को दे दिए। उसी समय से अन्त तक वे कभी भी धन संग्रह नहीं किए। मेरे छोटी उम्र में स्वामी जी बागीचे में भूमि पर लकीर खींच कर बरहिया खेल मेरे साथ भी खेला करते थे जो शतरंज का एक रूप है। हम बाबा के व्यवहार और उनका प्रेम को कभी नहीं भूल सकता हूँ। उनकी खड़ाऊँ मेरे घर है उसकी पूजा हमारा परिवार करता है।

श्री राम सिंह राय पुत्र स्व0 विश्वनाथ राय ग्राम व पोस्ट- बहोरनपुर थाना-शाहपुर जिला-भोजपुर (बिहार)-

मेरे पिता स्व0 विश्वनाथ राय जी मेरी बहन को देखने उसकी ससुराल वीरमपुर कृतपुरा गाँव गये थे। श्री राम निवास चौधरी के घर उसकी शादी हुई थी। स्वामी जी उस समय श्रीराम निवास चौधरी जी के बागीचे में रह कर तपस्या साधना करते थे। वहीं स्वामी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जी का दर्शन मेरे पिताजी को हुआ। उन्हें ज्ञात हुआ कि स्वामी जी अन्यत्र स्थान पर जाने की इच्छा व्यक्त किए है। मेरे पिता स्व0 विश्वनाथ राय जी स्वामी जी से प्रार्थना किए आपको चार्तुमास करने कहीं अन्यत्र स्थान पर जाना है तो कृपा करके आप हमारे यहाँ बहोरनपुर गाँव जो गंगा जी के समीप है में चल कर चार्तुमास करे। उनके अनुरोध को स्वामी जी स्वीकार किए और स्वयं बाबा बहोरनपुर गाँव आए। स्व0 विश्वनाथ राय अपनी फुलवारी में उनके लिए झोपड़ी लगवा दिए। स्वामी जी नित्य गंगा जी जाकर स्नान करते थे। गाँव के बड़े-बुजुर्ग भी उनके साथ-साथ गंगा जी स्नान करने जाते थे और स्वामी जी के लिए गंगा जल लाया करते थे।

उस समय स्वामी जी मोटे अनाज से तैयार रोटी-भात का सेवन करते थे, कभी अच्छे किस्म के अनाज से निर्मित सामग्री जैसे-पुआ, मालपुआ, चावल, दाल खीर, बारा-दहीबारा खाने की इच्छा व्यक्त नहीं किए। यदि स्वामी जी को भक्त खिलाने की अभिलाषा से निवेदन करते थे तो स्वामी जी के मुख से आदेश होता था तुम मेरे लिए बाजरे की रोटी, मक्के की रोटी या भात अथवा भुना हुआ महुआ लाना (ऐसा ही भोजन खाने की इच्छा व्यक्त करते थे)। वे करपात्री थे अपने हाथों की अंजुली में भोजन लेकर भिक्षा ग्रहण करते थे और मिट्टी के घड़े में रखे गंगा जल का सेवन करते थे। सम्पत्ति के नाम पर उनके पास दो लँगोटी, मारकीन का दो अँचला, एक मिट्टी का घड़ा, मोटी लकड़ी से निर्मित लगभग ढ़ाई या तीन ईंच ऊँचा खड़ाऊँ जिस पर वे तेज गति में चलते थे। गीता की छोटी पुस्तक रखते थे। चार्तुमास समाप्त होते ही अँजोरपुर से कई लोग नाव लेकर आए और स्वामी जी को अपने यहाँ लेकर गये। उनकी स्मरण शक्ति स्वामी श्री विवेकानन्द जी जैसी रही एक बार मिलने के बाद उस व्यक्ति का नाम सदैव पुकार कर पास बुलाते थे। आशीर्वाद के रूप में सभी को आयु के अनुसार पीठ पर मुक्का मारते थे और बच्चों को प्यार से उनका नाक, कान, चोटी पकड़ कर चटका देते थे। उसका मुख का चुम्मबन करते थे।

जब स्वामी जी को लोग अँजोरपुर ले जा रहे थे मैं हाथ जोड़कर स्वामी जी से निवेदन किया आप हमारे गाँव से जा रहे हैं मैं आपको रोक नहीं पाऊँगा क्योंकि देखा गया है नदी का जल की धारा और संन्यासी को स्थिर नहीं किया जा सका। आपसे प्रार्थना है हमें कुछ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

देकर जाइए। यह सुन कर स्वामी जी बोले- मेरे पास क्या है, जो तुम्हें दूँ। मैं किसी को कुछ नहीं देता। फिर हम अपनी जिद्द पर अड़े रहे। मैंने कहा यदि आप हमें कुछ दे नहीं सकते हैं तो मैं भी आपके साथ-साथ चल रहा हूँ। तब बाबा बोले-कुछ लेना ही चाहते हो तो सुनो- यदि तुम्हारे यहाँ कोई व्यक्ति आ गया है तो उसे भोजन करा देना, पानी पिला देना, उसको विश्राम करने देना, अगर यह भी नहीं हो सके तो उससे मधुर मीठा वाणी से बोलना, व्यवहार करना उसे कभी फटकार न करना अथवा क्रोधित होकर न बोलना। स्वामी जी की बात सुन कर मैंने कहा हाँ बाबा मुझे आपसे प्राप्त हुआ मैं इसका ध्यान से पालन अपने जीवन में करता रहूँगा। उसके बाद स्वामी जी को प्रणाम किया वे नाव में बैठ कर अँजोरपुर चले गये। हमारे यहाँ चार्तुमास की अवधि में स्वामी जी 'दर्शन शास्त्र पर लिख रहे थे।

श्री गोपाल पाण्डेय ग्राम-आँती पोस्ट- कादिरगंज जिला-नवादा (बिहार) (दिनांक- 11.08.2014 ई0) -

मेरे दादा जी स्व0 रघुनन्दन शर्मा वैद्य उर्फ झपसू जी संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) के यहाँ श्री गोपालधाम में प्रत्येक मंगलवार एवं उत्सवों पर जाते-आते थे, स्वामी जी के यहाँ भजन कीर्तन करते थे वे श्री गोपालधाम में भजन कीर्तन मण्डली के नवरत्नों में थे। जिस समय स्वामी जी अँजोरपुर गाँव के श्री परमात्मानन्द पंण्डित जी के दरवाजे पर समाधि लिए और ओम् का उच्चारण कर शरीर त्याग किए उस समय भी दादा जी उनके साथ थे। दूसरे वर्ष दादा जी को श्री गोपालधाम से अँजोरपुर भण्डारे में जाना था, यात्रा प्रारम्भ से पूर्व दादा जी जंगलिया बाबा की आकृति को अपने हृदय में रखकर ध्यान लगाकर स्मरण कर रहे थे उसी समय उन्हें अनुभूति हुई मैं सो गया हूँ मेरे इर्द-गिर्द बाबा घूम रहे हैं तब उन्हें बाबा की कही बात का स्मरण हुआ झपसू जी जब भी मेरा स्मरण करोगे मैं तुम्हारे पास रहूँगा। तब उन्हें पूर्ण विश्वास हुआ बाबा मुझसे अलग नहीं है।

श्री गोपालधाम से सभी भक्त अँजोरपुर गाँव आए। उनके साथ दादा जी के परम् प्रिय मित्र और संगीत शिष्य श्री कपिल देव सिंह उर्फ (कपिल जी) भी थे। दूसरे दिन सुबह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सभी भक्त गंगाजी स्नान करने गये। दादा जी की नज़र गंगाजी की धारा में फूलों से लदी शव पर पड़ी। यह दृश्य देखकर दादा जी बोले-कपिल जी देखो स्वामी जी की टटरी गंगा जी के धारा में तैरती जा रही है यह सुन कर कपिल जी बोले-क्या कह रहे हैं यह तो पानी का फेन हैं। झपसू जी कहने लगे कपिल जी तुम्हें विश्वास नहीं है? कपिल जी ने कहा हाँ मुझे विश्वास नहीं है। दादा जी बोले फिर से देखना चाहते हो तो कपिल जी दादा जी की बात को मजाक़ समझ कर उड़ा दिये। कहने लगे आप बहुत अन्तर्यामी हैं कि आपके पास से बाबा गुजर गए। आपकी नज़र पड़ी और हम नहीं देखे। आपको विश्वास है तो एक बार फिर से ध्यान कीजिए जिससे वह आ जाएं। दोनों के बीच वार्ता हो ही रही थी उसी समय वहीं फूलों से लदा शव सामने से गुजर गया। तब कपिल जी को विश्वास हुआ बोले-आप स्वामी जी के सच्चे साधक हैं। एक पूर्ण विश्वासी साधक ही समझ सकता है।

सच्ची घटना-

मैं करीब 7 माह का अपनी माँ के पेट में था उसी समय मेरे पिता जी श्री भोलानाथ पाण्डेय का स्वर्गवास हो गया दादा जी श्री रघुनन्दन शर्मा वैद्य उर्फ (झपसू जी) हतोत्साहित हो गए पिता के कन्धे पर पुत्र का शव लेना दु:खों के पहाड़ गिरने जैसा था। दादा जी सदैंव चिन्तित व उदास रहने लगे। उसी समय आँती गाँव के श्री मुद्रिका सिंह जो मेरे दादा जी के मित्र थे दादा जी को समझाते हुए बोले- झपसू जी एक कहानी सुना रहा हूँ- जहाँ खोता है वहीं मिलता है' आप अपना धीरज मत खोइए हिम्मत रखे भगवान पर भरोसा रखें। चलिए सिंथौरा के जंगल में जंगलिया बाबा नामक संत रहते हैं उनके पास चला जाय। श्री मुन्द्रिका सिंह, दादा जी को लेकर बाबा के पास गए। बाबा से भेंट हुआ। स्वामी जी दादा जी को हतोत्साह देखकर बोले- जा भोला ऐता, भोला ऐता, भोला ऐता बाबा का आशीर्वाद हुआ दो माह बाद मेरा जन्म हुआ दादा जी मेरा नाम गोपाल रखे। जब पाँच-छ: वर्ष का हुआ तभी से दादा जी मुझे गोपालधाम लेकर आने लगे। वे ही मुझे तबला सिखाए छोटी उम्र से ही तबला बजाना जानता हूँ और श्री गोपालधाम में आता रहता हूँ। जब तक जीवित रहूँगा अपने धर्म का निर्वाह करूँगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

हमारे दादा श्री रघुनन्दन शर्मा वैद्य उर्फ (झपसू जी) एक बारात में गये थे, वहाँ नाश्ता के साथ कोल्ड ड्रींक पी लिए। तीन-चार दिन बाद उन्हें खुजली हुई जो आगे चल कर भीषण घाव का रूप धारण कर लिया। इलाज कराने के लिए आँती गाँव से नवादा स्थित अपने संगीत विद्यालय पर आकर रहने लगे नवादा शहर के डॉ0 यमुना प्रसाद कविराज जी से इलाज कराने लगे। उनकी देख-रेख हेतु हमारे फुफेरा भाई श्री संजय पाण्डेय जी उनके साथ थे। एक दिन मेरा फुफेरा भाई दादा जी की चरण सेवा कर रहे थे, दादाजी को नीद आ गई थी। उसी क्षण श्री संजय पाण्डेय जी की नज़र अचानक एक काली बिल्ली पर पड़ी वे भयभीत हो गये। बिल्ली के पीछे एक व्यक्ति डण्डा लेकर खड़ा था वे तुरन्त किवाड़ बन्द कर दिए। मेरे दादा जी की नीद खुली तो श्री संजय पाण्डेय डरते हुए बोले-नाना जी बिल्ली और आदमी को देखकर किवाड़ बन्द कर दिया। दादा जी बोले-चुप रहों वे कोई अन्य नहीं वे जंगलिया बाबा थे। दादा जी की बीमारी में भी बाबा उन्हें देखने आए थे। यही गुरु उपासना और गुरु पर विश्वांस कर द्योतक है।

श्री चन्द्रमणि कुँवर ग्राम-भिखारीपुर पोस्ट-अँजोरपुर थाना-फेफना जिला-बलिया (दिनांक- 14.02.2015 ई0)-

मेरी आयु 84 वर्ष की है मुझे पूर्ण स्मरण है स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी सर्व प्रथम छोटी उम्र में अँजोरपुर गाँव के दियारे में स्थित श्री उमाशंकर राय के खेत में पीपल पेड़ की छाया के नीचे अगहन मास में बैठे थे, उनको गाँव का कोई व्यक्ति आते और विश्राम हेतु बैठते नहीं देखा। जब गाँव से किसान खेती कार्य के लिए दियारे में गए तो उन्हें वहाँ बैठा पाएं। स्वामी जी उस समय अपने पास मारकीन का दो अँचला, दो लँगोटी रखे थे, उनके पैरों में खड़ाऊँ भी नहीं था। उनका भव्य रूप आकर्षक मुख मण्डल पर तेज को देख कर लोग उनका दर्शन किए और उनसे आग्रह किए बाबा आप मेरे गाँव की कुटी पर ठहरने का कष्ट करें। लोगों का प्रार्थना स्वीकार कर स्वामी जी अँजोरपुर गाँव की कुटी पर लगभग छः -सात माह तक रहे। फिर अन्यत्र स्थान के लिए पैदल यात्रा पर निकल गये।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तीन-चार वर्ष बाद स्वामी जी का पुनः आगमन हुआ इस बार गेरूवा वस्त्र धारण किए थे और अपने हाथ में दण्ड भी धारण किए थे। इस बार कुछ माह व्यतीत करने के बाद अन्यत्र स्थान को चले गए। इनका प्रिय भोजन खिचड़ी था। दो वर्ष बाद स्वामी जी का आगमन अँजोरपुर गाँव हुआ अब गेरूवा वस्त्र तो था किन्तु हाथ में दण्ड नहीं रहा। जब लोग स्वामी जी से दण्ड के विषय में पूछे कि आपका दण्ड कहाँ है, इस बात को सुन कर स्वामी जी बोले-बन्धन से मुक्त होने के लिए दण्ड को त्याग दिया है। माँ गंगा में प्रवाहित कर दिया है।

स्वामी जी को रहने के लिए अँजोरपुर गाँव के निवासी स्व0 ब्रह्मदेव राय के खेत में अँजोरपुर गाँव और इन्दरपुर गाँव के सिवान पर इन्द्ररपुर मौजा में मगई नदी के निकट छोटी झोपड़ी भक्तों ने लगा दिया। जहाँ स्वामी जी लगभग दो वर्ष रहकर तपस्या किए। वहाँ दिन भर भक्तों की भीड़ लगी रहती थी संध्या होते सभी को झोपड़ी छोड़ने का आदेश दे देते थे और स्वयं अकेला निवास करते थे। स्वामी जी फिर अन्यत्र स्थान पर चले गए एक वर्ष बाद स्वामी जी अँजोरपुर गाँव पधारे इस बार इच्छा व्यक्त किये यह स्थान गाँव से करीब है और गाँव से दूर गंगा तट पर झोपड़ी लगाने का प्रस्ताव दिए, पुनः इस बार इन्दरपुर मौजे में ही स्व0 लालबचन राय जी के खेत में झोपड़ी डाली गई। इस स्थान पर विभिन्न प्रकार के फल-फूल के पौधे भक्तों ने लगाएं। वहाँ सुन्दर फुलवारी बन कर तैयार हो गई।

स्वामी जी अन्न का परित्याग किए थे मात्र गाय का आधा लीटर दूध सुबह और शाम लेकर जीवन-यापन कर रहे थे, कभी दूध न आने पर बाबा को उपवास करना पड़ता था। उस समय वे दुर्वाघास सील पर पीस कर ग्रहण कर लेते थे। समय पर दूध की उपलब्धता न देख कर स्थानीय भक्तों ने आपस में चन्दा इकठ्ठा करके एक गाय खरीद दिए और उस गाय को गाँव के ही स्व0 दीनानाथ गोंड़ को दे दिया गया। दीनानाथ सुबह शाम आधा लीटर दूध प्रतिदिन स्वामी जी को पहुँचा देते थे। स्वामी जी दण्ड का त्याग कर दिए थे। अब भगवान श्रीकृष्ण एवं माँ राधा जी के उपासक हो गये थे। लोगों ने आपस में चन्दा लगाकर श्री राधा-श्रीकृष्ण के लिए वहाँ पक्का छोटा मन्दिर का निर्माण करा दिए। कुछ समय व्यतीत होने पर झोपड़ी मन्दिर व फुलवारी गंगा जी के कटान से विलिन हो गया। तब पुनः पुराने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्थान पर झोपड़ी लगाई गई जिसमें श्री राधा–श्रीकृष्ण के साथ स्वामी जी रहते थे। पुनः कुछ माह बाद स्वामी जी अन्यत्र स्थान पर चले गये।

लगभग छः वर्ष बाद स्वामी जी सिंथौरा गाँव के श्री रामवृक्ष सिंह व उनके छोटे भाई श्री राम स्वरूप सिंह के साथ श्री राधा–जी की मूर्ति लेकर वाराणसी से आ रहे थे तो बक्सर से पूर्व कर्मनाशा नदी को लांघना न पड़े इसलिए वाराणसी से बलिया आ गए और भैया श्री हरदेव सिंह जी के यहाँ रात्रि विश्राम किए। अँजोरपुर गाँव का विद्यार्थी बलिया पढ़ने गया था, स्वामी जी को देखा वह दौड़कर चरण–स्पर्श किया तथा अँजोरपुर चलने का आग्रह किया। स्वामी जी उसका आग्रह स्वीकार किए और दूसरे दिन–सुबह श्री रामवृक्ष सिंह व श्री रामस्वरूप सिंह को साथ लेकर अँजोरपुर आए थे।

श्री कमलाकर दुबे ग्राम व पोस्ट– थम्हनपुरा जिला–बलिया उत्तर प्रदेश

मेरी आयु 8–9 वर्ष की थी स्वामी जी मेरे गाँव में किसी भक्त के घर निमंत्रण पर भिक्षा करने आए थे, अन्य बच्चों के साथ मैं भी उनका चरण–स्पर्श किया था, प्यार से दुलार किए और मेरी पीठ पर धीरे से मुक्का मारे, बहुत आनन्द हुआ। एक दिन मै अपने चाचा श्री शुभनारायण दुबे जी के साथ अँजोरपुर – इन्दरपुर गाँव के सिवान पर मगई नदी के निकट स्थित झोपड़ी में स्वामी जी का दर्शन करने गया था। झोपड़ी में बांस के फट्टे से निर्मित चांचर पर स्वामी जी बैठे थे और उनके निकट तीन–चार गाँव के लोग बैठे थे। मुझे पूर्ण स्मरण है झोपड़ी के पास बाहर मिट्टी के घड़े में पानी रखा गया था। भक्त जब घर से खाने की सामग्री ले आते थे तो स्वामी जी अपनी अँजुली में लेकर भिक्षा ग्रहण करते थे। उनकी कुटियाँ में कोई व्यक्ति रात्रि में नहीं रहता था। कुछ माह बाद स्वामी जी अन्यत्र स्थान को चले गये।

जब वापस आये तो भिखारीपुर गाँव के पास इन्दरपुर गाँव के मौजे में गंगा तट पर इनकी झोपड़ी लगी थी वहाँ भिन्न–भिन्न प्रकार के फूल–फलों के पौधे लगे थे, फूलवारी बहुत सुन्दर थी। उस समय अँजोरपुर गाँव के भुनेश्वर राय उनकी सेवा में रहते थे जो बाद में संन्यासी हो गये। स्वामी जी अन्न का परित्याग किए थे मात्र आधा लीटर दूध पर रहते थे जिस

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दिन दूध नहीं होता तो दुर्वा घास को सील पर पीसकर उसे ग्रहण कर लेते थे। बाबा की कुटिया गंगा जी के कटान में विलिन हो गई तो स्वामी जी के लिए पुराने स्थान पर झोपड़ी लगाई गई। फिर वहाँ से स्वामी जी अन्यत्र स्थान को चले गए। कहाँ गए किसी को जानकारी नहीं हुई। लगभग 8-9 वर्ष बाद बाबा इस क्षेत्र की जनता को दर्शन देने के उद्देश्य से अँजोरपुर गाँव को जा रहे थे।

उस समय मैं अपने दरवाजे पर बैठा था अचानक मेरी नजर बाबा पर पड़ी दौड़ कर उनका चरण-स्पर्श किया बाबा के साथ दो व्यक्ति और थे, जिन्हें मैं नहीं पहचान पाया। स्वामी जी से निवेदन किया बाबा मेरे दरवाजे पर चलिए। मेरा विद्यार्थी जीवन था, दौड़कर घर में गया घर से गुड़ और पानी लेकर बाहर दरवाजे पर आया स्वामी जी और वे दोनो व्यक्ति जल-ग्रहण किए तथा कुछ क्षण रूक कर अँजोरपुर गाँव के लिए प्रस्थान किए। बाद में ज्ञात हुआ कि वे दोनों भाई सिंथौरा गाँव के निवासी श्री रामवृक्ष सिंह व श्री रामस्वरूप सिंह थे। उसके बाद मेरे मन में यह भाव जागृत हुआ। मैं गुरु मंत्र दीक्षा अपने पारिवारिक कूल गुरु के परिवार से नहीं लूँगा, मेरे माता-पिता के गुरु योग्य थे, परन्तु अब उनके परिवार में कोई योग्य नहीं दिखाई दे रहा।

एक दिन स्वामी जी का दर्शन के लिए अँजोरपुर गया था। स्वामी जी श्री परमात्मानन्द पण्डित जी के दरवाजे पर निवास किए थे। वहाँ पहुँच कर बाबा का चरण-स्पर्श किया और उनकी चरण सेवा करने लगा। धीरे से बोला-बाबा मुझे शिष्य बना ले। मेरा अनुरोध सुन कर स्वामी जी बोले-कल तुम्हारे यहाँ आऊँगा दीक्षा दे दूँगा। फिर क्या था स्वामी जी से बोला बाबा मुझे क्या करना होगा। यह सुनते ही स्वामी जी कहने लगे। अपने पुरोहित से सत्यनारायण भगवान की कथा सून लेना और कथा का प्रसाद लोगों में वितरण कर देना। मैं खुशी में झूमता हुआ घर आया। अपनी धर्मपत्नी से बताया। दूसरे दिन हम पति-पत्नी कूल पुरोहित जी को घर बुला कर सत्यनारायण भगवान की कथा सुन कर लोगों में प्रसाद वितरण करा दिये जैसा-स्वामी जी का आदेश था और हम दोनों पति-पत्नी गुरुदेव के आने का इन्तजार कर रहें थे कि स्वामी जी असवारी (डोली) में बैठकर लगभग 3.00 बजे दिन में मेरे घर पधारें। परिवार के सभी सदस्य स्वामी जी का दर्शन किए। पति-पत्नी हम

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

दोनों बाबा की आरती किए। आँगन में जहाँ सत्यनारायण भगवान की कथा श्रवण किए थे वहाँ छोटी चौकी पर बाबा को आसन बिछा कर बैठने की व्यवस्था किया। बाबा आसन पर बैठ कर निम्न मंत्र का उच्चरण किये-

"ऊँ नमो भगवते, वासुदेवाय"

और हम दोनों पति-पत्नी को आदेश दिए इस मंत्र को याद कर लो इसे हमेशा जपते रहना। हम दोनों बाबा के चरण पखार कर चरणामृत ग्रहण किए और जो जल शेष था, उसे घर आँगन व दरवाजे पर ले जाकर छिड़काव किए। संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) (गुरुदेव) जब प्रसाद ग्रहण कर लिए। तब हम दोनों पति-पत्नी उनके प्रसाद ग्रहण करने के बाद उनके हाथों से दिए गये प्रसाद लेकर व्रत तोड़े। मुझे विश्वास नहीं होता था कि मेरे जैसा-पापी विषयवासना में लिप्त कामी नित्य प्रति झूठ बोलने वाला राक्षसी प्रवृति वाले व्यक्ति को बाबा इतनी जल्दी गुरू मंत्र दीक्षा दे देंगे ? मेरे जीवन का सबसे सुन्दर आनन्द व खुशी का दिन रहा, जिसका वर्णन के लिए मेरे पास शब्द नहीं है। कुछ समय मेरे घर रुक कर 'गुरुदेव उसी (असवारी) डोली में बैठकर सागरपाली जाने के लिए प्रस्थान किए, गुरूदेव की डोली (असवारी) के पीछे-पीछे सागरपाली चट्टी तक आया। रास्ते में बाबा से पूछा स्वामी जी आपका जन्म स्थान कहाँ है बाबा का उत्तर था सारण गुरुदेव का मुख मण्डल को देखकर दूसरा प्रश्न नहीं किया। मेरी हिम्मत नहीं हुई।

स्वामी जी को बलिया स्थित भैया श्री हरदेव सिंह के घर उदयपुरा कोठी जाना था और वहाँ से उन्हें श्री गोपालधाम जाने का कार्यक्रम था। वे रिक्शा पकड़ कर बलिया गए और मैं गाँव वापस आ गया। गुरुदेव से सम्बन्धित दो घटनाएँ मुझे आज भी हमेशा याद रहती है-

प्रथम घटना-

मैं जनपद बलिया के लो0नि0वि0 (उ0प्र0) में सेवारत था अचानक मेरा स्थानान्तरण जनपद-गाजीपुर में हो गया। बलिया वापस आने की इच्छा थी किन्तु मेरे पास कोई व्यवस्था जुगाड़ व सिफारिश नहीं थी, जिसके माध्यम से मेरा स्थानान्तरण जनपद-गाजीपुर से बलिया जनपद में हो सके। मात्र गुरुदेव का भरोसा व विश्वास था उन्हीं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

के आशीर्वाद से मेरा स्थानान्तरण बलिया जनपद में हो पाएंगा। इस सम्बन्ध में गुरुदेव को पत्र भेजा मैं बलिया वापस आना चाहता हूँ। कुछ माह व्यतीत होने पर अधीक्षण अभियन्ता, लो0नि0वि0 वाराणसी के आदेश से मेरा स्थानान्तरण गाजीपुर जनपद से बलिया जनपद में हो हो गया। मैं बहुत प्रसन्न हुआ। किन्तु गाजीपुर से अवमुक्त नहीं हुआ था, कि उसी समय प्रमुख अभियन्ता लो0नि0वि0, लखनऊ के कार्यालय से मेरा स्थानान्तरण इस बार गाजीपुर जनपद से जौनपुर-जनपद के लिए हो गया। अब मैं बुरी तरह फँस गया। दु:खीत मन से गुरूदेव को पुनः पत्र भेज कर उन्हें अवगत कराया कि मेरा स्थानान्तरण जौनपुर हो गया ऐसा प्रतीत हो रहा है, अब मैं बलिया वापस नहीं आ पाऊँगा फिर भी मुझे पूर्ण विश्वास था कि गुरु की कृपा होगी तो मैं बलिया आ जाऊँगा। कुछ दिन बाद गुरुदेव के आशीर्वाद से पुनः मेरा स्थानान्तरण जनपद-गाजीपुर से जनपद-बलिया हो गया। गाजीपुर से अवमुक्त होकर जनपद-बलिया कार्यालय में अपना कार्यभार ग्रहण किया। दो-तीन दिन बाद मुझे सूचना मिली कि गुरुदेव भैया श्री हरदेव सिंह जी के आवास पर पधारे हैं मैं तुरन्त गुरूदेव का दर्शन करने भैया जी के आवास पर गया। जहाँ बाबा का दर्शन और आशीर्वाद प्राप्त हुआ।

दूसरा घटना-

दिनांक 04.07.1979 की वह रात्रि असगुन स्वप्न की रात्रि! आज भी उस भयावह स्वप्न का दृश्य मेरे हृदय को भय पैदा कर देता है। उस रात मैं अपने कार्यालय की मेज पर सो रहा था। स्वप्न में देखा दो जल्लाद अपने हाथ में चमचमाती तलवार और फरसा लेकर एक श्वेत वर्ण हंस को दौड़ा रहे है हंस असहाय अवस्था में भयभीत होकर उनसे बचने के लिए इधर-उधर दौड़-भाग रहा है, अचानक दोनों जल्लाद तलवार और फरसे से हंस पर एक साथ प्रहार कर देते हैं श्वेत वर्ण हंस लहुलुहान होकर पृथ्वी पर तड़पने लगा इसके बाद मेरी नीद खुल गई, मैं घबराकर उठा और बैठ गया। उसके बाद पुनः मेरी नीद नहीं लगी बैठकर स्वप्न का विचार कर रहा था। मोबाइल फोन का युग नहीं था मेरे पिता जी गाँव के आदमी से संदेश भेजें, वह व्यक्ति सुबह 8.00 बजे आया मिला और बोला-स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी अब नहीं रहे। मुझे उसकी बात पर विश्वास नहीं हो रहा था। वह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अपनी बात आगे बढ़ाते हुए बोला–अँजोरपुर के लोंग उनका पार्थिव शरीर अँजोरपुर गाँव से गंगा घाट लेकर जा रहे है। उसकी बात सुनते ही मैं पागल की भाँति अपनी साईकिल लेकर गंगा घाट की ओर चल दिया। किसी तरह अँजोरपुर गाँव के सामने गंगा घाट पहुँचा लोग बाबा के पार्थिव शरीर को गंगा जी में विसर्जित जल समाधि दे चुके थे और वे लोंग स्नान कर रहे थे, उस समय वहाँ सैकड़ो की संख्या में लोग उपस्थित थे।

मैं अभागा गुरूदेव के पार्थिव शरीर का अन्तिम दर्शन नहीं कर सका। अन्य लोगों के साथ रोते–रोते घर वापस आया। उधर मेरी धर्म पत्नी गुरुदेव का समाचार पाकर घर से उनके अन्तिम दर्शन हेतु अँजोरपुर पैदल जा रही थी, रास्ते में बन्धे पर बाबा के दर्शन कर वापस आ रहे लोग उससे बताएं अब जाने से दर्शन नहीं हो पाएगा। स्वामी जी का पार्थिव शरीर लेकर लोग गंगा घाट चले गये हैं वह भी रास्ते से लौट आई। इस प्रकार हम दोनों पति–पत्नी गुरुदेव के पार्थिव शरीर का अन्तिम दर्शन से वंचित हो गये।

वह दिन मेरे जीवन का सबसे भयावह व कष्ट दायक दिन रहा। दु:खों का पहाड़ मेरे सिर पर गिर पड़ा। हृदय में अत्यन्त कष्ट हुआ। गुरुदेव के गो लोक गमन होने पर मेरे मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई। उनके माता–पिता कौन थे, और उनका जन्म स्थान कहाँ है? इस सम्बन्ध में लोगों से वार्ता करता रहा, किन्तु सभी लोंग बताने में असमर्थ थे। दिनांक 23.10.2008 को भण्डारे के अवसर पर श्री गोपालधाम गया था। वही मेरी मुलाकात श्रीराम कृष्ण चौधरी पुत्र स्व0 रामनिवास चौधरी, ग्राम–वीरमपुर, कृतपुरा, जिला–भोजपुर (बिहार) से हुई वार्ता में जान पहचान हुई। उनके साथ श्री राम सिंह राय ग्राम–बहोरनपुर, जिला–आरा(बिहार) व श्री कामेश्वर राय मुखिया जी ग्राम–हलुआना, थाना–चन पोखरी, जिला–भोजपुर (बिहार) थे। वार्तालाप में श्री रामकृष्ण चौधरी बताएँ जब मैं लगभग दस–बारह वर्ष की आयु का था। मेरे पिता जी के आग्रह पर स्वामी जी उनके बागीचे में एक माह तक रह कर तपस्या की थी। श्री रामकृष्ण चौधरी के पिता स्व0 राम निवास चौधरी से स्वामी जी वार्ता के समय कभी बताएं थे कि वे जिला–छपरा के अन्तर्गत बनियापुर थाना में भेड़वनिया गाँव के रहने वाले एक सरिया भूमिहार ब्राह्मण परिवार के है। श्री रामकृष्ण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

चौधरी से वार्ता होने के बाद मुझसे छपरा जिला का जो भी व्यक्ति मिला उससे भेड़वनिया गाँव कहाँ है के विषय में उस व्यक्ति से जानकारी करने का प्रयास करता रहा।

असफल होने पर वर्ष 2009 के जून महीने में एक दिन गुरुदेव के माता-पिता तथा जन्म स्थान की जानकारी करने के उद्देश्य मन में धारण कर अपने कार्यालय से अवकाश लिया तथा बलिया से छपरा के लिए ट्रेन से चल पड़ा। लोगों से पुछ कर सर्व प्रथम बनियापुर थाने का पता ज्ञात किया, बस पकड़ कर बनियापुर थाना पहुँचा। फिर वहाँ से भेड़वनिया गाँव जाने के लिए स्थानीय लोगों से मार्ग की जानकारी प्राप्त की उनके अनुसार मोरा मोड़ के पास भेड़वनियाँ गाँव स्थित है ज्ञात हुआ। उस समय बनियापुर थाने से मोरा मोड़ जाने के लिए कोई साधन उपलब्ध नहीं था। धूप और लू से तपती धरती तथा भीषण गर्मी होने पर मार्ग में किसी तरह पैदल चल कर मोरा मोड़ पहुँच गया। पैदल यात्रा करने के कारण काफी थक चुका था। वहीं पर एक नाई की दुकान पर बैठ कर आराम करने लगा नाई से दाढ़ी बनवाया तथा नाई से पूछा भैया-मुझे भेड़वनिया जाना है वह गाँव किधर है? नाई ने पूछा आप किसके घर जाएंगे? मेरा उत्तर था मैं किसी को जानता पहचानता नहीं हूँ। क्या उस गाँव में एक सरिया गोत्र के भूमिहार ब्राह्मण रहते हैं? उन्हीं लोगों के पास जाकर ज्ञात करना है।

आज से पच्चास वर्ष पूर्व की घटना है, एक सरिया भूमिहार ब्राह्मण परिवार से किसी परिवार का एक लड़का छोटी उम्र में साधु हो गये थे, उन्हीं के विषय में जानकारी करने आया हूँ। नाई बोला-कार्य कठिन है, पर स्थानीय लोगों से पूछ कर बताया-हाँ भेड़वनिया गाँव में एक सरिया गोत्र के भूमिहार ब्राह्मण लोंग रहते है? जब हम उसकी दुकान से चलने लगे तो नाई बोला यदि आपको वहाँ रूकने में कठिनाई हो तो मेरी दुकान पर आ कर रात बिता लेना। उस नाई के निशान देही पर मैं वहाँ से भेड़वनिया गाँव के पास पहुँच गया। संध्या हो रही थी, गाँव के बाहर लगभग 70-75 वर्ष के एक वृद्ध व्यक्ति भैंस चरा रहे थे, पास बुलाकर उनसे पूछा-आप भेड़वनिया गाँव के है? उनका उत्तर था हाँ मैं इसी गाँव का हूँ। उस व्यक्ति से मेरा दूसरा प्रश्न था। आपका नाम क्या है? वे बोले मेरा नाम बच्चा सिंह है। मैने उनसे पूछा, 'आज से लगभग 50 वर्ष पूर्व आपके गाँव का कोई लड़का साधु बन गया था। उनका जबाव

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

मिला- हाँ (जीता बाबू) के परिवार का एक लड़का छोटी उम्र में साधु बन गया था। वे हमें श्री इन्द्रदेव सिंह उर्फ (जीता बाबू) के घर ले कर गए। जीता बाबू घर पर नहीं थे, उनकी पत्नी ने बताया कि वे महराजगंज गए हैं। फिर वे हमें उनके पट्टीदार श्री विद्या सिंह जी के दरवाजे पर लेकर गए।

विद्या सिंह जी की आयु लगभग 90-95 वर्ष की थी, वे चल फिर नहीं पा रहे थे, चारपाई पर लेटे रहते थे किन्तु उनकी आँख और कान दोनों अच्छी तरह कार्य कर रहे थे। उनके दरवाजे पर जब हम पहुँचे, अगल-बगल के सभी पट्टीदार इकठ्ठे हो गये। स्वामी जी के तीन फोटो मेरे पास थे, उन्हें मैं उन लोगों को बाबा का फोटो बारी-बारी करके दिखाया जाहिर है बात पुरानी होने के कारण वे लोग फोटो की पहचान नहीं सके। अब मैं निराश होने लगा था। उन्हीं लोगों में से एक व्यक्ति बोला- यह फोटो विद्या बाबा को दिखाया जाय, वही कुछ बता पाएंगे। उपस्थित लोगों में से तीन आदमी मेरे साथ श्री विद्या सिंह जी के निकट गये, और बारी-बारी से फोटो श्री विद्या सिंह जी को दिखाया गया, दो फोटो तो वे नहीं पहचान पाए, पर जब सबसे कम उम्र वाला फोटो उन्हें दिखाया गया तो उसे तुरन्त पहचान कर बोले- यह फोटो तो जगन्नाथ दास का है यह हमारे परिवार के है पच्चास वर्ष पूर्व बचपन में साधु हो गए थे। विद्या सिंह की बात सुन कर मेरे मन में प्रसन्नता हुई। मैं उन लोगों के साथ उनके दरवाजे पर आ गया। लोगों ने मेरा स्वागत सत्कार किया। विद्या सिंह के घर से नाश्ता आया। मैं नाश्ता किया फिर वे लोग बोले-जीता बाबू घर आते ही होंगे।

कुछ समय व्यतीत होने पर श्री इन्द्रदेव सिंह स्कूटर से आते दिखाई दिए। वे लोग आवाज लगा कर उनको अपने पास बुलाए। पट्टीदारों ने उनसे बताया। जीता बाबू मेरे हाथ से फोटो लेकर उसे बारी-बारी से देखे फोटो की पहचान किए और फूट-फूट कर रोने लगे। कहने लगे चाची जी को पच्चास वर्ष से ढूढ़ रहा था। इनका पता ज्ञात न होने से हम उनका समाचार भी नहीं पा रहे थे। आज आपने उनका फोटो दिखाया है हम बहुत खुश हैं। वे अपने साथ मुझे अपने घर लेकर गये। अपनी पत्नी को बुला कर बोले-चाचा जी का समाचार लेकर बलिया से कमलाकर दुबे जी आए हैं। यह संवाद सुनते ही उनकी पत्नी भावुक होकर रोने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लगी। देर रात्रि तक मुझसे वार्ता करते रहे। रात्रि में उन्हीं के घर भोजन एवं विश्राम किया। सुबह इन्द्रदेव सिंह अपने परिवार की वंशावली मुझे उपलब्ध कराए और बस पर चढ़ाने के लिए स्वयं अपने स्कूटर पर बैठा कर मोरा मोड़ तक पहुँचाए।

जहाँ उनके रिश्तेदार श्री जगनरायण सिंह पुत्र स्व0 रामचन्द्र सिंह ग्राम-सलेमपुर, पोस्ट-गोविन्दपुर, जिला-सिवान (सेवा निवृत्त अध्यापक) से मुलाकात हुई। इनकी चचेरी बहन की शादी स्वामी जी के बड़े भाई श्री राधे राय के साथ हुई थी। वे स्वामी जी के बचपन में सहपाठी थे प्राईमरी स्कूल में साथ-साथ शिक्षा प्राप्त किए थे। श्री जगनरायण सिंह जी अपने बचपन को याद करते हुए बोले-श्री जगन्नाथ दास छोटी उम्र से शिक्षा में कुशाग्र बुद्धि के विद्यार्थी थे। बहुत कम बोलते थे परन्तु चित्रकला एवं मिट्टी से देवी-दवताओं की सुन्दर-सुन्दर मूर्तियाँ बना देते थे। सुन्दर अक्षर बना कर लेखन कार्य करते थे। शान्त स्वभाव के थे, उनका स्वभाव वैरागी जैसा था, छोटी आयु में ही वे दो बार अपने पारिवारिक कूल गुरु मंहथ जी के पास नूननगर जाकर उनसे शिष्य बनाने का आग्रह किए थे। महंथ जी उनकी छोटी उम्र होने पर अपने आदमी के साथ भेड़वनिया गाँव उनके घर भिजवा दिए।

श्री इन्द्रदेव सिंह उर्फ (जीता बाबू) के कथनानुसार ग्यारह-बारह वर्ष की छोटी आयु में मेरे चाचा श्री जगन्नाथ राय जी एक दिन घर छोड़कर चले गये परिवार के लोग उनकी खोज-बिन किए किन्तु कहाँ गए, मिले नहीं। दो वर्ष बाद किसी व्यक्ति ने आकर बताया। रिविलगंज रेलवे स्टेशन के पास गेट मैंन की खाली गुमटी में एक साधु रहते है। उन्हीं के साथ जगन्नाथ दास जी वहाँ रह रहे है। यह खबर पाकर उनकी भाभी यानि हीरा राय की धर्म पत्नी उन्हें घर वापस लाने के लिए अपने पुत्र इन्द्रदेव सिंह उर्फ (जीता बाबू) को रिविलगंज भेजी। इन्द्रदेव सिंह रिविलगंज गए चाचा जी के साथ तीन-चार दिन रहे किन्तु (श्री जगन्नाथ राय उर्फ स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उनके साथ भेड़वनिया वापस नहीं गए। सुबह-शाम साधु जी की सेवा करते तथा दिन में रिविलगंज स्थित संस्कृत विद्यालय में विद्या अध्ययन करने जाते थे। इन्द्रदेव सिंह अकेले घर वापस आ गये। कुछ दिन बाद जगन्नाथ राय जी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रिविलगंज छोड़ कर अन्यत्र स्थान पर चले गए।

बहुत दिनों बाद जब जगन्नाथ राय की माता जी का स्वर्गवास हुआ तो वे सतधन के दिन भेड़वनिया गाँव आ गये थे। उस समय साधु भेष में थे, वे स्वयं खाना बनाते थे और भगवान को भोग लगाते थे। श्राद्ध क्रिया समाप्त होने के बाद वे पुनः गाँव से चले गए। कुछ समय बाद वे एक बार फिर भेड़वनिया गाँव आए थे। उस समय उ०प्र० के देवरिया जिले में संस्कृत विद्यालय बनाने के लिए चन्दा की माँग किए थे। परिवार वाले यथा शक्ति चन्दा दिए। उस दिन के बाद वे कभी भेड़वनिया नहीं आए और न परिवार से कभी सम्पर्क किए।

स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) के महा प्रयाण के पश्चात् लगभग 30 वर्ष बाद मैं गुरूदेव की जन्मभूमि पैतृक गाँव भेड़वनिया थाना-बनियापुर जिला-छपरा (बिहार) (वर्तमान पता गाँव भेड़वनिया, थाना-भगवानपुर, जिला-सिवान) (बिहार) का पता लगाकर पहुँचा था और उनके बड़े भाई के पुत्र श्री इन्द्रदेव सिंह उर्फ (जीता बाबू) से मुलाकात की। मेरी सूचना पर श्री गोपालधाम सिंथौरा जंगल स्थित मन्दिर के उत्तराधिकारी श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी जी श्री गोपालधाम से लगभग चौदह-पन्द्रह भक्तों के साथ बाबा की जन्म भूमि को नमन एवं दर्शन करने हेतु आए। मैं भी अपनी धर्म पत्नी श्रीमती कौशल्या देवी के साथ हो लिया। गुरुदेव की जन्मभूमि और उनके लौकिक परिवार का सही पता लगा लेने की सबको बड़ी खुशी थी।

श्री इन्द्रदेव सिंह उर्फ (जीता बाबू) हम सभी का स्वागत सत्कार किए खुशी में अपने घर पर भव्य भण्डारे का आयोजन किए। जिसमें श्री गोपालधाम के भक्तों सहित भेड़वनिया गाँव के उनकी पट्टीदारी के लोग भी भण्डारे का प्रसाद ग्रहण किए। दूसरे दिन श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी के साथ सभी भक्त वापस श्री गोपालधाम चले गये। श्री इन्द्रदेव सिंह के अनुसार उनके पूर्वज ग्राम-नूननगर रामपुर, जिला-छपरा (बिहार) के मूल निवासी रहे। श्री दिलीप राय की शादी ग्राम-भेड़वनिया में हुई थी। पत्नी का स्वर्गवास होने पर अपने पुत्र प्रभु राय का पालन-पोषण के लिए उनके ननिहाल में नाना-नानी के यहाँ भेड़वनिया पहुँचा दिए

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

थे। भेड़वनिया गाँव में उनका पालन-पोषण हुआँ, बड़े होने पर प्रभु राय अपने ननिहाल में ही रहने लगे। मेरे चाचा श्री जगन्नाथ राय (श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ जंगलिया बाबा) मुझसे 5-6 वर्ष बड़े थे। उनकी माता जी मानसिक रोगी थी। उनका पालन-पोषण मेरी माँ ने किया था। मेरी माँ उनसे हमेशा प्यार करती थी। श्री इन्द्रदेव सिंह उर्फ (जीता बाबू) द्वारा प्रदत्त वंशावली निम्न है-

वंशावली निम्नलिखित है-

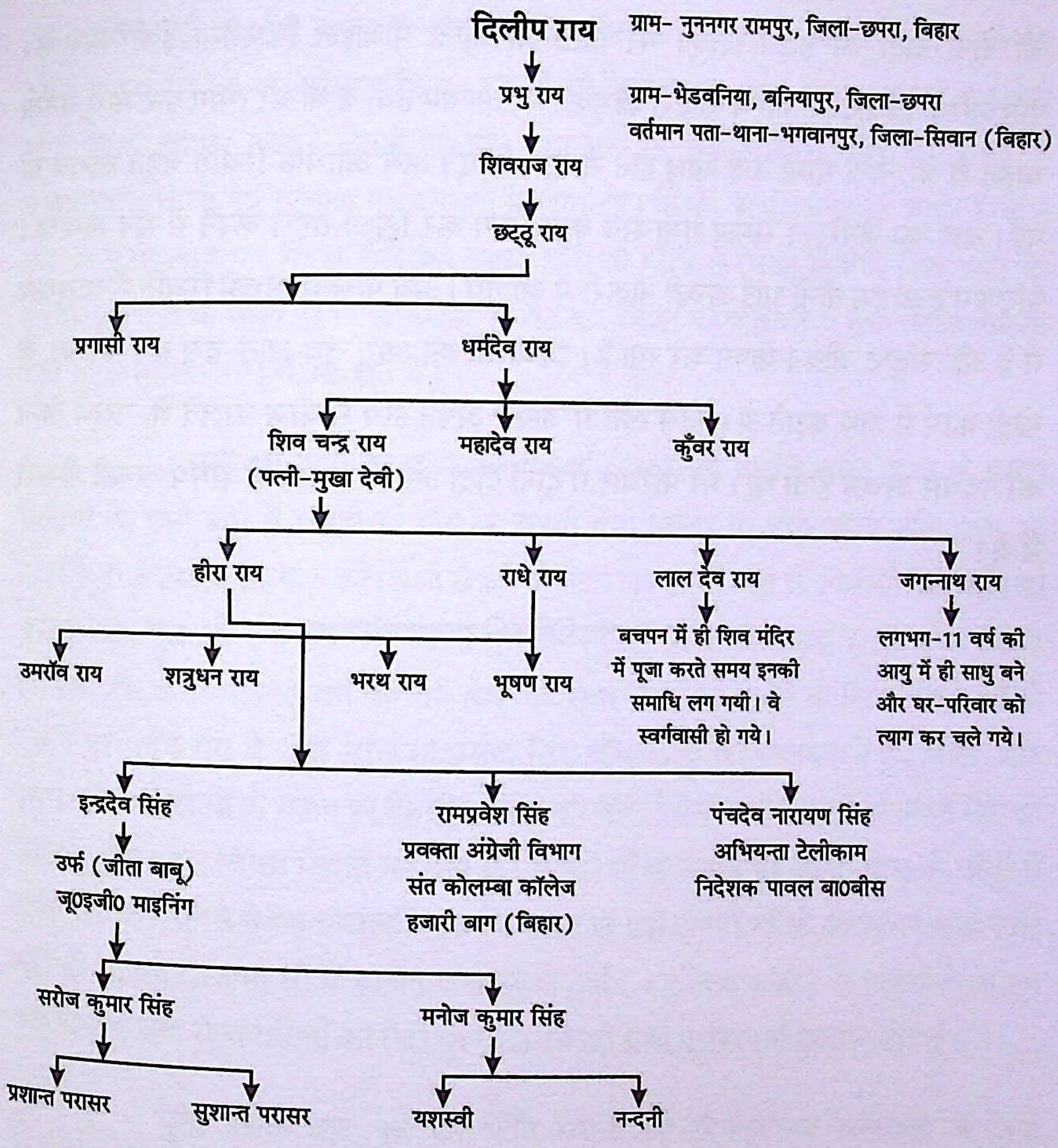

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री इन्द्रदेव सिंह उर्फ (जीता बाबू) वार्ता में बोले–मेरे परदादा जी यानी चाचा श्री जगन्नाथ राय जी (श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ जंगलिया बाबा) के दादा जी बेतिया स्टेट में इंस्पेक्टर थे, उस समय पारिवारिक स्थिति बहुत सुदृढ़ थी। परदादा जी के मृत्यु के बाद उनके उत्तराधिकारी बेटे आपसी विरोध किए परिवार का बटवारा हो गया उन लोगों के स्वर्गवासी होते ही परिवार की आर्थिक स्थिति खराब हो गई। आपसी बेइमानी के कारण जमींदारी व खेती की भूमि जो जहाँ था उसे अपने नाम करा लिया चम्पारण में जमीन मकान को दोनों दादा जी हड़प लिए। मेरे पिता जी आटो मोबाइल डिप्लोमा इंजीनियर थे। पारिवारिक विवाद के कारण नौकरी छोड़कर घर आ गए तथा वे भी घर त्याग कर साधु बनना चाहते थे मेरे नाना मामा उन्हें साधु होने से मना किए। अब आर्थिक स्थिति बहुत खराब हो गई। बाद का जेनरेशन समझ गया सब कुछ त्याग कर शिक्षा ग्रहण करने में मन लगाया। परिणाम हुआ हम तीनो भाई अच्छी नौकरी में आ गये। अब परिवार अच्छी स्थिति में व सुधार में है और संतुष्ट जीवन यापन कर रहा है। चाचा जी की आयु जब आठ–दस वर्ष की थी, वे खेती कार्य में हाथ बटाते थे। जिस खेत में जाकर अपने हाथ से बीज डालते थे, उसमें अन्न की पैदवार अच्छी होती थी। मेरे परिवार में दोनों दादा अंग्रेजी शासन के समय अच्छी नौकरी में थे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संक्षिप्त जीवन-परिचय की एक झलक

संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती उर्फ (पुजारी जी)

(श्री सुनिल प्रसाद सिंह, उर्फ श्री मुन्ना सिंह)

श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) लगभग 24-25 वर्ष की अल्प आयु में ही सिथौंरा गाँव के दक्षिण दिशा में स्थित रत्नागिरि पहाड़ी के नीचे जंगल में चार्तुमास किए, उसके बाद जंगल से पद यात्रा करते हुए अन्य स्थानों पर जा कर तपस्या किए। स्वामी जी कुछ समय इधर-उधर रह कर पुनः श्री गोपालधाम वापस आए। उसके पश्चात् लगातार 25 वर्ष सिंथौरा गाँव के जंगल में एकान्तवास करते हुए तपस्या एवं साधना मे लीन रहे। कभी-कभी जंगल से बाहर निकल कर 4-5 किलो मीटर पैदल चल कर आस-पास के गाँवों में भिक्षा लेने के लिए जाते थे, स्वामी जी गाँव के बाहर ही किसी स्थान पर बैठ कर भिक्षा ग्रहण करते थे तथा भिक्षा लेने के बाद पुनः वापस जंगल में आ जाते थे।

स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) बलि-प्रथा के प्रबल विरोधी थे, इसी क्रम में चण्डी मौं गाँव के चण्डी देवी मन्दिर पर होने वाली बलि प्रथा का स्वामी जी ने विरोध किया। बलि प्रथा रोकने के लिए चण्डी मौं गाँव के निवासी श्री चन्द्रिका प्रसाद सिंह पुत्र श्री रामपाल सिंह अपने पुत्र श्री सुनिल प्रसाद सिंह उर्फ (श्री मुन्ना सिंह) जिनकी उम्र लगभग 5-6 वर्ष की रही होगी को साथ लेकर बलि देने के लिए चण्डी माँ के स्थान पर पहुँच गए थे। श्री चन्द्रिका प्रसाद सिंह गाँव वालों को ललकारते हुए बोले-यदि आप लोंग चण्डी माँ के स्थान पर किसी भी पशु की बलि देगें तो उसके पहले मैं अपने बेटे की बलि दे दूँगा। इस विषम स्थिति को देख कर चण्डी माँ के स्थान पर आस-पास के गाँवों से उपस्थित जन मानस ने यह फैसला लिया कि आज से यहाँ चण्डी माँ के स्थान पर कोई बलि नहीं दी जाएगी। स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) के प्रयास के कारण उस दिन के बाद से चण्डी माँ की वेदी पर बलि देने की प्रथा पूर्णरूप से समाप्त हो गई।

पुनः उसके बाद पूर्व की भाँति स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) गाँव-गाँव में जाकर भिक्षा प्राप्त करने लगे। एक दिन स्वामी जी भिक्षा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

प्राप्त करने के लिए चण्डी मौ गाँव गए। उस समय उनके हाथ में ढेला वृक्ष की (जंगली लकड़ी) से निर्मित सुन्दर छड़ी थी। उसे देख कर गाँव के छोटे-छोटे बच्चे कहने लगे-भागों बच्चों को पकड़ने के लिए गाँव में लकड़सुंघवा आया है। उन बच्चों की बात सुन कर गांव के अन्य बच्चें इधर-उधर भागने-दौड़ने व छुपने लगे। श्री सुनिल प्रसाद सिंह उर्फ (श्री मुन्ना सिह) निर्भिक होकर धीरे-धीरे स्वामी जी के पास आए आदर सहित जंगलिया बाबा का चरण स्पर्श किए और स्वामी जी के हाथ में सुन्दर छड़ी को देख कर छड़ी की माँग किए। स्वामी जी धीरे से मधुर वाणी में बोले-मुन्ना इस छड़ी से भी अच्छी वस्तु तुम्हें देंगे, तेरा जीवन सफल हो जाएगा। बाल्यावस्था के कारण स्वामी जी के कथन पर मुन्ना सिंह जी का ध्यान नहीं गया वे कुछ समझ नहीं पाए। घर जाकर अपनी माँ से (जंगलिया बाबा) को भिक्षा कराने के लिए भोजन प्रसाद लाए, स्वामी जी अपने हाथ की अंजुली में ले कर भिक्षा ग्रहण किए और वापस जंगल चले गए। समय व्यतीत होता गया श्री गोपालधाम के मन्दिर पर लोगों के पहुँचने का क्रम चलता रहा। लोग बाबा के दर्शन के लिए जंगल में जाते और संध्या होने पर अपने घर को वापस चले जाते थे।

श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंबलिया बाबा) के परम् प्रिय शिष्य संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी) बाल्य अवस्था से ही स्वामी जी से भली-भाँति परिचित थे। पुजारी जी के पिता श्री चन्द्रिका प्रसाद सिंह, सिंथौरा गाँव के जंगल में स्थित श्री गोपालधाम के मन्दिर पर जंगलिया बाबा का दर्शन करने अपने गाँव से प्रायः जंगलिया बाबा के पास आते-जाते थे। उन्हीं के आने-जाने को देख कर उनके पुत्र श्री सुनील प्रसाद सिंह उर्फ (श्री मुन्ना सिंह) भी जंगल में बाबा का दर्शन करने तथा आशीर्वाद प्राप्त करने जंगल स्थित श्री गोपालधाम में आने लगे।

दिनांक 19.03.1979 ई० दिन-सोमवार चैत मास कृष्ण पक्ष षष्ठी के दिन रात्रि बेला में डकैंतो का सरगना हथियार बन्द साथियों को साथ लेकर श्री गोपालधाम मन्दिर से श्री राधा व श्रीकृष्ण की मूर्ति के साथ-साथ मंन्दिर में कीर्तन भजन के समय बजने वाले तबला, हारमोनियम, ढ़ोलक आदि वाद्य यन्त्रों के सहित मन्दिर निर्माण के लिए रखे गए इकठ्ठा धन का थैला भक्तों को पिस्तौल दिखा कर उन्हें डराते हुए लेकर चले गए। चोरी की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

घटना के दिन श्री सुनील प्रसाद सिंह उर्फ (श्री मुन्ना सिंह) मन्दिर स्थित जंगलिया बाबा की गद्दी के समीप सोये थे। डाकुओं ने मन्दिर पर धावा बोला वे सर्व प्रथम वहाँ उपस्थित भक्तों को डराने धमकाने के लिए अपने हाथ में पिस्तौल लेकर भक्तों पर निशाना बना कर उन्हें डराने लगे। उस समय श्री मुन्ना सिंह क्रोधित होकर डाकू के हाथ की पिस्तौल छीनने का विचार कर अपना हाथ उठा रहे थे, उसी समय जंगलिया बाबा मुन्ना सिंह का हाथ पकड़ कर हाथ का कोई नस दबा दिए जिससे मुन्ना सिंह बेहोश हो गए। इस घटना के बाद स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) अत्यन्त दुःखीत हो गए थे। यहाँ तक कि वे भगवान की आरती एवं पूजा स्वयं करना बन्द कर दिए थे, अपने देख-रेख में मन्दिर में पूजा-अर्चना के लिए (श्री सुनिल प्रसाद सिंह उर्फ श्री मुन्ना सिंह) को साम्प्रतिक पुजारी नियुक्त किए तथा उन्हें श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी आस्पद नाम से सम्मानित भी किए थे।

दिनांक 30.05.1979 ई0 दिन-बुधवार को स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) श्री गोपालधाम में उपस्थित भक्तों से यह कह कर अँजोरपुर गाँव के लिए यात्रा करने का कार्यक्रम बनाएं कि वे माँ गंगा की रेती पर सोना चाहते है। कोई भक्त उनकी शब्दावली को समझ नहीं सका कि आने वाले भविष्य में क्या कुछ होगा किसी को मालूम नहीं था।

चलते समय श्री गोपालधाम स्थित श्री राधा कूप पर आते ही स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (श्री जंगलिया बाबा) आवाज लगाकर (पुजारी श्री मुन्ना सिंह) को अपने पास बुलाए और बोले-बेटा भगवान की पूजा आरती करना! स्वामी जी का पैर पकड़कर (पुजारी श्री मुन्ना सिंह) बोले-यह काम मुझसे कदापि नहीं होगा, मैं पापी अधम पाखण्डी व दुष्ट विचार का क्रोधी व्यक्ति हूँ यह मुझसे सम्भव नहीं है। स्वामी जी बोले-मैं तुम से यह कार्य करवा लूँगा। तब मुन्ना सिंह विनम्र होकर जंगलिया बाबा से बोले-आपके न रहने की स्थिति में यदि कोई साधु महात्मा या अन्य कोई किसान गृहस्थ श्री गोपालधाम में दर्शन के लिए आएगा तो उनकी सेवा मैं कैसे करूँगा। आप स्वयं सामर्थवान है। मेरी सेवा में त्रुटि आने पर वे मुझे शाप दे देंगे। तब मैं पाप का भागी हो जाऊँगा। मुन्ना सिंह की बात सुन कर स्वामी जी बोले-मुनवा मैं सूक्ष्म रूप में निवास करते हुए एक पल के लिए भी श्री गोपालधाम नहीं छोड़ूँगा, जब कभी तुम मुझे याद करोगे मैं तुम्हारे पास मौजूद मिलूँगा।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रह गई सेवा कि बात तो तुम सुन लो श्री गोपालधाम में सेवा के लिए कुछ भी नहीं रहे तो तुम श्री राधा कूप का एक लोटा जल निकाल कर भगवान के सम्मुख रख कर उसमें तुलसी का पत्ता देकर उसे महात्मा, साधु, गृहस्थ को सौंप देना हम उसके शाप से तुम्हें बचा लेगे।

श्री गोपालधाम से श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) अँजोरपुर गाँव जाकर श्री परमात्मानन्द पण्डित वैद्य जी के दरवाजे पर रहने लगे तो कुछ दिन बाद बाबा का दर्शन करने उनके भक्त अँजोरपुर गाँव का कार्यक्रम बनाएं और श्री गोपालधाम से यात्रा किए उस यात्रा में श्री साधु सिंह, श्री रामलखन सिंह, श्री गनौरी सिंह, ग्राम-बलौर, पोस्ट- चण्डी मौं, जिला-नालन्दा (बिहार) के साथ श्री राज करण सिंह ग्राम-कमला, थाना-रूपऊ, जिला-नवादा (बिहार) सम्मिलित थे। वे लोग अँजोरपुर गाँव आए बाबा का दर्शन किए और दूसरे दिन वापस श्री गोपालधाम चले गए।

इन भक्तों के वापस जाने के तीन-चार दिन बाद पुनः श्री गोपालधाम सिंथौरा जंगल से भजन कीर्तन मंण्डली के नवरत्न कलाकार श्री कपिल देव सिंह उर्फ (कपिल जी), श्री रघुनन्दन शर्मा वैद्य उर्फ (झपसू जी), श्री विपिन सिंह व श्री भुनेश्वर सिंह (मास्टर साहब) को यात्रा का व्यय धनराशि देकर स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) को मनाने के लिए श्री मुन्ना सिंह पुजारी जी चारों व्यक्तियों को अँजोरपुर भेजे। वे सभी व्यक्ति दिनांक 01.07.1979 ई0 दिन-रविवार को अँजोरपुर गाँव पहुँच गए। सोमवार-मंगलवार को स्वामी जी के पास रह कर कीर्तन भजन किए।

स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) दिनांक 04.07.1979 ई0 दिन-बुधवार को सुबह अपने निकट श्री कपिल देव सिंह को बुला कर बोले कपिल जी आज आप मीरा बाई का वह भजन गा कर सुनाइएं जिसका बोल है- मै तो गिरधर आगे नाँचूंगी। इसके पीछे उनका क्या सोच रहा किसी को मालूम नहीं था। श्री रघुनन्दन शर्मा वैद्य उर्फ (झपसू जी) हारमोनियम एवं श्री कपिल देव सिंह उर्फ (कपिल जी) तबला लेकर वादन करते हुए भजन गाने लगे। स्वामी जी भाव विभोर होकर भगवान की मूर्ति के सामने नृत्य करने लगे। पूजा-अर्चना किए, उसके बाद समीप में रखी हुई काष्ठ की चौकी पर लेट गए, अब स्वामी जी योग मुद्रा द्वारा अपने प्राण वायु को मस्तिष्क पर चढ़ा लिए,

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भक्तों ने उनके शरीर की स्थित को देख कर तबीयत खराब होने की सूचना श्री परमात्मानन्द पण्डित वैद्य को इन्दरपुर गाँव में स्थित जूनियर हाईस्कूल पर जा कर दिए एवं अँजोरपुर गांव में कुटी पर चतुर्मास कर रहें योगी राज महामण्डलेश्वर दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी के गुरु भाई (स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी के गुरु चाचा) दण्डी स्वामी श्री स्वरूपानन्द सरस्वती जी को सूचित किए। दोनों व्यक्ति शीघ्र ही श्री परमात्मा नन्द पण्डित वैद्य जी के दरवाजे पर पहुँचे। जहाँ स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी चौकी पर लेटे थे। उनके शरीर की स्थिति को देखकर वे लोग समझ गए स्वामी जी समाधि में चले गए है दिनांक 04.07.1979 ई0 दिन–बुधवार को रात्रि लगभग 8.00 बजे सैकड़ो की संख्या में उपस्थित भक्तों की भीड़ में स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) तीन बार ऊँ ऊँ ऊँ शब्द का उच्चारण करते हुए अपना पार्थिव शरीर को परित्याग कर हमेशा के लिए समाधि में लीन हो गए।

उनके निर्वाण दिनांक 04.07.1979ई0 दिन–बुधवार के पश्चात् स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) द्वारा संस्थापित श्री गोपालधाम के मंदिर में श्री राधा श्रीकृष्ण की मूर्ति के साथ–साथ भगवान श्री नर्मदाधीश भोलेशंकर (बाबा श्री गोपालेश्वर महादेव) की पूजा–अर्चना का सम्पूर्ण भार श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी) के कन्धे पर आ गया। श्री गोपालधाम मन्दिर की व्यवस्था आकाश वृत्ति के सहारे चलता है मंदिर के पास कोई चल–अचल सम्पत्ति अथवा कृषि कार्य योग्य भूमि मन्दिर के नाम पर नहीं है। वर्ष 1973ई0 से श्री गोपालधाम मन्दिर में राग–भोग लगाने के लिए श्री रामस्वरूप सिंह निवासी–ग्राम व पोस्ट– सिंथौरा, जिला–नालन्दा बिहार के घर से नियमित एक टिफिन कैरियर में भोजन आता था जिसका भोग भगवान को लगाने के बाद स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) एवं श्री गोपालधाम में उपस्थित श्रृद्धालु भक्तों में उस प्रसाद स्वरूप भोजन को आपस में मिल बाँटकर ग्रहण किया जाता था। यह क्रम लगभग 36–37 वर्ष तक चला।

श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) के गो लोक गमन होने पर उनके भक्तों द्वारा "पूण्य तिथि" अँजोरपुर गाँव जनपद बलिया (उ0प्र0) में श्री परमात्मानन्द पण्डित जी के दरवाजे पर आषाढ़ शुक्ल पक्ष नवमी

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

तिथि कों एवं उसके दूसरे दिन दशमी तिथि को सुबह स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी के दीक्षित शिष्य कमलाकर दुबे के आग्रह को स्वीकार करते हुए (पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी) श्री गोपालधाम सिंथौरा जंगल से पधारे भक्तों को साथ लेकर कमलाकर दुबे के यहाँ बलिया स्थित आवास पर आने लगे और भण्डारे का प्रसाद लेने के पश्चात् भक्तों को साथ लेकर वापस श्री गोपालधाम मन्दिर पर चले जाते थे। उसी परम्परा को संत श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी भी आगे बढ़ा रहे है। श्री गोपालधाम सिंथौरा जंगल (राजगृह) जिला-नालान्दा बिहार में संत श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) की पूण्य तिथि कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष नवमी तिथि को उनकी स्मृति में प्रति वर्ष मनाया जाता है।

पाँच पहाड़ियों एवं धीमी गति से बहने वाली वाण गंगा नदी से घिरी हुई हरी-भरी घाटी में स्थित राजगृह का अर्थ होता है (राजा का निवास स्थान) राजगीर एक मनोरम शहर है। इसके चारों तरफ स्थित पहाड़ी का नाम महाभारत में एक स्थान पर उल्लेखित है के अनुसार- वैभर, वराह, वृषभ, ऋषिगिरि एवं चैत्यक है। महाभारत में दूसरे स्थान पर इन पर्वतों का नाम इस प्रकार है- पंडार, विलुप, बराहक, चैत्यक एवं मातंग। पाली ग्रन्थों में इन पर्वतों का नाम कुछ और ही है- वैभर, पाडंव, वैपुल्य, गृघ्रकूट एवं राशिगिरि तथा वर्तमान में इनके नाम है- वैभर, विपुल, रत्नाशैल, उदय एवं सोना प्राचीन काल में राजगीर का नाम इस प्रकार रहा - वासुमती, बृहद्रथपुर, कुशाग्रपुर, बराहद्रथपुर, गिरिब्रज एवं राजगृह नाम से यह विख्यात रहा। भारत वर्ष के बिहार प्रान्त की राजधानी पटना से 101 कि0मी0 की दूरी पर दक्षिण-पूर्वी भाग में राजगीर स्थित है। यह धर्म और बौद्धिक संक्रियता का एक केन्द्र स्थल है।

रामायण में वासुमती नाम का उल्लेख हैं जिसका सम्बन्ध शायद पौरॉणिक राजा वसु से है जो सृष्टिकर्त्ता ब्रह्माजी के चौथे पुत्र राजा वसु के नाम पर है। पारम्परिक तौर पर उनको इस नगर का प्रतिष्ठाता भी माना जाता है। महाभारत एवं पुराण में उल्लेखित नाम बारहद्रथपुर राजा वृहद्रथ को स्मरण कराता है। वह उस समय के राजा जरासन्ध के पूर्वज थे। चारों तरफ से पहाड़ियों से घिरा होने से इस का नाम गिरिब्रज पड़ा जिसका अर्थ होता हैं (पहाड़ो से घिरा हुआ स्थान) इसका चौथा नाम 'कुशाग्रपुर' का उल्लेख सातवीं सदी के दूसरे चरण में भारत आए प्रसिद्ध चीनी यात्री ह्वेन सांग के लेखों में तथा कुछ जैंन और

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संस्कृत में लिखी बौद्ध पुस्तकों में पाया जाता है। ह्वेन सांग के अनुसार इसका अर्थ (उत्तम श्रेणी के घासों का नगर) हैं क्योंकि उस समय इसके आस-पास खुशबुदार घास उगते थे। ऐसा लगता हैं कि इस स्थान का नाम कुशाग्रपुर यहाँ के राजा कुशाग्र के नाम पर पड़ा जो बृहद्रथ के बाद राजा बने थे। परन्तु राजगृह या (राजाओं का निवास स्थान) नाम ही सर्वाधिक उपयुक्त है। क्योंकि यहाँ कई सदियों तक मगध साम्राज्य की राजधानी थी।

चीनी यात्री ह्वेन सांग के अनुसार यह नाम सिर्फ नया राजगृह जो पहाड़ियों से घिरा क्षेत्र है वहाँ के लिए ही लागू होता है। महाभारत काल में राजगृह राजा जरासंन्ध की राजधानी थी। जरासंन्ध अपने समय का सबसे शक्तिशाली राजा समझा जाता था। जरासंन्ध भगवान श्री कृष्ण के मामा और मथुरा के राजा कंस के साथ सैनिक सन्धि प्रस्तुत करने के लिए अपनी दो पुत्रियों अलसी और प्रस्ति का विवाह मथुरा के पराक्रमी राजा कंस के साथ कर दिया था। जब श्री कृष्ण ने अपने मामा कंस को उसके दूराचार व पापों की सजा देने के लिए (बध किया) मार डाला तो जरासंन्ध अपनी सेना के साथ मथुरा रवाना हो गया, उसके बाद श्री कृष्ण के साथी ग्वाल वालों को मार कर सत्ता हथियाने की कोशिश की, वह मथुरा पर कई बार हमले किए मगर उसे भगा दिया गया। कहावत है कि जरासंन्ध इतना बलशाली था कि वह अपनी राजधानी राजगृह से हमेशा पत्थरों का प्रहार मथुरा पर करता रहा जिसके आतंक से भयभीत होकर भगवान श्री कृष्ण मथुरा छोड़कर द्वारिका चले गये।

पाण्डु-बन्धु भीम और अर्जुन के साथ श्री कृष्ण गिरिब्रज गये और श्री कृष्ण के इशारे पर कुश्ती व गदायुद्ध में भीमसेन ने जरासंन्ध को हरा कर उसकी जाँघ पकड़ कर चीर डाला। जिससे जरासंन्ध की मृत्यु हो गई। हालाँकि इसके बाद भी जरासंन्ध के वंशज ही इस स्थान पर राज्य करते रहे। रत्नागिरि पर्वत की तलहटी के निकट घनघोर जंगल में स्थित श्री गोपालधाम में जहाँ श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) जंगल में जप-साधना एवं तपस्या किए उस स्थान पर उनके द्वारा 321 फीट ऊँचा श्री राधा-श्री कृष्ण मन्दिर हेतु 80 फीट लम्बाई 80 फीट चौड़ाई एवं 11 फीट गहराई की भूमि जब खोदी जा रही थी उस समय भगवान की खण्डित कई मूर्तियाँ जमीन से निकली, उसकी सूचना भक्तों ने संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी को दी तो स्वामी जी बोले-भगवान श्री कृष्ण पाण्डवों के साथ यहाँ आए थे। रात्रि विश्राम किए सुबह

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

होने पर यही से भेष बदल कर वे तीनों (श्री कृष्ण, भीम व अर्जुन) राजगृह में प्रवेश किए। जहाँ भीमसेन से जरासंन्ध के साथ मल्ल युद्ध एवं गदायुद्ध एक माह तक चला। भीमसेन ने जरासंन्ध को पराजित किया और उसे मार डाला था। इस पवित्र भूमि पर अनेंक संत महात्मा यहाँ आए और तपस्या-साधना किए, इस स्थान का पौरॉणिक महत्व है।

राजगृह बौद्ध धर्म का एक महत्वपूर्ण केन्द्र हैं। सत्य की खोज करने वाले और भी दूसरे लोगों की तरह राजकुमार सिद्धार्थ (बुद्ध) ने भी संसार त्यागने के बाद मोक्ष प्राप्त करने की अभिलाषा से राजगृह में आए। लम्बे समय तक यहाँ ठहरे और अपने धर्म का प्रचार किए। राजगृह में सबसे प्रिय स्थल उनका गृघ्रकूट 'पर्वत' अथवा गीद्ध का शिखर था।

जब बुद्ध अपने धर्म का प्रचार कर रहे थे उस समय यहाँ एक नये वंश का शासन देखने को मिलता है। इस वंश के राजा बिम्बिसार मगध के सम्राट थे। उस समय जिन चार राजाओं का उत्तरी भारत वर्ष में बोल-बाला था उसमें बिम्बिसार एक था शेष तीन कौशल के राजा प्रसन्नजित, वत्स के राजा उदयन एवं अवन्ति के राजा प्रद्योत थे। बिम्बिसार का वंश उताना ऊँचा नहीं था फिर भी अपने पौरूष और राज्य विस्तार में वह बाकी तीनों के बराबर था। राजा बिम्बसार बुद्ध तथा बौद्ध-धर्म के प्रति परम् श्रद्धालु था। कहा जाता है उसके बुढ़ा होने पर उसका उत्तराधिकारी पुत्र अजात-शत्रु बिम्बिसार को कैद कर के मार डाला। नया राजगृह नगर का निर्माण अजात-शत्रु ने ही किया था। उसने नगर की किला बन्दी की मरम्मत कराई क्योंकि उसे अवन्ति के राजा प्रद्योत द्वारा आक्रमण की आशंका थी। यह भी कहा जाता है कि अजातशत्रु के पुत्र एवं उत्तराधिकारी राजा उद्यन ने अपने पिता अजातशत्रु को तड़पा-तड़पा कर मार डाला और राजधानी राजगृह से उठाकर पाटलीपुत्र में कायम की। उस समय राजगृह की महत्ता घटने लगी थी। पुराणों में कहा गया है कि शिशुनाथ ने एक बार फिर मगध को अपनी राजधानी बनाई थी। उसके बाद के अन्य राजाओं ने पाटलिपुत्र को राजधानी बनाई। राजगीर पत्थरों को काट कर बनाई गई गुफाओं बौद्ध अवशेषों, लिपियों हिन्दू एवं जैंन मन्दिरों तथा मुस्लिम स्मारकों के लिए प्रसिद्ध है।

राजगीर सिर्फ बुद्ध के प्रिय स्थान के रूप में एवं उनके जीवन की विभिन्न घटनाओं से सम्बन्धित होने के लिए ही प्रसिद्ध नहीं है बल्कि जैंन धर्मावलम्बियों ने भी समान

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रूप से इसका समादर किया है जैंन ग्रन्थों में कहा गया है कि उनके अन्तिम जैंन महावीर ने अपने 32 (बत्तीस) वर्ष के संन्यासी जीवन की 14(चौदह) वर्ष मौसम इसी राजगीर एवं नालन्दा में बिताया है। राजगृह के अनेंक धनी व्यक्ति उनके समर्थक रहे हैं। जैनों ने भी बिम्बिसार एवं अजातशत्रु को अपने धर्म के समर्थक के रूप में दावा किया है। राजगृह में ही बीसवें तीर्थकर मुनि सुब्रत नाथ का जन्म हुआ था। यहाँ के विपुलाँचल नामक पहाड़ी पर महावीर ने अपना पहला उपदेश दिया था, 72 फीट ऊँचा समोशरण मन्दिर इसी पवित्र घटना के संस्मरण में बना है। महावीर के 11 प्रमुख शिष्य या गण्धर में से सभी की मृत्यु राजगीर के किसी न किसी पहाड़ी के शिखर पर हुई है। माना जाता है सम्राट अशोक की मृत्यु (ईसा पूर्व तीसरी सदी) में इन्हीं पहाड़ो की किसी चोटी पर हुई।

राजगीर के विपुलाँचल पर्वत पर चार दिगम्बर तथा एक श्वेताम्बर मन्दिर हैं। रत्नागिरि पर्वत पर एक श्वेताम्बर चौमुखी मन्दिर है। एक प्राचीन व दो नवीन दिगम्बर मन्दिर है। उदय गिरि पर्वत पर श्वेताम्बर मन्दिर है। तीन दिगम्बर मन्दिर है स्वर्णगिरि पर्वत पर एक श्वेताम्बर मन्दिर है। दो मन्दिर दिगम्बर शाखा के है। वैभारगिरि पर्वत पर पाँच श्वेताम्बर मन्दिर है। दिगम्बर शाखा का एक मन्दिर है। सप्तपर्णी गुफा के नाम से विख्यात एक गुफा इस पर्वत पर है जो इतिहास में राहणिया गुफा के नाम से प्रसिद्ध है। मगर आज कल जनश्रुति के अनुसार महात्मा बुद्ध की मृत्यु के बाद यहाँ प्रथम बौद्ध सभा लगी थी।

राजगीर में दर्शनीय स्थान–

वेणुवन– भगवान बुद्ध के समय यह सुगंधित बासों का वन था, कहते है राजा बिम्बिसार ने इसे भगवान बुद्ध को समर्पित कर दिया था।

मनियार मठ– जैन इतिहास में इसे रानी चेलना और राजा शालिभद्र का निर्माण कूप कहा गया है। किन्तु आज कल यह स्थान मनियार मठ के नाम से विख्यात है। महाभारत में उल्लेख है कि राजगृह मणिनाग का पवित्र धाम था और ऐसा अनुमान है कि मनियार मठ इसी स्थान का प्रतीक है। क्योंकि खुदाई में भारी संख्या में नाग–नागिनियों की मूर्तियाँ यहाँ से मिली थी।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वर्ष 1961-62ई0 में मठ के पास एक गड्ढ़ा खोदवाया गया गड्ढ़े में 19 फीट की गहराई पर तीन छोटी-छोटी मूर्तियाँ मिली एक मूर्ति पलंग पर लेटी हुई माया की थी, जिसके ऊपर की ओर तपस्वी बुद्ध चित्रित थे। दूसरी मूर्ति पार्श्वनाथ की खड़ी मुद्रा में एक सात फन वाले सर्प के साथ थी। तीसरी विशाल ईंट की इमारत मिली जिसका निचला तल अच्छी स्थित में सुन्दर चित्रों से विभूषित थे। मनियार मठ बेलनाकार मन्दिर है जो राजगृह के देवता मणिनाग के उद्देश्य से बनाई गई थी। वैदिक धर्म के बाहर प्रचलित जनजातियों के धार्मिक, आचारों की खासियत थी, सर्प पूजन बनाया गया था। राजगृह इस आदि धर्म का भी तीर्थ स्थल रहा। मगध के लोंग नागों को उदार देवता मानते थे जिन्हें पूजा द्वारा संतुष्ट करने पर वे वर्षा प्रदान करते थे। यहाँ की खोदाई से ऐसे बहुत पात्र निकले है जिसमें साप के फन की आकृति के कई नलके बने है। सम्भवत: इन पात्रों से सापों को दूध चढ़ाया जाता था।

सोन भण्डार गुफाएँ- मनियार मठ से उत्तर-पश्चिम की ओर जाती हुई सड़क वैंभार पहाड़ी के दक्षिण भाग में काटकर बनाई गई दो गुफाओं पर पहुँचती है। पूर्वी गुफा की छत बिल्कुल गिर गई है और दूसरी छत की दीवारों में बड़ी-बड़ी दरार पड़ गए है जो सोन भण्डार गुफाओं के नाम से जानी जाती है। किंवदन्तियों के अनुसार यह राजा विम्बिसार का कोषागार था। वैभर पहाड़ की खुदाई से निकली सोन भण्डार गुफाओं का निर्माण जैंन संन्यासी वैर देव ने की थी। ऐसा माना जाता है कि यहाँ अभी तक सोने से भरा खजाना छिपा है। ऐसा लोगों का कथन है यहाँ खुदे शिलालेखों के संकेतों को जो समझ पाऐगा, वही सोने के खजाने को खोल सकेगा।

पश्चिमी गुफा के दक्षिणी दीवार पर एक दरवाजा तथा खिड़की है। इतिहासकारों का मत है कि यह स्थान जैंन मुनियों का साधना गृह था। इसमें जैंन मूर्तियों और दीवारों पर शंख लिपि पाई गई है। सभी मूर्तियाँ नालन्दा स्थित संग्रहालय में सुरक्षित है।

रणभूमि- सोन भण्डार से लगभग 1.5 कि0मी0 पश्चिम की तरफ एवं गुफाओं से सकरी पगडंड़ी से पहुँची जा सकने वाली इस जगह को स्थानीय लोग अखाड़ा या जरासंन्ध की रणभूमि कहते हैं। यह महाभारत काल में बनाई गई वही जगह है जहाँ पर भीम सेन और जरासंन्ध के बीच मल्ल युद्ध एक महीने तक चला। भीमसेन, अर्जुन व श्रीकृष्ण एक साथ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भेष बदल कर राजगृह में प्रवेश किए। कभी इस रणभूमि की मिट्टी महिन और सफेद रंग की थी। मगर कुश्ती के शौकि़न लोग यहाँ से भारी मात्रा में मिट्टी अपने साथ लेकर गए पत्थरों पर दो समानान्तर रेखाओं के निशान स्पष्ट दिखाई देते हैं। जिसके बारे में लोग कहते हैं कि ये भगवान श्री कृष्ण के रथ के पहियों का निशान है।

बिम्बिसार कारागार– मनियार मठ से लगभग 1 कि0मी0 की दूरी पर 60 वर्गमीटर का एक क्षेत्र हैं जिसके चारों तरफ दो मीटर चौड़ी दीवार है और उसके कोने पर वृत्ताकार बुर्ज बने है। यह संरचना बिम्बिसार कारागार कहलाती हैं जहाँ उनके पुत्र आजात शत्रु ने बन्दी बना कर रखा था। राजा ने खुद अपने बन्दी जीवन के लिए इस जगह को चुना था, क्योंकि इस स्थान से वे गृध्रकूट पर्वत की चोटी पर अपने शैलावास पर चढ़ते हुए भगवान बुद्ध के दर्शन कर पाते थे। खुदाई से निकले इसके पर्श पर लगे लोहे के कड़ो कें मिलने से इस क्षेत्र को राजा बिम्बिसार का कारागार के अवशेष होने का प्रमाण मिलता है।

गृध्रकूट पहाड़ या गीद्ध शिखर– राजगृह जिन पहाड़ियों से घिरा है उनकी ऊँची चोटियों में गृध्रकूट है। भगवान बुद्ध का यह प्रिय स्थान था। यहाँ ही वे बहुत से मुख्य उपदेश दिए थे। चोटि के कुछ दूरी पर कई छोटी–छोटी गुफाएँ है जिनमें उस समय बौद्ध भिक्षुक रहा करते थे। आनन्द (बुद्ध के प्रमुख शिष्य) की गुफा चोटी से मिली हुई है, उसके नीचे की ओर दो गुफा में अन्य मुख्य शिष्य रहते थे। पहाड़ी के नीचे से ऊपर तक की सीढ़ियों को पहले–पहल राजा बिम्बिसार ने बनवाई थी। सम्राट अशोक ने उसकी मरम्मत कराई। इस पहाड़ की गीद्ध के चोच जैसी अजीब आकृति होने पर इसे गीद्ध शिखर नाम से पुकारते हैं। इस स्थान पर भगवान बुद्ध ने अपने जीवन का काफी समय व्यतीत किया। बुद्धत्व प्राप्ति के 16 (सोलह) साल बाद गौतम बुद्ध ने यहाँ पर बोधिसत्व की सभा में दूसरे धर्मचक्र प्रर्वतन का सिद्धान्त लिया एवं हर साल वर्षा के मौसम में अपने शिष्यों को अनेक प्रेरणात्मक उपदेश दिए।

गृध्रकूट पर ही उन्होंने अपने पद्म सूत्र को प्रस्तुत किया जिसमें सभी प्राणियों को मोक्ष प्रदान करने का वादा किया गया है। भगवान बुद्ध ने गृध्रकूट से ही "प्रज्ञा पारमिता"

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सूत्र अथवा सही ज्ञान के सूत्र का उपदेश दिया था।

विश्व शान्ति स्तूप (रत्नागिरि के पहाड़)- गृध्रकूट पहाड़ के बाजू में रत्नागिरि नामक पहाड़ है जहाँ पर रोप-वे पर चढ़ने वाले पर्यटकों के चहल-पहल से माहौल सदैव गूँजता रहता है। इस रोप-वे का निर्माण जापान के बौद्ध संघ ने किया हैं और यह 160 फीट ऊँचा शान्ति स्तूप तक जाता हैं ऊपर पहाड़ तक चढ़ने के लिए रास्ता हैं मगर रोप-वे द्वारा हवाई सफ़र इससे कई गुना ज्यादा रोचक हैं जो गुरूवार के सिवाय हर दिन चालू रहता है। एक तरफ से सफर में सिर्फ 5 से 7 मिनट लगते हैं ऊपर से राजगीर की पहाड़ी का दृश्य अत्यन्त मनोहर दिखाई पड़ता है। 2000 फीट रोप-वे पर्यटकों को पहाड़ की चोटी पर स्थित 'विश्व शान्ति स्तूप' तक पहुँचाता है। यह एक वृहद क्षेत्र में फैला हुआ है। जहाँ ड्रम के साथ 'न-मु-मयो-नग-क्यों' व नाम-क्यों-हो-रे-गे के मन्त्रोंच्चारण की आवाज वातावरण को संजीव बना देती है। यहाँ एक विशाल स्तूप के चारों दिशाओं में भगवान बुद्ध की स्वर्णिम मूर्तियाँ उनके चार कर्मों-जन्म, बुद्धत्व प्राप्ति, उपदेश प्रदान एवं मृत्यु के प्रतीक हैं। स्तूप में सीढ़ियों की सहायता से ऊपर जाया जा सकता है। पास ही स्थित है एक भव्य बौद्ध मन्दिर जिसमें भित्ति चित्रों का सुन्दर चित्रण देखने योग्य है।

रथ चक्का तथा शंख लिपि- घाटी के दक्षिणी सिरे की ओर गृध्रकूट और वाण गंगा के बीच में एक घिरे हुए स्थान पर सीपी के बने अक्षरों में बहुत से लेख हैं लगभग 30 फीट लम्बी समानान्तर रेखाओं में पत्थरों पर बने गहरे निशान को देख कर यहां प्रचलित कहानी पर यकीन होने लगता है, कि यह भगवान श्री कृष्ण के रथ के पहियों के निशान है महाभारत के समय जब श्री कृष्ण अपने रथ पर सवार होकर राजगीर में प्रवेश किए थे। तब उनके रथ की गति और महिमा से पहाड़ भी पीघल गये और उस पर उनके रथ के पहियों के निशान उत्कीर्ण हो गये। कई स्थानों पर प्राचीन गाड़ियों और रथों के पहियों की रगड़ से पत्थरीली जमीन में बनी लीकें नजर आती है। यहाँ रथ चक्र भी कठोर पत्थर की चट्टानों के ऊपर दूर-दूर तक चला गया है जैसे बैलगाड़ियों के बराबर चलने से सड़कों में गहरे लम्बे चिन्ह बन जाते है।

कुण्ड गरम जल के झरने- (तापदा अथवा उष्ण झरने) महाभारत में राजगृह के उष्ण

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

झरनों को तापदा कहा गया है। पौराणिक कहानियों में इसे ब्रह्मा के ताप का उल्लेख किया गया है। बौद्ध साहित्य में राजगीर की मुख्य नदी का नाम तापदा बताया गया हैं जिसके पानी का रूख बदल कर राजा के लिए एक सरोवर का निर्माण किया गया है। शास्त्रकारों ने राजगीर के सरस्वती नदी को पवित्रतम् बताया है। वायु पुराण के अनुसार इस नदी में एक बार (स्नान करने) नहानें का पुण्य गंगा नदी में एक साल नहाने के पुण्य के बराबर है। आधुनिक काल में राजगीर अपने असंख्य उष्ण झरनों के लिए जो वैंभर पहाड़ के निचले हिस्से में गिरता है के लिए प्रसिद्ध है। ये केवल तीर्थ यात्री एवं पर्यटकों को ही नहीं बल्कि बीमार और अपाहिजों को भी अपने ओर आकृष्ट करते है।

उष्ण झरने लक्ष्मी नारायण मन्दिर परिसर का एक हिस्सा है। महिलाओं एवं पुरूषों के लिए अलग-अलग स्नान गृह है, पानी सप्त धारा या सात झरनों में से आता है, जिसका स्रोत ऊपर पहाड़ी पर स्थित सप्तपर्णी गुफाएँ मानी जाती हैं इन झरनों में सबसे अधिक गरम पानी ब्रह्मा कुण्ड का है 45 सेन्टीग्रेट की तापमान में निकलता है। गुरू नानक साहब भी राजगीर की यात्रा के दौरान इनमें से किसी झरने में स्नान किए थे। (पाली इतिहास में इन झरनों का नाम- तपोदाराम बताया गया है। उसमें 52 कुण्ड का उल्लेख मिलता है जिसमें 22 कुण्ड गर्मजल के है। जिसमें सप्तधारा, ब्रह्माकुण्ड तथा सूर्यकुण्ड बहुत ही प्रसिद्ध है। ब्रह्मा कुण्ड तथा सप्त धारा कुण्ड आदि विपुलाँचल पर्वत की तलहटी में है। प्राचीन काल से ही इन स्रोतो के पानी पवित्र और प्रकृति की देन माने गये है। औषधि युक्त पानी बहुत ही रोग नाशक है। वैज्ञानिक परीक्षणों से ज्ञात हुआ कि इन स्रोतों का पानी रेडियों मिश्रित है। गठिया आदि रोगों से पीड़ित मनुष्यों को इन स्रोतों में नहाने से बहुत लाभ पहुँचता है।

मखदूम कुण्ड- मखदूम शाह शर्फुद्दीन का जन्म पटना जिले के मनेर शरीफ में हुआ था। उन्होंने तेरहवीं सदी में राजगीर के जंगलों में 12 (बारह) साल गुजारे थे। इसी कुण्ड के ऊपर घिरे स्थानों की एक छोटी सी गुफा में ध्यान करते थे। उनका देहान्त बिहार-शरीफ में हुआ। वहाँ उनका मजार है। मखदूम कुण्ड का प्राचीन नाम श्रृंगी ऋषि कुण्ड है। कुण्ड के ऊपर कई मन्दिर है।

गुरु नानक कुण्ड- गुरू नानक देव भी अपने प्रचार यात्रा के दौरान राजगीर के किसी झरने

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

में स्नान किया था। गुरूद्वारे में भी गन्धक के तापक कुण्ड है जो शीतल कुण्ड के नाम से जाने जाते है।

श्री गोपालधाम- रत्नागिरि पर्वत के तलहटी में राजगीर और गिरियक के बीच सिंथौरा गाँव के दक्षिण दिशा में जंगल के मध्य संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) सन् 1955 ई0 अथवा सन् 1956 ई0 के आषाढ़ मास में आए और अपनी साधना एवं तपस्या जंगल के एकान्तवास में रह कर करते रहें। इलाके के भिन्न-भिन्न गाँवों में जाकर यदा-कदा भिक्षा लेते थे जिसे मधुकड़ी की संज्ञा दी जाती है, पाँच घरो से प्राप्त भिक्षा को वे अपने हाथ की अंजुली में भर कर भिक्षा ग्रहण करते रहे। वे करपात्री थे। इलाके के लोग स्वामी जी को भगवान के समान पूजते थे। अचानक दिनांक 19.03.1979 ई0 को ड़कैतों ने रात्रि में मन्दिर पर धावा बोल दिया, मन्दिर से श्री राधा-श्रीकृष्ण की मूर्ति सहित मन्दिर निर्माण हेतु रखे गए लाखों रूपये से भरा थैला लेकर चले गये। उसी समय से स्वामी जी का मन उदास हो गया वे दिनांक 30.05.1979 ई0 को अँजोरपुर गाँव, जिला-बलिया आए और दिनांक 04.07.1979 ई0 को रात्रि में 8.00 बजे तीन बार ऊँ, ऊँ, ऊँ शब्द का उच्च उद्घोष करते हुए अपना पार्थिव शरीर त्याग कर हमेशा के लिए समाधि में लीन हो गये।

वर्तमान समय में श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) द्वारा संस्थापित श्री राधा-श्रीकृष्ण मन्दिर व भगवान श्री नर्मदाधीश भोले शंकर (बाबा श्री गोपालेश्वर महादेव जी) का मन्दिर एवं श्री गोपाल धाम की भूमि आयुद्ध फैक्टरी ने चारो तरफ से ईंट, सीमेन्ट, बालू से ऊँची एवं पक्की चाहर दिवारी के घेरे में ले लिया है। फलत: उसी चाहर दिवारी के घेरे में रत्नागिरि पर्वत की तलहट्टी के निकट जंगल में श्री गोपालधाम का मन्दिर स्थित है। आयुद्ध फैक्टरी ने इस स्थान को अधिग्रहित नहीं किया है और न मन्दिर को विस्थापित की कार्यवाही ही की है। श्री गोपालधाम श्रद्धा का केन्द्र है यहाँ पहुँचने के लिए आयुद्ध फैक्टरी के गेट संख्या-12 से रास्ता है। यहाँ एक बार आगमन होने पर वह व्यक्ति हमेशा आने के लिए उत्सुक एवं आतुर रहता है। यहाँ शान्ति एवं सुखद-आनन्द की प्राप्ति होती है। श्री गोपालधाम में श्री राधा-श्रीकृष्ण के मूर्ति की पूजा होती है तथा भगवान श्री नर्मदाधीश भोले शंकर (बाबा श्री गोपालेश्वर महादेव) का विचित्र शिव लिंग श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जी द्वारा स्थापित है चारो दिशाओं से अलग-अलग आकृति का दर्शन होता है ऐसा अन्यत्र शिव मंदिर किसी स्थान पर नहीं है जो देखने योग्य है। आप एक बार यहाँ अवश्य पधारें आपको स्वयं अनुभव हो जाएंगा। यहाँ से वापस जाने की इच्छा नहीं होती है। इसके अतिरिक्त राजगीर व उसके आस-पास कई दर्शनीय स्थान है, महादेव मन्दिर, जैंन मन्दिर जीवक का आम्रकुंज, नालन्दा, सूर्यमन्दिर, पावापुरी, जल मन्दिर व समोसरन, मन्दिर विरायतन आदि स्थान देखने योग्य है।

वर्ष सन् 1981 ई0 में मैं (कमलाकर दुबे) अपनी धर्म पत्नी श्रीमती कौशल्या देवी के साथ श्री गोपालधाम स्थित मन्दिर पर उपस्थित था। उस अवसर पर हजारो की संख्या में भक्त श्री गोपालधाम आए थे। स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) की पूण्य तिथि का भण्डारा समापन हुआ। दूसरे दिन प्रातःकाल संत श्री मुकुन्दा नन्द सरस्वती जी श्रीराम स्वरुप सिहं से बोले- चौखण्डी मन्दिर में रखा भगवान के लिए लकड़ी से बना सिंहासन का कार्य अधूरा है। इसे पूर्ण कराने हेतु काष्ठ कला के कलाकार व जानकार अच्छे मिस्त्री की आवश्यकता हैं जो सिंहासन के अधूरे कार्य को पूर्ण कर सकें।

दोनो व्यक्तियों की हो रही वार्ता सुन कर श्री गोपालधाम से बलिया वापस आने पर मैं अपने ही गाँव के वयोवृद्ध काष्ठ कला के निपुण कलाकार (मिस्त्री) श्री काशीनाथ शर्मा पुत्र स्व0 हरदेव शर्मा से सम्पर्क किया, उनसे श्री गोपालधाम में अर्द्ध निर्मित भगवान का सिंहासन कार्य को पूरा करने के विषय मे वार्ता किया। 85 वर्षीय वयोवृद्ध श्री काशीनाथ शर्मा कहने लगे, वैसे तो मैं अनेक धार्मिक मन्दिरों में जाकर काष्ठकला का कार्य किया है, अब इस अवस्था में आप मुझे स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी जैसे संत की तपस्थली श्री गोपालधाम में सेवा करने के लिए ले जा रहे है मैं वहाँ चलूँगा और भगवान के मन्दिर में रक्खे काष्ठ के अधूरे सिंहासन के कार्य को पूर्ण करुँगा। वर्ष सन् 1981 ई0 से वर्ष सन् 1983 ई0 के मध्य पाँच-छः बार श्री काशी नाथ शर्मा जनपद- बलिया उ0प्र0 से श्री गोपालधाम सिंथौरा जंगल में आए और काष्ठ का अर्द्ध निर्मित सिहांसन के साथ-साथ श्री राधा- श्री कृष्ण के चौखण्डी मन्दिर एवं भगवान श्री नर्मदाधीश भोले शंकर (बाबा श्री गोपालेश्वर महादेव) मन्दिर के चारों दिशाओं की कीवाड़ एंव खिड़की का कार्य पूर्ण किए। श्री काशीनाथ शर्मा के साथ-मैं अपनी धर्म पत्नी श्री मती कौशल्या देवी को श्री गोपालधाम में भेजता रहा ताकि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उन्हें कोई परेशानी व असुविधा न होने पावें।

काष्ठ निर्मित सिंहासन के ऊपर मुकुट एवं गुम्बज की नक्काशी कार्य श्री काशी नाथ शर्मा स्वंय अपने घर पर ही सम्पन्न किए। मुकुट एवं गुम्बज के खराद करते समय रस्सी खिंचने का कार्य मैं स्वयं किया और श्री काशीनाथ शर्मा स्वंय अपने हाथ से खराद किए। श्री काशीनाथ शर्मा द्वारा निर्मित सिंहासन व कीवाड़ पर की गई कारीगरी नक्काशी देखने योग्य है। इसी निर्माण के साथ-साथ श्री गोपालधाम मे निर्माण कार्य का शुभ आरम्भ श्री गणेश संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी के कर कमलों से प्रारम्भ हो गया।

सिंहासन कार्य पूर्ण होने के साथ श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ (पुजारी जी) की देख-रेख में भगवान श्री नर्मदाधीश भोले शंकर (बाबा श्री गोपालेश्वर महादेव) के अधूरे मन्दिर निर्माण कार्य पूर्ण हुआ, सरस्वती भवन का निर्माण कार्य एवं सांस्कृतिक कार्य क्रमों के लिए स्टेज का निर्माण कार्य पूर्ण कराएं, श्री राधा-श्रीकृष्ण के चौखण्डी मन्दिर तथा भगवान श्री नर्मदाधीश भोलेशंकर (बाबा श्री गोपालेश्वर महादेव) के मन्दिर के मध्य दूरी के बीच में बरामदे का निर्माण कराएं और उसमें मूर्तियाँ तैयार कराएं, यज्ञ शाला का निर्माण किए, मन्दिर से कुछ दूरी पर भोजनालय गृह का निर्माण पूर्ण किए, गायों के लिए गौशाला कार्य का निर्माण किए, वृहद कार्यक्रम जैसे यज्ञ भागवत एवं प्रवचन के लिए अलग मंच (स्टे)ज का निर्माण किए, जेनरेटर गृह का निर्माण के साथ-साथ सड़क कार्य को पूर्ण कराएं तथा श्रीराधा-कूप से जल निकालने हेतु ढ़ेकुल की व्यवस्था किए।

वर्ष सन् 2007 ई0 मे अर्द्ध कुम्भ मेला के पावन पर्व पर श्री गोपालधाम सिंथौरा जंगल से भक्तों के साथ श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी) प्रयागराज, (इलाहाबाद) गंगा स्नान करने आए थे, उनके साथ श्री गोपालधाम से आए सभी भक्त संगम पर जाकर गंगा जी में स्नान किए, स्नान के बाद पुनः वापस ब्रह्मलिन महामण्डलेश्वर योगीराज दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी महाराज के 'अद्वैत आश्रम' गंगा पट्टी स्थित बाड़ें में एकत्रित हुए। उस समय मैं भी अपनी धर्म पत्नी एवं माता-पिता के साथ प्रयागराज में संगम पर स्नान करने गया था जब सभी भक्त श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी जी के पास बैठे थे उसी समय मैनें पुजारी जी से निवेदन किया बोला-श्री गोपालधाम में संत शिरोमणि

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) की संगमरमर पत्थर से निर्मित मूर्ति लग जाती तो भक्त उनकी भी पूजा अराधना करते। मेरी बात सुन कर वहां उपस्थित सभी भक्त एक स्वर से बोले तथा मेरी बात का समर्थन व स्वागत किए। मूर्ति लगाने के लिए स्थान चयन के विषय में वहाँ उपस्थित सभी भक्तों ने कहा, स्वामी जी का तुलसी बाग सबसे उत्तम व उचित स्थान होगा, भक्तों के अनुरोध को श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी जी भी मान गए।

प्रयागराज इलाहाबाद से जब वे लोग वापस श्री गोपालधाम पहुँचे तो ~~स्वामी~~ संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) की मूर्ति के लिए आर्थिक सहयोग दिए। दिनांक 19/06/2007 ई0 दिन-मंगलवार को श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी जी जयपुर, राजस्थान पहुँच कर संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी की मूर्ति के लिए मूर्तिकार को अग्रिम धनराशि का भुगतान किए। दिनांक 21/06/2007 को भगवान शिव परिवार सहित मूर्ति बनाने के लिए अग्रिम भुगतान किए। साथ ही मां सरस्वती जी की मूर्ति ली गई उस समय श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी जी के साथ श्री रामस्वरुप सिह, श्री कृष्ण बल्लभ सिंह, श्री हरनरायण पाण्डेय उर्फ (पप्पू), श्री अरुण सिंह मैं कमलाकर दुबे व मेरी धर्म पत्नी श्रीमती कौशल्या देवी जयपुर गए थे।

अक्टूबर 2007 ई0 में सभी (मूर्तियाँ) श्री गोपालधाम आ गई। इसके बाद स्वामी जी के तुलसी बाग में मूर्ति स्थापना से पूर्व मन्दिर का निर्माण कराएं और विधि-विधान एंव वैदिक मत्रों के उच्चारण करते हुए पं0 श्री विश्वम्भर नाथ शुक्ल जी ग्राम व पोस्ट-थम्हनपुरा जिला-बलिया, मन्दिर में मूर्ति की स्थापना कराएं। स्वामी जी की एक मूर्ति श्री परमात्मानन्द पण्डित जी को अँजोरपुर भेजे। वर्ष 2009 ई0 में श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी जी अपनी इच्छा व्यक्त किए श्री गोपालधाम में जहाँ भगवान श्री कृष्ण व श्री राधा जी की युगल मूर्ति काष्ठ के सिहांसन पर बैठाया गया है वही पीतल धातु से निर्मित जंगलिया बाबा की मूर्ति बना कर बैठाया जाय, और उनकी भी नित्य पूजा श्री राधा-श्रीकृष्ण जी के साथ की जाय।

इसी उद्देश्य को लेकर श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी जी के साथ मथुरा- वृन्दावन की यात्रा के समय श्रीराम स्वरूप सिंह, श्री निरंज्जन सिंह व उनकी धर्मपत्नी श्रीमती गौरी सिंह, श्री अरुण सिंह, श्री संजय कुमार सिह उर्फ (गोरे लाल सिंह), श्री हरनरायण पाण्डेय व

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उनका धर्म पत्नी श्रीमती अनिता पाण्डेय, श्री कृष्ण बल्लभ सिंह व उनकी धर्म पत्नी श्रीमती गुलेश सिह, श्री ओम प्रकाश पाण्डेय उर्फ (नेपाली जी), मैं (कमलाकर दुबे) व मेरी धर्म पत्नी श्रीमती कौशल्या देवी भी थी। वहाँ एक सप्ताह रह कर मथुरा- वृन्दावन, गोकुल, बरसाने के समस्त प्रसिद्ध मन्दिरों का दर्शन तथा गोवर्द्धन पर्वत की परिक्रमा पूजन किए। वृन्दावन में मूर्ति निर्माता कारीगर से सम्पर्क किया और जंगलिया बाबा की पीतल धातु की मूर्ति तैयार कराया गया। मूर्ति को श्रीगोपालधाम मे वैदिक मंत्रो द्वारा उच्चारण करते हुए विधि-विधान से सिंहासन पर बैठाया गया जिसकी नित्य पूजा अर्चना की जाती है।

उपरोक्त समस्त कार्यों के निर्माण में भक्तो का आर्थिक सहयोग मिला, श्रीराम स्वरुप सिहं प्रत्येक कार्य के लिए तत्पर तथा हमेशा तैयार रहते थे।

वर्ष सन् 2010 ई0 के जून माह में आयुद्ध फैक्टरी ने ईंट, सीमेन्ट, बालू से निर्मित पक्का दीवार खड़ा कर दिया तो सिंथौरा गाँव से सीधे आने वाला मार्ग (रास्ता) बन्द हो गया उसी दिन से भगवान को राग-भोग लगाने वाला भोजन का टिफिन कैरियर श्रीराम स्वरूप सिंह के घर से आना बन्द हो गया। उनके यहाँ से राग-भोग आने का क्रम टूट गया। इस प्रकार वर्षों से निभाया जा रहा, श्रीमती सुदामा देवी द्वारा बाबा को दिए गए बचन का क्रम उन्हीं के वंशज तोड़ दिए।

श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी जी उर्फ (पुजारी जी) (श्री सुनिल प्रसाद सिंह उर्फ श्री मुन्ना सिंह जी) दिनांक 30.05.1979 ई0 दिन-बुधवार से ही श्री गोपालधाम में आगन्तुक भक्तों के पधारने पर उनके लिए भोजन प्रसाद आदि की व्यवस्था भक्तों के माध्यम से कराते रहे, साथ ही साथ श्री गोपालधाम के मन्दिर पर प्रत्येक मंगलवार के दिन रात्रि में श्रद्धालु भक्तों द्वारा विशेष भजन-कीर्तन करने के बाद भगवान को भोग लगाने हेतु भोजन प्रसाद की व्यवस्था के साथ उन्हें सोने-बैठने का उचित स्थान की व्यवस्था भी पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी करते थे, जैसा संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (श्री जंगलिया बाबा) के समय में किया जाता था। उस परम्परा को रखने का कार्य श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी) भी करते थे। यह कार्य स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (श्री जंगलिया बाबा) के आशीर्वाद से सम्भव हो जाता था। श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती उर्फ

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(पुजारी श्री मुन्ना सिंह) दिनांक 30.05.1979ई0 से ही श्री गोपालधाम सिंथौरा गाँव के जंगल में स्थित मन्दिर की देख-रेख करते रहे। विगत बारह-तेरह वर्ष पूर्व से ही मन्दिर पर खान-पान की समुचित व्यवस्था में कमी होने से प्राय: भोजन में चावल और आलू का सेवन करने से वे सुगर रोग से ग्रसित हो गए। धीरे-धीरे उनके पेट में गैस बनना प्रारम्भ हो गया। दवा लेने पर भी नियंत्रण न होने से उनके हृदय में गैस से जलन होने लगा जिसके कारण वे कई रोगों के प्रभाव में आने से अस्वस्थ्य रहने लगे।

जब कोई भक्त श्रद्धा से मंदिर में भगवान के लिए कुछ भी धनराशि अर्पित करता था उसे यतन पूर्वक सुरक्षित रखने का कार्य श्री मुकुन्दा नन्द सरस्वती उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी) किया करते थे। जिस मद में धनराशि मिलता था उसी मद में व्यय किया करते थे। धन का दुर्पयोग कभी नहीं किए, स्वयं कष्टों को झेलते हुए अपने शरीर पर उस पैसे में से एक पैसा खर्च नहीं किए। कभी-कभी भक्तों पर संकट आने की जानकारी प्राप्त होने पर उस स्थिति में उन पर दया करते हुए उसको आर्थिक सहयोग अवश्य कर देते थे, गरीब भक्तों की पुत्रियों की शादी पर भी श्री गोपालधाम की ओर से उसके माता-पिता को आर्थिक मदद करते थे। यह उनके स्वाभाव की विशेषता थी। मदद के रूप में दी गई धनराशि को वापस नहीं लिए परन्तु अपने स्वयं के परिवार पर आर्थिक संकट आने पर भी श्री गोपालधाम से कभी उन्हें अर्थिक मदद नहीं किए। उनका कहना था घर गृहस्थी त्यागकर मैं साधु बन कर श्री गोपालधाम में भगवान की सेवा करने आया हूँ , मेरे पास मेरे परिवार के लिए कोई धन नहीं हैं उनके लिए गोपाल जी हैं।

संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) द्वारा स्वयं वेद मंत्रों के उच्चारण के उपरान्त श्री राधा श्रीकृष्ण मन्दिर के लिए नीव की बुनियाद हेतु खोदी गई ग्यारह फीट गहरी और 80 फीट लम्बाई तथा 80 फीट चौड़ाई भूमि पर 321 फीट ऊँची श्रीराधा-श्री कृष्ण का अति भव्य एवं सुन्दर मन्दिर का निर्माण होना है के लिए श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी एक-एक रूपये की धनराशि इकठ्ठा कर लगभग 24 लाख से 25 लाख रूपया एकत्र कर लिए थे, एक बार मन्दिर निर्माण के लिए भूमि पूजन भी कराएं। अब कार्य प्रारम्भ करने की योजना बना रहे थे, किन्तु दुर्भाग्य वश काले धन को नियंत्रित करने के लिए भारत-सरकार के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी जी ने 8 नवम्बर सन् 2016

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

ई0 दिन–मंगलवार की रात्रि 8.00 बजे देश के नाम संदेश देकर उसी दिन रात्रि 12.00 बजे के बाद से 500.00 रूपया एवं 1000.00 रूपया की नोटों को मूल्य हीन करने का आदेश पारित कर दिए। जिससे पुराने नोट बेकार हो गए।

नोट बन्दी के आदेश निर्गत होने के बाद संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी) श्री गोपालधाम आने वाले विश्वास पात्र दस–बारह भक्तों को अपने पास बुलाए। उन्हें रू0 500.00 व रू0 1000.00 के पुराना नोट सौंप कर बोले–तुम सब इस रूपये को ले जा कर बैंक से परिवर्तन (बदल कर) मुझे शीघ्र वापस करो। मुझे तत्काल संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) द्वारा श्री राधा–श्री कृष्ण का भव्य एवं विशाल मन्दिर के लिए खोदाई गई नींव पर मन्दिर कार्य को प्रारम्भ करना है। इसकी चर्चा श्री गोपालधाम में भक्तों के मध्य हो रही थी अमुक–अमुक व्यक्ति श्री गोपालधाम से पुराना नोट बैंक से बदलने के लिए संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह) से ले गए हैं। किन्तु किसी भी भक्त ने समय से कोई धनराशि लाकर उन्हें वापस नहीं दिया। समय व्यतीत होता गया, इसी अवधि में श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी) की तबीयत खराब चल रही थी इनका इलाज बिहार प्रान्त के राजधानी पटना, दिल्ली के निकट हरियाणा प्रान्त के गुरूग्राम स्थित मेदान्ता अस्पताल तथा आन्ध्र प्रदेश में बैंगलोर एवं महाराष्ट्र प्रदेश के ख्याति प्राप्त चिकित्सालय सटाना से कराया जा रहा था कि अचानक गम्भीर रोग के कारण इनकी तबीयत खराब होने पर दिनांक 16.04.2018ई0 को भक्त उन्हें बिहार शरीफ़ स्थित राजकीय चिकित्सालय में इलाज हेतु भर्ती कराएं। अस्पताल के अच्छे चिकित्सक की देख–रेख में उनके परामर्श से संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी) की दवा चलाई जा रही थी। डाक्टर उन्हें अस्पताल के आई0सी0यू0 वार्ड में भर्ती किए। दिनांक 17.04.2018 ई0 को स्वास्थ्य में सुधार होने पर वहाँ उपस्थित भक्तों से बात किए बोले मेरे लिए गाड़ी का प्रबन्ध करो, आज मुझे कमलाकर के घर बलिया चलना है। वह मेरा इन्तजार करता होगा।

कुछ समय व्यतीत होने पर पुजारी जी के स्वास्थ्य में सुधार होने के बजाय उनका स्वास्थ्य की स्थिति बिगड़ती गई। उनके शरीर पर दवा का प्रभाव नहीं हो रहा था। पुजारी जी को लेकर इलाज कराने आए भक्त अस्पताल में उनकी हालत को देख कर घबराने लगे। वे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोंग श्रीगोपालधाम के मन्दिर से आस्था रखने वाले भक्तों को अपनी मोबाइल फोन से पुजारी जी के बीमार होने की खबर से अवगत कराने लगे। मेरे यहाँ बलिया स्थित मकान पर दिनांक 13.04.2018 ई0 दिन–शुक्रवार से श्रीमद् भागवत पुराण सप्ताह कथा आरम्भ थी। मैं और मेरी धर्म पत्नी श्रीमती कौशल्या देवी कथा का श्रवण कर रहे थे। श्रीमद् भागवत् कथा का समापन दिनांक 19.04.2018ई0 दिन–गुरुवार को होना था। दिनांक 20.04.2018ई0 दिन–शुक्रवार को हम दोनो पति–पत्नी तुला दान करने की तैयारी किए थे। उसी दिन दिनांक 20.04.2018ई0 को मेरे पौत्र श्री हर्ष शेखर दुबे पुत्र श्री प्रदीप कुमार दुबे का यज्ञोपवित (उपनयन) संस्कार कराने का मुहुर्त निश्चित की गई थी। ऐसे शुभ अवसर पर श्री गोपालधाम में मैं निमंत्रण भेज कर पुजारी जी को बलिया शहर स्थित आवास पर पधारने के लिए उनसे आग्रह एवं अनुरोध किया था। वे मेरी प्रार्थना व निमंत्रण को स्वीकार करते हुए बलिया आने का वादा भी किए थे।

दिनांक 17.04.2018 ई0 को उनके स्वास्थ्य में सुधार था तो कुछ भक्त को मंगलवार का उत्सव मनाने के लिए श्री गोपालधाम में जाने का निर्देश भी दिए थे। दिनांक 17.04.2018ई0 को संध्या समय से ही किसी भक्त से वार्ता नहीं किए। आई0सी0यू0 वार्ड में अचेता अवस्था में थे। दिनांक 17.04.2018 ई0 को बलिया में कमलाकर दुबे का परिवार पुजारी जी के आने का इंतजार करता रहा। पुजारी जी की तबीयत में सुधार नहीं होने पर वहाँ के डाक्टर उन्हें पटना ले जाने के लिए सलाह दिये एवं उनको रेफर किए। पुजारी जी अचेतावस्था में बार–बार कहते रहें। मेरे लिए गाड़ी का प्रबन्ध करो मुझे बलिया चलना है, वहाँ कमलाकर मेरा इंतजार कर रहा है। डाक्टर की सलाह मानकर भक्त गाड़ी मंगाए और पुजारी जी को लेकर बिहार शरीफ़ राजकीय चिकित्सालय से दिनांक 18.04.2018ई0 को प्रातः काल ही पटना स्थित अच्छे चिकित्सालय में उन्हें लेकर इलाज कराने के लिए गये। वहाँ के डाक्टर पुजारी जी को देखते ही बोला–इनका देहान्त लगभग दो घंटा पूर्व ही हो गया है। डाक्टर पुजारी जी को मृत्यु घोषित कर दिया। भक्त उनका पार्थिव शरीर का अन्तिम संस्कार करने के लिए उसी गाड़ी से श्री गोपालधाम के मन्दिर पर ले कर आए।

दिनांक 18.04.2018 ई0 को सुबह श्री गोपालधाम से किसी भक्त ने मेरे ज्येष्ठ पुत्र अभय कुमार दुबे की मोबाइल फोन पर फोन किया बताया पुजारी जी की हालत गम्भीर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

है, उन्हें कुछ भी हो सकता है यह सूचना पाकर अभय कुमार दुबे व्याकुल हो गए। वे तुरन्त मुझको सूचित किए बिना गाँव के प्रधान श्री संजय कुमार दुबे को अपने साथ लेकर अपनी निजी गाड़ी से पुजारी जी को देखने के लिए पटना हेतु प्रस्थान किए। उस दिन मेरे यहाँ अधिकांश रिश्तेदार कुटुम्ब और सहयोगी मित्र घर पर आ गए थे। ईश्वर को मंजूर नहीं था अन्ततः दिनांक 18.04.2018ई0 दिन-बुधवार बैशाख शुक्ल पक्ष-3 अक्षय तृतीया तिथि को प्रातः लगभग 7.00 बजे पुजारी जी निर्वाण को प्राप्त किए और गो लोक गमन किए। दिनांक 19.04.2018ई0 को प्रातः काल श्री मद्भागवत सप्ताह कथा का समापन हुआ। दिनांक 19.04.2018ई0 को लगभग 2.00 बजे दिन में मेरी मोबाइल फोन पर ग्राम व पोस्ट- ओढ़नपुर, जिला-नवादा से श्री निरंजन सिंह के पुत्र श्री राजीव रंजन सिंह उर्फ (टूना सिंह) का फोन आया, वह मुझसे बोले-बाबा अब नहीं रहे, वे अस्पताल में ही अन्तिम सांस लिए है।

यह सूचना मिलते ही मैं स्तब्ध हो गया, मेरी वाणी रूक गई और रोने लगा। फिर अपने को संभालते हुए ढ़ाढस बाँध कर तेज गति से चल कर अपने पुरोहित एवं भगवताचार्य पण्डित श्री विश्वम्भर नाथ शुक्ल जी के पास आकर कहा तो वे कहने लगे अभय कल दो पहर में ही पुजारी जी को देखने पटना गए, उनसे मेरी वार्ता भी हुई है अब आपके सभी रिश्तेदार कुटुम्ब तथा सहयोगी मित्र यहाँ आ चुके हैं। कल दिनांक 20.04.2018 ई0 को सुबह ही मुझे तुला दान का कार्य सम्पादित करना है और कल सुबह से ही यज्ञोपवित संस्कार होना है। ऐसी स्थिति में आपकी सभी तैयारी पूर्ण हो चुकी है। अब इसे होने दें, ईश्वर को यही दिखाना था यह खबर आप अपनी धर्म पत्नी से आज न कहें, मैं उसके बाद शान्त हो गया, दूसरे दिन दिनांक 20.04.2018ई0 को सुबह पं0 श्री विश्वम्भर नाथ शुक्ल जी तुला दान कराएं। यज्ञोपवित (उपनयन) संस्कार विद्वान पुरोहित पं0 श्री गिरजा शंकर शुक्ल जी द्वारा वेद मंत्रों के उच्चारण के साथ किया गया। शाम को प्रीति भोज में सभी आगंतुक शामिल हुए।

दिनांक 18.04.2018ई0 को संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती उर्फ (पुजारी जी) का पार्थिव शरीर श्रीगोपालधाम में भक्तों ने अन्तिम दर्शन के लिए लाकर रखा। जो भी भक्त पुजारी जी के निधन होने की खबर सुने श्री गोपालधाम आने लगे, भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ी। दूसरे दिन दिनांक 19.04.2018 ई0 को उनका पार्थिव शरीर सन्यासी संतो की

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परम्परानुसार विधिवत फूल-मालाओं से सजाकर भक्त उन्हें रथ में बैठाए, उनकी अन्तिम शोभा यात्रा श्री गोपालधाम मन्दिर से चलकर बाढ़ स्थित गंगा तट के उमा नाथ घाट तक लेकर गए। इस यात्रा में सैकड़ों की संख्या में भक्त सम्मिलित थे। सन्यासी परम्परा के अनुसार माँ गंगा की निर्मल जल धारा में भक्तों ने उनके पार्थिव शरीर को अन्तिम संस्कार की कार्यवाही पूर्ण करते हुए गंगा जी में जल समाधि (विसर्जित) किए। इस शोभा यात्रा में मेरा ज्येष्ठ पुत्र अभय कुमार दुबे व ग्राम प्रधान श्री संजय कुमार दुबे शामिल थे। वे दोनों दिनांक 18.04.2018 ई0 को लगभग 12 बजे रात्रि में ही श्री गोपालधाम पहुँच गये थे। दूसरे दिन दिनांक 19.04.2018 ई0 को शोभा यात्रा में साथ-साथ गंगा घाट तक गए और संस्कार पूर्ण होने के बाद वहाँ से चल कर दिनांक 19.04.2018 ई0 को देर रात्रि बलिया अपने घर आय गए।

मैं और मेरी धर्म पत्नी सहित परिवार के अन्य सदस्य गुरूभाई के पार्थिव शरीर का अन्तिम दर्शन से वंचित हो गए। यह मेरा दुर्भाग्य ही है। संन्यासी संतो एवं भक्तों के परामर्श से श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती उर्फ (पुजारी जी) का प्रथम भण्डारा उनके गो लोक गमन दिनांक 18.04.2018ई0 से एक माह व्यतीत होने पर दिनांक 19.05.2018 ई0 दिन-शनिवार को करने की तिथि निर्धारित की गई। जिसमें सभी भक्तों, संतो, सन्यासियों एवं इलाके (महाल) के लोगों को आमंत्रित किया गया।

उक्त अवसर पर दूर-दूर से संन्यासी संत, महात्मा, साधु, भक्त एवं इलाके के महंथ, ब्राह्मण श्री गोपालधाम में पधारे थे। उनकी उपस्थिति में ध्वनि प्रसारण यंत्र (लाउडिस्पीकर) के माध्यम से लगातार ध्वनि प्रसारण करते हुए श्री गोपालधाम में उपस्थित लोगों को सूचित किया जा रहा था कि आज श्री गोपालधाम में श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह) के उत्तराधिकारी का चयन (चुनाव) की प्रक्रिया होनी है। इच्छुक व्यक्ति आकर अपना नाम अंकित करावें। ताकि उसके गुण दोष के आधार पर उसका चयन किया जा सकें।

उत्तराधिकारी के चुनाव की चर्चा इलाके के भिन्न-भिन्न गाँव से पधारे सम्मानित लोगों के मध्य हो रही थी, समस्या का समाधान न होने से लोग चिन्तित थे। स्थानीय

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

लोग एक स्थान पर बैठकर विचार विमर्श करने लगे। सभी ने एक स्वर से एक मत होकर निर्णय लिया श्री गोपालधाम के लिए श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (श्री गोरे लाल सिंह) पुत्र श्री मुन्नी सिंह ग्राम-छाछू बीघा पोस्ट-कटौंना, थाना-कतरी सराय, जिला- नालन्दा (बिहार) के नाम का प्रस्ताव सर्व सम्मति से पारित किए। उन लोगों के अनुसार श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (श्री गोरे लाल सिंह) श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ (पुजारी जी) से (गुरु मंत्र) दीक्षा प्राप्त किये हैं पुजारी जी के दीक्षित शिष्य होने से वे अपने गुरुदेव की छवि, प्रतिष्ठा का सदैव ध्यान रखेंगे। श्री संजय कुमार सिंह अपनी दोनों पुत्रियों की शादी (विवाह) कर दिए हैं। उनका हृदय अब वैराग्य की ओर अग्रसर हैं। अत: श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (गोरे लाल सिंह) श्री गोपालधाम में सबसे उपयुक्त उत्तराधिकारी सिद्ध होंगे। ये पुजारी जी के रिक्त स्थान के योग्य है।

भण्डारा का कार्यक्रम समापन की ओर था उसी दिन रात्रि में लगभग 9.00 बजे श्री संजय कुमार सिंह के नाम का प्रस्ताव महाल (इलाके) के सभी सम्मानित लोग संन्यासी संत परम्परा से पधारे, वयोवृद्ध संत दण्डी स्वामी श्री देवानन्द सरस्वती जी जो दण्डी स्वामी श्री विमलानन्द सरस्वती जी के शिष्य है, वर्तमान समय में राजगुरु मठ शिवाला घाट बी-3/175 वाराणसी और दण्डी स्वामी श्री सहजानन्द सरस्वती आश्रम बक्सर (बिहार), के साथ-साथ इलाहाबाद (प्रयागराज) में स्थित अन्य दो आश्रमों के उत्तराधिकारी भी हैं के समक्ष प्रस्तुत किए।

दण्डी स्वामी श्री देवानन्द सरस्वती जी सम्मानित लोगों के प्रस्ताव का अनुमोदन किए और बोले-यह भूमि पूज्य संत स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी की तपोभूमि है श्री गोपालधाम के मन्दिर में उत्तराधिकारी का होना अत्यंत आवश्यक है। श्री गोपालधाम का मन्दिर उत्तराधिकारी के अभाव में रिक्त नहीं रहेगा। श्री गोपाल जी ही व्यवस्था कर दिए है।

इसके बाद दण्डी स्वामी श्री देवानन्द सरस्वती जी श्री संजय कुमार सिंह को अपने पास बुलाएं बातें किए बोले स्नान करके आओ। श्री संजय कुमार सिंह स्नान करके

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आए, श्री राधा-श्रीकृष्ण, भगवान श्री नर्मदाधीश भोले शंकर (बाबा श्री गोपालेश्वर महादेव) एवं संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी की मूर्ति के समक्ष उन्हें साक्षी मान कर उपस्थित भक्तों एवं संतो के बीच दण्डी स्वामी श्री देवानन्द सरस्वती जी, श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (गोरे लाल सिंह) को (श्री गोपालधाम मन्दिर) का उत्तराधिकारी घोषित करते हुए उन्हें चादर ओढ़ाए और संन्यासी के रूप में उनका नामकरण **"श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती"** का उद्घोष किए।

इस कार्य से प्रसन्न होकर सभी भक्तों एवं साधु सन्तों ने जयकार किया। उसके बाद श्री गोपालधाम में ध्वनि प्रसारण यंत्र (लाउडिस्पीकर) के माध्यम से यह भी प्रसारण किया जा रहा था, यदि किसी व्यक्ति या भक्त के पास श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह) ने नोट बन्दी के समय में पुराने नोट को बदलने हेतु सुरक्षा की दृष्टि से रूपया दिया है तो वे सहर्ष अपना नाम एवं धनराशि का उल्लेख नव निर्वाचित श्री गोपालधाम मन्दिर के उत्तराधिकारी से व्यक्तिगत सम्पर्क कर उन्हें अवश्य अवगत करा दें। इसकी गोपनीयता रखी जाएंगी। श्री गोपालधाम में भक्तों के बीच आपस में संवाद चर्चा एवं वार्तालाप हो रहा था कि अमुक-अमुक 10-12 भक्तों को जो विश्वास के पात्र थे श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी) नोट बन्दी होने पर उन्हें पुराना नोट सौंप कर नया नोट बैंक से प्राप्त करने हेतु रूपया दिए थे। वे लोग आज तक वापस नहीं किए है। किन्तु किसी भी व्यक्ति एवं भक्त ने न तो धन लेने की बात स्वीकार किया और न तो किसी ने एक रूपया वापस श्री गोपालधाम में लौटाया सभी मौन साध लिए है।

श्री गोपालधाम, सिंथौरा मन्दिर के नव नियुक्त उत्तराधिकारी संत श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी ने बताया चर्चा में जिन 10-12 भक्तों का नाम लिया जा रहा है वे लोग आज तक मुझसे पुराने नोट के विषय में किसी प्रकार की चर्चा-वार्ता नहीं कर रहे हैं। मेरे समक्ष वे पुराना नोट नहीं लिए इस लिए उसके विषय में उनसे मुझे पूछने का अधिकार नहीं बनता है। इस कारण मैं मौन हूँ, ऐसा लगता है कि वे लोग गुरुदेव के न रहने की स्थिति में रूपया लौटाना नहीं चाहते हैं। भगवान का धन है भगवान स्वयं अब उसका इन्साफ करेंगे।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ (श्री सुनिल प्रसाद सिंह, श्री मुन्ना सिंह पुजारी जी) के निर्वाण दिनांक 18.04.2018 ई0 दिन-बुधवार बैशाख शुक्ल पक्ष-3 अक्षय तृतीया तिथि को होने के पश्चात दिनांक 19.05.2018ई0 दिन- शनिवार को प्रथम भण्डारा का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ उसी दिन रात्रि में लगभग 9.00 बजे श्री गोपालधाम मन्दिर के लिए उत्तराधिकारी का चयन भी किया गया। उक्त अवसर पर मैं अपनी धर्मपत्नी व ज्येष्ठ पुत्र तथा पुत्र बधु के साथ श्री गोपालधाम मन्दिर पर उपस्थित था।

दूसरे दिन प्रात: घर वापस आने से पूर्व चलते समय संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी की चरण पादुका को प्रणाम करने की इच्छा व्यक्त किया तो संत श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी बोले- दिनांक 18.04.2018ई0 दिन-बुधवार से दिनांक 19.05.2018ई0 दिन-शनिवार तक एक महीना श्री गोपालधाम मन्दिर पर कोई उत्तराधिकारी नहीं रहा। मन्दिर में पूजा-अराधना का कार्य भक्त संभाल रहे थे। इसी अवधि में श्री गोपाल धाम के मन्दिर पर आने-जाने वाले श्रद्धालु भक्तों ने मन्दिर के प्रांगण में रखी हुई संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ (पुजारी जी श्री मुन्ना सिंह) की उपयोग की गई पुरानी काष्ठ से निर्मित खड़ाऊँ को भक्त पूजा करने के उद्देश्य से अपने-अपने घर लेकर चले गए। मन्दिर पर आने वाले सभी भक्त मन्दिर में सिंहासन पर रखी गई श्री राधा-श्रीकृष्ण एवं संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी की मूर्ति एवं संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी का फोटो एवं उनकी खड़ाऊँ पर अपना शीश झुका कर प्रणाम करते हैं। फिर मन्दिर परिसर में स्थापित भगवान श्री नर्मदाधीश भोले शंकर (बाबा श्री गोपालेश्वर महादेव) के शिवलिंग एवं स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी की मूर्ति की पूजा-अर्चना करते हैं। मै अपने गुरु भाई संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी की चरण पादुका के विषय में संत श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी से वार्ता किया की मन्दिर में श्रद्धालुओं के दर्शन के लिए उनकी भी चरण पादुका रहना अनिवार्य हैं जो भक्त उनकी पुरानी चरण पादुका (खड़ाऊँ) श्रद्धा से अपने घर लेकर चले गए है। फिर उनसे वापस लेना उचित नहीं है।

उनके हृदय में अपार कष्ट होगा। वे भक्त पुजारी जी की खड़ाँऊ को मन्दिर में पुन: वापस करना भी नहीं चाहते है। मन्दिर के उत्तराधिकारी संत श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी से अनुमति एवं आदेश लेकर बलिया वापस आकर काष्ठ कला के निपुण कलाकार श्री सत्यनारायण शर्मा पुत्र श्री मिठाई लाल शर्मा ग्राम-थुम्हा उत्तम, पोस्ट-गड़वार, थाना-गड़वार, जिला-बलिया (उ0प्र0) से सम्पर्क किया। श्री सत्यनारायण शर्मा श्री श्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी, संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी, तथा वर्तमान संत श्री सनातन चैतन्या नन्द सरस्वती जी के निमित काष्ठ की खड़ाऊँ (चरण पादुका) को श्रद्धा भाव से तैयार किया है। उक्त चरण पादुका (खड़ाऊँ) को श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) की 42वीं पूंण्य तिथि के अवसर पर कार्तिक मास के कृष्ण पक्ष नवमी तिथि दिनांक 09.11.2020ई0 दिन-सोमवार को श्री गोपाल धाम के उत्तराधिकारी संत श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी को सप्रेम सहर्ष भेंट करूँगा। उसे मन्दिर में श्रद्धालु भक्तों के लिए दर्शनार्थ एवं पूजा करने के लिए रखा जायेगा।

जब-तक गुरुदेव स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी सशरीर रहें पुजारी श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी) श्री गोपालधाम में हमेशा जमीन पर ही जंगलिया बाबा के पास उनकी गद्दी के निकट शयन किए। जब उनका नश्वर शरीर नहीं रहा तब वे भगवान की शरण में मन्दिर के कोने में एक काष्ठ की चौकी लगा कर शयन करने लगे। स्वामी जी अपनी गद्दी के अनुरूप पुजारी श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी के लिए काष्ठ निर्मित गद्दी का निर्माण कराएं थे, परन्तु पुजारी जी उस गद्दी पर कभी शयन नहीं किए। आज वही गद्दी स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी की गद्दी के समीप मन्दिर में रखी गयी है। अब पुजारी जी के दीक्षित शिष्य संत श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी संध्या होने पर श्रीराधा-श्री कृष्ण और गुरुदेव श्री गोपालानन्द सरस्वती जी के साथ अपने गुरूदेव संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी की मूर्ति/फोटो को सिंहासन से उठाकर उनकी गद्दी पर शयन कराते है और प्रातः वेला में पुनः गद्दी से उठाकर भगवान के सिंहासन पर बैठा कर उनकी आरती पूजा करते है। अन्य सामग्री जिसे पुजारी जी उपयोग किए थे उनमें से निम्न वस्तुएँ जैसे- कमण्डल, चादर, लँगोटी व खड़ाऊँ तथा स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) द्वारा तैयार काष्ठ की गद्दी श्री गोपालधाम मन्दिर में सुरक्षित हैं। संत श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी का श्री गोपालधाम में उत्तराधिकारी के लिए चयन हुआ तो वे अपने गुरुदेव की चौकी पर अपना आसन लगाकर शयन करते है। उनके कथनानुसार गुरुदेव उन्हें स्वप्न में हमेशा दर्शन देते हैं और मार्ग दर्शन भी कराते है। मन्दिर पर पधारने वाले सभी भक्त श्री राधा-श्रीकृष्ण की गद्दी के साथ संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) व संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती की गद्दी पर अपना शीश झुकाकर नमन व प्रणाम करते है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी द्वारा प्रदत्त खड़ाऊँ निम्न भक्तों के यहाँ है जिसकी पूजा अर्चना उनके परिवार के सदस्य करते है।

1. श्री सुरेश सिंह (पत्नी- श्रीमती रिता सिंह)
   पुत्र स्व0 कपिल देव सिंह ग्राम व पोस्ट- रामपुर चीट, थाना-चित्तबड़ागाँव, जिला-बलिया (उ0प्र0)

2. श्री निरंज्जन सिंह (पत्नी श्रीमती गौरी सिंह)
   पुत्र स्व0 नकुल प्रसाद सिंह ग्राम व पोस्ट- ओढ़नपुर, जिला-नवादा (बिहार)

3. श्री अंजनी कुमार सिंह (पत्नी श्रीमती सीमा सिंह)
   पुत्र स्व0 कमल नयन प्रसाद सिंह ग्राम व पोस्ट- अरई केशवपुर, जिला-गया (बिहार)

4. श्री पवन कुमार सिंह (पत्नी श्रीमती मुन्नी सिंह)
   पुत्र स्व0 अयोध्या प्रसाद सिंह ग्राम व पोस्ट- अमारी, जिला-शेखपुरा (बिहार)

5. श्री राजीव कुमार सिह उर्फ (टनटन सिंह) (पत्नी श्रीमती प्रीति सिंह)
   पुत्र स्व0 अशोक कुमार सिंह ग्राम-दरियापुर, जमालपुर, जिला-मुंगेर (बिहार)

अपने गुरुदेव से प्राप्त आशीर्वाद एवं साधना शक्ति से पुजारी जी को तेज एवं प्रकाश प्राप्त हुआ था। वे तपस्या के माध्यम से अध्यात्म की गुढ़ रहस्यों व विशेषता से भली-भाँति परिचित थे। इलाके के साधु-संत, महन्थ उनके समक्ष नत मस्तक हो जाते थे। उनके ऊपर गुरुदेव के आशीर्वाद का प्रभाव रहा। जो देखने को मिलता था। इलाके में उच्च श्रेणी के संतों में इनकी गणना आज भी होती है। जो भक्त विना भेद-भाव छल कपट छोड़कर आपके शरण में आए वे सभी आज उन्नत के मार्ग पर अच्छी आर्थिक स्थिति में है और जो आलोचना किए वे सभी लोग पतन के मार्ग पर चल रहें हैं उनका उत्थान नहीं हुआ। पुजारी जी भगवान की आरती-पूजा स्वयं करते रहे जब अस्वस्थ्य हुए तो आरती-पूजा के समय तबला पर संगत करते रहे और प्रार्थना किया करते थे।

वर्तमान समय में साधु, संन्यासी, संत महात्मा फक़ीर और मौलाना अपने मत् सिद्धान्त, सम्प्रदाय और मज़हब के उत्थान के लिए मंठ, मन्दिर, गुरूद्वारा मस्जिद और मज़ार का प्रचार-प्रसार करते हैं। भक्तों और श्रद्धालुओं के साथ जनता को अपने पक्ष में करने के

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

उद्देश्य से अपनी ओर आकर्षित करते है। ताकि अधिक से अधिक लोग उनके मत्, सम्प्रदाय मज़हब को समझें और आकर्षित होकर मठ, मन्दिर, गुरूद्वारा, मस्जिद मज़ार से आस्था रखें।

श्री गोपालधाम मन्दिर पर संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (श्री जंगलिया बाबा) से श्रद्धा-आस्था रखने वाले श्रद्धावान भक्त जब श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी) से गुरूदीक्षा (गुरूमंत्र) लेने की इच्छा से वार्ता करते हुए अनुरोध एवं आग्रह किए तो पुजारी जी उनसे स्पष्ट कहा करते थे मुझे दीक्षा देने का अधिकार नहीं है मैं दीक्षा देने योग्य नहीं हूँ। हाँ यदि आप दीक्षा लेना चाहते हैं तो बड़े सरकार (श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) से दीक्षा प्राप्त कर सकते हैं वे ही आपके गुरुदेव होंगे मैं मात्र उनका प्रतिनिधि स्वरूप हूँ। जब भक्त उनकी बातों से संतुष्ट एवं सहमत होते थे तब वे संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) की मूर्ति को साक्षी मान कर उन्हें दीक्षा (गुरूमंत्र) देने का कार्य किए और उन्हें ही गुरु मानने को कहते रहें। ऐसा संत होना दुर्लभ है।

श्री मुकुन्दा नन्द सरस्वती उर्फ (श्री सुनिल प्रसाद सिंह-(पुजारी श्री मुन्ना सिंह) पिता-श्री चन्द्रिका प्रसाद सिंह ग्राम-चण्डी मौ पोस्ट-चण्डी मौ थाना-सिलाव, जिला-नालन्दा (बिहार)

वंशवृक्ष निम्नांकित है-

काशीनाथ सिंह
↓
रामपाल सिंह पत्नी बनारसी देवी
↓
चन्द्रिका प्रसाद सिंह पत्नी सुदामा देवी
↓
सुनिल प्रसाद सिंह पत्नी सुनैना देवी उर्फ (मुन्ना सिंह) | साधु शरण सिंह | रामाश्रय सिंह | युगल किशोर सिंह

सुनिल प्रसाद सिंह उर्फ (मुन्ना सिंह)
↓
दिनेश कुमार सिंह पत्नी अनिता देवी → ↓ निशान्त सिंह
गिरधारी सिंह पत्नी मीना देवी → ↓ मनु कुमार सिंह

श्री सुनिल प्रसाद सिंह उर्फ श्री मुन्ना सिंह की तीन बहने थी, बड़ी बहन का नाम-श्रीमती गिरजा देवी और छोटी बहन का नाम-श्रीमती सुनैना देवी व श्रीमती तितली देवी है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री चन्द्रिका प्रसाद सिंह, ग्राम व पोस्ट- चण्डी मौ, थाना-सिलाव, जिला-नालन्दा (बिहार) के चार पुत्र में ज्येष्ठ सुनिल प्रसाद सिंह उर्फ (मुन्ना सिंह) बाल्यावस्था से ही निर्भिक, साहसी थे वे अपने विरोधियों को परास्त करने की क्षमता रखने का अदम्य साहस रखते थे, इनकी शैक्षिक योग्यता इण्टरमीडिएट रही, विद्या अध्ययन काल में भी असामाजिक एवं अभद्र (गलत) लोगों का मुकाबला करना ही इनके जीवन का लक्ष्य बन गया था, इस कारण वे अपने सम्मान की रक्षा करना अपना धर्म मानते थे, गांव एवं (महाल) इलाके में उनका बोल वाला (प्रभाव) था।

श्री सुनिल प्रसाद सिंह उर्फ (श्री मुन्ना सिंह) शिक्षा अध्ययन की अवधि से ही कांग्रेस पार्टी विचार धारा के छात्र नेता रहे। उसके बाद आप कांग्रेस पार्टी की सक्रिय राजनीति भी किया करते थे, उस समय बिहार सरकार के तत्कालीन मुख्यमंत्री श्री महामाया प्रसाद जी एवं भारत सरकार के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी जी से आपका सीधा सम्बन्ध था, जिसके कारण आप उन दोनों नेताओं के सम्पर्क में थे।

श्री सुनिल प्रसाद सिंह उर्फ (मुन्ना सिंह जी) अतुल गोत्रीय भूमिहार ब्राह्मण परिवार में जन्म लिए थे। श्री मुन्ना सिंह को बन्दूक एवं पिस्तौल चलाने में महारथ हासिल था वे इस कला में निपूर्ण थे, इनका निशाना अचूक था। विद्यालय के (सर्टीफिकेट) के अनुसार आपकी जन्म तिथि 01.01.1943 ई0 है।

स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी के यहाँ उनके पिता- श्री चन्द्रिका प्रसाद सिंह हमेशा सिंथौरा के जंगल में (बाबा) से मिलने जाते रहते थे। इसी सम्बन्ध से श्री सुनिल प्रसाद सिंह उर्फ (श्री मुन्ना सिंह) भी स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी के निकट सिंथौरा जंगल में आते-जाते थे। इनका जीवन सदैव संघर्षमय रहा, अपने शत्रुओं को परास्त करने की प्रबल इच्छा रखते थे। एक दिन सुनिल प्रसाद सिंह उर्फ (मुन्ना सिंह) अपने गाँव में अपने ही पट्टीदार से प्रतिशोध होने पर बदला लेने का विचार बना लिए, स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी पहुँचे सिद्ध संत थे उन्हें तप-बल से ज्ञात हुआ मुन्ना आज रात्रि में अपने पट्टीदार के घर पर धावा बोलने वाला है। वे तुरन्त श्री जयनन्दन सिंह को जंगल से चण्डी मौ गाँव भेज

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

कर रात्रि में ही श्री मुन्ना सिंह को श्री गोपालधाम आने का संवाद भेज दिए। बाबा की आज्ञा व सूचना मिलते ही श्री सुनिल प्रसाद सिंह उर्फ (श्री मुन्ना सिंह) अपने दुश्मनों से बचने हेतु खेत मार्ग का उपयोग करते बाबा के सम्मुख पहुँचे स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी मुन्ना सिंह की पीठ पर मुक्का मारते हुए बोले-तुम क्या करने जा रहे थे, चलो आज से तुम्हें श्री गोपालधाम से बाहर नहीं जाना है उसी दिन से वे श्री गोपालधाम में रहने लगे।

एक समय ब्रह्मा जी के मानस पुत्र देवर्षि नारद मुनि जी जंगल मार्ग से यात्रा कर रहे थे। उन्हें देख कर डाकूओं का सरदार डाकू रत्नाकर नारद मुनि को लूटने के उद्देश्य से अपने डाकू साथियों को साथ लेकर उन्हें मार्ग में रोका। उस समय निर्भिक होकर नारद जी बोले- यह पाप कर्म क्यों कर रहे हो। रत्नाकर डाकू का उत्तर था, अपने परिवार के भरण पोषण के लिए, उसके बाद देवर्षि नारद जी बोले- क्या तुम्हारे इस पाप कर्म में तुम्हारा परिवार भागीदार होगा ? विश्वास के लिए मुझे इस वृक्ष में बाँध दो और घर जाकर अपने परिवार से पूछ कर आओ, मैं तुम्हारा इन्तजार करूँगा। नारद जी को वृक्ष में बाँध कर रत्नाकर डाकू अपने घर गया, वह सर्वप्रथम अपनी धर्म पत्नी से पूछा-मेरे द्वारा किये जा रहे पाप में तुम मेरा साथ दोगी, पत्नी ने उत्तर दिया नहीं मैं पाप में भागीदार नहीं हुँगी। इस प्रकार अपने परिवार के समस्त सदस्यों से वही प्रश्न पूछा-सभी इस पाप कर्म में भागीदार होने से इंकार कर दिए।

उसी समय उनके हृदय में वैराग्य जागृत हो गया, वह घर से जंगल आकर सर्व प्रथम नारद जी को बन्धन मुक्त किया और उनके चरणों में गिर पड़ा। नारद जी राम नाम जपने का मंत्र दिये। रत्नाकर डाकू जंगल में जाकर तपस्या करने लगे बाद में वहीं डाकू रत्नाकर महर्षि बाल्मिकी बन कर रामायण की रचना किए। ठीक उसी प्रकार श्री सुनिल प्रसाद सिंह उर्फ (मुन्ना सिंह) स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी के सम्पर्क में आने के बाद श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती उर्फ (पुजारी जी) बन कर श्री गोपालधाम में श्री राधा-श्रीकृष्ण एवं भगवान श्री नर्मदाधीश भोले शंकर (बाबा श्री गोपालेश्वर महादेव) की पूजा-अर्चना करते रहे और अपने गुरूदेव श्री गोपालानन्द सरस्वती जी की मूर्ति की पूजा प्रार्थना करते रहे। जिस पर संत और ईश्वर की दया दृष्टि होती हैं वही रत्नाकर डाकू से महर्षि बाल्मिकी बनता है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री गोपालधाम मन्दिर पर दूर-दूर स्थानों से आने वाले प्रेमी भक्त तथा इलाके के भिन्न-भिन्न गाँव से पधारे भक्त संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ (पुजारी जी) से जब मिलते थे तो वे अत्यधिक प्रसन्न व प्रफुल्लित होते थे श्री गोपालधाम आने वाले भक्त पुजारी जी का चरण-स्पर्श आदर एवं सम्मान सहित करते थे, संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती उर्फ (पुजारी जी) भी अपने व्यवहार एवं मधुर वाणी के साथ उन्हें स्नेह प्यार करते थे।

श्री गोपालधाम आने वाले भक्तों से स्नेह एवं प्रेम के कारण उनके निमंत्रण पर भक्तों के घर पुजारी जी अवश्य जाते थे। इन्हीं कारणों से भक्त भी श्रद्धा पूर्वक पुजारी जी को बुलाना नहीं भूलते थे, मेरे यहाँ प्रत्येक मांगलिक उत्सव पर पधारते रहें। वर्ष 2018 ई0 में होने वाले मांगलिक कार्य (उपनयन संस्कार) यज्ञोपवित संस्कार के साथ-साथ श्रीमद् भागवत कथा का परायण दिनांक 20.04.2018ई0 को था। वे मेरा निमंत्रण को स्वीकार किये थे। अचानक उनकी तबीयत दिनांक 16.04.2018 ई0 को रात्रि में खराब हो गई, भक्त इलाज कराने के लिए बिहार शरीफ स्थित सरकारी अस्पताल में भर्ती कराएँ जहाँ उनका इलाज हो रहा था, पास में उपस्थित भक्तों से बार-बार कह रहे थे, गाड़ी मगाँओं मुझे कमलाकर के यहाँ बलिया जाना है। विधाता को मंजूर नहीं था दिनांक 18.04.2018 ई0 को अस्पताल से पटना ले जाते समय रास्ते में ही पुजारी जी प्रात: लगभग 7.00 बजे निर्वाण प्राप्त कर गो लोक गमन किये।

श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) का पार्थिव शरीर दिनांक 04.07.1979 ई0 को त्यागने के पश्चात उनके साधना एवं तपस्या द्वारा सिंचित पवित्र भूमि (श्री गोपालधाम) में आने-जाने का मुझे सौभाग्य मिला, मैं श्री गोपालधाम की आस्था से जूट गया प्रत्येक वर्ष लगभग 4-6 दिन मुझे श्री गापोलधाम में रहने का सौभाग्य अवश्य मिल जाता रहा। कभी-कभी श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी) पूजा-अराधना से समय निकाल कर भक्तों के निकट बैठ कर वार्ता किया करते थे वार्ता में अपने द्वारा किए गए पुरानी बातों को स्मरण करते हुए अपनी बुराइयों पर पर्दा डालने का प्रयास कभी नहीं किए अपनी बुराइयों को बताने में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संकोच नहीं करते थे सत्य-सत्य बता देते थे। उनका कहना था मैं डकैती, गुडागिरी एवं दबंगई के साथ नौटंकी में रह कर उसमें नृत्य करने वाली नर्तकी के सम्पर्क में रहा। मुझसे कई अपराध भी हुए। उसके बाद गुरूदेव के आशीर्वाद के कारण मैं भविष्य में होने वाले अन्य अपराधों व पापों से वंचित हो गया हूँ तथा श्री गोपालधाम में जीवित हूँ। मैं और मेरा परिवार अभागा रहा अपने गुरूदेव तथा अपने गुरू भाई के पार्थिव शरीर का अन्तिम दर्शन नहीं कर सका। यह वेदना मुझे जीवन पर्यन्त रहेगी।

कमलाकर दुबे

कमलाकर दुबे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संक्षिप्त जीवन-परिचय की एक झलक

संत श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी

उर्फ श्री संजय कुमार सिंह (गोरे लाल सिंह जी)

श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) दिनांक 04.07.1979ई0 दिन-बुधवार की रात्रि में लगभग 8.00 बजे तीन बार ऊँ ऊँ ऊँ शब्द का उद्घोष करते हुए गो लोक गमन किए। उसके पूर्व दिनांक 30.05.1979ई0 से दिनांक 18.04.2018ई0 तक लगभग 38 वर्ष 10 माह 18 दिन श्री मुकुन्दा नन्द सरस्वती उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी) श्री गोपालधाम में श्री राधा-श्रीकृष्ण, भगवान श्री नर्मदाधीश भोले शंकर (बाबा गोपालेश्वर महादेव) सहित सत् गुरु स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) की पूजा अर्चना एवं सेवा करते रहें। विगत लगभग बारह-तेरह वर्षों से मन्दिर पर खान-पान की व्यवस्था में कमी व पौष्टिक आहार भोजन के अभाव होने से सुगर रोग से ग्रसित हो गये। दो-तीन वर्ष पूर्व से गम्भीर रोगों से ग्रसित होने पर अति अधिक अस्वस्थ्य हो गए। फिर भी भगवान की पूजा अराधना और सेवा भाव में कभी कमी नहीं होने दिए। दिनांक 16.04.2018ई0 को अचानक बीमार पड़े। इलाज के लिए भक्त उन्हें बिहार शरीफ़ स्थित राजकीय चिकित्सालय में भर्ती कराए। दिनांक 17.04.2018ई0 को उनके स्वास्थ्य में सुधार होने पर भक्तों से वार्ता किये कुछ भक्तों को मंगलवार के उत्सव में सम्मलित होने का निर्देश दिए। फिर उन्हें श्री गोपालधाम जाने को कहे। कुछ समय बाद वे अचानक अचेता अवस्था में चले गए। डाक्टर घबराकर पुजारी जी को पटना ले जाने के लिए सलाह दिए तथा रेफ़र किए। भक्त पुजारी जी को गाड़ी से दिनांक 18.04.2018ई0 के प्रातः काल में ही बिहार शरीफ़ अस्पताल से पटना के अच्छे चिकित्सालय में लेकर गये। अस्पताल पहुँचने पर वहाँ के डाक्टर पुजारी जी को देखते ही उन्हें मृत्यु घोषित कर दिए। बोले 2 घण्टा पूर्व ही इनकी मृत्यु हो गई है। पुजारी जी दिनांक 18.04.2018 ई0 दिन-बुधवार वैशाख शुक्ल पक्ष-3 अक्षय तृतीया तिथि को गो-लोक गमन किये।

भक्त हतोत्साहित एवं निराश हो गए। पुजारी जी का पार्थिव शरीर को पटना स्थित अस्पताल से उसी गाड़ी में लेकर श्री गोपालधाम मन्दिर पर वापस आ गए। पार्थिव शरीर भक्तों के अन्तिम दर्शन करने के लिए मन्दिर पर रखा गया। पुजारी जी के मृत्यु का समाचार जंगल में आग लगने की तरह पुरे इलाके में फैल गई। आस-पास के गाँवों से भक्त

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री गोपालधाम मन्दिर पर आने लगे। पुजारी जी के पार्थिव शरीर का अन्तिम दर्शन करने के लिए भक्तों की भीड़ श्री गोपालधाम में उमड़ पड़ी। सैकड़ो की संख्या में भक्त इकठ्ठे हो गए। दूसरे दिन दिनांक 19.04.2018ई0 दिन- वृहस्पतिवार को संन्यासी परम्परानुसार पुजारी जी के पार्थिव शरीर को फूल मालाओं से सजा कर रथ में बैठाया गया और अन्तिम् संस्कार करने के लिए शोभा यात्रा श्री गोपालधाम मन्दिर से निकल कर बाढ़ स्थित गंगा तट के 'उमा नाथ घाट' तक लेकर गए। सैकड़ों भक्त इस शोभा यात्रा में सम्मलित हुए थे। जहाँ विधि विधान से मंत्रोच्चारण के पश्चात् उनके पार्थिव शरीर को गंगा जी की निर्मल धारा में जल समाधि देते हुए विसर्जित किया गया।

दिनांक 18.04.2018 ई0 से दिनांक 19.05.2018 ई0 तक श्री गोपालधाम में मन्दिर का कोई उत्तराधिकारी नहीं था। अपने जीवन काल में श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ (पुजारी जी) किसी अन्य व्यक्ति को उत्तराधिकारी बनाने का प्रस्ताव अथवा चयन नहीं किए थे। फलतः श्री गोपालधाम मन्दिर के पूजा-अराधना एवं सेवा के लिए उनकी अनुपस्थिति में उत्तराधिकारी की आवश्यकता पड़ी। श्री गोपालधाम मन्दिर के लिए किसी योग्य को उत्तराधिकारी बनाने की चर्चा होने लगी। सही एवं सक्षम उत्तराधिकारी की खोज एवं चयन के लिए लोग निराश हो रहे थे। अब क्या होगा ? श्री गोपालधाम की व्यवस्था के लिए मन्दिर में आय का कोई अन्य श्रोत नहीं है फिर भी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) के प्रभाव के कारण मन्दिर के सम्पर्क में आने वाले भक्तों का सहयोग से (जिसे आकाश वृत्ति की संज्ञा दी जाती है) ईश्वर की कृपा से श्री गोपालधाम के मंदिर में राग-भोग का कार्य निर्विघन रूप से चलता रहा। श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह) को भगवान की पूजा-अर्चना एवं सेवा करने का अधिकार भार का निर्देश स्वयं श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी दिये थे।

जंगल में पूर्ण रूप से अभाव-ही अभाव दिखाई दे रहा था वे अपने परिश्रम एवं त्याग तपस्या के बल पर श्री गोपालधाम की महिमा एवं कीर्ति यश की ख्याति को बढ़ाते हुए, हजारों भक्तों को मन्दिर की आस्था से जोड़े जिसके फलस्वरूप दिन-प्रतिदिन भक्तों की संख्या में वृद्धि होती गयी। यह कठिन कार्य श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी) के अथक प्रयास से सम्भव हो सका। दिनांक 18.04.2018ई0 दिन-बुधवार बैशाख शुक्ल पक्ष-3, अक्षय तृतीया को श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिंह जी) के गो लोक गामी होने की स्थिति में श्री गोपालधाम मन्दिर पर रहने के लिए कोई भक्त सन्यासी बनना नहीं चाहता था। बल्कि श्री गोपालधाम की सुख सुविधा एवं यश कीर्ति को देखते हुए मन्दिर में भगवान के चढ़ावे की धनराशि से ही प्रेम, लगाव एवं लालच की इच्छा रखने वाले कई भक्तों की हार्दिक इच्छा एवं मानसिकता थी कि कोई उनके नाम का प्रस्ताव श्री गोपालधाम मन्दिर के व्यवस्थापक एवं उसकी देख-रेख के लिए भक्तों के समक्ष लावें और वे महंथ बनकर श्री गोपालधाम में रहते हुए अपना अधिकार स्थापित करें।

श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी) अपने यहाँ दो गरीब ब्राह्मण के बच्चों की देख-रेख एवं संरक्षण दे रहे थे। दोनों एक ही माँ-बाप के सगे भाई है। दोनों बालकों की शिक्षा-दीक्षा के लिए उन्हें अच्छे विद्यालय में पढ़ने के लिए प्रवेश करा दिए थे तथा उनके भोजन वस्त्र एवं शिक्षा पर होने वाले व्यय का पूर्ण व्यवस्था श्री गोपालधाम से ही किया करते थे। श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी के गो लोक गमन के बाद श्री गोपालधाम के श्रद्धालु भक्तों की इच्छा रही कि इन्हीं बच्चों में से किसी एक को श्री गोपालधाम का उत्तराधिकारी बनाने का प्रस्ताव किया जाय, इस विचार से कुछ लोग उन दोनों बच्चों को पास बुलाकर उन्हें उत्तराधिकारी बनाने के सम्बन्ध में वार्ता किए परन्तु दोनों बालक संन्यासी बनने से साफ इन्कार कर दिए और बोले मुझे संन्यासी नहीं बनना है।

संन्यासी परम्परा के अनुसार सन्तों के निर्देशन पर श्रद्धालु भक्तों के सहमति से श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी की प्रथम पूण्य तिथि का भण्डारा दिनांक 19.05.2018 ई0 दिन-शनिवार को निर्धारित की गई थी। जिसमें सन्यासी संतो के अतिरिक्त, इलाके के मन्दिरों के महंथों, साधु समाज, ब्राह्मणों, भक्तों व आस-पास के गांवों में रहने वाले किसानों को आमंत्रित किया गया था। उक्त अवसर पर जिला-बलिया, उ0प्र0 के अन्तर्गत अँजोरपुर, कोट, इन्दरपुर, थम्हनपुरा गांव के अतिरिक्त अन्य गांवों से लगभग 100 की संख्या में भक्त श्री गोपालधाम पहुँचे थे। मैं (कमलाकर दुबे) अपनी धर्म-पत्नी श्रीमती कौशल्या देवी एवं पं0 श्री विश्वम्भर नाथ शुक्ल जी के साथ लगभग 10 दिन पूर्व से ही श्री मद् भागवत पुराण की कथा सप्ताह कराने के लिए श्री गोपालधाम में उपस्थित था। जहाँ श्री गोपालधाम में उत्तराधिकारी कौन होगा की चर्चा भक्तों के मध्य हो रही थी। कोई सन्यासी बनने को तैयार नहीं था।

पुजारी जी के निर्वाण की तिथि के बाद प्रथम भण्डारे के आयोजन पर इलाका

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

(क्षेत्र) के भिन्न-भिन्न गाँव व स्थान से पधारें सभी भक्त श्री गोपालधाम में उत्तराधिकारी का चयन (चुनाव) के लिए आपस में वार्ता एवं विचार - विमर्श करने लगे। क्षेत्र के माननीय सम्मानित लोग जो श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी के समय से ही श्री गोपालधाम के मन्दिर से अटूट आस्था रखते चले आ रहे थे, वे सभी आदमी एक स्थान पर इकट्ठा होकर योग्य उत्तराधिकारी की तलाश में बैठ कर वार्तालाप एवं गहन अध्ययन के साथ चर्चा-मंत्रणा करने लगे, सभी ने आम सहमति से निर्णय लिया कि संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी के रिक्त स्थान पर उसकी पूर्ति हेतु उनके द्वारा दीक्षित शिष्य श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (श्री गोरे लाल सिंह) ग्राम- छाछू- बीघा, पोस्ट- कटौंना, थाना- कतरी सराय, जिला- नालन्दा (बिहार) का नाम इस स्थान पर उत्तराधिकारी पद के लिए सबसे उपयुक्त एवं उत्तम सिद्ध होगा। अतः वे सभी लोग जो बैंठक में थे एक मत होकर एक स्वर से अपनी स्वीकृति एवं संस्तुति सहित प्रस्ताव को अनुमोदन किए। साथ ही श्री गोपालधाम में उपस्थित जनता जर्नादन के समक्ष अपने निर्णय को उनके संज्ञान में लाए। वहाँ उपस्थित सभी भक्तों ने उनके द्वारा लाए गए प्रस्ताव का स्वागत किया और हर्ष ध्वनि से जय-जय कार करने लगे। लोगों का तर्क था श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (श्री गोरे लाल सिंह) पूर्व उत्तराधिकारी श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी) से दीक्षा गुरु मंत्र लिए है और वे उनसे गुरूमंत्र प्राप्त कर उन्हें अपना आध्यात्मिक गुरू मानते हैं, श्री गोपालधाम के लिए सबसे उपर्युक्त उत्तराधिकारी साबित होंगे।

श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (श्री गोरे लाल सिंह) के पक्ष में श्री गोकरण सिंह, श्री बजरंगी सिंह, श्री शालिक ग्राम सिंह उर्फ (कारो सिंह), श्री उपेन्द्र सिंह उर्फ (यू0पी0 सिंह) ग्राम व पोस्ट-सिंथौरा, जिला-नालन्दा (बिहार) श्री जयनन्दन सिंह, श्री कृष्णा सिंह, श्री छोटेलाल सिंह, ग्राम व पोस्ट- चण्डी मौं थाना-सिलाव, जिला-नालन्दा (बिहार) श्री विजय कुमार सिंह, श्री पारस नाथ सिंह, ग्राम-पावा, पोस्ट- पावापुरी, जिला-नालन्दा (बिहार) श्री उमेश सिंह, श्री मुकेश सिंह उर्फ (मुखिया जी) श्री चुनमुन सिंह, श्री मुन्नी सिंह, श्री सीता राम सिंह ग्राम-छाछु बीघा, पोस्ट-कटौना, थाना-कतरी सराय, जिला-नालन्दा (बिहार) श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (भड़ाकू सिंह) श्री उपेन्द्र सिंह उर्फ (श्री लाटो सिंह) श्री प्रिन्स कुमार सिंह, पुत्र श्री राजेन्द्र प्रसाद सिंह, श्री कन्हैया सिंह, ग्राम-सैदी, पोस्ट-वादी, जिला-नालन्दा (बिहार) श्री नरायण सिंह, श्री चरित्र सिंह श्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

बालेश्वर सिंह ग्राम-कमल बीघा, जिला-नालन्दा (बिहार), श्री अजय कुमार सिंह, ग्राम-चिरइयाँटार, पोस्ट-साम्वे, जिला-नवादा (बिहार), श्री मोहन सिंह पुत्र स्व0 मथुरा प्रसाद सिंह ग्राम व पोस्ट- मानो, थाना-सूरजगढ़, जिला-लखी सराय (बिहार) श्री हिमान्शु पुत्र श्री चितरंजन कुमार सिंह ए-31, सचिवालय कालोनी, रोड नं0-2, कंकड बाग पटना (निकट केन्द्रीय विद्यालय) श्री साधु सिंह, ग्राम-बलौर, पोस्ट- चण्डी मौं जिला-नालन्दा (बिहार) पं0 श्री विश्वम्भरनाथ शुक्ल, श्री संजय कुमार दुबे (ग्राम प्रधान),श्री अभय कुमार दुबे, श्री रमायण सिंह, श्री मोहन वर्मा (पूर्व प्रधान), श्री शमशेर चौधरी, ग्राम व पोस्ट- थम्हनपुरा, जिला-बलिया तथा श्री रत्नाकर दुबे, मुहम्मदाबाद, जिला-गाजीपुर के अलावा अन्य कई लोग थे। जो श्री गोपालधाम में उत्तराधिकारी के रूप में संजय कुमार सिंह उर्फ (श्री गोरे लाल सिंह) को चाहते थे।

श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (श्री गोरे लाल सिंह) के नाम पर कुछ स्थानीय भक्त एवं स्थानीय जनता ने विरोध भी किया उनके अनुसार श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (श्री गोरे लाल सिंह) स्वभाव से अक्खड, उदण्ड प्रवृत्ति के लड़ाकू एवं कठोर भाषी व क्रोधी प्रवृत्ति के व्यक्ति है इनके उत्तराधिकारी बनने से भक्तों की संख्या में कमी आने की सम्भावना है। इसलिए वे श्री गोपालधाम के लिए योग्य उत्तराधिकारी नहीं होंगे। श्री गोपालधाम में सरल स्वभाव का शान्ति प्रिय एवं मधुरभाषी उत्तराधिकारी होना चाहिए। अन्यथा दूर-दूर स्थानों से पधारें भक्तों को उत्तराधिकारी के कठोर भाषा का प्रयोग करने पर उनके कटू वाणी का शिकार होने से उन्हें कष्ट व परेशानी उठानी पड़ेगी और उन्हें पीड़ा होगी। भक्त इस पवित्र तपोभूमि पर आने से वंचित होते जाएंगे। उसके बाद श्री गोपालधाम मन्दिर का भविष्य दयनीय अवस्था में होने से अन्धकारमय हो जाएगा।

संन्यासी, सतं, महंथ और भिन्न-भिन्न गाँव से पधारे भक्त जो भण्डारे के अवसर पर उपस्थित थे उसमें अधिकांश संख्या में भक्तों का मानना एवं कहना था श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (श्री गोरे लाल सिंह) अपने प्रिय गुरू श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी) की प्रतिष्ठा बचाने के लिए यहाँ की व्यवस्था में कोई कमी नहीं होने देंगे, ये कठोर भाषी एवं परिश्रमी व्यक्ति हैं परन्तु किसी की हाथ की कठपुतली बन कर उसके इशारे पर कार्य नहीं करेंगे। वे अपनी समस्त बुराइयों को त्याग कर संन्यासी बन भगवान एवं

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुरू की पूजा-अराधना करना चाहते है। साथ ही साथ संजय कुमार सिंह जी अपनी दोनो पुत्रियों की शादी (विवाह) कर चुके हैं अब वे संसारिक जिम्मेदारी से मुक्त हो गए हैं, इनका स्वभाव वैराग्य की ओर उन्मुख है ये गुरू एवं भगवान की सेवा करना चाहते है। ऐसे विचार वाले सन्यासी, साधु किसान एवं भक्तों से वार्ता करने के पश्चात् मैं (कमलाकर दुबे) अपने पुरोहित पं0 श्री विश्वम्भर नाथ शुक्ल जी जो श्री गोपालधाम से अटूट आस्था रखते हैं से वार्ता किया ऐसा लगता है यह स्थान स्थानीय लोगों के कटूता आपसी विवाद एवं मतभेद के कारण उत्तराधिकारी के अभाव में विरान हो जाएगा और इस परिस्थिति में भिन्न-भिन्न स्थानों से पधारें श्रद्धावान भक्तों के साथ हम लोग भी अपने आस्था के बिन्दू श्री गोपालधाम से अलग-थलग हो जाएंगे। कुछ भी हो यहाँ स्वयं निर्णय लेने वाला उत्तराधिकारी का होना आवश्यक है ऐसी विषम स्थिति में श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (गोरे लाल सिंह) ही श्री गोपालधाम के लिए सबसे अच्छे उत्तराधिकारी सिद्ध होंगे।

यह सोच-विचार के पश्चात् संन्यासी परम्परा से पधारे संत दण्डी स्वामी श्री देवानन्द सरस्वती जी जो राजगुरू मठ शिवालाघाट बी-3/175 वाराणसी के संस्थापक- श्री मत् परमहंस परिब्राजकाचार्य दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी के उन्नतीसवें शिष्य दण्डी स्वामी श्री विमला नन्द सरस्वती जी के शिष्य हैं जो दण्डी स्वामी श्री सहजानन्द सरस्वती आश्रम बक्सर (बिहार) से पधारे है। वर्तमान में राजगुरू मठ शिवालाघाट बी-3/175 वाराणसी एवं दण्डी स्वामी श्री सहजानन्द सरस्वती आश्रम बक्सर (बिहार) के साथ-साथ प्रयागराज में स्थित अन्य दोनों आश्रमों के उत्तराधिकारी है। उनके समक्ष श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (श्री गोरे लाल सिंह) के नाम का प्रस्ताव रखा गया। श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (गोरे लाल सिंह) के नाम पर दण्डी स्वामी श्री देवानन्द सरस्वती जी अपनी स्वीकृति देते हुए श्री संजय कुमार सिंह को उत्तराधिकारी बनाने को तैयार हो गए। स्वामी जी बोले- श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) ऐसे सिद्ध पुरूष की तपस्थली तथा उनके साधना द्वारा सिंचित पवित्र भूमि पर स्थित श्री गोपालधाम के मन्दिर में उत्तराधिकारी का होना अतिआवश्यक है।

भण्डारा का कार्यक्रम समापन की ओर चल रहा था उसी दिन लगभग 9.00 बजे रात्रि में ~~भम्वान~~ भगवान श्री राधा-श्रीकृष्ण/श्री नर्मदाधीश-भोले शंकर (बाबा श्री गोपालेश्वर

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

महादेव) एवं संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द जी की मूर्ति को साक्षी मानकर उनके समक्ष वयोवृद्ध संत दण्डी स्वामी श्री देवानन्द सरस्वती जी श्री गोपालधाम में पधारे अन्य सन्तों तथा भक्तों के समक्ष सन्यासी परम्परा के अनुसार श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (गोरे लाल सिंह) को स्नान करने का निर्देश दिए श्री संजय कुमार सिह शुद्ध स्नान करने के बाद भगवान के सम्मुख आए। वहाँ उपस्थित जन सैलाब के समक्ष वयो वृद्ध संत दण्डि स्वामी श्री देवानन्द सरस्वती जी ने उन्हें श्री गोपालधाम मन्दिर का उत्तराधिकारी घोषित करते हुए मन्दिर का अधिकार भार सौंप कर उन्हें चादर ओढ़ाए। इनके पारिवारिक नाम श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (श्री गोरे लाल सिंह) से बदल कर संन्यास में नामकरण करते हुए सन्यासी के रूप में उन्हें श्री **सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती** नाम का उद्घोष किये। श्री गोपालधाम में उपस्थित समस्त भक्तों एवं साधु समाज ने हर्ष ध्वनि से इस उद्घोष कार्य का स्वागत् किया।

श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (श्री गोरे लाल सिंह) के परिवार में सभी सदस्य इस कार्य का विरोध कर रहे थे वे इन्हें सन्यासी बनने से रोक रहे थे एक मात्र उनके पिता श्री मुन्नी सिंह ग्राम-छाछू बीघा, पोस्ट- कटौना, थाना-कतरी सराय, जिला-नालन्दा (बिहार) अपने पुत्र को सन्यासी बनने पर बहुत खुश थे। वे इस कार्य का स्वागत किए, तथा स्वयं अत्यधिक प्रसन्न दिख रहे थे। उनका कहना था कि मैं आज धन्य हो गया, मेरा पुत्र संजय कुमार सिंह उर्फ (गोर लाल सिंह) श्री गोपालधाम में भगवान की सेवा पूजा-अर्चना के लिए उत्तराधिकारी नियुक्त है। इनके सन्यासी होने पर मेरे कूल, खानदान की सात पीढ़ी तक के लोगों को मुक्ति प्राप्त हो जोएगा। ऐसा शास्त्रों में कहा गया है। परिवार के अन्य सदस्य अपने-अपने निजी स्वार्थ वश इस कार्य का विरोध कर रहे हैं।

श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (श्री गोरे लाल सिंह) संन्यास ग्रहण करने के बाद अपने पिता श्री मुन्नी सिंह जी से आशीर्वाद लेने उनके निकट गये, पिता का चरण स्पर्श किए तथा परिवार के सभी जिम्मेदारियों से मुक्त होकर उन्हें अपने घर मकान के साथ कृषि योग्य भूमि एवं एकत्रित धन की चाभी सौंप कर संसारिक मोह से विरक्त हो गये। सन्यास ग्रहण करने के बाद से ही उनकी वाणी में मधुरता तथा स्वभाव में सरलता का भाव झलकने लगा। वे श्री गोपालधाम के मंदिर पर रह कर श्री राधा-श्रीकृष्ण, भगवान श्री नर्मदाधीश भोले शंकर (बाबा गोपालेश्वर महादेव) के साथ संत शिरोमणि श्री श्री 1008 स्वामी श्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) एवं संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी) के मूर्ति/फोटो की पूजा-अराधना एवं सेवा कार्य में लग गए है। गुरू कृपा से धीरे-धीरे इनकी वाणी भाषा एवं संस्कार में सुधार एवं परिवर्तन आ रहा है। इनका विरोध करने वाले भक्त भी अब इनके आचरण से संतुष्ट दिख रहे है। उनके अनुसार श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (श्री गोरे लाल सिंह) में चमत्कारिक परिवर्तन हुआ है जो श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) एवं संत श्री मुकुन्दा नन्द सरस्वती उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह जी) के आशीर्वाद से दिख रहा है। श्री गोपालधाम की व्यवस्था में कोई कमी न हो उसके लिए श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी हमेशा चिन्तित एवं प्रयासरत रहते है। गुरू कृपा से इनमें दिन प्रतिदिन परिवर्तन आता दिखाई दे रहा है।

श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (श्री गोरे लाल सिंह) के जीवन-चरित्र को मेरा हृदय उसे दो विचार धारा में विभक्त करते हुए निम्न बिन्दुओं में रेखांकित कर रहा है-

1. प्रथम विचार धारा यह है कि श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (श्री गोरे लाल सिंह) का गृहस्थाश्रम जीवन तीत लौकी फल के सदृश्य है जो देखने में सुन्दर और चखने में कडुवा (तीता) होता है, संत समाज उसे पाकर उसके अन्दर के विकार तत्व (तीता) पदार्थ को बाहर निकाल देता है। उसके बाद उसे निर्मल एवं स्वच्छ जल का पात्र तैयार करके उसी पात्र में शुद्ध जल इकठ्ठा कर अपने पास रखते है, तथा उसी शीतल जल से अपनी प्यास बुझाते हैं।

   संन्यास के पूर्व श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (श्री गोरे लाल सिंह) का स्वभाव भी उस तीत लौकी के फल की तरह था जो देखने में सुन्दर किन्तु स्वभाव से अडियल, उदण्ड, क्रोधी एवं लड़ाकू रहा, किन्तु संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी से दीक्षा (गुरु मंत्र) प्राप्त करने के बाद संन्यास लेने पर वे अपने दूषित विचारों को त्याग कर स्वच्छ विचारा धारा में परिवर्तन ला रहे हैं। ताकि लोग उनसे नफ़रत न करके प्यार करें।

2. द्वितीय विचार धारा यह है कि- श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (श्री गोरे लाल

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सिंह) का गृहस्थाश्रम का जीवन चरित्र बाल्यावस्था से ही उग्र, उदण्ड एवं क्रोधी प्रवृत्ति का रहा इस कारण इनका स्वभाव इलाके के अन्य असामाजिक व्यक्तियों के व्यवहार से मिलता-जुलता रहा, और वे ही इनके मित्र रहे फलस्वरूप इनका स्वभाव व कार्य पूर्व समय के रत्नाकर डाकू की तरह था। श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी से दीक्षा प्राप्त करने के बाद उनके हृदय में वैराग्य जागृत हुआ, श्री गोपालधाम में संन्यास लेने के पश्चात् इनके ऊपर गुरूकृपा से प्रेरणा मिली वे अपनी समस्त पूर्व के जीवन काल की बुराइयों, दोषों एवं कलंकों के कसाव (धब्बा) को धो रहे है और भगवान का भजन सेवा साधना एवं तपस्या में रम्म गए है। मंन्दिर पर आने वाले बाहरी व स्थानीय भक्त इनके व्यवहार से सन्तुष्ट है। श्री गोपालधाम पधारने पर भक्तों को बैठने सोने और भोजन में कमी न हो का ध्यान श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी रखते हैं जिसमें भक्तों की संख्या में दिन-प्रति दिन वृद्धि हो रही है। श्री गोपालधाम की व्यवस्था पहले से उत्तम है।

मुझे पूर्ण आशा एवं विश्वास है कि एक दिन श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) एवं संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ (पुजारी जी) की साधना एवं तपस्या से पवित्र भूमि श्री गोपालधाम में संत श्री सनातन चैंतन्यानन्द सरस्वती जी उच्च स्तर के संत बनेंगे। जिस प्रकार रत्नाकर डाकू देवर्षि नारद मुनि से सम्पर्क में आने के बाद डाकू रत्नाकर से महर्षि बाल्मिकी बने थे। वे रामायण की रचना कर भगवान राम की कथा विश्व में भक्तों के सम्मुख लिख कर प्रस्तुत किए।

श्री गोपालधाम में दूर-दूर स्थानों से पधारे भक्त अथवा स्थानीय भक्तों के आने पर उनके साथ संत श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी प्रेम व प्यार की गंग धारा प्रवाहित कर रहे है। जब से संन्यास धारण किए है। इनकी वाणी व व्यवहार में अद्भूत चमत्कारी परिवर्तन आ रहा है आप मेरी कही गयी बातों पर विश्वास व यक़ीन करें अथवा आप स्वयं श्री गोपालधाम के मन्दिर पर आकर मेरे द्वारा कही गई बातों की सत्यता की जाँच कर अनुभव महसूस कर सकते है यह चमत्कार ईश्वर भजन एवं गुरू कृपा के कारण सम्भव हुआ है। श्री गोपालधाम में श्री राधा-श्रीकृष्ण, भगवान श्री नर्मदाधीश भोले शंकर बाबा श्री गोपालेश्वर महादेव) एवं गुरुओं की पूजा-प्रार्थना एवं सेवा करने से प्राप्त हुआ है।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

वंशवृक्ष निम्नांकित है-

श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (गोरे लाल सिंह) पिता-श्री मुन्नी सिंह ग्राम-छाछू बीघा, पोस्ट-कटौंना, थाना-कतरी सराय, जिला-नालन्दा (बिहार)

दादा-गया सिंह दादी-केशरी देवी

राम खेलावन सिंह | मुन्नी सिंह पत्नी मोला देवी | अर्जुन सिंह | फतेहबहादुर सिंह

उमाशंकर सिंह | संजय कुमार सिंह पत्नी रेनू देवी उर्फ गोरे लाल सिंह | दीना नाथ सिंह

लड़की

हीरा देवी | (दोनों लड़की शादी-शुदा है) | सम्मी देवी

संजय कुमार सिंह उर्फ (गोरे लाल सिंह) की तीन बहन थी, जो इनसे बड़ी थी। उनका नाम क्रमशः श्रीमती मालती देवी श्रीमती कान्ती देवी व श्रीमती क्रान्ति देवी है।

नोट- श्री मुन्नी सिंह ग्राम-छाछू बीघा, पोस्ट-कटौंना थाना-कतरी सराय जिला-नालन्दा बिहार के तीन लड़कों में द्वितीय पुत्र श्री संजय कुमार सिंह उर्फ (गोरे लाल सिंह) की शैक्षिक योग्यता बी0ए0 है विद्यालय के (सर्टीफिकेट प्रमाण-पत्र के अनुसार) इनकी जन्म तिथि-28.05.1969 है। आप वत्स गोत्रीय भूमिहार ब्राह्मण कूल में जन्म लिए किन्तु आप बाल्यावस्था से ही स्वभाव से उग्र रहें। इसी कारण आपका जीवन इतिहास इलाके के असमाजिक तत्वों के साथ रहने से उनके स्वभाव से मिलता है और उनसे मेल-मिलाप होने से आप हमेशा चर्चा में रहते थे। किन्तु श्री गोपालधाम में दीक्षा (गुरु मंत्र) लेने के उपरान्त आप संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ (पुजारी जी) को अपना आध्यात्मिक गुरु मानकर उनके पद् चिन्हों पर चलते हुए श्री गोपालधाम मन्दिर की सेवा में लगे हुए है। इस समय इनके स्वभाव से स्थानीय भक्त एवं जनता खुश है और श्री गोपालधाम में आकर दर्शन पूजा करने का लाभ प्राप्त कर रहेहै।

संत श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी श्री गोपालधाम में श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालनन्द सरस्वती जी द्वारा संचालित उन समस्त उत्सवों त्योहारों को श्री गोपालधाम में परमपरागत मनाया जाता रहा उन त्योहारों को श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी भी उचित समय पर मनाना अपना धर्म मानते है

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

जिससे उत्सवों (त्योहारों) के अवसर पर स्थानीय भक्त प्रसन्न रहते हैं। माह के प्रत्येक मंगलवार को भक्तों द्वारा मंगलवार के दिन विशेष उत्सव श्री गोपालधाम में पूर्व की भाँति मनाया जाता है मन्दिर पर दूर-दूर से कलाकार आते हैं और भजन-कीर्तन करते है। आप शीघ्र वृन्दावन से अपने गुरुदेव श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ (पुजारी जी) की पीतल धातु से निर्मित मूर्ति लाने वाले हैं जिसको मन्दिर में श्री राधा-श्री कृष्ण एवं श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) के साथ सिंहासन पर रख कर नित्य पूजा-आराधना करेंगे।

श्री गोपालधाम, सिंथौरा जंगल स्थित मन्दिर के महंथ संत श्री चैतन्यानन्द सरस्वती जी मात्र दो वर्ष के अल्प अवधि में श्री गोपालधाम में आने वाले भक्तों पर प्यार एवं स्नेह की वर्षा करते हुए उन्हें मन्दिर की आस्था से जोड़ने के प्रयास में लगे है। पहले से अधिक भक्त मन्दिर पर आ रहे है। मन्दिर परिसर की भूमि पर स्वच्छता बनी रहे के लिए ईंट, बालू, सीमेन्ट से चारों दिशाओं में खण्डंजा कार्य कराए, पुरूष-महिलाओं एवं भक्तों के लिए शुलभ शौचालय, स्नान गृह एवं हमेशा स्वच्छ जल की व्यवस्था के लिए लगभग 14000 चौदह हजार लीटर जल संग्रह करने की क्षमता वाले, सीमेन्ट, कंक्रीट, ईंट, बालू एवं लोहें की छड़ से निर्मित पक्की मजबूत पानी की टंकी का निर्माण कराएं एवं समर सेबुल की व्यवस्था किए। यज्ञशाला के निकट श्रद्धालुओं को बैठने -सोने के लिए वृहद ईंट, बालू सीमेन्ट, कंक्रीट से निर्मित चबुतरे का निर्माण कराएं। श्री राधा कूप की सफाई कार्य तथा मन्दिर परिसर में स्थित भोजनालय का जिर्णोद्धार कार्य के साथ-साथ मन्दिर की रंगाई-पोताई कार्य को कराए ये सभी कार्य गुरु कृपा एवं भक्तों के आर्थिक सहयोग से सम्भव हुआ। भविष्य में भी कई कार्य श्री गोपालधाम की भूमि पर कराने की योजना बनाए हैं।

श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी की द्वितीय पूण्य तिथि दिनांक 07.05.2019ई0 अक्षय तृतीया तिथि से पूर्व दिनांक 30-04-2019 ई0 से दिनांक 06.05.2019 ई0 तक श्रीमद् भागवत् पुराण कथा सप्ताह का आयोजन कार्यक्रम गत वर्ष की भाँति इस वर्ष भी महंथ श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी अपने गुरूदेव की स्मृति में कराए श्री मद् भागवत पुराण के कथा वाचक पं0 श्री विश्वम्भर नाथ शुक्ल एवं मुख्य श्रोता (यजमान) कमलाकर दुबे व उनकी धर्म पत्नी श्रीमती कौशल्या देवी जो जनपद-बलिया उ0प्र0 से पधारे थे तथा श्रीमती अनिता देवी पत्नी श्री दिनेश कुमार सिंह ग्राम व पोस्ट-चण्डी मौ थाना-सिवाल, जिला-नालंदा बिहार भी (यजमान) रही। जो पुजारी जी की ज्येष्ठ पुत्र बधु है। हवन एवं भण्डारा दिनांक 07.05.2019 ई0 दिन-मंगलवार को सम्पन्न हुआ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

अक्षय तृतीया तिथि के शुभ अवसर पर संत श्री सनातन चैंतन्यानन्द सरस्वती जी ने श्री गोपालधाम में **"श्री गोपाल-मुकुन्द मन्दिर"** जिसकी ऊँचाई 325 फीट की होगी का निर्माण के लिए भूमि पूजन कार्य भगवताचार्य पं0 श्री विश्वम्भर नाथ शुक्ल से वेद मंत्रों का उच्चारण कराते हुए सम्पन्न कराएं। संध्या समय हजारों की संख्या में उपस्थित साधु-संन्यासी, ब्राह्मण एवं भक्त जिसमें महिला-पुरूष, बच्चे उपस्थित थे सभी ने भण्डारे का प्रसाद ग्रहण किया। भक्तों की भीड़ ने कार्यक्रम की सराहना एवं स्वागत किया। श्री गोपालधाम में जो उत्सव श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) मानते थे वे सभी (उत्सव) त्योहार संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी मानते रहे उसी परम्परा को संत श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी भी कायम रखे हैं।

श्री गोपालधाम में श्रावण मास के झूँला उत्सव पर आखिरी दिन पूर्णिमा को रक्षाबन्धन का त्योहार के साथ-साथ उसी दिन दिनांक 15.08.2019ई0 को स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर संत श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी उपस्थित भक्तों के समक्ष घोषणा किए कि इस वर्ष श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) की पूण्य तिथि से पूर्व श्री मद् भागवत पुराण कथा सप्ताह का आयोजन किया गया है जिसका समापन बाबा की पूण्य तिथि पर दिनांक 22.10.2019 ई0 दिन-मंगलवार कार्तिक कृष्ण पक्ष नवमी तिथि को होना है।

श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी के द्वितीय पूण्य तिथि के अवसर पर पधारे दण्डी स्वामी श्री देवानन्द सरस्वती जी दूसरे दिन प्रातः मुझे अपने पास बुलाकर कहें दूबे जी आपने संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी के प्रथम निर्वाण दिवस (पूण्य तिथि) के समय भण्डारा समापन के बाद सभी संतो को श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) द्वारा लिखित "सारल्य दर्शन" नामक पुस्तक वितरण किए थे। जिसका प्रकाशन आप ने कराया है। उसे मैं पढ़ा पुस्तक के अन्दर बहुत सरल भाषा में श्री मद् भागवत का तत्व ज्ञान को दर्शाया गया है। आपने स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) का संक्षिप्त जीवन परिचय भी दिया है उसे पढ़ने पर मेरी इच्छा है आप श्री गोपालधाम मन्दिर के संतो पर गुरू शिष्य परम्परा का संक्षिप्त इतिहास महामण्डलेश्वर योगीराज दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी, श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा), संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ (पुजारी जी) एवं वर्तमान संत श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी के यर्थाथ जीवन परिचय पर छोटी पुस्तक तैयार करें जो श्री गोपालधाम के पुस्तकालय में होनी चाहिए। ताकि भविष्य में यहाँ आने वाले भक्तों को श्री गोपालधाम में रहने वाले संतो के सम्बन्ध में जानकारी हो सकें। **"श्री गोपाल मुकुन्द"** मन्दिर के लिए भूमि पर नींव की खुदाई 80 फीट लम्बा, 80

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

फीट चौड़ा व 18 फीट गहरा की गई है। इसका निर्माण भी शीघ्र प्रारम्भ होने की सम्भावना है।

संत श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी द्वारा की गई घोषणा के अनुसार श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ (जंगलिया बाबा) की पूण्य तिथि दिनांक-22.10.2019ई0 दिन-मंगलवार कार्तिक कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि से पूर्व श्रीमद्भागवत पुराण महा कथा का आयोजन श्री गोपालधाम में किया गया। कथा श्रवण का श्रोता एवं मुख्य यजमान कमलाकर दुबे व उनकी धर्म पत्नी श्रीमती कौशल्या देवी व श्रीमती अनिता देवी पत्नी श्री दिनेश कुमार सिंह रहे और कथा वाचक पं0 श्री विश्वम्भर नाथ शुक्ल जी थे।

श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती उर्फ (पुजारी श्री मुन्ना सिंह) के तृतीय पूण्य तिथि दिनांक 26.04.2020, दिन-रविवार, अक्षय तृतीया से पूर्व श्री मद् भागवत महापुराण सप्ताह् कथा कराने की योजना संत सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी बनाये थे किन्तु दुर्भाग्यवश कोरोना वायरस (कोविड-19) महामारी उत्पन्न होने पर उक्त कार्यक्रम को स्थगित करना पड़ा। महामारी से भारत वर्ष के साथ-साथ विश्व के सभी देश भयभीत है। भारत वर्ष के समस्त प्रसिद्ध मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा, गिरजाघर में भीड़ उपस्थित न होने के लिए सरकार ने प्रतिबन्ध लगा दिया है और भक्तों को जाने से रोक दिया है। यह आदेश महामारी के संक्रमण से रोकथाम के लिए दिया है। इस कारण गतवर्ष श्रीमद् भागवत सप्ताह कथा को स्थगित करना पड़ा।

दण्डी स्वामी देवा नन्द सरस्वती जी की प्रेरणा से उनका आशीर्वाद प्राप्त कर मैं सर्व श्री महामण्डलेश्वर योगी राज दण्डी स्वामी श्री हंसानन्द सरस्वती जी, श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) संत श्री मुकुन्दा नन्द सरस्वती जी उर्फ (पुजारी जी) एवं संत श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी का जीवन परिचय सहित संक्षिप्त इतिहास को सत्यता तथा साक्ष्य के आधार पर लिखने का प्रयास किया है। पुस्तक का प्रकाशन कराया है। जिसे अपने परम् पूज्य गुरूदेव श्री श्री 1008 सतं शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा जी) के चरणों में समर्पित करता हूँ।

कमलाकर दुबे

कमलाकर दुबे
ग्राम व पोस्ट-थम्हनपुरा
जिला-बलिया (उ0प्र0)

विजयादशमी
दिनांक 25 अक्टूबर, 2020ई0
दिन-रविवार

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री राधा-श्रीकृष्ण मंन्दिर 'श्री गोपालधाम'

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

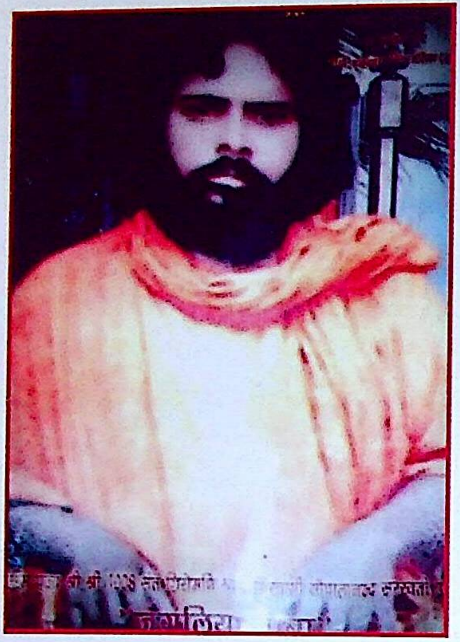

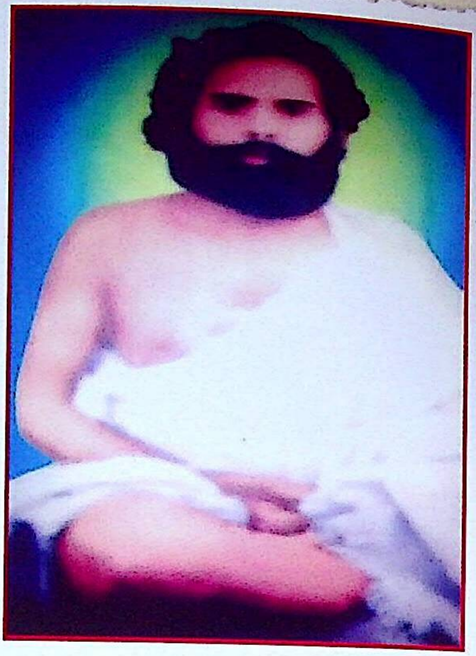

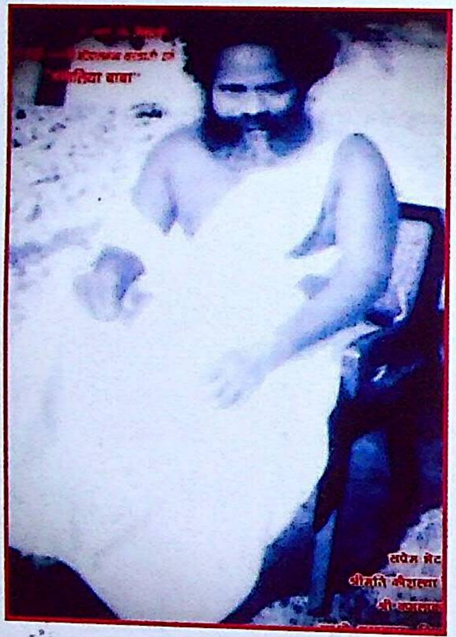

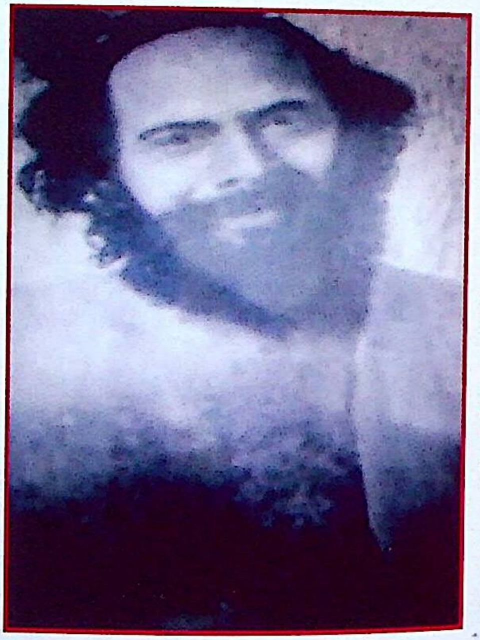

श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती उर्फ जंगलिया बाबा भिन्न-भिन्न अवस्था में

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ
(पुजारी जी श्री मुन्ना सिंह)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

भगवान श्री नर्मदाधीश भोले शंकर (बाबा श्री गोपालेश्वर महादेव)

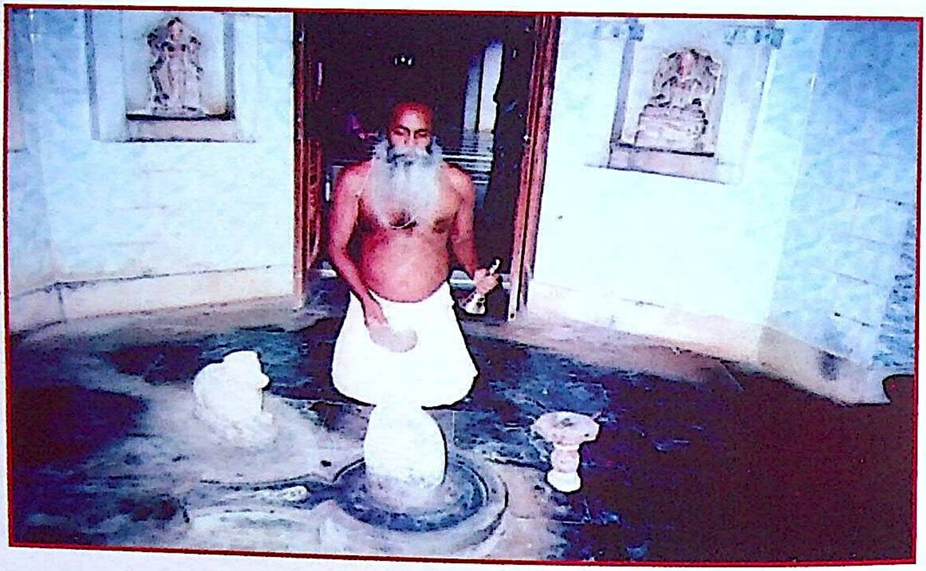

भगवान श्री नर्मदाधीश भोले शंकर (बाबा श्री गोपालेश्वर महादेव)
को आरती करते हुए संत श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी जी उर्फ (पुजारी जी)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती जी उर्फ (जंगलिया बाबा) की मूर्ति को आरती करते हुए संत श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी जी

संत श्री मुकुन्द ब्रह्मचारी जी का चरण स्पर्श करते हुए श्री प्रदीप कुमार दुबे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी उर्फ (पुजारी जी)

श्री गोपाल धाम
ग्राम व पोस्ट- सिथौंरा, राजगृह नालंदा (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

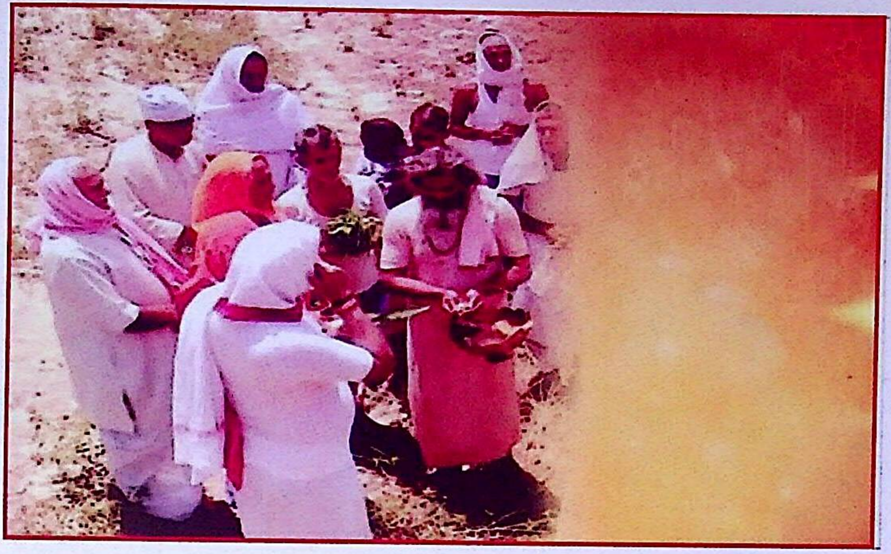

325 फीट ऊँचा श्री गोपाल-मुकुन्द मन्दिर निर्माण हेतु भूमि पूजन करते हुए
संत श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी के साथ पं० विश्वम्भर नाथ शुक्ला जी व अन्य भक्त

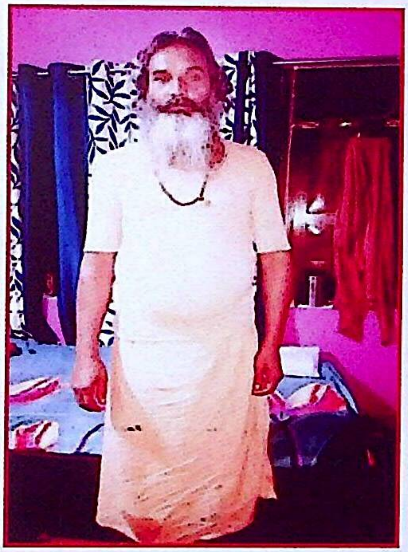

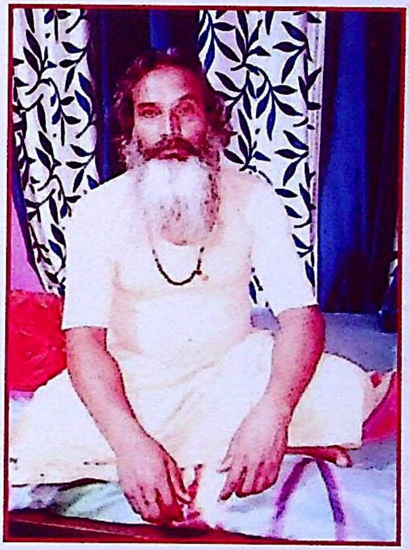

संत श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी उर्फ (श्री गोरे लाल सिंह)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती जी
(श्री सुनिल कुमार सिंह उर्फ पुजारी जी)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

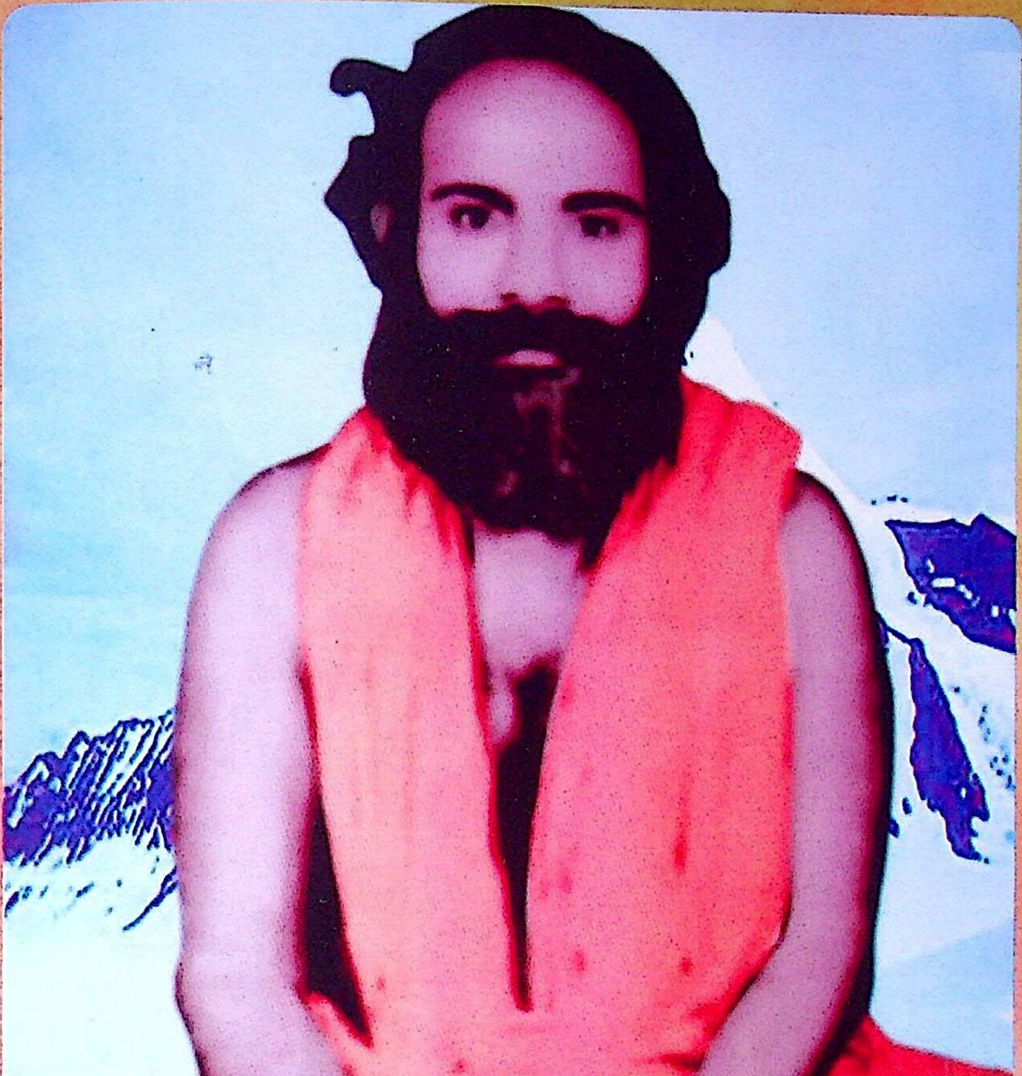

श्री श्री 1008 संत शिरोमणि स्वामी श्री गोपालानन्द सरस्वती
उर्फ जंगलिया बाबा

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

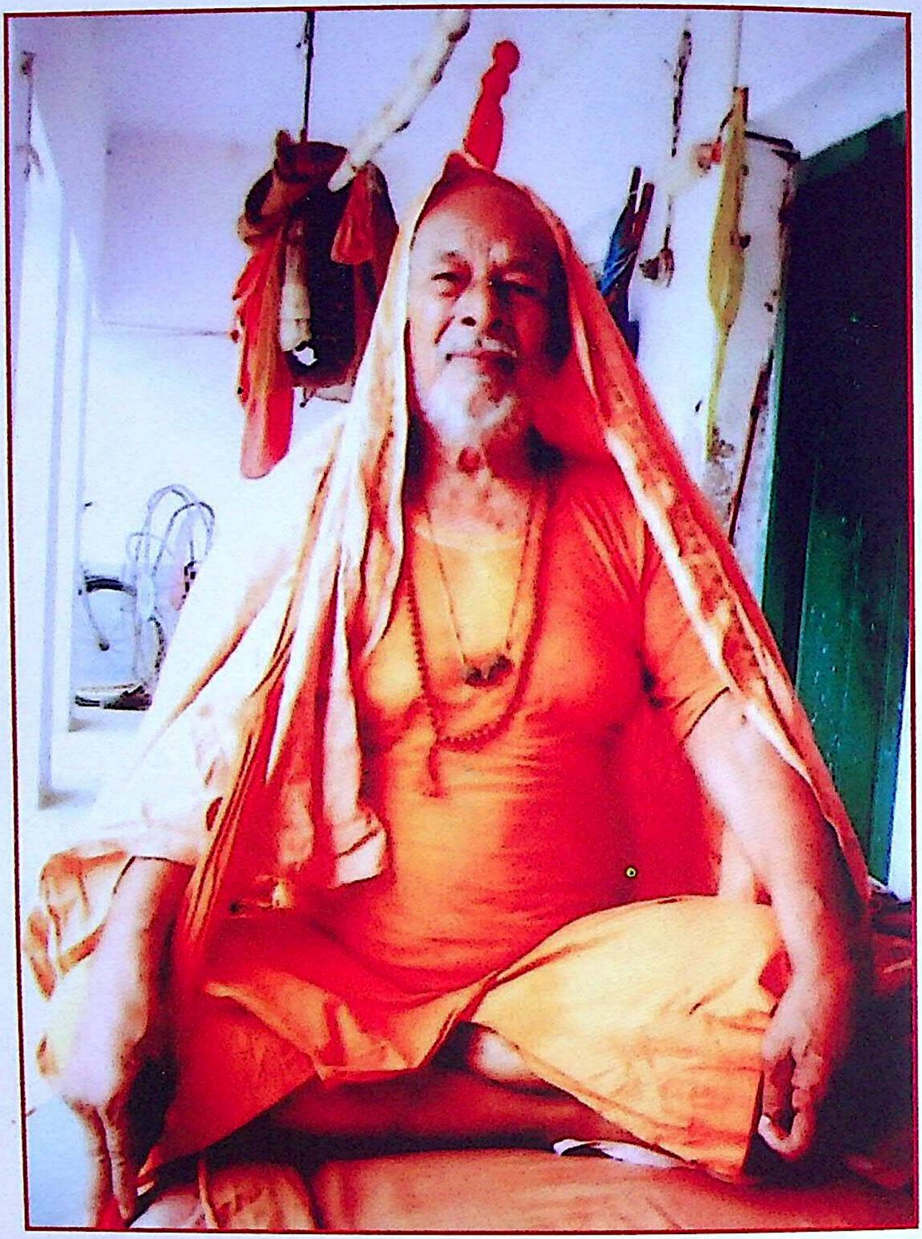

दण्डी स्वामी श्री देवानन्द सरस्वती जी महाराज
दण्डी स्वामी सहजानन्द सरस्वती आश्रम बक्सर (बिहार)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

आत्मज- कमलाकर दुबे

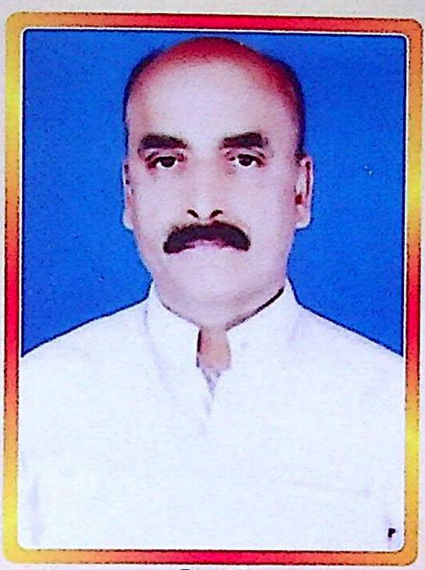

अभय कुमार दुबे
ग्राम व पोस्ट- थम्हनपुरा, बलिया (उ०प्र०)

अजीत कुमार दुबे
ग्राम व पोस्ट- थम्हनपुरा, बलिया (उ०प्र०)

प्रदीप कुमार दुबे
ग्राम व पोस्ट- थम्हनपुरा, बलिया (उ०प्र०)

प्रमोद कुमार दुबे
ग्राम व पोस्ट- थम्हनपुरा, बलिया (उ०प्र०)

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

परिवार के चिराग मेरे पौत्रगण- कमलाकर दुबे

आलोक शेखर दुबे उर्फ अंकित बाबू

आत्मज-अभय कुमार दुबे

हर्ष शेखर दुबे उर्फ हरीष बाबू

आत्मज-प्रदीप कुमार दुबे

आशीष कुमार दुबे उर्फ गोपाल जी

आत्मज अजीत कुमार दुबे

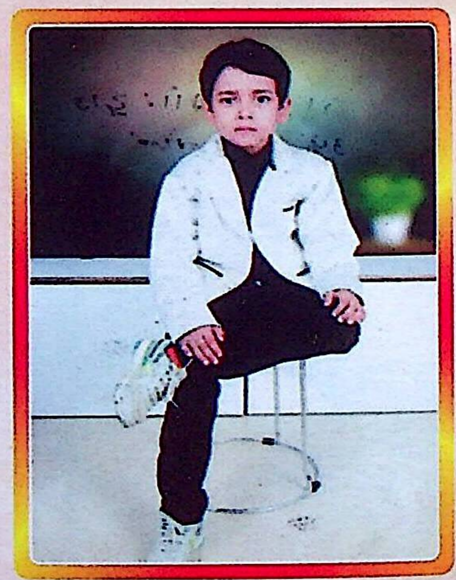

आरव भारद्वाज उर्फ अंश बाबू

आत्मज- प्रमोद कुमार दुबे

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

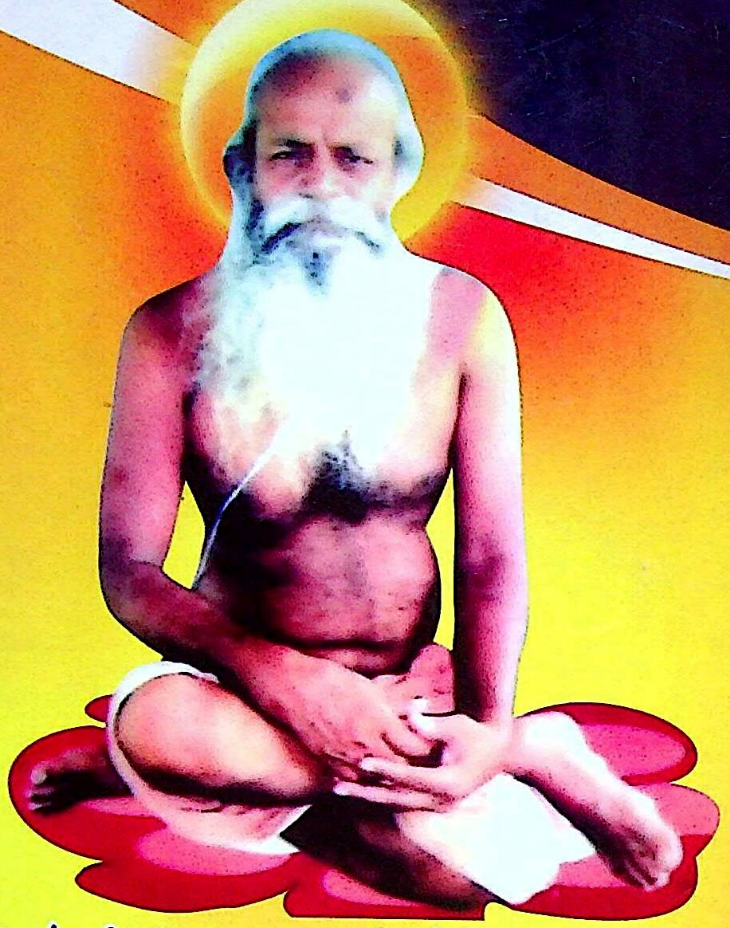

संत श्री मुकुन्दानन्द सरस्वती उर्फ पुजारी जी महाराज

संत श्री सनातन चैतन्यानन्द सरस्वती जी

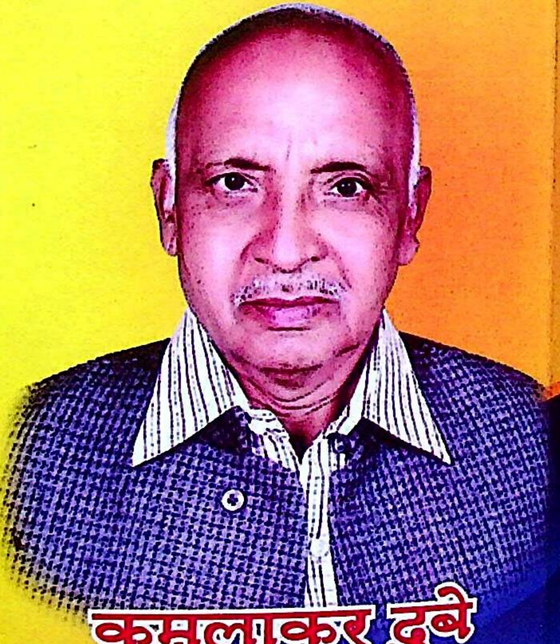

कमलाकर दुबे

Mob.: 9450648895

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon